Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. ओंकार कौल

कश्मीरी और हिन्दी रामकथा काव्य का तुलनात्मक अध्ययन

बाहरी पब्लिकेशन्ज़ (प्राइवेट) लिमिटेड
चंडीगढ़ दिल्ली अमृतसर
1974

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रो० शान्त जी को
सादर भेंट
ओंकार कौल
25.10.78

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीरी और हिंदी रामकथा-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन

ओंकार कौल

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No 518 (D)
Dated 7-9-09

बाहरी पब्लिकेशन्ज़ (प्राइवेट) लिमिटेड
चंडीगढ़ दिल्ली अमृतसर
1974

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

A Comparative Study of Rama-katha-kavya in Kashmiri and Hindi
कश्मीरी और हिंदी रामकथा काव्य का तुलनात्मक अध्ययन

Omkar KOUL
M.A., Ph.; D.

Northern Regional Language Centre,
(Central Institute of Indian Languages)
Patiala 147002.

© Bahri Publications Pvt. Ltd. 1974
First Published September 1974

Price : *Rs. 40.00*
Deluxe Binding : *Rs. 50.00*

**Printed by S. K. Das at Caretek Printers, E-48, Hauz Khas, New Delhi-16
and Published by U. S. Bahri for Bahri Publications Pvt. Ltd.,
20, Sector 21/A, Chandigarh.**
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काकनि ते बायटाठिस

पूज्य माँ तथा पिताजी को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्राक्कथन

भारतीय जन-मानस एवं लोक-संस्कृति के साथ रामकथा का इतना अधिक घनिष्ठ सम्पर्क है कि शायद ही कोई भारतीय साहित्यिक भाषा ऐसी होगी, जिसमें रामकथा विषयक काव्य की रचना न हुई हो, इसलिए भारतीय सांस्कृतिक-ऐक्य को अविच्छिन्न एवं अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए रामकथा विषयक काव्य-ग्रन्थों का पारस्परिक तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी सिद्ध होगा।

तुलना प्रायः दो प्रतिनिधि रचनाओं या इन रचनाओं के भी विशिष्ट तत्वों की ही अधिक सरलता से की जाती है किन्तु दो भाषाओं के किसी एक पूरे विषय की काव्य-परम्परा की तुलना अपने में एक विस्तृत एवं उलझा हुआ विषय है। तुलनात्मक अध्ययन में अभिरुचि प्रदर्शित करने वाले कई विद्वानों ने पिछले कुछ वर्षों से कुछ प्रांतीय भाषाओं के मुख्य रामायणों की तुलना उपाधि-सापेक्ष या उपाधि-निरपेक्ष 'रामचरितमानस' से प्रस्तुत की है। इस तरह दो भाषाओं के प्रतिनिधि या प्रमुख ग्रन्थों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा दोनों काव्यों की वस्तु एवं कला का परिचय तो मिल जाता है, किन्तु यहां विषय की उतनी व्यापकता नहीं रहती है, जिससे दोनों भाषाओं के विविध काव्य-ग्रन्थों के आधार पर परम्परागत, वस्तुगत एवं कलात्मक विवेचना प्रस्तुत की जा सके। प्रस्तुत कार्य इस दिशा का एक नया प्रयास है। यहां पर दोनों भाषाओं कश्मीरी और हिन्दी के विविध रामकथा विषयक काव्य-ग्रन्थों के साम्य-वैषम्य का निर्देश करते हुए ही उनकी पारस्परिक तुलना करने का प्रयत्न किया गया है।

'प्रकाश रामायण' के अतिरिक्त अब तक कोई भी अन्य कश्मीरी रामायण प्रकाशित नहीं हुआ है। 'प्रकाश-रामायण' प्रथम बार 'प्रताप स्टीम प्रेस' श्रीनगर द्वारा 1910 ई० में फ़ारसी लिपि में प्रकाशित हुआ। 1930 ई० में डा० जी०ए० ग्रियर्सन ने उक्त रामायण का एक संक्षिप्त संस्करण 'रोमन' लिपि में सम्पादित करके 'रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल' द्वारा प्रकाशित कराया। दोनों में कई असमानताएं मिलती हैं। डा० ग्रियर्सन द्वारा सम्पादित संस्करण को 'प्रकाश-रामायण' के मुख्य कथा-प्रसंगों का संकलन-मात्र कहा जा सकता है। 'अली मुहम्मद एण्ड संस' श्रीनगर ने फ़ारसी लिपि में 'प्रकाश-रामायण' के तीन संस्करण अब तक प्रकाशित किए हैं, किन्तु अशुद्धियों की दृष्टि से इनमें भी कोई सुधार नहीं हुआ है। आकार में बड़े होने पर भी इनके पाठ रोमन-लिपि में सम्पादित रामायण से ही अधिकतर मिलते हैं। 1965 ई० में प्रो० बलज्जिनाथ पंडित ने भी उक्त रामायण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का सम्पादन किया है, जो फ़ारसी लिपि में 'कश्मीरी कल्चरल अकादमी' से प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत संस्करण में विष्णु-स्टीम प्रेस के संस्करण को ही मुख्याधार बनाया गया है और उसमें कई स्थलों पर अन्य प्रकाशित रामायणों के आधार पर अत्यल्प परिवर्तन भी किए गये हैं। सम्पादक किसी भी हस्तलिखित प्रति से पूर्णतः सहायता न ले सके हैं। फिर भी प्रस्तुत संस्करण सभी पूर्ववर्ती संस्करणों से अधिक सुपाठ्य है।

'प्रकाश-रामायण' के मूलरूप को समझने के लिए प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों का अध्ययन अनिवार्य है। इन पंक्तियों के लेखक ने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कई प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों को एकत्रित किया है। सभी उपलब्ध प्रतियों में से श्री विशम्बरनाथ भट्ट की हस्तलिखित प्रति शुद्ध पाठों की दृष्टि से अधिक उपयोगी एवं प्रामाणिक सिद्ध हुई है। प्रतिलिपिकार के कथनानुसार उक्त हस्तलिखित प्रति कवि के गांव से प्राप्त किसी प्राचीन प्रति की नकल है। प्रस्तुत शोध-निबन्ध में उक्त हस्तलिखित प्रति को ही आधार बनाया गया है. किन्तु जहां कहीं भी इसके पन्ने फट गए हैं, वहां पर 'अकादमी' द्वारा प्रकाशित 'प्रकाश-रामायण' से सहायता ली गई है। ऐसे इने-गिने स्थलों पर पादटिप्पणी में 'प्र० रा०' के साथ 'अक०' का उल्लेख किया गया है।

प्रकाशित संस्करणों में कई प्रक्षिप्त-अंश मिलते हैं, जो प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं हैं। उदाहरणार्थ डा० ग्रियर्सन द्वारा सम्पादित और अली मुहम्मद द्वारा प्रकाशित दो संस्करणों में मंगलाचरणस्वरूप एक भजन 'राम-लक्ष्मण अवतारी आय' और अधिकांश संस्करणों में लंका-काण्ड के अन्तर्गत एक अन्य भजन 'निष्फल निष्कामै, भजन कर राम रामै' उल्लिखित हैं, किन्तु किसी भी प्राचीन हस्तलिखित प्रति में ये नहीं मिलते हैं। दोनों के हमारे कवि द्वारा न लिखे जाने के भी प्रमाण मिलते हैं। 'प्रकाश रामायण' के अन्तर्गत प्रायः सभी भजनों के अन्तिम चरण में कवि का नामोल्लेख मिलता है, पहले भजन में ऐसा नहीं है और दूसरे भजन की अन्तिम पंक्तियों में कवि 'वासुदेव' का नामोल्लेख स्पष्ट मिलता है, न कि प्रकाशराम का—"भक्ति वन्य 'वासुदीवन", वेष्नपाद मनि सीवन···।"[1] इसी तरह कई प्रसंगों के विवरण-विस्तारों में भी असमानताएं दृष्टिगोचर होती हैं।

'शंकर रामायण' की मूल शारदा लिपि की प्रति अनुपलब्ध है, किन्तु उसकी एक प्रति देवनागरी लिपि में 'कश्मीर रिसर्च लाइब्रेरी' के हस्तलिखित ग्रन्थालय में सुरक्षित है। इसमें प्रतिलिपिकार का कोई नामोल्लेख नहीं मिलता है, ग्रन्थ के अन्त में कवि के निर्देश से ही ज्ञात होता है कि इसकी मूल रचना शारदा लिपि में हुई है। 'आनंद रामावतारचरित' की सम्पूर्ण हस्तलिखित प्रति फ़ारसी लिपि में कवि के गांव 'त्रिसल' (पुलवामा-कश्मीर) में श्री दीनानाथ राज़दान के घर

1. प्र० रा० अक०, पृ० 175.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुरक्षित है। प्रस्तुत प्रति कवि के छोटे भाई स्व० नंदलाल राज़दान द्वारा मूल प्रति से ही नकल की हुई है। मूल प्रति भी कवि के घर में जीर्ण-शीर्ण अवस्था में उपलब्ध है। 'विष्णु प्रताप रामायण' की मूल प्रति फ़ारसी लिपि में कवि विष्णु कौल के कनिष्ठ पुत्र श्री ओंकारनाथ कौल के घर (श्रीनगर) में दो भागों में सुरक्षित है। 'शर्मा रामायण' की मूल प्रति फ़ारसी लिपि में कवि के निवास स्थान श्रीनगर में प्राप्य है। प्रस्तुत रामायण के कुछ अंश देवनागरी लिपि में प्रकाशित भी हुए हैं। 'ताराचन्द रायायण' की मूल प्रति दो भागों में कवि की अपनी ही फ़ारसी हस्तलिपि में उनके धर 'वीरकुम' (कुकड़नाग-कश्मीर) में सुरक्षित है। 'अमर रामायण' की फ़ारसी लिपि में मूल प्रति उनके निवास-स्थान अनंतनाग (कश्मीर) में प्राप्य है।

डा० ग्रियर्सन द्वारा सम्पादित कश्मीरी रामायण (प्रकाश-रामायण) भूमिका की में कवि के नाम, निवास-स्थान, जीवन-काल और रामायण की प्रमुख विशेषताओं की संक्षिप्त चर्चा की गई है। भूमिका-भाग के अध्ययन करने पर कई मुख्य भ्रांतियां अनायास ज्ञात होती हैं, जो इस प्रकार हैं—(1) डा० ग्रियर्सन ने कवि का नाम 'दिवाकर प्रकाश भट्ट' बताया है, किन्तु कवि का असली नाम प्रकाशराम पंडित था। (2) कवि का निवास-स्थान गोजवारा (श्रीनगर) बताया गया है, किन्तु कवि का निवास-स्थान कुरीगाम (काज़ीगुण्ड-कश्मीर) था। (3) जन-श्रुति के आधार पर डा० ग्रियर्सन ने कवि के जीवन-काल को राजा सुखजीवन के शासन-काल (18वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध) तक मान लिया है, जो ठीक नहीं है।

अब्दुल अहद आज़ाद की पुस्तक 'कश्मीरी ज़बान और शायरी' भाग 2 में प्रकाशराम[1] और विष्णु-कौल[2] का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके क्रमशः 'रामावतार चरित' और 'विष्णु-प्रताप रामायण' का उल्लेख किया गया है। दोनों रामायणों से श्री आज़ाद ने कुछ भाषा से सम्बंधित उदाहरण भी दे दिए हैं। श्री आज़ाद ने 'प्रकाश-रामायण' की भाषा की सराहना की है। उन्होंने 'विष्णु प्रताप रामायण' को 'वाल्मीकि रामायण' का अनुवाद कहने की एक भारी भूल की है, जिसका निराकरण आगे होगा।

श्री पृथ्वीनाथ 'पुष्प' की 'कश्मीरी भाषा और साहित्य' पुस्तक में 'प्रकाश-रामायण' के अतिरिक्त 'शंकर रामायण' और 'विष्णु प्रताप रामायण' का उल्लेख मात्र प्राप्य है।[3] संक्षेप में उन्होंने 'प्रकाश रामायण' की भाषा-शैली और कथात्मक विशेषताओं की भी चर्चा की है। श्री पृथ्वीनाथ कौल 'बामज़े' ने हिस्ट्री आफ़ कश्मीर' में कवि प्रकाश राम और उनके 'रामावतारचरित' का संक्षेप में परिचय

---

1. कश्मीरी ज़बान और शायरी, भाग 2, पृ० 230.
2. वही, पृ० 410.
3. कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृ० 17-18.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दे दिया है ।[1] प्रो० बलज्जिनाथ पंडित ने भी 'प्रकाश रामायण' की भूमिका में कवि के जीवन-परिचय एवं उसके रामायण की प्रमुख विशेषताओं के अतिरिक्त 'विष्णु-प्रताप रामायण', 'आनन्द-रामावतारचरित' और 'शर्मा रामायण' का भी नामोल्लेख किया है ।

डा० ग्रियर्सन द्वारा संपादित कश्मीरी रामायण 'प्रकाश रामायण' के आधार पर डा० कामिल बुल्के ने अपने शोध-प्रबन्ध 'रामकथा उत्पत्ति और विकास' में उक्त रामायण की कुछ प्रमुख विशेषताओं की ओर इंगित करके[2] 'शोध-प्रबन्ध' के चतुर्थ भाग 'रामकथा का विकास' में यत्र-तत्र उन सभी विशेषताओं का उल्लेख किया है । डा० ग्रियर्सन द्वारा सम्पादित 'रामायण' ही अपने में अपूर्ण है जिसमें कथा का पूरा कलेवर नहीं समा पा सका है, तो उसके आधार पर कथा-विवेचना की अपूर्णता स्वयं-सिद्ध होगी । डा० कामिल बुल्के ने अन्य किसी भी कश्मीरी रामायण का उल्लेख नहीं किया है, जिनसे वे पूर्णतः अनभिज्ञ प्रतीत होते हैं ।

डा० कामिल बुल्के की पुस्तक के आधार पर कई अन्य हिन्दी आलोचकों ने भी संक्षेप में अपनी पुस्तकों और लेखों में कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' की प्रमुख विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख किया है, जिनमें से श्री परशुराम चतुर्वेदी की पुस्तक 'मानस की रामकथा'[3] और सत्यदेव चतुर्वेदी की पुस्तक 'गोस्वामी तुलसीदास और रामकथा'[4] उल्लेखनीय हैं । आलोचकों ने प्रांतीय भाषाओं के रामायणों का परिचय देते हुए ही उक्त कश्मीरी रामायण का परिचय दे दिया है । इस तरह पूर्ववर्ती अध्ययन में अधिकतर कश्मीरी के पहले रामायण 'प्रकाश-रामायण' का ही उल्लेख हुआ. अन्य किसी भी रामायण की ओर आलोचकों का ध्यान नहीं गया है ।

प्रस्तुत अध्ययन में कश्मीरी और हिन्दी के दो 'प्रतिनिधि' रामकथा संबन्धित काव्यों को तुलना के लिए न चुना जाकर सभी प्रमुख रामायणों को दृष्टि में रखा गया है । इस तरह विषय की व्यापकता की दृष्टि से दो भाषाओं के प्रमुख एवं विशिष्ट काव्य-ग्रन्थों के तुलनात्मक अध्ययन का यह प्रथम प्रयास है । इसमें कुल आठ अध्याय हैं । प्रत्येक अध्याय की सामग्री का विषय-क्रम इस प्रकार है :

प्रथम अध्याय में दोनों भाषा-क्षेत्रों के लोकसाहित्य में व्याप्त रामकथा के रूप को देखने का प्रयत्न किया गया है । दोनों के निजी वैशिष्ट्य एवं साम्य पर विचार

---

1. हिस्ट्री आफ काश्मीर, पृ० 736.
2. रामकथा-उत्पत्ति और विकास, अनु० 281.
3. मानस की रामकथा, पृ० 70-71.
4. गोस्वामी तुलसीदास और रामकथा, पृ० 96.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के अतिरिक्त दोनों भाषा-क्षेत्रों में रामभक्ति-प्रसार के फलस्वरूप राम-काव्यों के प्रारम्भ के विषय में भी संक्षेप में चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय में दोनों कश्मीरी और हिन्दी भाषाओं के रामकथा विषयक काव्य-ग्रन्थों का अलग-अलग परिचय एवं आधुनिक भारतीय भाषाओं के रामकथा-काव्य में उनके विशिष्ट स्थान-निर्धारण पर विचार किया गया है।

तृतीय अध्याय 'कथा-विवेचन' में दोनों भाषाओं के प्रमुख ग्रन्थों के आधार पर मुख्य कथात्मक प्रसंगों के साम्य-वैषम्य का निर्देश करते हुए दोनों के मुख्याधारों एवं दोनों की नवीन उद्भावनाओं का भी यत्र-तत्र संकेत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'चरित्र-चित्रण' में रामकथा के मुख्य पुरुष एवं नारी पात्रों की परम्परागत चारित्रिक विशेषताओं के निर्वाह-कौशल के साथ-साथ दोनों भाषा-रामायणकारों द्वारा उनके 'चरित्र-विकास' सम्बन्धित प्रयत्नों का भी उल्लेख किया गया है।

पंचम अध्याय 'धार्मिक और नैतिक स्थापनाएं' के अन्तर्गत धर्म की व्यापक परिभाषा के परिप्रेक्ष्य में दोनों भाषाओं के रामकथा काव्यों में मूलभूत धार्मिक विचारों की रूपरेखा पर विचार किया गया है, इसके साथ ही दोनों में निरूपित कवियों के नीति-कथनों के मूल में पाए जाने वाले समुदाय तत्वों का उल्लेख किया गया है।

षष्ठ अध्याय 'रस-निरूपण' में दोनों भाषा-रामायणों के आधार पर मुख्य काव्यशास्त्रीय एवं अन्य रसों के निरूपण का तुलनात्मक परिचय दिया जा चुका है, जिससे दोनों प्रकार के भाषा-कवियों की भाव-प्रवीणता का भी यथेष्ट परिचय प्राप्त हो सके।

सप्तम अध्याय 'काव्य-शैली' के अन्तर्गत दोनों में अलग-अलग से भाषा के स्वरूप, छन्द-विधान, अलंकार, संवाद-योजना और प्रकृति-चित्रण, पर विचार किया गया है। इससे दोनों भाषाओं की काव्य परम्परा में 'काव्य शैली' की दृष्टि से रामकथा विषयक ग्रन्थों का स्थान निश्चित करने में भी सहायता मिल सकती है।

अंतिम अध्याय 'उपसंहार' में रामकथा और भारतीय जन-जीवन के सांस्कृतिक ऐक्य पर विचार करते हुए उपरिलिखित अध्यायों का संक्षेप में सिंहावलोकन प्रस्तुत किया गया है।

स्वर्गीय डा० माताप्रसाद गुप्त के सहृदयतापूर्ण पथ-प्रदर्शन एवंअनन्य सहायताओं के लिए संकोचवश स्पष्ट शब्दों में उनके प्रति आभार प्रदर्शित करने में असमर्थ हूं, प्रस्तुत शोध निबन्ध के इस रूप में पूर्ण होने का पूरा श्रेय उन्हीं को प्राप्त है।

कश्मीर के सुप्रसिद्ध विद्वानों में सर्वश्री पृथ्वीनाथ 'पुष्प', शम्भुनाथ भट्ट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1 कश्मीरी और हिन्दी लोक-साहित्यों में रामकथा तथा काव्य का प्रारम्भ

1.1. कश्मीरी और हिन्दी लोक-साहित्यों में राम-कथा

किसी भी देश, प्रांत या जनपद विशेष की सभ्यता, संस्कृति, धर्म, कला, साहित्य तथा सामाजिक रीति-रिवाज, आचार-विचारादि का सूक्ष्म अवलोकन करने के लिए लोक-साहित्य का अध्ययन अपेक्षित होता है। जन संस्कृति का जैसा सजीव तथा सच्चा चित्रण लोक-साहित्य में उपलब्ध होता है, वैसा अन्यत्र नहीं। डा० वासुदेव-शरण अग्रवाल के विचारानुसार 'लोक-साहित्य हमारे जीवन का महासमुद्र है, उसमें भूत, भविष्य, वर्तवान, सब कुछ संचित रहता है।'[1]

लोकगीत जनता के हृदय के उद्‌गार हैं। वे जनता की हार्दिक भावनावों के सच्चे प्रतीक हैं। सृष्टि के विकास के साथ ही लोक-साहित्य का उद्‌भव माना गया है। परिष्कृत साहित्य की अपेक्षा लोक का क्षेत्र अधिक विशाल और पुष्ट है। इसमें जन-समाज के अशिक्षित-अर्द्ध शिक्षित वर्गों एवं वर्णों के सामाजिक सुख-दुख, इच्छा-आकांक्षा-सम्बंधी विचारों का यथार्थ और अकृत्रिम रूप मिलता है। इसीलिए जीवन का जितना घनिष्ट सम्बन्ध लोकगीतों से होता है, उतना शिक्षित अभिजात वर्ग का परिष्कृत साहित्य के साथ नहीं। सम्पूर्ण जीवन की व्यजना-अभिव्यक्ति साहित्यिक काव्य की अपेक्षा लोकगीतों में अधिक पूर्ण और सजीव हो पाई है। इतना ही नहीं 'लोकसाहित्य वर्तमान उन्नत एवं कलात्मक साहित्य का जनक है। आज का संस्कृत एवं परिष्कृत साहित्य व्यक्ति की महत्ता को स्वीकार करता है, लोक साहित्य जनता-जनार्दन को ही अपना प्रभु मानता है। इसमें किसी का व्यक्तित्व नहीं झलकता, अपितु उसमें समस्त समाज की आत्मा मुखरित होती है। इसी कारण लोक-साहित्य के रचयिताओं अथवा कवियों का कहीं उल्लेख नहीं मिलता।'[2] पं० रामनरेश त्रिपाठी ने वेदों की भांति ग्राम-गीत को 'अपौरुषेय' कहा है।[3]

अन्य आख्यानों की भांति लोकगीतों में विविध रूपों में रामकथा उपलब्ध है।

---

1. सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति अंक। 2010. पृष्ठ 65.
2. डा० सत्यव्रत सिन्हा : भोजपुरी लोकगाथा, भूमिका 'ड'।
3. जनपद पत्रिका, अक्तूबर 1952, पृष्ठ 11.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'राम का अस्तित्व भले ही ऐतिहासिक हो, उनकी कथा लोक-साहित्य में खड़ी हुई और बढ़ी। वहीं से उसने अपने हाड़-मांस बटोरे। वैदिक युग में इसी कारण उसे लौकिक काव्य कहा गया।'[4] रामकथा के इस लोक-रूप को साहित्य-मनीषियों ने निजी प्रतिभा से समृद्ध और पुष्ट बना दिया, किन्तु उसकी लौकिक धारा अनवरत प्रवाहित होती रही तथा विविध गीतों में आज भी लोकमानस में प्रचलित है। जहां शिष्ट और शास्त्रीय साहित्य में राम और सीता को सहज मानवों से भिन्न लोकोत्तर गुणों से युक्त अथवा परम परमात्मा के रूप में चित्रित किया गया है, वहाँ लोकगीतकार ने इस दम्पति को अपने ही परिवार का अंग-प्रत्यंग या सदस्य समझकर उनके प्रति आत्मीयता प्रकट की है। श्री कृष्णदास के शब्दों में 'लोकगीतों के राम और सीता का व्यवहार सहज मानवों जैसा होता है, वे साधारण मनुष्यों की भाँति क्रुद्ध होते हैं, हंसते हैं, बोलते हैं, झगड़ा करते हैं, रोते हैं, गाते हैं। इससे मर्यादा पुरुषोत्तम राम अथवा भगवती सीता की मर्यादा अथवा प्रतिष्ठा में किसी प्रकार का धक्का नहीं लगता; बल्कि अपने साधारण रूप में आ जाने से वे जनसाधारण के जीवन में जीवन, प्राणों के रचयिता राम सांसों के सांस बन जाते हैं। जहां शिष्ट और शास्त्रीय साहित्य के रचयिता राम और सीता के मानवीय पक्ष को दबाकर रखना चाहते हैं; वहीं लोकगीतकार उनके मानवीय पक्ष को अधिक उजागर और स्पष्ट रूप में रखना चाहते हैं।[5]

लोकगीतों में राम कथा के प्रधानतः दो रूप मिलते हैं :—

(अ) रामकथा-पात्रों का नाम-मात्र के लिए उल्लेख, तथा

(आ) रामकथा या कथांश सम्बन्धी वृत्त।

इसी दृष्टि से हम दोनों कश्मीरी और हिन्दी लोकगीतों में रामकथा के रूप को निर्धारित करने का प्रयत्न करेंगे।

1.1.1. रामकथा के पात्रों का नाम-मात्र के लिए उल्लेख

प्रायः जन्म, विवाह आदि संस्कारी लोकगीतों में गायक परिवार-विशेष के व्यक्ति का नाम लेने से पूर्व मंगलाचरण स्वरूप राम अथवा 'राम-परिवार' का नाम लेता है और कभी-कभी मंगलकार्यों की प्रतिष्ठा-प्रतिपादन के लिए भी इसी रूपक-प्रणाली का उपयोग किया जाता है, जैसे विवाह-गीतों में 'दूल्हे-दुल्हन' के लिए 'राम-सीता' नाम का उल्लेख। कई लोक-गीतों में रामकथा अभिप्रेत न होते हुए भी अन्य प्रसंगों के वर्णन में इसी से उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं, जिससे भावप्रेषणीयता अधिक स्पष्ट और सहज होती है, जैसे 'सौत-डाह' के वर्णन में कैकेयी का नामोल्लेख। ऐसे गीत रामकथा की लोक-व्यापकता का रूप स्पष्ट तो करते हैं किन्तु 'कथा' की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध नहीं होते हैं। इस वर्ग के लोकगीतों में उदाहरण दोनों भाषाओं के लोकगीतों से प्रस्तुत हैं :-

4. डा० सत्येन्द्र : भारतीय साहित्य। पत्रिका वर्ष 2, अंक 3, पृ० 65.

5. लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या, प्र० सं० पृष्ठ 89-90.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1 1.1.1. कश्मीरी

हिन्दुओं के विविध संस्कारी कश्मीरी लोकगीतों में रामकथा के प्रमुख पात्रों का नामोल्लेख मिलता है। विवाह गीतों में प्राय: वर-वधू के लिए 'राम-सीता', दूल्हे के माता-पिता के लिए 'कौशल्या-दशरथ' तथा दुल्हन के पिता के लिए 'जनक' का नाम लिया जाता है। उदाहरण स्वरूप दूल्हे की बारात चलती है तो स्त्रियां यह गीत गाती हैं—

'श्याम रूप राम गछि सीतायें···

—अत: श्याम वर्ण राम सीता को लाने जा रहा है।

हिन्दुओं की विवाह-रीति में दूल्हे अथवा दुल्हन के 'दिवगोन' (सं० देवागमन या देवगुण) का काफी महत्व है। यह विवाह-लग्न से पूर्व का संस्कार है जिसमें वर या वधू को विशिष्ट ढंग से नहलाया जाता है और ब्राह्मणों के मन्त्रोच्चार से यह संस्कार सम्पन्न होता है। तत्सम्बन्धी एक गीत में दुल्हन के पिता के लिए 'जनक' का नाम मंगलाचरण स्वरूप आता है—

'जनक राज़अन्य गज़ख तीरी पीरी प्यठ करये कनि संस्कार···

—हे राजा जनक की दुलारी बेटी! चौकी पर बिठाकर तेरा 'कन्या-संस्कार' पूरा करूंगी।

'मेहन्दी रात'[6] के दिन वर या दुल्हन के ननिहाल से अतिथि आकर उनके लिए वस्त्राभूषण या भेंट उपहार लाते हैं। अतिथियों के आने पर स्त्रियाँ दुल्हन के नाना को 'दशरथ', मामा को 'राम' नाम देकर वधू की माँ से कहती है—

यिम हे दुरिबत: वाजिनि आये, हिन्दुस्तानचि ह्यंदियाने।
दशरथ राज़न्य श्याम सुन्दर कूरी, रामचन्दर ओवे दुरिवतः ह्यव—

—हिन्दुस्तान से हिन्दू स्त्रियाँ (अत: ननिहाल के लोग) नाना प्रकार के उपहार लेकर आई हैं। राजा दशरथ की लाड़ली बेटी। भाई रामचन्द्र स्वयं 'उपहार-सौगात' लेकर पधारे हैं।

'दिवगोन' सम्बन्धित एक अन्य गीत में वर के माता-पिता को 'कौशल्या दशरथ' कहा गया है। वर की माता यज्ञ-कुण्ड लीप बुहार लेती है और उसके पति वहां आकर बैठ जाते हैं तो स्त्रियां गाती हैं :—

कौशल्यायि थोयवो पोशिबाग लिविथ
दशरथ राजह खोत श्रान करिथ···

---

6. इस रात को वर तथा वधू के हाथ-पैर में मेंहन्दी रचाई जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—कौशल्या (माता) ने फूल-उपवन (अग्नि-मण्डप) लीप-बुहार कर रखा और राजा दशरथ (वर के पिता) नहा-धोकर वहां आ बैठे।

इसी प्रकार एक 'यज्ञ-गीत' में मंगलाचरण स्वरूप यजमान के लिये राजा दशरथ का नाम लिया जाता है :—

दशरथ राज़ुन पोशि टूर बोरमय चन्दनुव गोन्डमय वोमन हुर···

—मैंने राजा दशरथ का पात्र फूलों से भर लिया और यज्ञ-क्रिया में काम आने वाला हत्था चन्दन का बनवा लिया। इस लोकगीत में समस्त यज्ञ-क्रियाओं का वर्णन मिलता है।

यज्ञ-सम्बन्धी गीत एवं विविध कर्म-काण्ड की क्रियाएं वास्तव में राजा-दशरथ के नामोल्लेख के बिना अपूर्ण हैं, क्योंकि दशरथ को महान यज्ञकर्त्ता माना जाता है।

1.1.1.2 हिन्दी

नामोल्लेख मात्र विषयक वर्ग के कुछ उदाहरण हिन्दी के लोकगीतों से दिए जा रहे हैं। ब्रज-भाषा के निम्नलिखित लोकगीतों में राम, सीता, दशरथ आदि का नामोल्लेख मंगलाचरण स्वरूप आया है :—

1. जुरयो रथु राम जी कौ यामें सीय बैठी जाय (टेक)
एक रथु तौ याकी मामी ने सजायो,
प्यारे भैया ने जोरे दोनों बैल। जुरयौ···[7]
2. तेलिन बिटिया तेल मेरौ राम चमेली कौ तेल ऐ (टेक)
बहू सीता तेल चढ़ाईए, बेटो रामेश्वरी तेल चढ़ाइए।
घरइ लछिमन जी बाबइयां, बहू उर्मिला तेल चढ़ाइए
तेलिन बिटिया···[8]
3. तुम खेलो दशरथ फाटका, तिहारी वह ठाढ़ी ऐ द्वार हिरनी जो चरौ।[9]

विविध विवाह-गीतों में दूल्हा-दुल्हन को 'राम-सीता' के नाम-रूप से अभिहित किया जाता है। बुन्देलखण्ड में दूल्हे की 'राछ' गांव में घुमाने के समय का यह गीत प्रसिद्ध है—

मोरे राम-लखन से बनरा आली
कौन बिलमा लये री ?

7. भारतीय साहित्य, पत्रिका, वर्ष 2, अंक 3, पृ० 66.
8. वही।
9. भारतीय साहित्य, पत्रिका, वर्ष 2, अंक 3, पृष्ठ 68.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोरे पूनम जैसो चन्दा बना
सब जग उजयारो री ।...[10]

दूल्हे का स्वागत-सत्कार 'रगपत-दूला' के रूप में होता है । 'रगपत दूले' की बारात जिस देश (गांव) से निकली, सभी लोग बारात के साथ चले । बारात 'गेंवड़े' पर पहुंची तो दूब लहलहा उठी, बेला चमेली महकी आदि--

जब रगपत दूला देसों हो आये, देस खानें होय भलें जू ।
जब रगपत दूला गेंवडों हो आये, दूबा रही हरयाल भले जू ।
जब रगपत दूला कुअलों हो आये, माहे रही पनहार भले जू ।[11]

दूल्हे की बारात चलने पर मां आदि स्त्रियां 'गारी राम अवतारी' गाती हुई कहती हैं —

जाओ जाओ व्याय ल्याओ जानकी बेटा मोरे राम जी लला ।[12]

दूल्हे के स्वागत में बुन्देली सखियां एक लोकगीत में प्रश्नोत्तर-शैली में जनक (दुल्हा का पिता) तथा दशरथ (वर-पिता) का नाम लेती हैं :-

काना के बड़े कोटिया जिनने कोट उठाये ?
काना के बड़े तपासी चढ़ व्यावन आये ?
जनकपुरी के कोटिया जिनने कोट आये
अजुध्या के बड़े तपासी चढ़ व्यावन आये[13]

लड़के वाले चढ़ाव के लिए वस्त्राभूषण लेकर आते हैं और सखियां सखि सीता को दुल्हन के रूप में देखना चाहती हैं :-

मोरी सिया जू खो चड़त चढ़ाओं चलो सखी देखन चलिये[14]

वर-पिता दुल्हन लाकर घर लौटता है तो 'सगुन चिरइया' या स्वागत—गीत यों गाया जाता है --

---

10. हीरादेवी चतुर्वेदी : बुन्देलखण्डी लोकगीत, पृष्ठ 41.
11. वही वही, पृष्ठ 42-43.
12. उमाशंकर शुक्ल : बुन्देलखण्ड के लोकगीत, पृष्ठ 51.
13. वही, पृष्ठ 53.
14. वही, पृष्ठ 55.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जे भले कइयो राजा दशरथ बउवा लुवाय घर आये [15]

दुल्हन-दूल्हे की वेश-भूषा का चित्रण अवधी लोकगीत में इसी तरह हुआ है :--

कौन रंग मुंगवा, कोन रंग मोतिया, कौन रंग ना ?
सिया दुलहीक दुला कवन रंग ना ?
बिन ले लै मोतिया, बटोर लेबै मुंगवा, मनाई लेबै ना,
सिया दुलहीक दुलहा मनाई ले बै ना ।[16]

लोकगीतों के कई ऐसे प्रसंग हैं, जिनसे रामकथा का सम्बन्ध केवल नामोल्लेख मात्र का है । इनमें जन-समाज की साधारण सी घटनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए रामकथा के पात्रों का नाम जोड़ा गया है । जैसे वर ढूंढ़ते हुए हताश लौटे पिता से पुत्री कहती है :-

कहां ढूंढ्यों आटुनु पाटनु, कहां ढूंढ्यों देसु सब झारि
नग्र अजोध्या मा दुई बर सुन्दर, एक लछिमन एकु राम ।[17]

एक हास्य-लोकगीत में राम (दूल्हा) जनक के दिये गये दहेज से रूष्ट होकर 'साली सरहजे' चाहता है :-

राम रिसाने जनक जी की देनी मा ।
राम जवाहर लेओ, जो चाहो सो लेव लदाय ।
कंकर पत्थर तम का करिबै सारी सरहजैं देव लगाय ।[18]

एक अन्य लोकगीत में मां कौशल्या ससुराल के बारे में पूछती हैं तो राम उत्तर देते हैं—साली सरहजें बहुत सुन्दर हैं और सास गंगाजल के समान—

अब हंसि पूछें मातु कोसिल्ला, कैसी ललन ससुरारी जी ?
सारी सरहजें बहुतै सुन्दर सासु गंगाजल पानी जी ।[19]

भोजपुरी में भी कई लोकगीत ऐसे मिलते हैं जिनमें राम और सीता का अर्थ साधारण पुरुष और स्त्री से भिन्न नहीं है । एक 'लोकगीत' में राम को परीछते

15. वही, पृष्ठ 65.
16. श्री कृष्णदास : लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या, प्रथम सं०, पृ० 188.
17. प्रो० इन्दु प्रकाश पाण्डेय : अवधी लोकगीत और परम्परा, 1957 ई०,पृ०50.
18. प्रो० इन्दु प्रकाश पाण्डेय: अवधी लोकगीत और परम्परा, पृ० 33.
19. वही, पृष्ठ 33.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय लोर्हा (लोढ़ा) घुमाते हुए कौशल्या राम की आंखों में आंसू देखकर कारण पूछती है तो राम उत्तर देता है कि सीता की अवस्था बहुत थोड़ी है इसीलिए वह रो रहा है :-

जबरे कोसिला रानी लोर्हा घुमावेली, राम नयने ढरे लोर ए
किया बबुआ रामचन्द्र भाई, बाप निरधन, किया दहेज पवल थोरे ए ?
... ...

नाहीं कोसिला आमा माई बाप निरधन, ना पवली थोर दहेज हो ।
आमा कोसिला आमा सीता छोट बाडी, एही से नयन ढरे लोर ए ।।[20]

एक अन्य लोकगीत में राम एक साधारण कृषक हैं और सीता उसकी पत्नी । राम ढेकुली चलाते हैं और सीता वृक्षों में पानी देती है । उनकी दुधारी गाय चुरा ली गई तो सीता रोती है । ननद कहती हैं—'चुप रहो भावज ! आंखों का काजल बह रहा हैं ।' सीता उत्तर देती है—'काजल दो पैसे का है,' मिल जायेगा, किन्तु 'लाख रुपइया' की गाय कहां मिलेगी—

रामन्द्र ढेकुली चलावे हो ; धेनु ले गइले चौराइ ।
रोवेली सीता मोर भउजिया हो ; काजरा झरि जाइ,
टाका ही टूकि के काजर हो, ननदी हटिये बिकाई
लाख रुपइया के गइया हो, ननदी कहवां से आई ।।[21]

एक ब्रज लोकगीत में भी राम और सीता का अभिप्राय तीर्थ पर जाने वाले किसी व्यक्ति और उसकी गृहणी से है जो अपने पति को तीर्थ-यात्रा पर जाने से रोकने का प्रयत्न करती है :-

चलंन चलंन वे हरि करें अरु सीता चलन न देइ,
हमारे मन राम जी वसें । [22]

1.1.2. रामकथा या कथांश सम्बन्धी वृत

दोनों भाषा-क्षेत्रों में रामकथा अथवा रामकथा सम्बन्धी विविध प्रसंगों का वर्णन लोकगीतों में उपलब्ध है। इन विभिन्न प्रसंगों के जोड़ने पर रामकथा के प्रचलित लोकरूप को समझने में सहायता मिल सकती है । कश्मीरी की अपेक्षा हिन्दी की प्रादेशिक बोलियों में ऐसे गीतों का विपुल भण्डार मिलता है जिनके आधार पर

20. डा० कृष्णदेव उपाध्याय: भोजपुरी लोकगीत, सं० 2011, पृ० 233.
21. पं० कृष्णदेव उपाध्याय: भोजपुरी ग्राम गीत, सं० 2008, पृ०
22. भारतीय साहित्य, पत्रिका, वर्ष 2, अंक 3, पृ० 85-86.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूरी राम-कथा का समन्वित रूप निर्धारित किया जा सकता है। इसके प्रमुख दो ही कारण हैं—एक तो कश्मीर की अपेक्षा हिन्दी-प्रदेश का क्षेत्रफल विस्तृत है और फिर रामकथा प्रसार का ऐतिहासिक सम्बन्ध भी इसी क्षेत्र के साथ है। यहां हम रामकथा संबंधित दोनों भाषाओं के लोकगीतों को मुख्य प्रसंगों के सन्दर्भ में देखने का प्रयत्न करेंगे।

1.1.2.1 कश्मीरी

रामकथा सम्बंधित लोक-प्रचलित विविध कश्मीरी लोकगीतों में रामकथा का आदर्शमूलक रूप समाहित है। लोक संस्कारों, धार्मिक रीतीरिवाजों या परम्परागत सामाजिक मूल्यों की उत्कृष्टता-प्रतिपादन में सहायक लोकगीत प्रायः रामकथा के आदर्श पात्रों की ओर इंगित करते हैं, रामकथा-प्रसंगों का यत्र-तत्र उल्लेख करते हैं, तथा वस्तु-संगठन में कथा का पूर्णतया समावेश। रामकथा का यह लोक-व्यापी रूप-प्रवाह अधिक सहज, सरल और स्वाभाविक है। लोक व्यापी रामकथा के विविध महत्वपूर्ण प्रसंगों से यहां उद्धरण प्रस्तुत हैं—

1.1.2.1.1 वन-गमन

'वन-गमन' प्रसंग चित्रण में अत्यधिक स्वाभाविकता दिखती हैं। कैकेयी द्वारा राजा से दो वर मांगने का भाव-चित्रण इन शब्दों में हुआ है---

पूजि किथ पोशन करिये बनते, बनते रामजू बोजि ना सोन।
वुछतै कीकी क्या डोल मन ते, दशरथ राज़स लज्य राज मंगने
राम गछि सोज़ुन डडखवन ते, बनते राम जू बोज़ि ना सोन।
वोर मअज आंसय पोशिनूलन ते, श्राप कनि दितिनख मिचर कंड़ि
तिय आव लेखने पोस्तकन ते, बनते रामे जुव बोज़ि ना सोन।

—'सखी! मैंने श्रीराम की पूजा-अर्चना के लिए फूलों के ढेर एकत्रित किये। क्या वे मेरा निवेदन स्वीकार नहीं करेंगे (अत. वन-गमन का विचार छोड़ देंगे)! कैकेयी का मन पलट गया—राजा दशरथ से अपने लिए राज और राम के लिए वनवास मांगा। पुस्तकों में इस बात का भी उल्लेख है कि 'पोशिनूलों' (पैंडुकुओं) की मां सौतेली थी जो खाना खिलाने के बदले उनको कांटे खिलाती थी। इस गीत में कैकेयी का लोक-चरित्र सामने आता है और लोक में प्रचलित 'सौत-सौतेले' की विषाक्त भावना अभिव्यंजित हुई है, जिसमें प्रस्तुत प्रसंग का समावेश सुविधा के लिए ही किया गया है।

वनगमन से सम्बंधित एक अन्य लोक-गीत में राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न को आदर्श सप्त ऋषियों सदृश चित्रित किया गया है :-

दशरथ राजन्य अश आसी राम लक्ष्मन वनवासी द्राय (टेक)
सतरेश सथ जन पथकालि आंसी, राम-लक्ष्मन त शत्रुघन,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डण्डकवनस रोज़ान ओसी राम लक्ष्मन वनवांसी द्राय ।
यिमय दशरथ राजन्य ओसी, राम-लक्ष्मन ते बेयि सीता,
बवस त माजि हुंद बोज़ान ओसी, राम-लक्ष्मन वनवांसी द्राय ।

—'राजा दशरथ के अंश रूप—राम-लक्ष्मन 'बनबास' चले गए। प्राचीन काल में राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न सप्त-ऋषियों की भांति दण्डक वन में रहा करते थे। राजा दशरथ की संतति राम लक्ष्मण तथा सीता सदैव अपने माता-पिता की 'आज्ञा का पालन करते थे।' प्रस्तुत गीत में लोक परम्परागत रामायण के पात्रों का आदर्श रूप दर्शाया गया है। लोकमानस में कथा-प्रतिष्ठा का प्रचार इन्हीं लोकोत्तर या असाधारण गुणों के ही कारण अधिक है।

1.1.2.1.2 **कौशल्या के विलाप**

राम वनगमन पर कौशल्या द्वारा विलाप विषयक लोक-भजन में बनगमन का कारण कैकेयी-हठ या वर-याचना के अतिरिक्त साधु-संयासियों द्वारा राम को बन-गमन के लिए प्रेरित किया जाना भी है। मां कौशल्या विलाप इन शब्दों में करती हैं—

गोमै राम डण्डकवन। (टेक)
यि कुसुय शाफ वलनय आव यि कुसुय वेड़ाम कीको चाम।
गछ़िथ राजस बरिनम कन गोमै०
साद सन्यास्य त बेयि वोदासी, यिमै सोन गर आमति ओसी।
यिमय राज़स डोलहम मन गोमै०
हटि कुय माल व्रोट है व्योम मन्दन्यन आरिगोट है गोम०
यति नाय राथ तति नाय धन गोमै०
तमिस छय खीर खंड़च प्रेय, सन्तोशस प्यठ करन वोन्य लय
कंडि मूलन प्यठ बरन वोन्य धन गोमै०

—'राम दण्डक वन चले गए। जाने किस शाप ने मुझे आ घेरा कि कैकेयी की बुद्धि नष्ट हुई और उसने जाकर कुमति से राजा दशरथ के 'कान भर लिये'। हमारे घर साधु-सन्यासी और विरक्त लोग भी आए थे और उन्होंने ही राम का मन वदल दिया (अतः वन-जाने के लिए प्रार्थना की)। मुझे लगा कि मेरे गले का हार कहीं गिर गया और मध्याह्न में ही अन्धेरा हो गया। दिन रात मेरे लिये अब समान हैं। राम को मिष्ठान्न एवं खीर प्रिय है और अब वन में जाकर कंद-मूल आदि खाकर ही दिन-रात संतोष करना पड़ेगा।' उक्त लोकगीत के अन्तर्गत निजी-विरह-व्यथा के अतिरिक्त वन के कष्टों और असुविधाओं को भी गिनाया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम-लक्ष्मण तथा सीता की असह्य विरह-व्यथा से व्याकुल कौशल्या के विलापों का विस्तृत वर्णन कई अन्य गीतों में भी उपलब्ध है। ऐसे ही एक गीत के अनुसार कौशल्या यहां (कश्मीर) के कई 'देवस्थापनों', तीर्थ स्थानों तथा मंदिर-अस्तानों पर जाकर राम के लौट आने की मनौती करती हैं। इन गीतांशों में इसकी सुन्दर अभिव्यंजना हुई है :—

दशि हो गंजिमय अशिमुकामे,
यूरि यितअ लक्ष्मन-रामो वे।
शारिकायि आंगन गंड़िमय सामो,
अकि अकि सामै गाश हो आम,
यिय तति मंजाम तिय वाचामो। यूरि यितअ०।

—मैंने हे राम-लक्ष्मण। 'अशिमुकाम'[23] जाकर तुम्हारे घर लौट आने के वर मांगे। 'शारिका'[24] के 'देवी स्थापन' पर मैंने प्रतिज्ञा-वर-स्वरूप मनौती की। अब तक प्रत्येक बार मुझे 'प्रकाश' मिला, अत: मनोनीत इच्छाएं पूर्ण हुईं, अब यही एक अधूरी आकांक्षा है—तुम्हारे घर लौटने की।' इस तरह इस लोकगीत में आगे अन्य प्रमुख क्षेत्रीय तीर्थ-स्थानों एवं देवालयों का उल्लेख मिलता है।

1.1.2.1.3 दण्डकारण्य में राम-सीता का स्वच्छंद विचरण

दण्डकवन में राम-सीता के स्वच्छन्द विचरण का सुन्दर और विशद वर्णन एक कश्मीरी लोकगीत में मिलता है। गीतांश उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत है :—

सारी ब्राह्मन राम राम परन कुकिलं छि करन गूवेंद गू।
अपारि ओंछाम राम जू तरन सीता वथ हावनस छस,
अयस वयथ कमान वीद ओर परन। कुकिल०...

—'वन में सर्वत्र 'ब्राह्मण' राम नाम का जप कर रहे हैं। कोयल भी गोविंद जी का नाम ऊंचे स्वर में स्मरण करती हैं। उस पार से श्रीराम को आते हुए देखा, जिनके साथ-साथ सीता जी रास्ता बता रही हैं। राम के हाथों में धनुष है और वे वेदों के श्लोक पढ़ रहे हैं। यहां अत्यन्त सरल रूप में राम-नाम माहात्म्य एवं वेदों की प्रतिष्ठा का समन्वित रूप मिलता है। प्रकृति के कण-कण में राम का वास है और राम वेदों पर आस्था रखते हैं।

एक लोक प्रसिद्ध विवाह-गीत में राम-सीता-विवाह, वन-गमन, सीता-हरण, सेतु-बंध आदि प्रमुख प्रसंगों का उल्लेख कुछ भिन्न प्रभावपूर्ण शैली में हुआ है। दूल्हे

23. 'अनंतनाग' और 'पहलगाम' के बीच का एक गांव। यहां एक 'अस्तान' है, जहां हिन्दु-मुसलमान दोनों मनौतियां करते हैं।
24. श्रीनगर में शारिका देवी का मंदिर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के स्वागत में गाये जाने वाले इस लोकगीत के बोल इस प्रकार हैं—

पूरे खोतखो सिर्या वेशो दूरे करयो नमस्कार
च़ति छुख सारिनइ प्रानावेशो, सरितव तप रेशव सदाशिव
सीतायि ओसुय सोन सुन्द कीशो, खअरिथ त निमहम डंड़कवन
रामचन्द्र लक्ष्मन सअथ्य तस डेंशिव सरितव तपरेशव सदाशिव
कनिका रथायि वन वयव रेशव, पअरिथ दिच़ख दण्डक वन,
राम च़न्द्रुन सुम सोथ यिथनो मालि मशेव, सरितव···

—'पूर्व से सूर्य-वेश में उदित हुए, दूर से ही हम नमस्कार करती हैं। तुम सबके प्राणाधार हो। ऐ तपस्वी-ऋषियो। सदाशिव का नाम ले लो। सीता जी के स्वर्ण-केश थे, जिसे राम-लक्ष्मण के संग दण्डकवन जाना पड़ा। राम-लक्ष्मण के संग उनके दर्शन वन में ही होंगे। वन के ऋषि-मुनियों ने एक कन्या को पाला-पोषा फिर उसे सजधज कर दण्डकवन भेज दिया।···कहीं आप को रामचन्द्र द्वारा निर्मित सेतुबन्ध न भूल जाए।'

1.1.2.1.4 सीता-हरण

'सीता-हरण' सम्बन्धी वृतांत में द्वारपाल जटायु की उपस्थिति में रावण द्वारा 'गोसाईं' के वेष में आकर सीता को बलात पीठ पर लाद कर उठा ले जाने का वर्णन इन पंक्तियों में मिलता है—

जटायु ओस डीडिवानी, रावनु आव लागिथ गोसानी
सीता नियन अटवारि लो लो, श्रीराम मन म्यगोम तारि लो लो।

1.1.2.1.5 सीता-त्याग

राम द्वारा सीता-त्याग का कारण लोकापवाद तथा सीता की ननद द्वारा राम को सलाह देना वर्णित है :

लूकव्य राजस यलि बरि कन, व्येनि दोप बअयस निथ छ़ुनुन वन।
नते मारुन तलवारि लो लो···

—लोगों ने अपवाद सुना कर जब राम का मन फेर लिया, बहिन ने आकर राम को सलाह दी कि वह सीता को वन में अकेली छोड़ आए या तलवार से मार डाले।

प्रस्तुत गीत में ही सीता का लक्ष्मण-संग वनगमन, सीता को अकेले छोड़कर लक्ष्मण का अयोध्या लौटना तथा सीता के करुण विलापों आदि का वर्णन सीता के ही शब्दों में मिलता है—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सअम्य येलि युतनम लक्ष्मन जी, पछ छय न यिवान म्य छि चअन्य द्री
लक्ष्मनस ओश वसान दारि लो लो ।
त्रेशा लजिम म्य हूरे गछित लक्ष्मनन अनिम चूरे,
गंड़ करिथ थवनम यारि लो लो श्रीराम ।
हारनि ताप ददुम ताल्युन, सअथ्य छुमने कांह् गछा माल्युन,
पद ददिम ख्रोर ननवारि लो लो श्रीराम ।

—लक्ष्मण जी को मेरे साथ वन भेजा । मुझे प्रसन्नता हुई थी । उनकी आँखों से अश्रु बह रहे थे । मुझे प्यास लगी और लक्ष्मण चुपचाप पानी लाकर चीड़ के वृक्ष के साथ बांध कर चल दिए । अषाढ़ के मास में प्रचण्ड धूप से मैं जल-भुन गई । मेरे नंगे पांव भी झुलस गए । कोई साथी नहीं है जो मायके ही चली जाती ।'

1.1.2.2 हिन्दी

हिन्दी लोकगीतों में रामकथा का अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन मिलता है । रामकथा के प्राय: सभी प्रमुख प्रसंगों विषयक विविध प्रकार के लोकगीत उपलब्ध हैं ।

1.1.2.2.1 राम-जन्म

दशरथ के संतान-शोक की अभिव्यंजना एक भोजपुरी ग्राम गीत में इस तरह हुई है—एक दासी राजा दशरथ को जगाते समय मन में सोचती है कि प्रात: ही उसने एक नि:संतान पुरुष का मुंह देखा है, जाने दिन कितना बुरा रहेगा । राजा को क्षोभ होता है ।[25]

एक ब्रज लोकगीत में अयोध्या के माली द्वारा दी गई 'जन्म घुटी' या औषधि खाने पर सभी दशरथ-रानियों से पुत्र होते हैं और आनंद में जब राजा ने द्रव्य लुटाया तो कैकेयी कहती है—ये बालक तो वन जायेंगे, इतना आनंद क्यों मना रहे हो—

चौकी पर बैठे राजा दशरथ आए, नीचे कौसिला
राजा हमें ओ संपति की ए साध, संपति कल देउ, कुमरु तुम्हारे होई
... ...
भीतर से बोली केकइया, राजा थोरी-थोरी द्रव्य लुटाओ,
जे लाल बन कूं जो जाइंगे ।[26]...

एक भोजपुरी लोकगीत में भी ऐसा ही वृतांत मिलता है—एक औषधि को पीस कर एक कटोरा भर कौशल्या और सुमित्रा पी लेती हैं और सिल को धोकर बचे

25. पं० कृष्णदेव उपाध्याय: भोजपुरी ग्राम-गीत, द्वितीय भाग, पृ० 10-11.
26. भारतीय साहित्य, पत्रिका, वर्ष 2, अंक 3, पृ० 68-69.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुए अंश को कैकेयी। तीनों गर्भित होती हैं—

आरे रगरि रगरि जरिया पिसलों कोसिला रानि पीयगु हो
एक खोरा पियली कोसिला रानि, एक खोरा सुमित्र रानी हो
आरे सिलि दोई पियली केकइया रानि तीनु जानी गरभसेनु हो[27]

यहाँ भी पुत्र-जन्म पर दशरथ द्वारा धन-दान करने पर कैकेयी उनसे कहती है—सोच समझकर कोष लुटा दो, क्योंकि भरत को भी इससे कुछ चाहिए। १२ वर्ष की आयु में राम को वन जाना पड़ेगा—

कवरहिं बोले ली केकइया रानी, सुनु राजा दशरथ हो।
ए राजा जानि बूझि अवध सुढइह भरत कछु नाहे ले हो।[28]...

बुलंदशहर के एक लोकगीत के अनुसार गर्भवती कौशल्या के अनुरोध पर राजा दशरथ बाग से 'अवध-फल' चुरा कर लाते हैं और उनके घर लौटने पर कौशल्या राम को जन्म देती है[29]।

1.1.2.2.2 सीता-जन्म

सीता-जन्म वर्णन-प्रसंग में अकाल पड़ने पर राजा जनक के हल चलाने और पृथ्वी से सीता की प्राप्ति का पूरा वृतांत एक ब्रज लोकगीत में उपलब्ध है—

जेठ जो उतरयो ऐ, असाढ़ जी लाग्यो, इंदरु सूखा डारी।

रंग बरसैगो हां, राम रंग बरसैगो ।।
राजा जनक ने पंडित बुलाए, करि रहे सोच विचारी।...
....
राजा जनक ने कन्या लेकै रांनी नहाई।
राजा-रानी लै घर आए, घर-घर बटति बधाई।[30]

1.1.2.2.3 धनुष-यज्ञ

एक ब्रज लोकगीत के अनुसार सीता घर लीप रही थीं वहां रखा हुआ भारी 'धनुष' को उठाकर उसने वह स्थान भी लीप दिया। इस पर राजा जनक को

27. डा० कृष्णदेव उपाध्याय : भोजपुरी लोकगीत, पृ० 147.
28. दे० डा० कृष्णदेव उपाध्याय: भोजपुरी लोकगीत, पृ० 148-149.
29. दे० डा० चन्द्रकला त्यागी: बुलन्दशहर के संस्कार सम्बन्धी लोकगीत (अ० शो० प्र० आगरा) पृ० 147-148.
30. दे० भारतीय साहित्य, पत्रिका, वर्ष 2 अंक 3 पृ० 72-73.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आश्चर्य हुआ और सीता को सयानी समझकर धनुष उठाने वाले से ही उस का विवाह करना निश्चित किया—

बेटी सितलदे न लिपनौ डारो, धनुष धर्‌यो ए उठाइ, न हो।
बाहिर ते रे जनक घर आये तौ किन्ने जिअ धनुष उठाओ न हो।
सीता की मैया यों उठि बोली, बेटी सितल दे,
तें लिपनों डारो, तौ धनुष धर्‌यो ऐ उठाइ न हो।
राजा जनक मन अतिरजु मांनों, तौ भइ ऐ ब्याह के जोग न हो।[31]

'धनुष-यज्ञ' के समय सीता धनुष की गरिमा कम करने के लिए पार्वती की बन्दना भी करती है।[32]

1.1.2.2.4. राम-सीता विवाह

विवाह-प्रस्ताव की सुन्दर लोकवार्ता एक लोकगीत में मिलती है। दशरथ हाल-चाल पूछते हैं। जनक राजपाट होने पर भी चार कुंवारी लड़कियों की चिन्ता से ग्रस्त हैं। दशरथ अपने चार पुत्रों का व्याह रचवाने का प्रस्ताव रखते हैं:—

राजपाट सब कुछ बाटइ मोरे रे, औ है कन्या मोरी चारि रे,
जेहि घर कन्या कुंवारी विराजई, तेहि किन पूंछवु हाल रे।
चारि बेटवनें हैं मोरे जनक जी, है चारिउ चार कुंवार रे।
हंसि खेलि घेरिया बियाह रचावउ, हम लैवइ चारिउ बियाहि रे।[33]

जनक आर्थिक अभाव का दुख रोते हैं तो दशरथ उन्हें 'नमक, तेल और धान' आदि देने का विश्वास दिलाते हैं:—

ना घर नुनवा रे, ना घर तेलवा, ना घर कोठिलवा मोरे धान रे,
चूल्हवा धरन नहि आवे समधिन देई कैसेक रचउं बियाह रे।
हम देबइ नुनवा रे, हम देबइ तेलवा रे, भरि देवइ कोठिला में धान रे,
हंसि खेलि सीता का व्याह रचउ रे, हँसत अयोध्या क जाउ रे।[34]

लोकमर्यादा-युक्त ऐसे गीतों की भी कमी नहीं है जो रामकथा से सम्बन्धित हैं। विवाह-पूर्व राम सीता से आग्रह करते हैं कि वह उसकी बगल में बैठें, किन्तु विवाह-

31. वही, पृ० 75.
32. डा० चन्द्रकला त्यागी: बुलन्दशहर के संस्कार सम्बन्धी लोकगीत (अ० शो० प्र०) आगरा, पृ० 146-47.
33. दे० श्रीमती राजारानी वर्मा: हमारे संस्कार गीत, पृ० 163-64.
34. वही, पृ० 164-65.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संस्कारों का उल्लेख करके सीता मना करती है :—

जो तुम राजा जनक की धेरिया रे, बैठउ न बगल हमारि रे,
कइसेक बइठउँ राजा तुम्हारी बगलिया, अबही मइ कन्या कुंवारि रे।
सोने के थाल कलस भरि पानी, कुस लइ देइहइं दान रे,
सोने की मुंदरिया लइ बाप संकलपइं, तब बइठउँ बगल तुम्हारि रे।[35]

विवाहोपरांत राजा जनक दशरथ से कहते हैं—सीता बड़ी सुकुमार है, उसे अपने कलेजे में ही रखिएगा :—

दशरथ गरवा मिलत हैं जनक जी, सुनउ समधि बात हमारि,
सीतल धेरिया अलख सुकुंवारी रे, राखेउ जियरा के बीच।[36]

एक ब्रज लोकगीत में सीता को "भाट की बिटरिया' कहा गया है जो ताल के किनारे जो की रखवाली करती है ओर राम से वहीं भेंट होती है। इसी गीत में दोनों के विबाह का भी वर्णन मिलता है :—

रामु अहेरें नीकरै लछिमनु लागे हैं साथ, सीता को मंगल गाइऐ।
एक वन नांख्यौ, दूसरौ नांख्यौ, तीजे वन लगी पियास। सीता को···
तनिक बिटरिया भाट की, रखावति है जौ को खेतु। सीता को···
भाट बिटरिया जानकी वौरू जे हैंगे श्री राम। सीता···
राम-सिया जोढ़ी बनी, दोउ मिलि होइगो ब्याउ, सीता को···[37]

1.1.2.2.5 कंगन की गांठ खोलने में असमर्थ राम

एक लोकगीत का सार इस प्रकार है—जिस राम ने एक क्षण में धनुष तोड़ दिया वह सीता के कंगन की गांठ खोलने में असमर्थ है:—

—जनक के अंगना भरी मइँ भारी, जुरी आई सबु नारी जी ।।
चारयौ भूप बराबरि बैठे, कहा परस्यौ मैहतारी जी ।।
अंचर ओट सिया मुसिक्यांनी चों सकुची तुम नारी जी ।।
तोरत धनुस पलक ना लाग्यो कंगन-गांठि कहा मारी जी ।।[38]

कवि तुलसीदास के नाम से प्रचलित एक अवधी लोकगीत में भी ऐसा ही वर्णन

35. दे० श्रीमती राजारानी वर्मा: हमारे संस्कार गीत, पृ० 168.
36. वही, पृ० 163.
37. भारतीय साहित्य, पत्रिका, वर्ष 2, अंक 3, पृ० 74.
38. भारतीय साहित्य-पत्रिका, वर्ष 2, अंक 3, पृ० 73.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिलता है :—

सुनियत है तीनों लोक के नायक कैसे का चाप चढ़ायो
जुरि आइ रनिवास जनक की, सिय कंगन उरझायो,
छोरे न छूटे सिया जी को कंगन गांठी का मरम न पायो,
जल डूबत गजराज उबार्यो, शंकर चाप चढ़ायो,
खम्भ कोरि हिरनाकुस मार्यो नरसिंह नाम धार्यो ।
तुलसीदास भजो भगवानै, सीता वियाह घर लायो ।।[39]

1.1.2.2.6 परशुराम-आगमन

एक भोजपुरी लोकगीत के अनुसार विवाहोपरांत अयोध्या लौटते हुए राम के साथ परशुराम की भेंट होती है। परशुराम ललकार कर कहते हैं—मेरी ब्याही हुई सीता को कौन ले जा रहा है, मैं धनुष चलाकर मार डालूंगा। सीता पालकी से निकलकर विनती करती है कि धनुष भारी है जिसके टूटने में विलम्ब होगा। परशुराम न माना। धनुष का पहला बाण यमुना में गिरा, दूसरा कुरुक्षेत्र में और तीसरा भी यमुना जल में। धनुष टूट गया और परशुराम भाग गए :—

ए बाडा हो पराते सरहजि डंडिया फानावेली,बीचवा भेंटेले पारशुराम ए।
ए हमरी वियाहलि सीता के ले जाला, मारबि धेनुका चलाई ए
डंडिया उघारि जब सीता अरज करे, पासाराम अरज हमार ए।
बालक राम धेनुक बड़ भारी ; टूटत बिलम बड़ होई ऐ ।।
ए पहील बान गिरेला जमुना दहे ; दूसरा गिरल कुरुखेत ए।
ए तीसर बान गिरे ला जमुना दहे, टूटी पराल पासाराम ऐ।। [40]

1.1.2.2.7 अग्नि-परीक्षा

एक भोजपुरी लोकगीत के अनुसार विभिन्न साक्षियां दे-देकर सीता राम को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करती है। राम के आदेश से क्रमशः सीता अग्नि हाथ में लेती है तो वह ठण्डी पड़ती है ; सीता सूर्य को हाथ में उठा लेती है जो अस्त हो जाता है ; सीत सर्प को हाथ में उठा लेती है जो फन फैलाकर बैठा रहता है ; सीता ने गंगा हाथ में ले ली जो एक क्षण में सूख गई ; इसी तरह सीता द्वारा तुलसी भी हाथ में लेते ही सूख गई :-

इहो किरियवा ए सीता हम ना पतियाइबि अदित बिचरवा हम लेबि ए
जबरे सीता देई अदीत हाथे लिह लीरे, अदित छपित होई जाइ ए

39. दे० प्रो० इन्दु प्रकाश पाण्डेय: अवधी लोकगीत और परम्परा, पृ० 223.
40. डा० कृष्णदेव उपाध्याय: भोजपुरी लोकगीत, पृ० 226-227.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इहो किरियवा ए सीता हम ना पतियाइबि, सरप बिचरवा हम लेबि ए।
जब रे सीता देई सर्प हाथ लिहली रे, सरप बइठेले फेटा मारि ए।
इहो किरियवा सीता हम ना पतियाइलि, गंगा बिचरवा हम लेबि ए
जब रे सीता देई गंगहि हाथ लिहली रे, गगहि परि गइले रेत ए
इहो किरियवा ए सीता हम ना पतियाइबि, तुलसी बिचरवा हम लेबि ए
जब रे सीता देई तुलसी हाथे लिहली, तुलसी गहली सुखाईं ए।[41]

1.1.2.2.8. सीता द्वारा रावण-वध

एक व्रज लोकगीत के अनुसार लंका में रावण-मृत्यु उपरांत राम-सीता अयोध्या पहुंचे तो सीता राम से कहती है कि अभी उन्होंने 'रमनियां' मारी हैं, रावण नहीं। रावण की दो सहस्र भुजाएं हैं जो लंका में निवास करता है। भरत-शत्रुघ्न सेना समेत पलंका गये, उन्हें नाकासुर ने अयोध्या में उठाकर पटक दिया तो सीता स्वयं रणक्षेत्र में जाकर रावण को खा जाती हैं। पलंका से सीता अयोध्या न लौटकर कलकत्ता में कालीमाई हो गईं। इस गीत पर शाक्त प्रभाव स्पष्ट है :—

जब सीता ने कही सुनौ हरि बात हमारी
रामनु मार्यौ नांइ रमनियां तुमने मारी
...   ...

कोटु पलंका ए मेरी सुनिबर्ती जगदीस
दइ हजार भुजा रामन के बौरु सहसे सीस
...   ...

कलकत्ता की काली बनि गई सबरे धार कूं जाइ।[42]

1.1.2.2.9. सीता-वनवास

कुछ व्रज-लोकगीतों में सीता-वनवास का कारण सीता द्वारा ननद के अनुरोध पर रावण का चित्र बनाना ही है। सीता द्वारा बनाया गया चित्र देखने पर राम उसे वनवास देते हैं।[43] एक अन्य लोकगीत में सीता चित्र बनाकर लंका के बारे में ननद को समझाती हैं और ननद की शिकायत पर ही उसे वनवास मिलता है :—

अरी मेरी भाभी लंकाभेद हमें री बताओ, तो कैसे लंका बनी है री
अरी मोरी ननदी बावन कोट, छप्पन दरवाजे, तो लंका लिखि री बनाई है

41. डा० कृष्णदेव उपाध्याय : भोजपुरी लोकगीत, पृ० 235-236.
42 दे० भारतीय साहित्य-पत्रिका, वर्ष 2, अंक 3, पृ० 88-93.
43. दे० भारतीय साहित्य-पत्रिका, वर्ष 2, अंक 3, पृ० 79-82.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरे बीरा या कूंबन में खुंदाजो, रावण में रह आई है ।[44]

एक भोजपुरी लोकगीत के अनुसार लक्ष्मण के साथ बन जाती हुई सीता अपने कोइछा में से सरसों चलते समय छींटती रही ताकि वापिसी पर देवर जब यहां से निकलेंगे तो सरसों की कन्दरी (डंठल) तोड़ कर भूख तृप्त करेंगे

कोछवा के लिहिन सरसइया छिटत सीता निकसीं
सरसों, यही के अइहीं लछिमन देवरा कंदरिया तोरि खइहैं ।[45]

सीता को निद्रामग्न वन में छोड़कर लक्ष्मण के चले जाने पर सीता विलाप करती हैं और वन की तपस्वियां उसे सान्त्वना देती हैं :—

कहां गये लछिमन देवरा त हमें न बताऊँ ।
हिदरइया भर देखतेऊं नजर भर रोउतेऊं
को मोरे आगे पीछे बैठइ, को लट छोरे ।
को मोनी जागि रयनियां त नरबा छिनाए ?

....

सीता हम तोरे आगे पीछे बैठव हम लट छोरब
हम तोरी जगबै रयनियां त नरवा छिनउबै ।[46]

1.1.2.2.10. पुत्र–जन्मोत्सव

सीता की पुत्र-कामना की सुन्दर अभिव्यंजना एक भोजपुरी लोकगीत में हुई है। श्रृंगार करके सीता राम की सेज के पास जाती है । कारण पूछने पर सीता कहती है– आप तीनों लोकों के स्वामी हैं । मुझे भय है—नैहर में न मेरा कोई वीर भाई है, न ससुराल में देवर ही । गोदी मेरी सूनी है । आकांक्षाएं कैसे पूर्ण होंगी । राम उसके आंसू पोंछते हुए कहते हैं—तुम्हें लाल-पीले वस्त्र पहनाऊंगा, चौक पर बैठाऊंगा, अपनी पगड़ी की पेच और आंखों के भीतर रखूंगा—

···लाल पिअर पहिराइबि चउक बइठाइब हो
रानी । तोहरा के राखबि पगिया पेंच नयनवां के भीतर हो ।[47]

---

44. धूल धूसरित मण्यिां । लेखिका—सीता, दमयन्ती, आदि, पृ०37.
45 श्री कृष्णदासः लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या, प्र० सं० पृ० 111.
46. श्री कृष्णदासः लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या, प्र० सं०, पृ० 112
47. दुर्गा शंकरप्रसाद सिंह : भोजपुरी लोकगीतों में करुण रस, सं० 2001, पृ० 23.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक साधारण सास की भांति कौशल्या की अपनी पुत्र-वधू सीता के प्रति कितनी आकांक्षाएं हैं—सीता का गवना होता, चारों पुत्र विदा करके जाते। सीता रसोई बनाती, दशरथ खा लेते। सीता महल में सोतीं, राम उसे मनाते; सीता को पुत्र होता, सुखदाई सोहर सुनती—

मोरी सीता का होत गवनवां, तो चारिउ भइया आने जात्यो रे
मोरी सीता करहि रसोइया, दशरथ राजा ज्यावें रे
मोरी सीता सुतहि महलिया, तो राम नेवाजै रे
मोरी सीता के होत होरिलवा, सुनित सुख सोहर रे[48]।

एक भोजपुरी लोकगीत में 'पुत्र न होने' के व्यंग से क्रुद्ध होकर सीता मायके चली जाती है और मां के आदेश से कुछ लोक प्रचलित विश्वासों—कच्चे बांस काट कर उसका धूप या छरड़ी (डाली) बनवा कर उसमें तिल-चावल भरने से रुष्ट पति को प्रसन्न करने तथा सूर्य-देवता की पूजा करने पर उसे पुत्र उत्पन्न होता है। पति (राम) को सोहर सुनने बुलवाया जाता है जो सप्रसन्न बगीचा लगवा कर सीता की आकांक्षाएं पूरी करते हैं।[49]

सीता द्वारा जंगल में जन्मे दोनों पुत्रों के प्रति कहे गये इन शब्दों में सरल ममत्व की पूरी छाया द्रष्टव्य है—तुम्हारा जन्म विपत्ति में हुआ। यहां कुश का ही ओढ़ना-बिछौना है। बन-फल खाकर संतोष करना है। अयोध्या में जन्म हुआ होता तो राजा सारा नगर लुटा देते और कौशल्या अपने सब वस्त्राभूषण दान करतीं—

तुम पूत भयेहु बिपति में, बहुते सांसति में,
पूत कुसै ओढ़न कुस, असन बन फल भोजन।
जो पूत होत अयोध्या में, वही पुर पाटन।
राजा दशरथ पटना लुटौ तें, कौशल्या रानी अभरन॥

इसी लोकगीत में आगे सीता अयोध्या नाई द्वारा सन्देश भेजती है। राम-लक्ष्मण को सीता को बन से बुलाने का आदेश देते हैं। लक्ष्मण द्वारा सीता से अयोध्या लौटने का अनुरोध करने पर वह कहती है—

देवरा जाहु लवटि तू अयोध्या त हम नहि जावैं
लछिमन, अंखियां में पटियां बंधवा, अयोध्या दिखावा।[50]

48. इन्दुप्रकाश पाण्डेय : अवधी लोकगीत और परम्परा, पृ० 62.
49. दे० डा० कृष्णदेव उपाध्याय : भोजपुरी लोकगीत, पृ० 132-134.
50. दे० श्री कृष्णदास : लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या, पृ० 114–117.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक अन्य भोजपुरी लोकगीत में वाल्मीकि-आश्रम में पुत्र-जन्मोत्सव का विशद् वर्णन मिलता है। अयोध्यावासी इस उत्सव में सम्मिलित नहीं होते हैं। सीता पालकी पर बैठकर पुत्रों समेत अयोध्या लौट कर देखती है। राजा ने धन-धान्य और हाथी, गाय, भैंस सब दान में दे दिए हैं तथा स्त्रियों ने अपने वस्त्राभूषण सप्रसन्न लुटाये हैं।[51]

1.1.2.2.11 पृथ्वी-प्रवेश

ब्रज लोकगीत के अनुसार शिकार खेलते हुए राम-लक्ष्मण की वन में लव-कुश से भेंट होती है। लव-कुश के हाथ से वे पानी पीते हैं, राम को ज्ञात होता है कि ये सीता के ही पुत्र हैं। वे सीता से मिलने जाते हैं, जो उन्हें देखते ही पृथ्वी में समा जाती हैं और राम के हाथ में सीता के केश ही आ सके—

खेलत रूप सरूप रानी के दोनों बालिका।

... ...

फटि गई धरती, समाई गई सीता रामा, केस रामु जी के हात।[52]

भोजपुरी लोकगीत में सीता द्वारा अपनी पवित्रता की विविध साक्षियां देने पर भी जब राम उन्हें वनवास का आदेश देते हैं, सीता क्रुध होकर कहती है—'ऐसे पुरुष का मैं मुंह नहीं देखना चाहती हूं, जिसने मुझे वनवास दिया। संसार से मुक्ति पाने के लिए पृथ्वी फट जाती, जिसमें मैं समा जाती।' ऐसा ही होता है—

अइसन पुरुसवा के मुंह नाहि देखबि, जिनि राम देले वनवास ए।
फटि जइती धरती अलोप होई जइती रे अब ना देखबि सनसार ए।।[53]

1.1.3. निष्कर्ष

दोनों भाषाओं के लोकसाहित्य में जन-मानस में व्याप्त राम कथा की अभिव्यंजना विविध रूपों में हुई है, जिनमें से प्रधान दो ही रूप हैं—नाम-मात्र के लिए रामकथा के पात्रों का उल्लेख और राम कथा या कथांशों से सम्बन्धित वृत्त। लोक-साहित्य की प्रमुख विशेषताओं और लोक तत्वों के निर्वाह की दृष्टि से दोनों में साम्य मिलता है। रामकथा के पात्रों का नामोल्लेख प्रधानतः दोनों भाषाओं के संस्कार सम्बन्धित लोक-गीतों में मंगलाचरण स्वरूप हुआ है। पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों, रीति-रिवाजों तथा अन्य घटना प्रसंगों के चित्रण में रामकथा

51. दे० डा० कृष्णदेव उपाध्याय : भोजपुरी लोकगीत, पृ० 116-118.
52. भारतीय साहित्य—पत्रिका, वर्ष 2, अंक 3, पृष्ठ 84-85.
53. डा० कृष्णदेव उपाध्याय : भोजपुरी लोकगीत, पृष्ठ 236.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के पात्रों के नामोल्लेख द्वारा आलौकिकता या लोकादर्श की भावना का प्राधान्य न रह कर प्रसंग चित्रण में अधिकाधिक स्वाभाविकता, सारल्य और सहजता का समावेश होता है। स्वतंत्र रूप से रामकथा से सम्बंधित प्रसंगों के चित्रण में भी परिनिष्ठित साहित्य की भांति आलौकिक या लोकादर्श के रूप को प्रश्रय न मिल कर घटनाओं का चित्रण सहज मानवीय धरातल पर ही हुआ है। लोक-साहित्य में रामकथा के आदर्श और आलौकिक पात्रों का चित्रण भी अधिकतर मानवीय गुण-दोषों एवं संवेदनाओं से युक्त होकर अकृत्रिम और सहजरूप में मिलता है। यही कारण है कि लोक-साहित्य में अन्य पात्रों के अतिरिक्त राम और सीता भी लोक-परिवार के ही साधारण सदस्य प्रतीत होते हैं—राम हमारे अपने ही आत्मीय, सगे-स्वजन और बन्धु लगते हैं तथा सीता अपने ही परिवार की बहू-बेटी या बहिन प्रतीत होती हैं। जन-मानस में व्याप्त रामकथा के प्रायः सभी प्रसंगों का चित्रण दोनों भाषाओं के लोक-साहित्य में प्राप्त है, हिन्दी की प्रादेशिक बोलियों में जिनका अपेक्षाकृत अधिक विस्तार मिलता है। दोनों भाषा-क्षेत्रों के लोकसाहित्य में राम-कथा विषयक कुछ ऐसे प्रसंगों का चित्रण भी हुआ है, जिनका विशिष्ट भाषा के रामकथा काव्यों में कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। इस दृष्टि से भी दोनों भाषा क्षेत्रों में व्याप्त रामकथा के रूप को समझने के लिए लोक-साहित्य का अध्ययन अनिवार्य है।

1.2 रामकथा-काव्य का प्रारंभ

1.21 कश्मीरी रामकथा-काव्य

कश्मीरी घाटी में बोली जाने वाली भाषा 'कश्मीरी' भारत की 15 प्रमुख भाषाओं में से एक है। कश्मीरी भाषा की कई बोलियां हैं, किन्तु घाटी के दक्षिण-पूर्व में जम्मू-प्रान्त के अन्तर्गत किश्तवाड़ की बोली 'किश्तवाड़ी' इसकी एक प्रधान उपभाषा है। कई दूर की पहाड़ी-बोलियों पर भी इसका अधिक प्रभाव है। 'कश्मीरी' दक्षिण की ओर पीरपंचाल के पास दरिया चिनाव के उत्तरी छोर में फैली पहाड़ियों में विभिन्न बोलियों के साथ-साथ सम्मिलित रूप में बोली जाती हैं—वे बोलियां डोडा की 'पोगली' व 'सिरजी' और 'रामबनी' हैं।[54] कश्मीरी एक प्राचीन भाषा है। कल्हण ने अपनी 'राजतरंगिणी' (रचनाकाल 1149 ई) में कई वस्तुओं और जातियों के ऐसे नामों का उल्लेख किया है, जो आज के कश्मीरी नाम-रूपों से भिन्न नहीं है।[55] इन शब्दों का प्रयोग आज भी मूलरूप में ही होता है। श्री ग्रियर्सन ने कश्मीरी को दर्दी-परिवार के अन्तर्गत स्वीकार किया है। जिस पर अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों का प्रभाव बताया है।[56] कई विद्वान कश्मीरी

54. लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया, वाल्यूम 8, भाग 2, पृष्ठ 233.
55. दे० अब्दुल अहाद आज़ाद—कश्मीरी जबान और शायरी—भाग 1 पृष्ट 23 18-19
56. लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया, वा० 8 पृ० 235.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को भारतार्य परिवार के बाहर की भाषा न मानकर इसका विकास संस्कृत-प्राकृत से ही मानते हैं ।[57] श्री पृथ्वीनाथ 'पुष्प' लिखते हैं 'कश्मीरी को दारद-परिवार का संतान बताना युक्तियुक्त नहीं । ग्रियर्सन ने शीना और कश्मीरी के जो तुलनात्मक रूप-चित्र दिये हैं, उनमें उतना मौलिक साम्य नहीं कि कश्मीरी को भारतर्य परिवार के बाहर माना जाय ।[58] कश्मीरी को दर्दी-परिवार का न भी माना जाय किन्तु इस पर दर्दी परिवार की भाषाओं के अत्यधिक प्रभाव से इनकार नहीं किया जा सकता । कश्मीरी में अपभ्रंश काव्य-रचना ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी से माना जा सकता है । 'पुष्प' जी के शब्दों में, 'ललद्यद' (14वीं शती) की वाणी में कश्मीरी का जो लालित्य निखर उठा है, उसे अपभ्रंश में से उभरते-उभरते कम से कम दो सौ वर्ष लगे ही होंगे । और इधर 'महानय प्रकाश' (12वीं शती) में शितिकण्ठ ने 'सर्वगोचर देश-भाषा' (कश्मीरी) के जो नमूने दिए हैं वे प्राकृत की अपेक्षा अपभ्रंश के निकट होते हुए भी 'ललद्यद' की 'कश्मीरी' से विशेष दूर नहीं । स्पष्ट है कि जब शैव-सिद्धों ने कश्मीरी को शैव-तंत्रों का लोकसुलभ माध्यम बनाया तो धीरे धीरे कश्मीरी साहित्य का भी माध्यम बनती गयी ।[59]

ललेश्वरी के 'वाखों' और शेख नूरुद्दीन वली (नन्द-ऋषि-14वीं शती) के 'श्लोकों' में कश्मीरी भाषा का उत्कृष्ट रूप मिलता है जो जैनलाबुद्दीन 'बड़शाह' के शासन-काल (1420-1470 ई०) तक खूब पनपा । 'बड़शाह' ने कश्मीरी को ही प्रोत्साहन एवं प्रश्रय दे दिया । फलतः कई प्रबन्ध-काव्यों की भी रचना हुई । महावतार कृत 'हरिवंश' के आधार पर 'बाणासुर-वध' कश्मीरी भाषा का पहला प्रबंध-काव्य माना जाता है ।[60] 'बड़शाह' के ही शासन-काल अनंतर प्रसिद्ध कश्मीरी कवि युद्ध भट्ट और सोम पंडित ने क्रमशः 'जैना-विलास' और 'जैना-चरित' की रचना की ।

कश्मीरी में 18वीं शताब्दी तक रामाख्यान से सम्बन्धित कोई भी रचना उपलब्ध नहीं है, इसके कई कारण हैं । 'बड़शाह' के शासन-काल के पश्चात् फारसी के राज-भाषा बनने पर कश्मीरी को प्रश्रय न मिल सका । कश्मीरी के लब्ध प्रतिष्ठित स्थान पर फारसी आसीन हुई और कश्मीरी भाषा का अवसान प्रारम्भ हुआ । कश्मीरी साहित्यकारों ने अपनी मातृभाषा से किनारा करके विदेशी भाषा फारसी में ही काव्य-रचना करने में अपना गौरव समझा और कश्मीरी को गंवारू भाषा की दृष्टि से देखा जाने लगा । इस काल की कश्मीरी रचनाएं अधिकतः अर्ध-शिक्षित या अशिक्षित वर्ग के अपरिपक्व उद्गार मात्र हैं और किसी भी साहित्यिक

57. दे० अब्दुल जहाद आजाद —कश्मीरी जबान और शायरी भाग 1, पृ० 9–18.
58. हिन्दी साहित्य कोश, प्रथम संस्करण, पृ० 210.
59. वही ।
60. श्री पृथ्वीनाथ पुष्प—कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृ० 3.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समृद्धि को प्राप्त न हो सकीं। उत्कृष्ट रचनाएं जितनी भी लिखी गयीं, रचनाकारों को कोई प्रोत्साहन न मिला और यही कारण है कि इस काल की अधिकांश रचनाएं अप्राप्य हैं। इस काल का कश्मीरी काव्य अधिकतः फ़ारसी प्रेमाख्यान काव्य से प्रभावित है। यह सम्भव है कि इस काल में फारसी भाषा में राम-काव्य की रचनाएं हुई हों, किन्तु अब तक ऐसा कोई उल्लेख प्राप्त न हो सका। कश्मीरी पंडितों में फ़ारसी-'रामदासी-रामायण' का प्रचार आज भी है किन्तु इसके कश्मीरी में ही रचना होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता।

कश्मीर में प्रारम्भ से ही शैव-सम्प्रदाय का अधिक प्रचार-प्रसार रहा। आचार्य सोमानंद (9वीं शती) की परम्परा में अनेक शैव-सिद्ध महापुरुषों ने यहीं जन्म ले लिया। परिणामस्वरूप विविध शिव के स्तोत्रों एवं शैव-काव्यों की रचना हुई। ललेश्वरी और नन्द ऋषि के 'वाखों' और 'श्लोकों' तथा परवर्ती आध्यात्मिक काव्य पर इसी का अधिक प्रभाव पड़ा। कश्मीरी संस्कृत आचार्यों में क्षेमेन्द्र वैष्णव थे। उन्होंने 'दशावतार चरित', 'भारत-मंजरी' और 'रामायण मंजरी' आदि 'विष्णु-चरितों का प्रणयन तो किया, किन्तु इनमें अत्यल्प मौलिकता या नवीन उद्भावना का समावेश हो पाया। उक्त रचनाओं को पूर्व-प्रचलित वैष्णव-काव्य-साहित्य का संक्षेप ही कहा जा सकता है। क्षेमेन्द्र का दृष्टिकोण सृजनात्मक या भक्तिमूलक कम आलोचनात्मक अधिक रहा है, इसलिए उनका वैष्णव-काव्य आगे न बढ़ सका और न हीं कश्मीरी शैवों को ही अधिक प्रभावित कर सका। 'बड़शाह' के प्रयत्न से उत्तरी भारत से अनेकों ब्राह्मण कश्मीर में आ बसे और वैष्णव धर्म का यहीं से कश्मीर में प्रचार हुआ प्रतीत होता है। 'बड़शाह' के बाद दो ही भाषाओं का प्राधान्य रहा—संस्कृत और फारसी। वैष्णव-धर्म प्रचार के उत्तरोत्तार बढ़ जाने पर हिन्दुओं में संस्कृत रामाख्यानों के अध्ययन-पठन का भी मोह बढ़ गया। फ़ारसी के प्रचुर प्रेमाख्यान परम्परा से प्रभावित होकर कश्मीरी हिन्दू कवि राम-काव्य की अपेक्षा ललित कृष्ण-काव्य की ओर अधिक उन्मुक्त हूए और कई फुटकर काव्यों के अतिरिक्त साहिब कौल ने सर्वप्रथम 17वीं शती में 'कृष्णावतार-चरित' की रचना की। समसामयिक प्रेम-काव्य परम्परा का यथेष्ट प्रभाव उक्त कृष्ण-चरित पर भी पड़ा है। 18वीं शताब्दी तक आते-आते भारतवर्ष में वैष्णव-रामभक्ति सम्प्रदाय ने पूरा ज़ोर पकड़ लिया था और कश्मीरी रामभक्त-कवियों का भी रामाख्यान-काव्य की ओर झुकाव स्वाभाविक था। कश्मीर में अफ़गानों के पश्चात् सिक्ख और डोगरा शासकों ने कश्मीरी भाषा को पुन: प्रोत्साहन दिया और राम-भक्ति-धारा के उत्तरोत्तर विकास के साथ-साथ 18वीं शती से ही अनवरत आधुनिककाल तक रामकथा सम्बन्धित कश्मीरी काव्यों का प्रणयन हुआ। कश्मीरी के प्रमुख रामकथा काव्यों का परिचय दूसरे अध्याय में दिया जायेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1.2.2. हिन्दी रामकथा-काव्य

हिन्दी क्षेत्र में राम भक्ति के उत्कर्ष आंदोलन और प्रचार का प्रथम श्रेय रामानंद को ही प्राप्त है, जिनका जीवन-काल 1356-1467 वि०[61] निर्धारित किया जाता है। रामानंद से पूर्व ईश्वरोपासना या राम-भक्ति का अधिकार सवर्ण हिन्दुओं तक ही सीमित था, किन्तु रामानंद ने जाति-भेद के ये संकुचित बंधन ढीले कर के सभी वर्ण-जातियों, वर्गों एवं स्त्री-पुरुष दोनों के लिए समान रूप से भक्ति का अधिकार प्राप्त किया। फलतः उनके अनुयायियों एवं शिष्यों में सभी वर्णों के लोग सम्मिलित हुए। रामानंद ने अपने सम्प्रदाय के प्रचार के लिए जनभाषा हिन्दी को ही अपनाया, जिससे उनकी नव-प्रवर्तित उदार धार्मिक नीति को अधिक सबल मिला। इनके पूर्व श्रीसम्प्रदाय में राम की प्रतिष्ठा होते हुए भी प्रधानता लक्ष्मी-नारायण को ही दी जाती थी। स्वामी रामानंद ने श्रीसम्प्रदाय के विशिष्टाद्वैत दर्शन और प्रपत्ति सिद्धांत का आधार लेकर रामावत सम्प्रदाय का संगठन किया। —उन्होंने श्रीवैष्णवों के नारायण मंत्र के स्थान पर रामतारक अथवा षडक्षर राम-मंत्र को साम्प्रादायिक दीक्षा का बीजमंत्र माना, बाह्य सदाचार की अपेक्षा साधना भाव में आन्तरिक भाव की शुद्धता पर जोर दिया, जाति-पांति, छुआ-छूत, ऊंच-नीच का भाव मिटाकर वैष्णव-मात्र में समता का समर्थन किया, नवधा से परा और प्रेमाशक्ति को श्रेयस्कर बताया और साम्प्रदायिक सिद्धांतों के प्रचार में परम्परा-पोषित संस्कृत भाषा की अपेक्षा हिन्दी अथवा जनभाषा को प्रधानता दी। 'वैष्णव-मताव्यभास्कर' और 'रामार्चन पद्धति' संस्कृत रचनाओं के अतिरिक्त राम-रक्षा-स्तोत्र, सिद्धांत पटल, ज्ञानलीला, ज्ञान-तिलक, और योग-चिंतमणि आदि हिन्दी रचनाओं मे तत्कालीन आध्यात्मिक सामाजिक, और राजनीतिक परिस्थितियों से उत्पन्न नवीन आस्थाओं और विचारों को भी स्थान दिया।[62] रामानंद की समन्वयात्मक प्रवृत्ति, साम्प्रदायिक संगठन की चेष्टा और सभी जातियों तथा वर्गों के पारस्परिक सन्निध्य और सम्पर्क के कारण ही सभी वर्गों में उनके सम्प्रदाय को प्रश्रय मिल गया। उनके पूर्व किसी भी सम्प्रदाय-प्रवर्तक को अपने सिद्धांतों के प्रचार में इतनी सफलता न मिल सकी। हिन्दू-मुसलमान दोनों उनकी उदार धार्मिक-नीति से प्रभावित होकर उनके अनुयायी हुए, निर्गुण-सगुण दोनों भक्ति-धाराओं को रामानंद के उपदेशों से प्रेरणा मिली और संत और भक्त-कवियों को राम नाम और राम-चरित को लेकर रचनाओं के प्रणयन में प्रोत्साहन मिला।

कबीर आदि संत कवियों ने राम-नाम का आश्रय लेकर अपने निर्गुण-भक्ति सम्प्रदाय की रूप-रेखा को सुनिश्चित और दृढ़ बनाने का प्रयत्न किया, राम चरित से प्रभावित होकर कुछ कवियों ने भक्ति विषय पदों और गीतों की रचना भी

61. रामानंद की रचनाएँ (लेखक डा० श्री कृष्णलाल), पृ० 40.
62. डा० भगवती प्रसाद सिंह—रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय, पृ० 63.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की जिनमें राम-कथा के मुख्य प्रसंगों को ही प्रश्रय दे दिया गया, किन्तु रामभक्ति का पूर्ण विकास आगे चलकर गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं में ही मुखरित हो उठा। रामानंद द्वारा प्रवर्तित राम की उत्कट भक्ति-भावना से प्रभावित होकर प्रथम बार हिन्दी में गो० तुलसीदास ने राम-चरित को लेकर सुन्दर काव्य की रचना की। हिन्दी में रामकथा को इतना व्यापक रूप मिला, जिससे प्रभावित होकर उनके समकालीन और परवर्ती सैकड़ों कवियों ने राम-कथा को लेकर अपने काव्य की रचना की। राम-भक्ति को दृढ़ता और व्यापकता प्रदान करने का पहला अद्भुत प्रयत्न उत्तर-भारत में गोस्वामी तुलसीदास का तो है ही इसके साथ-साथ रामकथा की भक्तिपरक मौलिक उद्भावनाओं की दृष्टि से भी उनका विस्तृत रामकथा-काव्य महत्वपूर्ण है। हिन्दी रामकथा विषयक ग्रन्थों का परिचय और उनमें 'रामचरितमानस' के विशिष्ट स्थान-प्राप्ति की चर्चा दूसरे अध्याय में होगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2 काव्य-ग्रन्थ

2.0 प्रस्तुत अध्याय में दोनों भाषाओं, कश्मीरी और हिन्दी के रामकथा विषयक काव्य-ग्रंथों पर वस्तु-विन्यास, काव्य-रूप और भाषा-शैली आदि की दृष्टि से संक्षेप में विचार किया जायेगा, जिससे रामकथा की भाषा-काव्य परम्परा में अलग अलग से दोनों की विविध कृतियों का स्थान-निर्धारण करने में सहायता मिल सकती है ।

2.1. कश्मीरी काव्य ग्रंथ

2.1.1. प्रकाश रामायण

कश्मीरी में प्रकाशराम कृत 'प्रकाश रामायण' से पूर्ववर्ती किसी भी रामकथा-काव्य का उल्लेख नहीं मिलता है, किन्तु इसमें विषयगत व्यापकता एवं विस्तार के साथ-साथ क्षेत्रीय लौकिक तत्वों का इतना अधिक समावेश हुआ है कि निस्संकोच इसे लौकिक कथानक-परम्परा का ही विकसित महाकाव्य कहा जा सकता है । महाकाव्योचित परम्परागत प्रकृति, एवं वस्तु-दृश्य-वर्णन में क्षेत्रीय विशेषताओं के प्राधान्य के अतिरिक्त इसमें कश्मीरी वेश-भूषा, भोजन-आहार, रहन-सहन और कश्मीर के ही प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों, देवालयों-मंदिरों और यहां तक सीता के पृथ्वी-प्रवेश प्रसंग में शंकरपुर'[1] गांव के स्थान का नामोल्लेख मिलता है । कथावस्तु की दृष्टि से 'प्रकाश रामायण' का मुख्याधार 'बाल्मीकि रामायण' ही है । सारा कथानक सात कांडों में विभक्त है और अन्त में 'लव-कुश चरित' भी जोड़ दिया गया है । 'प्रकाश-रामायण' पर विभिन्न पुराणों और संस्कृत राम-काव्यों का भी प्रभाव पड़ा है, फिर भी कथानक में विविध मौलिक प्रसंगों एवं नवीन उद्भावनाओं का समावेश हुआ है, जिनका अनुसरण परवर्ती रामायणों में भी दृष्टिगोचर होता है । कथा-वर्णन में कवि का दृष्टिकोण भक्तिपरक है और काव्य की रचना भी उत्कट भक्ति-भावना की प्रेरणा से हुई है । 'प्रकाश रामायण' से प्रणयन द्वारा कश्मीरी काव्य में सर्वप्रथम वैष्णव-रामभक्ति को व्यापक रूप मिला । कवि शैव और वैष्णवों के बीच अन्योत्याश्रय-सम्बन्ध की स्थापना के उद्देश्य में भी सफल रहा है । वस्तु-विन्यास की दृष्टि से पूरे रामायण में अविच्छिन्न प्रबंधात्मकता के दर्शन होते हैं । प्रासंगिक घटनाओं और मुख्य कथा के पारस्परिक सम्बन्ध में कहीं भी शिथिलता

---

1. जहां पर सीता के पृथ्वी-प्रवेश का लोक-विश्वास आज भी प्रचलित है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं मिलती है। कवि को चरित्र-चित्रण में भी अद्‌भुत सफ़लता मिली है। महाकाव्योचित रस-नियोजना, परम्परागत वर्णनों और भाषा-शैली की उदात्तता में भी 'प्रकाश रामायण' परवर्ती रामकाव्यों से आगे है। प्रकाशराम ने दो ही मुख्य शैलियों का प्रयोग किया है—इतिवृत्तात्मक और गीति-शैली। इतिवृत्तात्मक में कथा-निर्वाह अधिक प्रबन्धात्मक संतुलित और सन्तुष्ट है। गीति-शैली का प्रयोग अधिकतः वंदना-स्तुतियों के वर्णन में हुआ है। भाषा का प्रवाह अत्यंत सरल और सरस है जिसमें अलंकारों, मुहावरों और लोकोक्तियों का समुचित प्रयोग हुआ है। इस तरह 'प्रकाश रामायण' का कश्मीरी-रामकथा-काव्यों में ही नहीं समस्त रामकथा-काव्यों में भी एक विशिष्ट स्थान है।

'प्रकाश रामायण पर फ़ारसी मसनवियों की रज़्मिया शैली का प्रभाव पड़ा है, उक्त रज़्मिया शैली में ही कश्मीर में सभी पूर्ववती फ़ारसी-प्रेम-काव्यों एवं चरित-काव्यों की रचना हुई थी। कवि फ़ारसी के भी विद्‌वान थे, अत; उनकी महत्वपूर्ण काव्य कृति पर इस शैली का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। युद्ध वर्णनों पर भी फ़ारसी काव्य-शैली का प्रभाव है। 'इसमें राक्षस-सेना और राम-सेना में जो झड़पें चित्रित की गयी हैं, उनमें फ़ारसी 'शाहनामा' के जंगों का सा समां बांधा गया है; और इसके छन्दोविधान पर भी फ़ारसी प्रभाव स्पष्ट है।[2] प्रकाश-रामायण के युद्ध-वर्णन एवं प्रकृति-चित्रण का कश्मीरी साहित्य में विशिष्ट स्थान है। प्रकाश राम पौराणिक उपदेशात्मक शैली से प्रभावित हुए हैं। रामायण के विभिन्न प्रसंगों में दार्शनिक-आध्यात्मिक विचारों एवं नैतिक-कथनों का सूत्रपात इसी शैली में किया गया है। परम्परागत महाकाव्यों के प्रभाव से कवि ने रचना के प्रारम्भ में मंगलाचरण-स्वरूप वन्दना-स्तुति, दार्शनिक विचारों एवं राम-नाम तथा कथा-माहात्म्य का 'वर्णन किया है। उन्होंने सारी रामकथा को एक पात्रात्मक रूपक पाश में बांधा है। इस तरह कश्मीरी रामकथा-काव्य में दोनों—वस्तु-संगठन और काव्य-शैली की दृष्टियों से 'प्रकाश रामायण' का महत्वपूर्ण स्थान है। परम्परागत कथानक में कवि की मौलिक और नवीन उद्‌भावनाओं, कुशल चरित्र-निरूपण, भाव-गाम्भीर्य और रस-नियोजना काव्य-शैली की उदात्तता और क्षेत्रीय-वर्णन-कौशल के अद्‌भुत समन्वय की दृष्टि से रामकथा-काव्य में ही नहीं अपितु अन्य कश्मीरी प्रबंध काव्यों में भी 'प्रकाश रामायण' को विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

2.1.2. शंकर-रामायण

'शंकर रामायण' की रचना डोगरा राजा रणवीरसिंह के शासनकाल में 1870 ई० में हुई।[3] उक्त रामायण में भी राम-जन्म से लेकर राम के बैकुण्ठ-

---

2. श्री पृथ्वीनाथ पुष्प—कश्मीरी भाषा और साहित्य, सं० 1956, पृष्ठ 17.
3. कवि ने स्वयं रामायण के अन्त पर रचना-काल के बारे में राजा रणवीरसिंह के शासनकाल और सप्त ऋषि संवत् 1945 का उल्लेख किया है जो सन् 1870 ई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धाम तक की सारी कथा वर्णित है। 'शंकर रामायण' का कथा-वर्णन मुख्यतः पांच खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के अन्तर्गत अध्यायों को रखा गया है और अंतिम तीन खण्डों के लिए क्रमशः युद्ध-काण्ड, उत्तर-काण्ड, लव-कुश-काण्ड के नामों का निर्देश मिलता है। खण्डों का रूप एवं कथा-क्रम इस प्रकार हैं :—

खण्ड	कुल अध्याय	पद संख्या	वर्ण्य-विषय
प्रथम	16	1278	प्रारम्भ से लेकर सीता-हरण तक।
द्वितीय	11	1252	सीता खोज से लेकर युद्ध-तैयारी।
तृतीय (युद्ध काण्ड)	11	1280	लंका-युद्ध वर्णन और राम की विजय।
चतुर्थ (उत्तर काण्ड)	5	278	विजयोपरांत अयोध्या-आगमन।
पांचवां (लव-कुश-कांड)	1	322	सीता त्याग, लव-कुश जन्म, बैकुण्ठ धाम।

इस तरह पांच खण्डों में विभाजित रामायण में 44 अध्याय और कुल पद संख्या 4410 की है। सम्पूर्ण रामायण की रचना इतिवृत्तात्मक शैली में न होकर गीति-शैली में हुई है। प्रत्येक अध्याय की रचना अलग-अलग टेकों के अन्तर्गत हुई है, जिसमें पद संख्या का वैषम्य मिलता है।

कथावस्तु का मुख्याधार 'बाल्मीकि रामायण' ही है, किन्तु कवि 'अध्यात्म रामायण' से और भी अधिक प्रभावित रहे हैं, 'अध्यातमरामायण' की भांति ही कवि ने उत्कट भक्ति-भावना के कारण परम्परागत कथानक में कई परिवर्तन भी किए हैं। शबरी-प्रसंग वर्णन में कवि ने स्पष्टतया 'अध्यातमरामायण' का नामोल्लेख भी किया है।[4] रामायण के प्रारम्भ में कवि ने महाकाव्योचित मंगलाचरण स्वरूप श्रीगणेश, सरस्वती, गुरु, ब्रह्मा, शिव तथा पार्वती की वन्दना के अतिरिक्त राम भक्ति और नाम-माहात्म्य का विपुल बखान किया है। अन्य संवादों का उल्लेख करते हुए सारी कथा मुख्य रूप से शिव-पार्वती संवाद में ही वर्णित की है। परम्परागत राम–कथा को क्षेत्रीयता प्रदान करने में भी प्रस्तुत रचना का महत्व है, प्रकृति-चित्रण एवं दृश्य-वर्णन में अधिकतः क्षेत्रीय वैशिष्ट्य का सामंजस्य मिलता है।

गीति-शैली में वर्णित काव्य का कथा-निर्वाह अपेक्षाकृत दुरूह होता है और उस

या सं० 1827 वि० के बराबर है।

4. शूद्र कूर से आस बड़ि भावै अध्यातमस मं छुय लिखित।
शंकर-रा० खण्ड 1/अ 12 (104)।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में प्रबन्धात्मकता छिन्न-भिन्न होती है, किन्तु आलोच्य रामायण में कथात्मक असंगतियां अत्यल्प दिखाई पड़ती है। कवि ने इस नयी शैली के माध्यम से प्राय: एक-एक कथा से सम्बन्धित प्रमुख भावना या पात्र-विशेष को लेकर एक ही टेक में पूरे अध्याय की रचना की है, जिसमें प्रासंगिक सम्बद्धता का सर्वत्र ध्यान रखा गया है। फिर भी समग्र रूप से काव्य में प्रबन्धात्मकता की शिथिलता से इनकार नहीं किया जा सकता। विशिष्ट अध्याय की टेक को दृष्टि में रखकर कवि को विवशत: कई स्थलों पर कथा-सूत्रों एवं प्रसंगों में क्रम-परिवर्तन करना पड़ा है। प्रमुख पात्रों के चरित्र-निरूपण में कवि का प्रयत्न स्तुत्य है, उन्होंने किसी भी पात्र के चरित्र को न उलझा कर रखा है और न दबा कर ही। पात्रों का चरित्रांकन कथात्मक सीमाओं में हुआ है, जिनमें कवि के स्वतंत्रोक्त कथन अत्यल्प सम्मिलित हैं।

'शंकर-रामायण' की भाषा में क्लिष्टता या दुरूहता नाम मात्र भी नहीं है। अधिकतर बोल-चाल के साधारण और बोधगम्य शब्दों का प्रयोग किया गया है। गीतों में गेयता प्रधान है और कवि ने गेयता की दृष्टि से कश्मीरी गीति-शैली के विविध रूपों को अपनाकर प्रत्येक अध्याय में छन्द-परिवर्तन करने का प्रयास किया है। 'रफ़ू' शैली में वर्णित गीत स्त्रियां विशिष्ट लोक-नाच में गाती हैं। उक्त शैली का भी प्रयोग कवि ने इस अध्याय में किया है :—

> यलि त्रोव शरीर दशरथ राज़नतै,
> वनतै राम जू बोजि ना सोन ।[5]

इस सरलतम लोक-शैली में दशरथ-मरण, भरत-आगमन एवं अयोध्यावासियों की शोकाकुलता जैसे गम्भीर मार्मिक प्रसंगों को वर्णित करके कवि ने अद्‌भुत कला-कौशल का परिचय दे दिया है।

संक्षेप में वस्तु-विन्यास, चरित्र-निरूपण और भाषा शैली की दृष्टि से कश्मीरी रामकथा-काव्य में आलोच्य रामायण का महत्वपूर्ण स्थान है।

2.1.3. आनन्द रामावतार-चरित

श्री आनन्दराम राज़दान ने 'रामावतार चरित' की रचना 1838 ई० में की है।[6]

---

5. शंकर रा०, खण्ड 1/अ-13.
6. 'रामावतार चरित' के रचना-काल के सम्बन्ध में कवि की यह उक्ति प्रसिद्ध है —

> चेयम यलि चानि लोलअच खीर थअजी ।
> वनिम भक्ति सन ओस पांचतअजी ।।

इसका अभिप्राय सं 1945 वि० से है। 'रामावतार चरित' की उपलब्ध हस्तलिखित प्रति में इस का कहीं भी निर्देश नहीं मिलता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कथा-वस्तु के परम्परागत कथानक पर आधारित होते हुए भी —इसमें कई नयी और मौलिक उद्भावनाएं मिलती हैं। कवि ने कथानक के प्रारम्भ में स्वयं वेदों को ही कथानक का मुख्याधार बताकर कहा है कि वे 'वेदों' में वर्णित रामकथा का ही सविस्तार वर्णन कर रहे हैं :—

'छि वानी वीद वखनन रामावतार। यिथे पअठ्यन दिवन छुस ज्यूठ व्यस्तार।।[7]

'वेदों' से तात्पर्य कवि का परम्परागत लोक-विश्रुत कथानक से ही है। कथानक का प्रारम्भ उन्होंने महागणेश, सतगुरु, श्रीराम और सदाशिव की मंगलाचरणस्वरूप वन्दनाओं के पश्चात् किया है। श्रीराम के निर्गुण और सगुण दोनों रूपों की वंदना-स्तुति करते हुए राम-नाम माहात्म्य और क्षीरसागर में शेषनाग पर विराजमान विष्णु के चतुर्भुज रूप का विस्तृत वर्णन किया है। कथानक के प्रसंगों एवं अन्य घटनाओं के वर्णन में कवि ने स्वतंत्रता से काम लिया है। कथा-क्रम परम्परागत होने पर भी काण्डों का निर्देश कहीं भी नहीं मिलता है। प्रत्येक नये प्रसंग के आरम्भ में वर्ण्य-विषय सम्बन्धित मोटे शब्दों में संकेत अवश्य मिलता है। कथानक के अन्त पर सीता–बनवास, लव-कुश-युद्ध और सीताजी के पृथ्वी में समा जाने तक का वृत्तांत मिलता है। काव्य में कई प्रसंगों में कवि की नवीन उद्भावनाएं दृष्टिगत होती हैं। 'आनंद रामावतार-चरित' में वर्णित सभी युद्ध-वर्णन अद्भुत और सुन्दर है। कवि ने सीता द्वारा महारावण के संहार का वर्णन भी विस्तार से किया है, जिस पर कवि पर शाक्त-प्रभाव स्पष्ट होता है। लंका के युद्धों का वर्णन नौ दिनों के क्रम में मिलता है। रामभक्ति भावना से प्रभावित होकर पूर्ववर्ती कश्मीरी राम–काव्य की भांति विविध भक्तिपरक वन्दना-स्तुतियां बीच-बीच में भी मिलती हैं।

आनंदराम ने भी दो ही मुख्य अभिव्यक्ति शैलियों को अपनाया है—इतिवृत्तात्मक और गीति शैली। प्रायः कथा-वर्णन के लिए इतिवृत्तात्मक और वन्दा-स्तुतियों में गीति-शैली का प्रयोग किया है। गीति-शैली में उन्होंने विविध लोकशैलियों को भी अपनाया है। कवि ने 'लोलो' प्रधान प्रसिद्ध लोकशैली में वर्णित एक सुन्दर भक्तिपरक गीत में राजा दशरथ द्वारा अंधमुनि बालक की मृत्यु का गम्भीर प्रसंग वर्णित किया है।[8] भाषा में फ़ारसी के सरल शब्दों का प्रयोग हुआ है। एकाध स्थान पर फ़ारसी की स्वतंत्र पंक्तियां भी मिलती हैं।[9] कथानक के अंत पर कवि ने राम के प्रति वन्दना-स्तुति फारसी-भाषा में ही की है, जिनकी अनन्य

---

7. पृ० 7.
8. दम दम छम थर थर लो लो। रामचन्द्र श्री भास्कर लो लो।। पृ० 67.
9. आ० रा०, पृ० 106.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कृपा से ही कवि उनके चरित का वर्णन करने में सफल हुए हैं।[10] फ़ारसी भाषा पर कवि का पूर्ण अधिकार था। फ़ारसी भाषा के प्रयोग से भाव.व्यंजना कहीं भी दुरूह नहीं हुई है।

इस तरह लोक-विश्रुत कथानक में कवि की विविध मौलिक उद्‌भावनाओं का समावेश, चरित्र-विकास, रस-निरूपण एवं भाषा-शैली की दृष्टि से कश्मीरी राम-कथा काव्य में प्रस्तुत रचना का महत्वपूर्ण स्थान है।

2.1.4. विष्णु प्रताप-रामायण

पं० विष्णु कौल ने 'विष्णु-प्रताप-रामायण' की रचना 1913 ई० में की है। कवि ने रामायण के अन्त पर इसके रचना-काल का स्पष्ट निर्देश किया है।[11] कश्मीर के तत्कालीन धर्म-प्रिय डोगरा शासक महाराजा प्रताप सिंह (1885 ई०-1925 ई०) कवियों, विद्वानों एवं ज्योतिष-पंडितों के आदर एवं सम्मान करने के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। पं० विष्णु कौल पर उनका विशेष स्नेह था और इसीलिए कवि ने अपनी प्रौढ़तम रचना कश्मीरी रामायण उन्हें सश्रद्धा समर्पित करके इसका नाम 'विष्णु-प्रताप-रामायण' रखा है—'विष्णु' उनका अपना नाम और 'प्रताप' राजा प्रताप सिंह का। अब्दुल अहाद आज़ाद ने प्रस्तुत रामायण को 'बाल्मीकि रामायण का अनुवाद कहा है,[12] जो बिल्कुल गलत है। 'वि-प्र-रा०' बाल्मीकि रामायण' या किसी भी पूर्व प्रचलित रामायण का अनुवाद नहीं है, जो कथा विवेचन एवं अन्य विशेषताओं से स्वतः स्पष्ट होगा। अलोच्य रामायण का बृहत् रूप देखकर ही शायद श्री आज़ाद ने ऐसी धारणा बनायी है।

'विष्णु प्रताप रामायण' लगभग तीस सहस्र चरणों में वर्णित विशाल महाकाव्य है। कुल अध्यायों की संख्या 347 है। ये अध्याय मुख्य रूप से पांच ही कांडों में इस प्रकार क्रमबद्ध हैं—बालकाण्ड (30 अध्याय), वनवास-काण्ड (192 अध्याय), अश्वमेध-काण्ड (70 अध्याय), राजलीला काण्ड (25 अध्याय), बैकुण्ठ लीला-काण्ड (31)। इनमें से 'वनवास काण्ड' के अन्तर्गत रामकथा के अयोध्याकाण्ड से लेकर उत्तर काण्ड तक की सभी घटनाएं वर्णित हैं। कवि ने उक्त काण्ड के एक ही अध्याय-क्रम में 35वीं अध्याय से किष्किंधा काण्ड और 48वीं अध्याय से लंका-काण्ड का उल्लेख किया है। इन नामों को जोड़ने से कुल काण्डों की संख्या 7 होती है। इन दो काण्डों के नाम को बाद में जोड़ा गया प्रतीत होता है, क्योंकि अध्याय-क्रम एक ही है।[13] कथा-क्रम का मुख्याधार वाल्मीकि रामायण ही है,

---

10. वही, पृ० 248-9.
11. दे० वि.प्र-रा०, पृ० 941.
12. दे० 'कश्मीरी ज़बान और शायरी' दूसरा भाग, पृ० 441.
13. प्रति से लगता है कि मूल रूप से 'वनवास काण्ड' में ही कवि ने राम-वन गमन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जिसमें विभिन्न मौलिक प्रसंगों एवं वर्णनों का समावेश हुआ है। महाकाव्योचित शैली में 'रामायण' के प्रारम्भ में कवि ने महागणेश और सतगुरु की वन्दना के अतिरिक्त राम नाम और कथा-माहात्म्य का विस्तृत वर्णन किया है। यहीं पर आदर्श मानव-धर्म, व्यावहारिक कर्मों और नैतिक विचारों का स्पष्टीकरण भी कवि ने किया है। महाकाव्योचित परम्परागत वस्तु एवं दृश्य-वर्णनों का अनुकरण करके कवि ने वर्णन को अधिकाधिक क्षेत्रीय बनाने का प्रयत्न किया है। वर्णनान्तर्गत क्षेत्रीय प्रकृति नाम रूपों और स्थानों को दृष्टि में रखा गया है। 'राजलीला-कांड' इन्हीं क्षेत्रीय वर्णनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है—कवि ने राम की कश्मीर यात्रा का विस्तृत वर्णन किया है जिसमें विभिन्न धार्मिक एवं नैतिक विचारों की विस्तृत विवेचना हुई है। कृति के युद्ध-वर्णन भी विस्तृत हैं, जिसमें नवीन अस्त्र-शस्त्रों के भी कुछ नाम परिगणित किए गए हैं। सभी प्रसग मुख्य कथा के साथ सम्बन्धित हैं—कहीं भी प्रबन्धात्मकता विच्छिन्न नहीं हुई है—कवि ने विविध स्वतंत्रोक्त भक्ति, धर्म और नीति विषयक विचारों का समावेश भी बीच-बीच में कुशलपूर्वक किया है। 'आ० रा०' की तरह सीता-महारावण युद्ध-प्रसंग भी इसमें वर्णित है।

भाषा-शैली महाकाव्योचित है। कवि ने भी इतिवृत्तात्मक और गीति-शैली का प्रयोग किया है। इतिवृत्तात्मक शैली के अन्तर्गत कई संवादों की योजना पर 'प्रकाश रामायण का प्रभाव स्पष्ट है और कई प्रसंगों में वर्णन-शैली का पूर्णतः अनुकरण किया गया है। भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ-साथ फारसी के शब्दों का प्राचुर्य मिलता है। कवि ने विभिन्न प्रसंगों के वर्णन-चित्रण में उर्दू-हिन्दी मिश्रित खड़ी बोली का प्रयोग भी किया है।

कथा-निर्वाह के साथ-साथ चरित्र निरूपण और रस-नियोजना में भी कवि को सफलता मिली है। समग्र रूप से देखने पर वस्तु-संगठन, चरित्र-निरूपण, रस-योजना और भाषा-शैली की दृष्टि से कश्मीरी रामकथा-काव्य में प्रस्तुत रचना का महत्वपूर्ण स्थान है। 'प्रकाश रामायण' के पश्चात् 'विष्णु प्रताप रामायण' में ही वस्तु-विन्यास एवं काव्य-शैली में क्षेत्रीय साहित्यिक, सामाजिक और प्राकृतिक विशेषताओं का अधिक समावेश हुआ है। जन-जीवन एवं समाज का जितना सजीव एवं जीवंत चित्रण दोनों कृतियों द्वारा सम्भव हो सका है, अन्य काव्यों के माध्यम से नहीं।

2.1.5 शर्मा रामायण

श्री नीलकण्ठ शर्मा ने प्रस्तुत रामायण की रचना 1919 ई० से लेकर 1926 ई० से लेकर अयोध्या लौटने पर सीता वनवास के प्रसंग तक का वर्णन करना चाहा है—मुख्य घटना तो वनवास ही है। बाद में कवि ने इसी विस्तृत कांड के बीच अन्य कांडों का नामकरण भी किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में की है। कवि ने रामायण के प्रारम्भ और अन्त पर उक्त रचना-काल का उल्लेख किया है।[14] फ़ारसी काव्य-शैली के प्रभाव में कवि ने अपनी रचना का नाम 'रामायणि-शर्मा' रखा है। रामायण की रचना आठ काण्डों —बाल०, अयो०, अरण्य०, किष्किधा०, सुन्दर०, लंका०, उत्तर० और लव कुश काण्डों में हुई है। महाकाव्योचित मंगलाचरणस्वरूप कवि ने प्रारम्भ में महागणेश, गुरु, निर्गुण ब्रह्म, सगुण विष्णु, शिवजी, श्री राम-सीता के अतिरिक्त रामभक्त एवं कथाकार वाल्मीकि, भगवान व्यास और तुलसीदास की भी वंदना की है। रामायण के प्रस्तावना भाग में कवि ने अपने पिता के ज्ञानोपदेश, सत्प्रेरणा, राम-भक्ति-महात्म्य वर्णन और समकालीन राजा प्रतापसिंह के धर्म-शासन का भी वर्णन किया है। कवि ने प्रत्येक काण्ड के प्रारम्भ में भी महागणेश की वन्दना-स्तुति मंगलाचरण स्वरूप की है।

पूर्ववर्ती कश्मीरी रामकथा-काव्यों की भांति रामभक्ति ही प्रस्तुत रामायण की महत्प्रेरणा है, जिसका प्रतिपादन-प्रसार ही काव्य का मुख्य उद्देश्य है। शर्मा जी ने वस्तु-संगठन में परम्परागत कथानक का अनुकरण तो किया, किन्तु कश्मीरी कथा-परम्परा से अधिक वे 'अध्यात्मरामायण' और 'रामचरितमानस' से प्रभावित हैं। तुलसी-मानस की उत्कट भक्ति-भावना एवं सद्प्रेरणा का उल्लेख उन्होंने प्रारम्भ में ही किया है। कथा के संवादों का उल्लेख करते हुए उन्होंने यहां तक कहा है कि वे तुलसी मानस में वर्णित राम-कथा के आधार पर ही रामकथा-वर्णन कर रहे हैं।[15] तुलसीदास के 'मानस' को मुख्याधार स्वीकार करते हुए भी आलोच्य रामायण में कई मौलिक प्रसंग एवं कथातमक उद्भावनाएं वर्णित हैं, जिससे यह स्वीकार नहीं किया जा सकता कि कवि ने आंख मूंद कर 'मानस' के ही घटना-प्रसंगों का वर्णन किया हो। 'मानस'—अनुकरणीय मुख्य प्रसंग बालकाण्ड का प्रताप-भानु-चरित और उत्तरकाण्ड में वर्णित कागभुशुंडि-गरुड़ चरित हैं। इसके अतिरिक्त राम-सीता के जनक-वाटिका में पूर्वानुराग प्रसंग, अनुसूया-सीता संवाद, शरभंग एवं सुतीक्ष्ण से भेंट, किष्किधा काण्ड में वर्णित वर्षा-ऋतु-चित्रण, लंका काण्ड में रावण-पराभव एवं अंगद-रावण संवाद आदि प्रसंगों पर भी 'मानस' का ही प्रभाव देखा जा सकता है। ग्रन्थ-प्रणयन से पूर्व कवि ने 'मानस' का अध्ययन-मनन विस्तार से किया है, जिससे उक्त प्रसंगों में प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। एकाध स्थल पर 'शर्मा-रामायण' की पंक्तियां 'मानस' के चरणों का अनुवाद सा प्रतीत होती हैं। जैसे—

---

14. शर्मा-रा०, पृ० 6 तथा 538.

15. अगर शोख छुय बोज़ रामकथा छु तुलसीकृत मंज़ वखु-मुत यथा। पृ० 7.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मानस' : घन घमंड नभ गर्जत घोरा । प्रियाहीन डरपत मन मोरा ।
दामिनी दमक रह न घन माहीं । खल कै प्रीति जया थिरु नाहीं ।[16]

'शर्मा-रा०' :
छि बडय शब्द क्या गगरायनइ गछ़ान । छु सीतायि रुस म्योन दिल गाबरान ।
छि बुज़मल प्रज़लान कअच् मेघस अंदर । मिथै कन्य कुटिल सुन्द प्रेम छुन थेर ।।[17]

फिर भी 'शर्मा० रा०' में मौलिक उद्भावनाएं इतनी अधिक हैं कि इसका 'मानस' का अनुवाद मानने के भ्रम में पड़ना असंभव है । विभिन्न प्रसंगों की प्रबंधात्मकता एवं मुख्य-कथा से सम्बद्धता आलोच्य रामायण की प्रधान विशेषता है, कहीं भी वस्तुगत शिथिलता प्रतीत नहीं होती है । चरित्र-चित्रण पूर्ण और समृद्ध है । पात्रों के चरित्र में आदर्श और यथार्थ चारित्रिक गुण अवगुणों का सकुशल सामंजस्य मिलता है । विविध रसों की नियोजना हुई है, जिनमें प्रधान भक्ति-रस ही है । भाषा शैली भी महाकाव्योचित है । परम्परागत दोनों इतिवृत्तात्मक और गीति-शैली का समन्वय किया गया है । कहीं-कहीं पर कवि ने अपने भाषाधिकार का परिचय चमत्कारपूर्ण अलंकार-योजना और शब्द-चयन में दे दिया है । कवि ने सीता के प्रलाह में कश्मीरी की चमत्कारपूर्ण वर्णन शैली 'बेनुक्ता अलफाज़ों' (बन्दी विहीन शब्द-चयन) का भी प्रयोग किया है । शब्द-भण्डार में पूर्ववर्ती रचनाओं की भांति फारसी के शब्दों का प्राधान्य है । कवि ने कई स्थलों पर शब्दों के अतिरिक्त पूरे चरणों की रचना भी फारसी भाषा में की है । 'वि० प्र० रा०' की भांति 'शर्मा० रा०' में भी विभिन्न प्रसंगों के वर्णन में उर्दू-हिन्दी मिश्रित भाषा का प्रयोग किया गया है । प्रकृति-चित्रण एवं युद्ध-वर्णन प्रसंगों में अधिकाधिक क्षेत्रीय काव्यात्मक विशेषताओं का प्रभाव देखा जा सकता है । अतः वस्तु-योजना, चरित्र-निरूपण, क्षेत्रीय वैशिष्ट्य एवं भाषा-शैली की उदात्तता के कारण 'शर्मा रामायण' का भी कश्मीरी रामकथा-काव्य में विशिष्ट योगदान है ।

2.1.6. ताराचन्द रामायण

पं० ताराचन्द ने 'ताराचन्द-रामायण' की रचना 1927 ई० में की है । प्रस्तुत रामायण की रचना आठ काण्डों में हुई है, प्रत्येक काण्ड में 'वि० प्र० रा०' की भांति विभिन्न अध्यायों को रखा गया है । काण्डानुसार अध्यायों का क्रम इस प्रकार है—बालकाण्ड (44 अध्याय), अयोध्या-काण्ड (17 अ०), अरण्य-काण्ड (6 अ०), किष्किधा काण्ड (5 अ०), सुन्दर काण्ड (6 अ०), लंका-काण्ड (13 अ०), उत्तर-काण्ड (5 अ०) तथा अश्वमेध-काण्ड (6 अध्याय) । कवि ने परम्परागत महाकाव्योचित शैली का अनुकरण करते हुए कृति के प्रारम्भ में महागणेश, गुरु, राम, शिव-पार्वती, सरस्वती आदि की वन्दना स्तुति की है । अन्य कांडों के प्रारम्भ

---

16. मानस 4-14.
17. शर्मा रा०, पृ० 222.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में भी मंगलाचरणस्वरूप वन्दनाएं प्राप्य हैं। कवि प्रत्येक काण्ड के अन्त पर राम के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिनकी अनन्य असीम कृपा-दृष्टि से कवि उनके महान् चरित के वर्णन में समर्थ हुए। इसके साथ ही अपने इष्ट राम के समक्ष अपनी दीनता और ज्ञानहीनता विनम्र शब्दों में अभिव्यक्त करते हैं। काव्य-रचना की महती प्रेरणा भक्ति-भावना ही है, जो विभिन्न प्रसंगों में वर्णित वन्दनाओं में भी प्रकट होती है। परम्परागत कथानक का अनुसरण करते हुए वे भी अधिकतः 'अध्यात्मरामायण' और 'मानस' से ही प्रभावित रहे। भक्ति विषयक उदात्त उक्तियों का अनुकरण उन्होंने 'अध्यात्मरामायण' से ही किया प्रतीत होता है। किन्तु कथावस्तु की योजना में 'मानस' और 'प्रकाश रामायण' से प्रभावित रहे हैं। 'शर्मा रामायण' की तरह 'ता० रा०' में वर्णित प्रतापभानु चरित, राम के विराट रूप वर्णन, जनक-वाटिका-चित्रण जनक-वाणी पर लक्ष्मण का क्रोध, दशरथ-कैकेयी-संवाद, कागभुशुंडि-चरित आदि प्रसंगों पर 'मानस' का ही प्रभाव पड़ा है। 'ताराचंद-रामायण' में भी कई मौलिक प्रसंगों का वर्णन मिलता है और 'मानस' में प्रभावित प्रसंगों के चित्रण में भी कवि की निजी सूझ के अनुसार विविध मौलिक कथा विषयक उद्भावनाओं का समावेश हुआ है। सकुशल कथा-निर्वाह के साथ-साथ चरित्र-निरूपण भी समुचित ढंग से हुआ है। पूर्ववर्ती काव्यों की अपेक्षा फारसी के शब्दों का भी अत्यल्प प्रयोग हुआ है। प्रस्तुत रामायण में भी अभिव्यक्ति प्रणाली दोनों मुख्य रूपों -इतिवृत्तात्मक और गीति-शैली का ही प्रयोग किया गया है। महाकाव्योचित वस्तु विन्यास और भाषा-शैली की दृष्टि से कश्मीरी रामकथा-काव्य में इसका भी विशिष्ट स्थान है।

2.2.6. अमर रामायण

'अमर रामायण' की रचना श्री अमरनाथ 'अमर' द्वारा 1940 ई० में हुई है। प्रस्तुत रामायण का मुख्याधार 'वाल्मीकि रामायण' ही है, कवि ने परम्परागत कथानक में कई मौलिक प्रसंगों एवं वर्णनों को भी जोड़ा है। आद्यन्त पूर्व-प्रचलित कथा-क्रम का अनुसरण करते हुए भी कहीं भी काण्डों का निर्देश नहीं मिलता है। कथा-वर्णन मुख्य विषयगत शीर्षकों के अन्तर्गत हुआ है। काव्य के प्रारम्भ में कवि ने मंगलाचरणस्वरूप महागणेश और गुरु की वन्दना करने के पश्चात् वाल्मीकि-चरित का भी संक्षेप में उल्लेख किया है। बीच-बीच में कई स्तुति-वन्दनाओं का वर्णन मिलता है। नव-युगीन सामाजिक और राजनैतिक विचार-धाराओं से प्रभावित होकर कवि ने उनका आरोप लोक-विश्रुत परम्परागत कथानक पर भी किया है। उदाहरणार्थ अछूतोद्धार की गांधीवादी भावना का वर्णन उन्होंने 'राम-शबरी-भेंट' प्रसंग के चित्रण में किया है।[18] इसी तरह विधवा-विवाह की समाज कल्याणकारी

---

18. अमर-रामायण, पृष्ठ 126-129.

19. वही, पृष्ठ 126-130.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विभावना से प्रभावित होकर कवि ने बालि के मरणोपरांत सुग्रीव और तारा के विवाह का उल्लेख किया है,[19] और रावण-मृत्यु पर विधवा मंदोदरी से विभीषण के विवाह का वर्णन किया है।[20] कवि ने अलौकिक घटनाओं की बुद्धिसंगत व्याख्या प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया है। 'अमर रामायण' के प्रारम्भ में ही वाल्मीकि चरित का भी वर्णन मिलता है, जो किसी भी अन्य पूर्ववर्ती रामकथा-काव्य में नहीं मिलता है, इसी तरह हनुमान को प्राप्त दो वरों और लक्ष्मण के प्रति सीता के शाप का भी वर्णन मौलिक है। पुनः कवि 'प्रकाश रामायण' से भी प्रभावित रहे हैं, 'प्रकाश रामायण' के आधार पर ही उन्होंने सीता के पृथ्वी-प्रवेश' प्रसंग में 'शंकर-पुर' स्थान का ही उल्लेख किया हैं। रामायण के अंत पर राम-नाम माहात्म्य का गुणगान विस्तारपूर्वक वर्णित है। परम्परागत कथानक में नवीन प्रसंगों की उद्-भावना होने पर भी प्रबंधात्मकता शिथिल हैं, मुख्य कथा और प्रासंगिक घटनाओं के बीच अपेक्षित अन्विति का अभाव है। चरित्र-चित्रण उचित ढंग से नहीं हो पाया है। रस-निरूपण भी दोषपूर्ण है। भाषा-शैली में भी साहित्यिक उत्कर्ष का अभाव है—भाषा का प्रवाह सरल और सीधा है। विविध स्थलों पर गीति-लय भी विच्छिन्न सी होती है। वास्तव में परम्परागत कथानक में नवीन उद्भावानाओं का समावेश करना ही कवि का मुख्य लक्ष्य रहा है और इस प्रयास में कवि को सफलता अवश्य मिली है। वस्तु-विन्यास की इन मौलिक उद्भावनाओं के कारण ही कश्मीरी रामकथा-काव्य में प्रस्तुत रचना को विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

इन मुख्य रामकथा—काव्य-ग्रन्थों के अतिरिक्त कश्मीरी भाषा में रामकथा सम्बन्धी विविध प्रसंगों एवं फुटकर घटनाओं पर बहुसंख्यक गीतों की रचना हुई है, किन्तु वहां रामभक्ति निवेदन या लीला-कथन का ही उद्देश्य मुखर है, राम-कथा-वर्णन का नहीं। इन फुटकर-काव्यों के साथ-साथ प्रश्नोत्तर शैली में 'राम-गीताओं' की कई रचनाएं हुई हैं, जिनमें राम-लक्ष्मण जी को विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर ज्ञानोपदेश देते हैं। इनमें से प्रसिद्ध रचना श्री लक्ष्मण जू बुल्बुल नागाम (1816 ई०-1888 ई०) की ही है। उक्त रचना में कर्म, ज्ञान, भक्ति और जीव, जगत, ब्रह्म, माया आदि दार्शनिक तत्वों का सविस्तार विवेचन मिलता है। इसमें राजा नृग और ब्राह्मण के शाप की पौराणिक कथा भी वर्णित है—किन्तु कथा-वर्णन गौण होकर मुख्य प्रतिपाद्य विषय कवि द्वारा कर्म, ज्ञान, भक्ति, दर्शन आदि की विवेचना ही है। रामकथा की फुटकर घटनाओं के आधार पर छोटे-छोटे नाटकों की भी रचनाएं हुई हैं किंतु कथा-विकास की दृष्टि से उनका कोई महत्व नहीं है।

2.2. हिन्दी काव्य-ग्रन्थ

विद्वानों ने हिन्दी के रामकथा-काव्य-ग्रन्थों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की है[21],

19. वही पृ० 129-133.
20. अमर-रामायण, पृ० 209-210.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिसे दुहराना अनावश्यक समझकर यहां पर तुलना की दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं मुख्य काव्य-ग्रन्थों के रूप-आकार पर ही संक्षेप में विचार किया जायेगा। गोस्वामी तुलसी दास से पूर्ववर्ती हिन्दी राम-काव्य में रामानन्द के भक्ति-विषयक पदों 'सूर-सागर 'में वर्णित रामकथा सम्बन्धी पदों 'पृथ्वीराजरासो की दशावतार कथा के अन्तर्गत रामकथा के अतिरिक्त ईश्वरदास द्वारा रचित 'भरत-मिलाप', 'राम-जन्म' तथा 'अंगद पैज़' रचनाओं का उल्लेख किया गया है।[22] इनमें से रामानंद के रामभक्ति विषयक पदों और ईश्वरदास की रचनाओं की प्रामाणिकता संदिग्ध है तथा 'पृथ्वीराजरासो' में वर्णित रामकथा विषयक छन्द तो प्रक्षिप्त सिद्ध हुए हैं।[23] कथा-निरूपण की दृष्टि से सूरदास द्वारा रचित पद[24] भी विशेष महत्वपूर्ण नहीं कहे जा सकते हैं।

2 2.1. रामचरितमानस

'पार्वती-मंगल और 'कृष्ण-गीतावली' को छोड़कर गोस्वामी तुलसीदास की प्रायः सभी रचनाएं उनके इष्टदेव राम से सम्बन्धित हैं। उनकी कृतियों का रचना-क्रम इस प्रकार निर्धारित किता गया है---रामलाल नहछू (सं० 1616), रामाज्ञा प्रश्न (सं० 1621), जानकी-मंगल (सं० 1626), रामचरितमानस (सं० 1631), पार्वती-मंगल (सं० 1643), गीतावली (सं० 1658), विनय पत्रिका (सं० 1658) कृष्ण गीतावली (सं० 1658) तथा अंतिम एवं अपूर्ण रचनाएं---बैरवै, सतसई, दोहावली, कवितावली एवं बाहुक सं० 1661-80 के बीच की रचनाएं मानी गई हैं।[25] इन सब में से तुलसीदास का 'रामचरितमानस' सर्वाधिक लोकप्रिय और काव्य विषय-निर्वाह की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट रचना है। 'नानापुराण निगमागम सम्मत' रामचरितमानस शताब्दियों से हिन्दू-धर्म, दर्शन और नैतिक उदात्त भावनाओं की दृष्टि से जनता के जीवन को अनुप्राणित करने में समर्थ हुआ है। इसमें उपनिषदों के आध्यात्मिक विचारों, दर्शन और नैतिक ग्रन्थों के तत्व-चिंतन और विविध पौराणिक गाथाओं का मधु-संचयन सरल और सुन्दर भाषा-शैली में अभिव्यंजित हुआ है। रामभक्ति ही 'मानस' की महत्प्रेरणा है और इसका चरम लक्ष्य भी। रामकथा-प्रवाह में उनकी इस महती प्रेरणा के साथ उनकी उदात्त महती

---

21. (अ) हिन्दी साहित्य कोश, पृ० 894-95. (आ) रामकथा (उत्पत्ति और विकास) अनु० 298— डा० कामिल बुल्के। (इ) हिन्दी पुस्तक साहित्य सं० 1945, पृ० 10-11—डा० माता प्रसाद गुप्त।
22. डा० कामिल बुल्के—हिंदी साहित्य कोष, पृ० 894.
23. 'पृथ्वीराजरासउ'—सं० डा० माताप्रसाद गुप्त।
24. सूरसागर, सभा संस्करण।
25. डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास (तृतीय संस्करण), पृ० 276.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काव्य-प्रतिभा का सकुशल सामंजस्य हुआ है। निर्बाध कथा-प्रवाह, चरित्र-निरूपण की उदात्तता, रस-नियोजना और काव्य-शैली की दृष्टि से 'मानस' हिंदी का सर्वश्रेष्ठ काव्य-ग्रन्थ तो माना ही जाता है किन्तु भक्ति और लोकसंग्रह के अद्भुत समंवय, गुरुत्व और गाम्भीर्य, व्यापक जीवनी शक्ति और सशक्त प्राणवत्ता के कारण इसकी तुलना अन्य भाषाओं के अत्यल्व महाकाव्यों से की जा सकती है।

'मानस' के काव्य रूप के विषय में विद्वानों में मत-वैभिन्य है, अधिकतः विद्वान 'मानस' को निर्दोष महाकाव्य मानते हैं। विद्वानों के कुछ मत यहां प्रस्तुत हैं—डा० श्रीकृष्णलाल के विचारानुसार 'मानस' महाकाव्य नहीं बल्कि पुराण है, उसमें काव्यात्मकता भी है. अतः उसे पुराण-काव्य कहा जा सकता है।[26] आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'मानस' को चरितकाव्य मानते हैं : उनके शब्दों में 'हिंदी में चरितकाव्य बहुत थोड़े हैं। चरितकाव्य में अवधी भाषा को ही सफलता प्राप्त हुई और अवधी के सर्वश्रेष्ठ रत्न हैं 'रामचरितमानस' और 'पद्मावत।[27] आचार्य शुक्ल 'मानस' के महाकाव्यत्व को भी स्वीकार करते हैं। तुलसीदास के काव्यों की स्वानुभूति-निरूपिणी (सबजेक्टिव) और वाह्यार्थ-निरूपिणी (आबजेक्टिव) प्रवृत्तियों का निरूपण करते हुए वे कहते हैं, 'रामचरितमानस के संबंध में यह प्रश्न हो ही नहीं सकता क्योंकि यह एक प्रबंधकाव्य या महाकाव्य है। प्रबंधकाव्य सदा बाह्यार्थ-निरूपक होता है।[28] डा० राजपति दीक्षित मानस' में 'एपिक' की सभी विशेषताएं गिनाते हैं। उनके विचारानुसार 'एपिक' के दोनों भेदों 'अथेण्टिक एपिक' तथा 'लिटरेरी एपिक' की विशेषताएं 'मानस' में विद्यमान हैं।[29] श्री राजबहादुर लमगोढ़ा के मंतव्यानुसार 'रामचरितमानस' संसार का सर्वश्रेष्ठ नाटकीय महाकाव्य है।[30] उक्त आलोचकों ने विषय और शैली-वैशिष्टय के आधार पर ही 'मानस' का काव्य-रूप निश्चित करने का प्रयत्न किया है। आलोचक डा० शम्भूनाथ सिंह के विचारानुसार सम्पूर्ण जीवन-वृत्त के वर्णन की दृष्टि से 'रामचरितमानस' में शास्त्रीय महाकाव्य और चरितकाव्य दोनों का समन्वय हुआ है।[31] 'मानस की काव्य-रचना में अधिकाधिक पौराणिक शैली का प्रयोग हुआ है, इसीलिए आलोचकों ने इसे पुराण या पुराण-काव्य कहा है. किंतु इसमें महाकाव्य के सभी परम्परागत अथवा शास्त्रीय लक्षणों का सकुशल निर्वाह हुआ है इसलिए 'मानस' को केवल पुराण कहना उचित नहीं है। डा० माताप्रसाद गुप्त भारतीय और पाश्चात्य लक्षण-

26. मानस-दर्शन, पृष्ठ 147.
27. जायसी शब्दावली, चतुर्थ संस्करण, भूमिका, पृष्ठ 201.
28 गो० तुलसीदास, सप्तम सं० पृष्ठ 65-76.
29. तुलसीदास और उनका युग, पृष्ठ 395-96.
30 विश्वसाहित्य में रामचरितमानस, सं० 1944, पृष्ठ 1.
31. हिंदी महाकाव्य का स्वरूप-विकास, पृष्ठ 490.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्रन्थों और सिद्धांतों के आधार पर 'मानस' की पर्याप्त विवेचना प्रस्तुत करके इसे एक सफल महाकाव्य मानते हैं।[32] 'मानस' को पुराण कहते हुए आप लिखते हैं, 'वह पुराण तो निस्सन्देह है, किन्तु महाकाव्य भी है, और पुराण से अधिक वह महाकाव्य है'।[33] अतः निर्विवाद रूप से 'मानस' को सफल महाकाव्य माना जा सकता है, इसे केवल पुराण नहीं कहा जा सकता। 'मानस' में निरुपित पौराणिक तत्वों को दृष्टि में रखकर अधिक से अधिक इसे पौराणिक शैली का महाकाव्य कहा जा सकता है। इस तरह ,मानस' के व्यापक महाकाव्यत्व के अन्तर्गत चरितकाव्य, पुराण नाटकीयता आदि का सुन्दर सामंजस्य निरूपित हुआ है।

'मानस' पर समग्र रूप से विविध पुराणों और उपनिषदों के अतिरिक्त आदि काव्य 'वाल्मीकि रामायण' से लेकर पूर्ववर्ती समस्त संस्कृत रामकाव्य का किसी न किसी प्रकार से प्रभाव पड़ा है। वस्तु-संगठन और काव्य-शैली दोनों पर उनका प्रभाव देखा जा सकता है। वस्तु नियोजन की दृष्टि से मूलाधार वाल्मीकि का रामायण ही है, जिसमें 'अध्यात्म रामायण' के अनुसार उन्होंने उत्कट भक्ति भावना की प्रेरणा से यत्र-तत्र यथोचित परिवर्तन भी किए गए हैं और कई नए प्रसंगों या प्रसंगांशों का निरूपण भी किया है। महाकाव्यों की शैली से अनुप्रेरित ग्रंथारम्भ में मंगलाचरण स्वरूप वंदना, सज्जन-प्रशंसा, खल-निंदा आदि का वर्णन किया है, और पौराणिक उपदेश-शैली से प्रभावित होकर बीच-बीच में नीति-कथनों, दार्शनिक विचारों एवं सर्वोपरि भक्ति-महात्म्य का सूत्रपात किया है। इसी तरह' प्रसन्न-राघव', 'हनुमन्नाटक' आदि से प्रभावित होकर संवादों में उन्होंने नाटकीय शैली का समन्वय स्थापित किया है। अपने पूर्ववर्ती काव्य के समन्वय द्वारा तुलसीदास ने सर्वप्रथम 'मानस' में रामकथा को जो व्यापकता प्रदान की उसका समग्र रूप से अनुकरण किसी भी परवर्ती कवि की शक्ति से बाहर की वस्तु सिद्ध हुई।

2.2.2. रामचंद्रिका

गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन अन्य राम-काव्य[34] में केशवदास कृत 'राम-चंद्रिका' (सं॰1658) का ही विशिष्ट एवं प्रमुख स्थान है। 'राचंद्रिका' में कवि ने अपेक्षाकृत वर्ण्य-विषय के रचना-शैली की ओर अधिक ध्यान दिया है, जिसका स्पष्ट उल्लेख कवि ने प्रारम्भ में ही किया है—'रामचंद्र की चंद्रिका बरनत ही बहु-छंद।[35] कथावस्तु की दृष्टि से 'रामचंद्रिका' में प्रबंध काव्योचित पुष्ट संबंध-निर्वाह दिखाई नहीं देता है। कथा-क्रम विश्रृंखलित और विच्छिन्न सा प्रतीत होता हैं। जिसमें प्राय; आवश्यक प्रसंगों का संक्षेप या उल्लेख मात्र तथा अनावश्यक प्रसंगों का विस्तार मिलता है। कहीं-कहीं पर कथा-व्यापार का संकेत मात्र मिलता है और

32. तुलसीदास, पृष्ठ 365-370.
33. वही, पृष्ठ 371.
34. हिंदी साहित्य कोष, पृष्ठ 894.
35. राम चं॰, पृष्ठ 121.

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विविध स्थलों पर उपेक्षा सी। इसीलिए 'रामचंद्रिका' को अलग-अलग लिखे गये प्रसंग-वर्णनों का संग्रह मानना समीचीन है।[36] 'रामचंद्रिका' के पूर्वार्द्ध में कथा-वस्तु-निर्वाह का अच्छा प्रयत्न हुआ है—विश्वामित्र-आगमन से लेकर सीता-स्वयंवर तक व प्रसंग पारस्परिक सम्बन्धित हैं और उत्तरार्द्ध में भी लव-कुश चरित तथा युद्ध-वर्णन भी काव्योचित ढंग से हुआ है। शेष बीच के वर्णन में मुख्य कथा और प्रासंगिक घटनाओं की अपेक्षित अन्विति का अभाव दिखता है, अनावश्यक वर्णनों से कथा-शृंखला प्रायः टूटी हुई प्रतीत होती है। मुख्य कथा अलंकारों के अत्यधिक प्रयोग, चमत्कार एवं कवि के पांडित्य-प्रदर्शन में दब सी गई है। कवि ने प्रायः मुख्य कथा से हटकर राजकीय ठाट-बाट, नखशिख, रूप-सौन्दर्य और विभिन्न दृश्यों एवं वस्तुओं का वर्णन किया है। कथा-वर्णन के अंतर्गत जहां कहीं भी उन्हें अवसर मिला है, उन्होंने वस्तु दृश्यों का सविस्तार वर्णन किया है। रामचंद्रिका में विविध प्रसंग ऐसे मिलते हैं, जिनका प्रत्यक्ष-रूप से रामकथा से कोई संबध नहीं है। उनमें से प्रमुख हैं सनाढ्योल्लेख (21.15-20) चौगान, शयनागार और राजभवनों का वर्णन (29) संगीत-प्रशंसा, सेज-वर्णन, प्रातः कृत्य और 56 प्रकार के भोजन का वर्णन (30) रूप-सौन्दर्य एवं नखशिख वर्णन (31) उपवन का वर्णन (32) आदि। 'केशवदास' का वर्णन-कौशल अद्भुत है. जिसका यथेष्ट परिचय 'रामचंद्रिका' में सर्वत्र मिलता है। 'रामचंद्रिका' का मुख्याधार 'वाल्मीकि-रामायण' ही है। इसके साथ-साथ केशवदास अन्य संस्कृत राम-काव्यों, विशेषतया नाटकों से अत्यधिक प्रभावित रहे। केशवदास ने 'रामचंद्रिका' की रचना में वाल्मीकि की प्रेरणा का स्वयं ही उल्लेख किया है—वाल्मीकि ही सपने में उन्हें राम का महात्म्य सुनाकर अदृष्ट होते हैं:—

मुनिपति यह उपदेश दै जबही भये अदृष्ट।
केशवदास तहीं कर्‌यो रामचंद्रजू इस्ट॥ (1 18)

'वाल्मीकि रामायण' के अतिरिक्त वे संस्कृत के रामकथा सम्बन्धी नाटकों से अधिक प्रभावित हुए। रामचंद्रिका के निर्माण में इस कवी ने प्रसन्नराघव 'हनुमन्नाटक', 'अनर्थराघव, 'कादम्बरी' और 'नैषध' की कई पंक्तियों का अनुवाद करके उनका उपयोग किया है।'[37] 'वाल्मीकि रामायण' और 'उत्तररामचरित' के आधार पर केशवदास ने रामचंद्रिका के उत्तरार्द्ध में सीता-वनवास, लव-कुश-जन्म एवं युद्ध आदि का भी वर्णन किया है। 'रामचद्रिका' में कुछ मौलिक प्रसंग-वर्णन भी मिलते हैं, जिनका उल्लेख 'कथा-विवेचन' अध्याय के अंतर्गत होगा।

केशवदास ने 'रामचंद्रिका' को महाकाव्य बनाने का भरसक प्रयत्न किया है।

36. आ० रामचन्द्र शुक्ल—हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ० 191.
37. डा० रामनिरंजन पाण्डे—रामभक्ति शाखा, पृ० 417.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कथानक लोकविश्रुत और नायक पुरुषोत्तम भगवान् राम हैं। ग्रन्थ की रचना आठ से अधिक यानि 39 सर्गों में हुई है। इसमें परम्परागत वस्तुवर्णनों एवं दृश्यों का यथोचित वर्णन है और रस-नियोजन के अतिरिक्त गरिमामय भाषा-शैली का प्रयोग हुआ है किन्तु फिर भी 'रामचंद्रिका' महाकाव्य न बन सका। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के विचारानुसार 'प्रबन्धकाव्य रचना के योग्य न तो केशव में अनुभूति ही थी, न शक्ति। .... वे वर्णन वर्णन के लिए करते थे, न कि प्रसंग या अवसर की अपेक्षा से।'[38] कथानक की शिथिलता, असम्बद्ध वर्णनों का विस्तार, चरित्र-चित्रण का उलझाव तथा बहुविध अनपेक्षित अलकारों तथा छन्दों का चमत्कार पूर्ण प्रयोग ही 'रामचंद्रिका' के महाकाव्यत्व में बाधक है। 'महाकाव्य' सम्बन्धी पर्याप्त विवेचना के उपरान्त आलोचक डा० शम्भूनाथ सिंह लिखते हैं 'रामचंद्रिका' को महाकाव्य क्या एक सफल प्रबन्धकाव्य भी नहीं माना जा सकता।'[39]

'रामचंद्रिका' को महाकाव्य न मानने पर इसका महत्व कदाचित कम नहीं होता। काव्य-रसिक पाठक इस रचना की उपेक्षा कभी नहीं कर सकता। उदात्त भाषा-शैली और छन्द विधान की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण रचना है। छन्द वैविध्य-प्रधान शैली में लिखी जाने के कारण 'रामचंद्रिका' हिन्दी के महाकाव्यों में एक उल्लेखनीय प्रयोग है। राजकीय वर्णनों और नाटकीय संवादों की दृष्टि से हिन्दी साहित्य में इसका अनुपम स्थान है। इसमें वस्तु एवं काव्यगत ऐसा वैशिष्ट्य है कि यह अपने ढंग का विशिष्ट महाकाव्य कहलाने का अधिकारी भी है। डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में 'रामचंद्रिका' केशव का ऐसा असाधारण महाकाव्य है जिसमें परम्परापालन के स्थान पर वैशिष्ट्य के समावेश का ध्यान अधिक रखा गया है।'[40]

2.2 3. गोविन्द रामायण

रीतिकालीन राम-काव्यों की संख्या बहुत अधिक है, जिनका कथावस्तु एवं शिल्प की दृष्टि से अधिक महत्व नहीं है। कवि शृंगार-वर्णन के प्रति अधिक आकर्षित हुए। डा० कामिल बुल्के के शब्दों में 'रीतिकाल का रामसाहित्य महत्वपूर्ण न होते हुए भी भक्तिकाल तथा आधुनिक काल की अपेक्षा कहीं अधिक विस्तृत है। शृंगार की व्यापकता प्रसिद्ध संस्कृत राम-काव्य के पद्यानुवाद, हनुमानविषयक रचनाओं का बाहुल्य प्रारम्भिक नाट्य तथा गद्य-साहित्य में रामकथा का प्राधान्य, ये रीति-कालीन राम-साहित्य की प्रमुख विशेषताएं हैं।'[41] उक्त काल के अन्तर्गत सिखों के दसवें गुरु गोविन्दसिंह के 'गोविन्द-रामायण' (सं० 1755) को विशेष स्थान प्राप्त

---

38. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 195.
39. महाकाव्य स्वरूप—विकास, पृष्ठ 691.
40. हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास, सं० डा० नगेन्द्र, पृष्ठ 310.
41. हिन्दी साहित्य कोष, पृष्ठ 895.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है, दोनों विषय-निर्वाह और मौलिक प्रसंगों की उद्भावना की दृष्टि से प्रस्तुत रामायण उल्लेखनीय है ।

'गोबिंद रामायण' के अंत पर गुरु गोबिंदसिंह लिखते हैं—'श्रीराम की कथा हर युग में अटल रहेगी, यह कथा सब लोग अनेक प्रकार गाते हैं ।[42] इसी भावना से अनुप्रेरित होकर कवि ने इसकी रचना परम्परागत काण्डों में न करके विभिन्न 22 शीर्षकों के अंतर्गत की है, सर्गों का नाम विषयानुरूप से दिया है । जो क्रमशः इस प्रकार हैं—'रामावतार' सीतास्वयंवर, अवध-प्रवेश, वन-वास, वन-प्रवेश, खर-दूषण दैत्य, युद्ध, सीता हरण, सीता की खोज, लंका-गमन, प्रहस्त युद्ध, त्रिमुण्ड युद्ध, महोदर युद्ध, इंद्रजीत युद्ध, अतिकाय युद्ध, मकराक्ष युद्ध, रावण युद्ध, सीता-मिलन, अयोध्या-आगमन, माता-मिलन, सीता-वनवास, सीता द्वारा जीवन-दान तथा अवध प्रवेश । कथा का मुख्याधार 'वाल्मीकि रामायण' ही है, किंतु अन्य संस्कृत राम-काव्यों का भी प्रभाव इस पर पड़ा है । कवि ने कई मौलिक प्रसंगों को भी राम-कथा में जोड़ा है । इसमें रामकथा के प्रारम्भ से लेकर सीता के पृथ्वी-प्रवेश और राम के स्वर्गारोहण तक की कथा वर्णित है ।

'गोबिंद रामायण' में युद्धों का अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन मिलता है, जहां कहीं भी कवि को अवसर सुलभ हुआ है, उन्होंने युद्धों का विस्तृत वर्णन किया है । 'वे वीर रस के उपासक और उसी की टंकार सुनने के अभ्यस्त थे ।[43] कवि ने राम-परशुराम भेंट प्रसंग में भी विस्तृत रण-सज्जा और युद्ध का वर्णन किया है ।[44] युद्ध-वर्णनों में हाथी-घोड़ों के वर्णन के प्रति कवि ने विशेष रुचि दर्शायी है । युगानुरूप परिस्थितियों को दृष्टि में रखकर युद्ध-वर्णन या वीर रस का संचार अपेक्षित था । श्रीराम को उन्होंने दुष्ट-दल-दलन के रूप में चित्रित किया है इसीलिए राक्षसों को भी युद्ध-वर्णन में यथोचित महत्व मिलता है । 'उस समय की परिस्थितियाँ देखते हुए ऐसे लोकनायक की भावनायों से ओतप्रोत काव्य का सृजन जिसमें हमारे अपने-पन का चित्र और उनकी विशेषताएँ झलकती हों तथा उसके भाव-रंगों पर पड़ी हुई धूल साहसिक वर्णन-कौशल और पद-रचना द्वारा दूर करने का प्रयत्न किया गया हो—उचित ही है ।[45] विष्णु का अवतार होकर भी कवि ने राम को एक आदर्श लोकनायक के साथ-साथ योद्धा के रूप में चित्रित किया है और उनकी इस वीरता का प्रदर्शन करने के लिए गुरु गोबिंदसिंह को विस्तृत युद्धों और रण-सज्जा का चित्रण करना पड़ा । इस तरह राम को युद्ध-वीर के रूप में चित्रित करके कवि ने समसामयिक श्रृंगारिक लिप्साओं को चेतावनी दे दी, विलासियों को सोते से

42. रामकथा जुग-जुग अटल, सब कोई भाखत नेत । पृष्ठ 240.
43. संत इंद्रजीत चक्रवर्ती-गो० रामायण, 'दो शब्द' पृष्ठ 2.
44. गो० रा० पृष्ठ 25-33.
45. श्री संत इंद्रसिंह चक्रवर्ती—गो० रा० पृष्ठ 1-2.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जगाने का प्रयत्न किया, जिन्होंने अपनी विलासिता में अवतार राम और कृष्ण को पूर्णत: सम्मिलित कर रखा था।

'गोविन्द-रामायण' में विभिन्न छन्दों का प्रयोग हुआ है। भाषा मिश्रित है, जिसमें पंजाबी, उर्दू-फारसी के शब्दों का प्राचुर्य है। कवि के आलंकारिक प्रयोग, वस्तु-दृश्यों और नखशिख रूप-वर्णन देखकर रामचन्द्रिका की बार-बार याद आती है। युद्ध-वर्णन एवं रूप-सौंदर्य वर्णन में कहीं-कहीं केशवदास से वे आगे हैं। सीता का सौंदर्य-वर्णन देखिए :—

> किधां देवकन्या किधां वासवी है। किधाँ यक्षिणी किन्नरी रागिनी है।
> किधां गंधरी दैतजा देवता सी। किधाँ सूरजा शुद्ध सोधी सुधा सी।
> किधां यक्ष बिद्याधरी गंधरी है। किधां रागिनी भाग पूरे रची है।।
> किधां स्वर्ण के चित्र की पुत्रिका है। किधां राम की कामिनी की प्रभा है।
> किधां चित्र पुत्रिका सी बनी है। किधां शंखिनी चित्रणी पद्‌मिनी है।।[46]

'गो० रामायण' में राम और सीता का नखशिख वर्णन रीतिकालीन परिपाटी के अनुरूप ही हुआ है। 'गोविन्द-रामायण' में रीतिकालीन चमत्कार या पांडित्य-प्रदर्शन के अत्यल्प प्रसंग-चित्रण मिलते हैं, यद्यपि 'उनका अस्तित्व रीतिकाल में था, अत: चमत्कारवादी न होते हुए भी चमत्कारवाद से वे बिल्कुल खाली न रह सके।[47] समसामयिक चमत्कारी भावना को उन्होंने प्रमुख स्थान नहीं दिया, केवल युगीन परिस्थितियों एवं काव्य-परम्परा के अनुकूल उसमें रीतिकालीन काव्य-वैशिष्ट्य का समावेश हुआ है। 'गोविन्द-रामायण' का महत्व चमत्कार-प्रदर्शन या अभिव्यक्ति कौशल से कहीं अधिक कवि द्वारा कथावस्तुनियोजना और चरित्र-चित्रण के विकास में है और इनकी दृष्टि से ही साहित्यप्रेमी 'गोविन्द-रामायण' की उपेक्षा नहीं कर सकता है।

अन्य रीतिकालीन राम-काव्यों का कथावस्तु या चरित्र-विकास की दृष्टि से कोई महत्व नहीं है। अधिकतर रचनाओं पर ललित कृष्ण-काव्य परम्परा की गहरी छाप है। प्राय: राम और सीता का चित्रण साधारण कामलोलुप नायक-नायिका के रूप में हुआ है जिसमे कामोत्तेजक शृंगारिकता का विपुल समावेश हुआ है। परम्परागत कथा-वर्णन भी असन्तुलित और असम्बद्ध दिखता है। इस तरह रीतिकालीन काव्य या रामकथा-काव्य-विकास में महत्पूवर्ण योगदान नहीं हुआ है। कवियों का राम-काव्य-वर्णन किसी भी महती प्रेरणा से अनुप्रेरित न होकर कृत्रिम चमत्कार प्रदर्शन और शृंगारिक मनोवृत्ति की पिपासाकुलता का परिणामस्वरूप है।

---

46. गो० रा० पृष्ठ 24-25.
47. श्री ओमप्रकाश आनंद—गो० रामायण, भूमिका, पृष्ठ 16.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2.2.4. आधुनिक काल में रामकथा-काव्य

आधुनिक काल में रामकथा-काव्य के मुख्यतः दो रूप मिलते हैं—एक पूर्ववर्ती भक्ति एवं श्रृंगारपरक परम्परा के अनुसार और दूसरा युग के बुद्धिवादी दृष्टिकोण से ओतप्रोत तथा नवीन मान्यताओं से पुष्ट। विद्वानों ने दोनों प्रकार के काव्यों की विस्तृत सूची प्रस्तुत की है।[48] पहले प्रकार के काव्यों का परम्परागत कथा-निर्वाह या चरित्र विकास की दृष्टि से अधिक महत्व नहीं है अतः यहां पर दूसरी कोटि की प्रमुख रचनाओं पर ही संक्षेप में विचार किया जायेगा।

युग की नवीन सामाजिक चेतना, मूल्यबोध और समसामयिक परिवर्तनशील मानसिक प्रवृत्तियों एवं विचारधाराओं की उपेक्षा जागरूक कवि-हृदय कदापि नहीं कर सकता है, प्रत्युत् उन्हीं के परिवेश में उनका चिंतन-मनन स्वतः प्रतिफलित होता है। युग की अनुकूल सीमाओं में अनवरत प्रवाहित रामकथाधारा का मूलभूत दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ जिसमें राम के अवतार रूप को कम महत्व मिला और राम का एक आदर्श लौकिक मानव-रूप ही मुखर हो उठा। भक्तिकालीन धार्मिक भावना या रीतिकालीन श्रृंगारिकता की अपेक्षा नवीन सामाजिक, नैतिक एवं राजनीतिक आदर्शों को प्रश्रय मिला। आधुनिक राम-काव्य की सबसे प्रमुख विशेषता है—पूर्ववर्ती युग-युग से उपेक्षित या अर्द्ध विकसित पात्रों का चरित्र विकास। इतना ही नहीं बल्कि उनको अपने काव्य-ग्रंथों में नायक-नायिका के पद पर प्रतिष्ठित करने की नवीन प्रवृत्ति जागृत हुई। इस नवीन युगानुरूप काव्य-ग्रन्थों में कई ग्रन्थ—रामचरित उपाध्याय कृत, 'रामचरित चंद्रिका' (1919 ई०) तथा 'रामचरित —चिंतामणि (1920 ई०) मैथलीशरणगुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' (1925 ई०) और 'साकेत' (1932 ई०) शिवरत्नशुक्ल कृत 'भरत-भक्ति' अयोध्यासिंह उपाध्या कृत 'वैदेही वनवास' (1936 ई०), बलदेवप्रसाद मिश्र कृत कौशल किशोर' (1935 ई०) तथा 'साकेत-सन्त' (1946 ई०), रामनाथ ज्योतिषी का 'रामचंद्रोदय' (1937 ई०) केदारनाथ मिश्र कृत 'कैकेयी' (1950 ई०), तथा बालकृष्ण शर्मा नवीन कृत 'उर्मिला' (1957 ई०)[49] आदि हैं। उक्त रचनाओं में 'साकेत' 'वैदेही-बनवास' और 'साकेत सन्त' का महत्वपूर्ण स्थान है। अध्ययन की दृष्टि से इसीलिए इन्हीं प्रतिनिधि एवं प्रमुख रचनाओं को चुना गया है।

2.2 4.2 साकेत

आधुनिक हिन्दी रामकथा-काव्य में 'साकेत' का प्रमुख स्थान है। कथानक की दृष्टि से 'साकेत का मुख्य उद्देश्य यह है कि उर्मिला काव्य की उपेक्षिता न रह जाये।[50] परन्तु इसके साथ-साथ कवि समसामयिक सामाजिक और राजनीतिक

48 डा० माताप्रसाद गुप्त—हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृष्ठ 10-11.
49. कवि के अनुसार रचना-काल 1921 से लेकर 1934 ई० का है। किन्तु यह 1957 ई० में ही प्रकाशित हुई है। दे० भूमिका, उर्मिला।
50. आचार्य रामचंद्र शुक्ल-हिन्दी साहित्य का इतिहास, 11वां सं० पृष्ठ 565

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वस्तुस्थिति एवं आंदोलनों की अपेक्षा आंख मूंद कर न कर सके। अन्य परम्परागत वस्तु-दृश्यों के वर्णन के अतिरिक्त 'साकेत' में देशभक्ति, प्रजातन्त्र, साम्यवाद, गांधीवाद एवं नारी की महत्ता आदि विषयों की भी पर्याप्त चर्चा हुई है। डा० नगेन्द्र के विचारानुसार 'साकेत' की मुख्य कथा उर्मिला-लक्ष्मण के संयोग-वियोग की कथा है, जिसके साथ राम और सीता की कथा भी लिपटी हुई है।[51] उपेक्षिता के प्रति न्याय करना ही साकेतकार का मूख्य उद्देश्य रहा है। कथात्मक प्रसंगों की कुछ नवीन उद्भावनाएँ भी कवि ने इसी उद्देश्य से प्रस्तुत की हैं। उर्मिला के साथ-साथ माण्डवी और कैकई के चरित्रोत्कर्ष का प्रयत्न भी कवि ने किया है। साकेतकार ने पुरानी इतिवृतात्मक वर्णन-शैली में भी परिवर्तन किया है। चित्रकूट-मिलन के पश्चात् इसमें बालकाण्ड की रामकथा सम्बन्धित घटनाएं, उर्मिला द्वारा वर्णित की गई है, शत्रुघ्न अरण्य-काण्ड की और हनुमान सुन्दर, किष्किन्धा और लंका काण्डों की घटनाओं का वर्णन करते हैं। युद्ध का सारा दृश्य गुरु वशिष्ठ दिखाते हैं। मैथिलीशरण गुप्त ने रामकथा के उपेक्षित स्थलों को प्रकाश में लाने और अप्राकृतिक और अस्वाभाविक घटनाओं तथा प्रसंगों का भावात्मक धरातल पर वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक व्याख्या करने का सफल प्रयत्न किया है। डा० कमलाकांत पाठक के मंतव्यानुसार 'साकेत में भारतीय-संस्कृति का उन्नयन, आधुनिक युग की बौद्धिकता, आदर्श निष्ठा और नारी-भावना, कथा-शिल्प की नवीनता तथा राष्ट्रीय चेतना एवं प्रबुद्ध मानवतावादी जीवन-दृष्टि का समाहार एक नया काव्य-स्वाद प्रदान करता है।[52]

'साकेत' के काव्य-रूप निर्धारण करते हुए आलोचकों ने विभिन्न मत प्रस्तुत किए हैं। 'साकेत' के कथानक चित्रण में प्रेम-तत्व की प्रधानता के कारण आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी इसे 'प्रेम-काव्य कहते हैं। उनके कथनानुसार 'साकेत' महाकाव्य के आवरण में प्रेम-काव्य बनना चाहता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही रामचरित का सम्पूर्ण बालकाण्ड निकाल कर प्रेमकथा का श्रीगणेश किया गया है। बालकाण्ड के अभाव में 'साकेत' की प्रेमकथा शिथिल न होकर अधिक संक्षिप्त और प्रभावशालिनी बन गई है।[53] हिन्दी के ऐतिहासिक विकास में 'साकेत' को सफल महाकाव्य मानते हुए डा० बाजपेयी लिखते हैं, 'साकेत' महाकाव्य ही नहीं आधुनिक युग का युगप्रवर्तक महाकाव्य है। समस्त हिन्दी-जगत को इसका गर्व और गौरव है'।[54] अन्य स्थल पर आप कहते हैं 'साकेत' काव्य का साहित्यिक जगत् में जो सम्मान है, हिन्दी के ऐतिहासिक विकास में उसकी जो देन है, युगचेतना के जो

---

51. डा० नगेन्द्र-साकेत; एक अध्ययन, पृष्ठ 12
52. मैथिलीशरण गुप्त-व्यक्ति और काव्य, पृष्ठ 393
53. हिण्दी साहित्य ; बीसवीं शताब्दी, पृष्ठ 40.
54. आधुनिक साहित्य, पृष्ठ 108.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नवोन्मेष उसमें अपनी आभा बिखेर रहे हैं, उन्हें देखते हुए 'साकेत' को महाकाव्य न कहना अन्याय होगा।[55] डा० हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने भी 'साकेत' को आधुनिक महाकाव्य माना है।[56]

'साकेत' की कथा वस्तु महाकाव्योचित प्रकार से सुसंगठित और सन्तुलित नहीं है। प्रारम्भिक आठ सर्गों में रामकाव्य का छोटा-सा अंश सविस्तार वर्णित है यद्यपि प्रबंधात्मकता का निर्वाह यथोचित हुआ है। नवम सर्ग में उर्मिला की विरह-वेदना का ही चित्रण मिलता है—यहां पर कथा-प्रवाह विशृंखलित-सा दिखता है और काव्य के अंतिम दो सर्गों में ही रामकथा के प्रधान अंश का वर्णन हुआ है। कवि का उद्देश्य लक्ष्मण उर्मिला के संयोग वियोग का चित्रण या उपेक्षित उर्मिला के चरित्र को उभारने तक ही सीमित नहीं रहा है, उन्होंने कथा का वर्णन भी किया है, जिससे एक साथ वे उपेक्षित पात्रों के चरित्रों के साथ पुर्णतः न्याय करते हुए कथा प्रवाह से संतुलन स्थापित न कर सके। कथात्मक असंतुलन के कारण कई विद्वान इसे महाकाव्य कहने से हिचकिचाते हैं। डा० शम्भूनाथ सिंह इसे वृहत् प्रबंध काव्य ही कहते हैं।[57] 'साकेत' परम्परागत जड़-बन्धनों से मुक्त होकर आधुनिक जन-जीवन के सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक तत्वों को इस प्रकार अपने में समेटे हुए हैं कि आलोचकों ने इसे 'जीवन-काव्य' के नाम से अभिहित किया है। डा० नगेन्द्र के विचारानुसार 'साकेत' एक जीवन-काव्य है। 'मानस' की अपेक्षा 'साकेत' में जीवन का अंश अधिक है।[58]

संक्षेप में 'साकेत' को परम्परागत शास्त्रीय लक्षणों के आधार पर सफल महाकाव्य न मानने पर भी इसका गौरव और ऐतिहासिक महत्व कम नहीं होता। रामकथा के विकास-क्रम में नवदृष्टिकोण के सन्निवेश, उपेक्षित पात्रों चरित्रोत्कर्ष और भाषा-शैली की दृष्टि से हिन्दी साहित्य में इसका एक विशिष्ट स्थान है।

2.2.4.2. वैदेही वनवास :

'वैदेही-वनवास' में विजयोपरान्त लंका से अयोध्या-आगमन पर लोकापवाद-शमन हेतु राम द्वारा गर्भवती सीता के निर्वासन की कथा वर्णित है। सीता राम की आज्ञा से वाल्मीकि-आश्रम में रहती है—जहां लव-कुश जन्म-वृतांत भी मिलता है। कवि ने कथावस्तु में विविध मौलिक उद्भावनाओं की भी सृष्टि की है, जिनमें से प्रमुख गर्भवती रानियों को प्रसव के समय कुलपति आश्रम भेज देने की प्रथा की उद्भावना है। लोकोराधन निमित्त राम और सीता का दाम्पत्य सुख-त्याग दर्शाना 'वैदेही-वनवास' का मुख्य उद्देश्य है, जिसके निर्वाह से कवि को पूर्णतः

55. आधुनिक साहित्य पृष्ठ 54.
56. हिन्दी साहित्य. पृष्ठ 448.
57. हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप—विकास, 697.
58. साकेत, एक अध्ययन, पृष्ठ 173.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सफलता मिलती है। वाल्मीकि की 'रामायण', 'रघुवंश' 'उत्तररामचरित' पर आधारित कथावस्तु में कवि ने नव-युग-चेतनानुरूप परिवर्तन भी किए हैं। काव्य में शंम्बूक-वध, अश्वमेध-प्रसंग और लव-कुश युद्ध का वर्णन नहीं मिलता है। कथानक की एकरूपता इसमें मिलती है और प्रासंगिक घटनाओं की कमी खटकती है।

अयोध्यासिंह उपाध्याय ने 'वैदेही-वनवास' की रचना महाकाव्य के शास्त्रीय लक्षणों को दृष्टि में रखकर करने का प्रयत्न किया है। कथानक 18 सर्गों में विभक्त है। नायक क्षत्रिय-कुल भूषण राम हैं। लोकधर्म की प्रतिष्ठा ही कृति का मुख्य लक्ष्य है। करुण रस का प्राधान्य मिलता है। भाषा-शैली की उदात्तता असंदिग्ध है। परम्परागत वस्तु एवं दृश्य-वर्णन इसमें अधिक हैं। प्रत्येक सर्ग के अंत में दोहा छन्द के प्रयोग से छंद-परिवर्तन किया गया है। किंतु महाकाव्योचित कथा-वस्तु की व्यापकता प्रस्तुत काव्य में अप्राप्य है। कथावस्तु रामकथा के एक ही प्रसंग से संबंधित है। अधिकांश महाकाव्योचित लक्षणों के विद्यमान होने पर ही विषय की संकीर्णता को देखने पर आलोचकों को इसे महाकाव्य मानने में संकोच होना स्वाभाविक ही है। कथानक के सफल निर्वाह, चरित्र-विकास एवं उदात्त भाषा-शैली की दृष्टि से हिन्दी साहित्य और विशेषतः रामकथा-काव्य में 'वैदेही-वनवास' का विशिष्ट स्थान है। परम्परागत रामकथा, आर्य-संस्कृति, धर्म आदि के साथ-साथ नवीन विचारधाराओं का सकुशल सन्निवेश, अस्वाभाविक एवं अप्राकृतिक घटनाओं एवं दृश्यों की बुद्धिसंगत एवं मनोवैज्ञानिक व्याख्या तथा आदर्श और यथार्थ का उच्चस्तरीय समन्वय ही 'वैदेही वनवास' की ऐसी काव्यात्मक विभूतियां हैं जो पाठक को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल होती हैं।

2.2.4.3. साकेत-सन्त

जैसा कि नाम से स्पष्ट है भरत इस काव्य के नायक हैं और माण्डवी नायिका। दोनों के चरित्र-विकास की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण रचना है। कवि का मुख्य उद्देश्य ही भरत और माण्डवी का आदर्श चरित्रांकन है। माण्डवी का चरित्र-विकास सर्वप्रथम 'साकेत-संत' में ही हो पाया है। वस्तु-विन्यास और शैली पर 'साकेत' का प्रभाव पड़ा है। 'साकेत' का प्रारम्भ और अंत लक्ष्मण-उर्मिला संवाद से होता है और 'साकेत-सन्त' का भरत-माण्डवी के वार्तालाप से। इसका 13 वां सर्ग भी 'साकेत' के नवम सर्ग की शैली का अनुकरण करता है। 'साकेत-सन्त' में भी भरत हनुमान के बाण से गिराकर उनसे राम की कथा सुनते हैं। योगा-भ्यास से वे राम की सहायता के लिए लंका जाने को उधत होते हैं और वशिष्ठ जी उन्हें दिव्य चक्षुओं से सारी घटनाएं दिखाते हैं।

'साकेत-संत' में कथावस्तु विषयक कवि की कुछ मौलिक उद्भावनाएँ उल्लेख-नीय हैं। जैसे कैकेयी के वरदानों को उसके विवाह की शर्त माना गया है। भरत को राज्य देने और राम के निर्वासन के षड्यंत्र में भरत के मामा का हाथ है,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदि 'साकेत-संत' में नवयुगीन विविध सामाजिक, वैज्ञानिक और राजनीतिक विचारों का सन्निवेश हुआ है। पूंजीपतियों की शोषण-नीति की उन्होंने निन्दा की है :—

निर्धन की कुटिया ढाकर, जो अपना महल बनाते
आहों की फूंकों से है, वे एक दिवस ढह जाते। (1.52)

आधुनिक वैज्ञानिक यंत्र आविष्कारों के युग से वे अप्रभावित नहीं हैं, चलचित्रों के रूप का उन्होंने प्रयोग किया है।[59] 'साकेत-सन्त' में आदर्श प्रजातंत्र राज्य, गांधीवाद एवं शासक वर्ग के कर्त्तव्यों का भी निर्देश मिलता है।[60] गांधीवादी धारणा से प्रभावित होकर माण्डवी खादी की धोती पहनती है।[61] अतिरिक्त इनके प्रस्तुत रचना में जन सेवा, सत्याग्रह, राष्ट्रीय एकता एवं देश-भक्ति की रूपरेखा भी यत्र-तत्र निर्दिष्ट हुई है।[62]

'साकेत-सन्त' में भी महाकाव्य के परम्परागत अधिकांश लक्षणों का पूर्ण निर्वाह देखा जा सकता है—कथानक लोक विश्रुत है। नायक क्षत्रिय-कुल का वंशज भरत। धर्म की प्रतिष्ठा प्रबल है। प्रधान रस शांत है। प्रत्येक सर्ग में एक छन्द का प्रयोग और अन्त में छन्द-परिवर्तन के नियम का पालन किया गया है। इसमें परम्परागत वस्तु, प्रकृति, ऋतुओं आदि दृश्यों का चित्रण हुआ है, आदि। किन्तु इसमें भी महाकाव्योचित कथावस्तु का निर्वाह नहीं हुआ है—भरत और माण्डवी से सम्बन्धित कथा-प्रसंगों का वर्णन अधिक विस्तार से हुआ है और अन्य प्रसंग गौण हैं। काव्य में सम्पूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति का अभाव है, इसलिए इसे सफल महाकाव्य नहीं कहा जा सकता। कथा की मौलिक उद्भावनाओं, भरत और माण्डवी के चरित्र-विकास और गरिमामय उदात्त भाषा-शैली की दृष्टि से यह एक उत्कृष्ट रचना है।

2.2 4.4. अन्य रचनाएं :

आधुनिक काल की अन्य रामकथा-विषयक रचनाओं में 'रामचरित चिंतामणि', 'रामचन्द्रोदय', कौशल-किशोर' और 'उर्मिला' उल्लेखनीय हैं।

'रामचरित-चिंतामणि' की कथावस्तु का मुख्याधार 'वाल्मीकि-रामायण' है। काव्य-रचना 25 सर्गों में हुई है। वस्तु-विन्यास शिथिल है, प्रासंगिक घटनाओं तथा

---

59. साकेत सन्त, 9.40, 13.55.
60. वही 12.41, 13.45, 14.4 आदि.
61. वही 13.45.
62. वही 12.30, 31, 43, 44, 45, 49, 13.17, 41, 75 तथा 14.3 आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुख्य घटनाओं में अपेक्षित अन्विति का अभाव है। चरित्र-चित्रण में भी कवि को सफलता न मिल सकी। अवतार होकर भी राम साधारण मानव के गुण-दोषों से युक्त हैं। रामराज्य-लोलुप, विधि विश्वसनीय हैं, वे पिता को भी दोष देते हैं और उनकी विवेकशून्यता पर आक्षेप करते हैं। सुग्रीव के समक्ष वे आत्म-प्रशंसा भी करना जानते हैं। कवि का दृष्टिकोण मूलतः उपदेशात्मक रहा है। आलोचकों के विचारानुसार कवि में धर्म, देश एवं गौ ब्राह्मण के उद्धार की ही भावना बनी रही और जहां कहीं भी उन्हें अवसर मिला, एक या दो छंद से इस भावना को व्यक्त करने का प्रयास किया और इन्हीं भावों की उमंग ने चरित्र-चित्रण में बाधा पहुंचाई।[63] रचना के मूल में कवि की कोई भी महती प्रेरणा नहीं है, जिससे काव्य उत्कृष्टता को प्राप्त होती। वास्तव में रामचरित उपाध्याय ने श्रीराम की कथा-भक्ति के उद्देश्य से नहीं वरन् राजनीति के दृष्टिकोण से उपस्थित करने का प्रयत्न किया है।[64] कवि को राजनीति के इस दृष्टिकोण में भी पूरी सफलता न मिल सकी, जिससे काव्य में कथांतर व्यापक तत्वों का समावेश हो सकता। कहा जा सकता है कि कवि वास्तव में किसी भी निश्चित उद्देश्य को लेकर आगे नहीं बढ़े हैं। वस्तु-विन्यास की शिथिलता और अशक्त भाषा-शैली की दृष्टि से रामकथा-काव्य में इस कृति का अधिक महत्व नहीं है।

रामनाथ ज्योतिषी कृत 'रामचंद्रोदय' में परम्परागत राम-कथा 16 कलाओं में विभक्त है। पहली आठ कलाओं में राम के जन्म से लेकर सीता के साथ विवाह करने के पश्चात् अयोध्या-आगमन तक कथा वर्णित है और अंतिम आठ कलाओं में राम-सीता की अष्ठयाम चर्चा, षटऋतु-वर्णन, वर्णाश्रम-व्यवस्था, राजनीति, कवि-परिचय एवं देव-वंदना आदि का वर्णन मिलता है। अंतिम सर्गों में काव्य के विषय-निर्वाह में शिथिलता है और प्रबंधात्मकता का अभाव है। विभिन्न कथा-सूत्रों का समूह जैसे प्रतीत होता है चरित्र-चित्रण में कवि ने कोई रुचि नहीं दर्शायी है—राम और सीता साधारण प्रेमी-प्रेमिका के रूप में चित्रित हुए हैं।[65] प्रकृति एवं ऋतुओं के चित्रण में कवि के कला-कौशल का परिचय मिलता है। भाषा का प्रवाह सुन्दर है। 1937 ई० में ब्रजभाषा की सर्वश्रेस्ठ रचना स्वीकृत होने पर कवि को देव पुरस्कार भी मिला है। इस तरह भाषा-सौंदर्य होने पर भी वस्तु-विन्यास की शिथिलता के कारण रामकथा-काव्य में प्रस्तुत कृति का अधिक महत्व नहीं है।

'साकेत संत' के अतिरिक्त श्री बलदेव प्रसाद मिश्र ने रामकथा के आधार पर 'कौशल-किशोर' और 'रामराज्य' की रचना की है। दोनों में प्रबंधात्मक शिथिलता

63. डा० प्रतिपालसिंह—बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य पृष्ठ 124.
64. डा० माताप्रसाद गुप्त—हिंदी पुस्तक साहित्य, पृ० 11.
65. रामचंद्रोदय कला 5, पृ० 97.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। दोनों की रचना किसी महती प्रेरणा के परिणाम-स्वरूप नहीं हुई है। कवि ने 'कौशल-किशोर' की भूमिका में लिखा है कि महाकाव्य लिखने के उद्देश्य से उन्होंने लक्षण-ग्रंथों का अध्ययन करके रामकथा के आधार पर 'कौशल-किशोर' की रचना की है। जहां काव्य में ऐसा प्रयत्न किया गया हो, मौलिकता का प्रश्न ही नहीं उठता है। पं० बलदेवप्रसाद मिश्र लिखते हैं—'मैं रघुवंश, किरात माघ आदि के पन्ने उलट गये। महाकाव्य के लक्षण देखे भाले। वर्ण्य-विषय की एक सूची बना ली···महाकाव्य की पूर्णता और नवीनता की धुन में मैंने यह भी निश्चय किया कि इस ग्रंथ में नवों रस होंगे, पर्याप्त प्रकृति-पर्यवेक्षण होगा, दरिद्रों की झोंपड़ी से लेकर राजमहल के वैभवों तक का वर्णन होगा, छंदों और तुकों में कई तरह के नमूने होंगे, प्रत्येक सर्ग का अंतिम छंद न केवल अग्रिम सर्ग के विषय का ही सूचक होगा वरन् उस सर्ग के प्रधान छंद का भी संकेत कर देगा ··इस प्रकार 8 अध्यायों वाला यह विशालकाय महाकाव्य तैयार हो गया है।[66] 'कौशल-किशोर' परम्परागत लक्षणों के आधार पर महाकाव्य भले ही माना जाय किंतु रामकथा-काव्य के विकास में उसका महत्वपूर्ण योग नहीं है। 'रामराज्य' भी ऐसी ही रचना है। इसमें कथानक का प्रारम्भ सुमंत्र के साथ रथ पर बैठकर राम के वन की ओर जाने के प्रसंग से होता है और नवम सर्ग तक रावण-वध आदि की घटनाओं का वर्णन मिलता है। दसवें में राम का राज्याभिषेक, 11वें में भारतीयों के मानव-धर्म और 12वें में रामराज्य की व्यवस्था का वर्णन किया गया है। रामकथा-विकास में कृति का कोई भी महत्व नहीं है। कवि ने कृति की भूमिका में स्वयं भी लिखा है—'कथा का उद्देश्य केवल कथा नहीं किंतु राष्ट्रीय एकीकरण और सुराज्य स्थापना से संबंधित राम के प्रयत्नों पर अपनी मति के अनुसार प्रकाश डालना है। कुछ स्थलों पर मैंने गोस्वामी जी की पंक्तियों का अविकल अनुवाद सा कर दिया है और कहीं कुछ अन्य श्लोकों का। सर्वथा मौलिक होने का दावा तो मैं कर ही नहीं रहा हूं।[67]

श्री केदारनाथ मिश्र कृत 'कैकेयी' और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' द्वारा रचित 'उर्मिला' दोनों विचार-प्रधान रचनाएँ हैं—दोनों का मुख्य उद्देश्य क्रमशः 'कैकेयी' और 'उर्मिला' का चरित्र-चित्रण ही है। दोनों नायिका-प्रधान काव्य हैं। 'कैकेयी' में कवि ने कैकेयी के प्रति परम्परागत चारित्रिक लांछन एवं उपेक्षा की भावना को मिटाने के प्रयत्न के साथ-साथ उसके चरित्र को ऊंचा उठाने का प्रयत्न किया है, इसमें भी नव-युगीन विचारधाराओं का विपुल समावेश हुआ है। वस्तु-संगठन एवं काव्यात्मक दृष्टि से इसका अधिक महत्व नहीं है। 'उर्मिला' में भी उर्मिला के चरित्रोत्कर्ष का प्रयत्न मिलता है। परम्परागत रामकथा को नवयुगीन बौद्धिक

66. 'कौशल किशोर'—भूमिका 2-3.
67. 'रामराज्य'—भूमिका, पृ० 9.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विचारधारा के अनुरूप मोड़ मिला है। कवि ने कृति की भूमिका में लिखा है 'रामायणीय घटनाओं का राम, सीता, सुमित्रा, कौशल्या और विशेषकर लक्ष्मण और उर्मिला के मनों पर क्या प्रभाव पड़ा, वे उन घटनाओं के प्रति किस प्रकार प्रतिकृत हुए, आदि का वर्णन ही इस ग्रंथ का विषय बन गया है। इसमें जो कुछ भी कथा-भाग है वह गृहीत है—वर्णनात्मक, अर्थात् घटना विवरणात्मक नहीं।[68] विचार-प्रधान काव्य होने के कारण इसमें नवीन उद्भावनाओं को भी जन्म मिला है। कवि के विचारानुसार राम की वन-यात्रा महान अर्थपूर्ण आर्य संस्कृति प्रसार की यात्रा थी।[69] उर्मिला में कवि की राष्ट्रीय एवं समाज-कल्याण की भावनाओं का भी सुन्दर समावेश हुआ है। हिंसा के प्रति कवि की आस्था नहीं थी। तलवार के बल पर किसी का हृदय परिवर्तित नहीं किया जा सकता। रावण की मृत्यु के पश्चात् राम कहते हैं :—

यही दुख है कि मैं वीर वर रावण हृदय न जीत सका।
इतना भर भी नहीं रह गया दशरथ-नंदन के वश का।।[70]

राम लक्ष्मण को उपदेश देते हुए कहते हैं :—

मत समझो रावण मरने से रावणत्व का अंत हुआ।
यों मरने से और अधिकतर विस्तृत मेरा पंथ हुआ।।[71]

68. 'उर्मिला'—भूमिका, पृष्ठ (च, छ)।
69. वही पृष्ठ (छ)।
70. उर्मिला 6.49.
71. वही 6. 52.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3 कथा-विवेचन

3.1. बालकाण्ड

बालकाण्ड को दो भागों में बांटा जा सकता है—प्रस्तावना तथा मूलकथा का आरम्भ। प्रस्तावना के पूर्वार्द्ध में मंगलाचरणस्वरूप वन्दनाएं विनय-प्रदर्शन, राम-नाम एवं कथा-महात्म्य का निर्देश निरूपण प्रायः दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में सम दृष्टिकोण से मिलता है। रामभक्ति भावना के उत्तरोत्तर विकास के फलस्वरूप ही उक्त प्रस्तावना भाग दोनों के मूलाधार 'वाल्मीकि रामायण' से भिन्न है। उत्तरार्द्ध में वर्णित विभिन्न चरितकथाएं और अवतार सम्बन्धी प्रसंग मूल-कथा से प्रत्यक्ष सम्बंधित होकर उसकी भूमिका मात्र प्रस्तुत करते हैं।

3.1.1. शिव-चरित

चरित-कथाओं में 'शिव-चरित' प्रमुख है, जिसका आधार शिवपुराण ही है। शिव-चरित अन्तर्गत सती चरित, दक्ष-यज्ञ तथा पार्वती चरित का संक्षिप्त वर्णन कश्मीरी 'शंकर रामायण' में उपलब्ध है। यहां विरही राम के परब्रह्मरूप पर संदेह प्रकट कर सती सीता का रूप धारण कर राम की परीक्षा लेती हैं। तत्पश्चात् संदेह-भ्रम से लज्जित होकर राम तथा शिव से क्षमा-याचना करती हैं।[1] 'ता० रा०' में अपेक्षाकृत 'सती-चरित' विस्तृत है। राम अद्भुत माया से सती का सन्देह-निवारण करते हैं, जिससे वह अपने चारों ओर अनेकानेक सती-शिव, राम लक्ष्मण के साथ-साथ विराजमान पाती है।[2] 'शर्मा-रामायण' में 'पार्वती-चरित' के अन्तर्गत—हिमालय पर्वत के यहां पार्वती-जन्म, नारद-आराधना, नारद द्वारा पार्वती के भावी पति के रूप-गुण-सौन्दर्य का वर्णन, पार्वती की तपस्या, राम द्वारा शिव को पार्वती से विवाह करने का परामर्श देने, शिव द्वारा भेजे गए सात ऋषियों का पार्वती के समक्ष शिव की चारित्रिक बुराई करके हठधर्म छोड़ देने का उपदेश देने, पार्वती की एकनिष्ठा, शिव द्वारा कामदेव-दहन, ब्रह्मादिक देवताओं का शिव से विवाह करने का अनुरोध, पुनः सप्त-ऋषियों द्वारा पार्वती की परीक्षा लेने और सन्तुष्ट होकर विवाह-प्रस्ताव स्वीकृत कर शिव-पार्वती के विवाह का विस्तृत वर्णन हुआ है।[3]

---

1. शंकर रा०, खण्ड 1. अ 2.
2. ता० रा०, पृष्ठ 7-9.
3. शर्मा रा०, पृष्ठ 14-29.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मानस' में शिव सती यात्रा, राम से भेंट, शिव का उन्हें प्रणाम, सती के संदेह, सीता का रूप धारण कर सती द्वारा राम की परीक्षा लेने, शिव से झूट बोलने एवं शिव द्वारा सती-परित्याग आदि का वर्णन शिव-पुराण के अनुरूप है। उक्त प्रसंग में काव्य के स्पष्टतया अनुकरण के अतिरिक्त वाक्य-साम्य तक के भी कुछ उदाहरण मिलते हैं।[4] 'मानस' में सती चरित के साथ ही दक्ष-यज्ञ कथा भी जुड़ी हुई है। जिसमें ब्रह्मा द्वारा शिव के ससुर को प्रजापतियों का नायक चुनने, उनके अहंकार, दक्ष के यज्ञ, यज्ञ में जाने के लिए सती की प्रार्थना, शिव-दक्ष के बीच झगड़े और सती-देहावसान पश्चात् शिव[5] के गणों द्वारा यज्ञ-विध्वंश का संक्षिप्त वर्णन मिलता है। कश्मीरी रामायणों में इसका उल्लेख मात्र उपलब्ध है। शिव-पुराण के ही आधार पर 'मानस' मे भी पार्वती-चरित[7] का विस्तृत वर्णन हुआ है।

3.1.2. कथा-संवाद :

शिव-पार्वती संवाद का रामकथा-काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है। 'अध्यात्म-रामायण' की भांति कश्मीरी 'प्रकाश-रामायण' तथा 'अमर-रामायण, की संपूर्ण रचना शिव-पार्वती संवाद में ही हुई है, अन्य रामायणों में भी यही प्रधान है। कलियुग के पापों की मुक्ति के लिए शिव राम-नाम-स्मरण तथा कथा-श्रवण को एकमात्र उपाय बताते हैं और पार्वती के अनुरोध पर शिव जी रामकथा सुनाते हैं।[6] 'मानस' के 'संवाद चतुष्ट्य' में भी शिव-पार्वती संवाद[7] ही प्रमुख है। शिव-पार्वती के ही आग्रह पर राम के अलौकिक अवतार-चरित राम-नाम तथा कथा-महात्म्य का बखान ज्ञान, भक्ति एवं सगुण-निर्गुण के भेद-भाव के परि-प्रेक्ष्य में करते हैं।

याज्ञवल्क्य-भरद्वाज एवं कागभुषुण्डि-गरुड़ संवाद का संक्षिप्त उल्लेख कुछ कश्मीरी रामायणों में उपलब्ध है।[8] 'मानस' में याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संवाद का प्रारम्भ इस शंका से होता है कि क्या स्त्री के विरह में दुखी राम तथा शिव द्वारा जपे जाने वाले एक ही हैं या दो।[9] इस पर याज्ञवल्क्य उन्हें वह शिव-पार्वती संवाद सुनाते हैं, जिसमें सती की इसी शंका का निवारण किया गया है। 'मानस' में शिव-पार्वती से कागभुषुण्डि-गरुड़ के संवाद का वर्णन करते हैं, जिसमें 'नागपाश' में राम को असमर्थ देखकर गरुड़ उनके ईश्वरत्व पर संदेह करता है। और

4. डा० शार्लोत वोदतिल : राम-मानस का मूलाधार० भाग 1, हिंदी अनुवाद, पृ० 33-36.
5. मानस 1.65-103.
6. प्र० रा०, पृ० 5-6, वि०प्र०रा० बाल०, अ० 7-9; शर्मा—रा०, पृ० 29-31.
7. मानस 1.105-120.
8. शं० रा०, खण्ड 1. अ 2, वि० प्र० रा० बाल० अ० 11, शर्मा रा०, पृ० 7. ता० रा० 1. पृ० 2-3.
9. मानस 1. 46. 6. मानस 7. 58.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कागभुषुण्डि निजी अनुभव-मति द्वारा उनकी शंका दूर करते हैं।[10] 'मानव' के संवाद-चतुष्ट्य का आदि संवाद गुरु-तुलसी संवाद ही है, जिसमें कवि की अपरिपक्व गति और गुरु के प्रबोध' का संकेत बार-बार मिलता है।[11] सभी संवादों में वक्ता शिव, याज्ञवल्क्य तथा कागभुषुण्डि के ज्ञानपूर्ण पांडित्य विवेचना और पार्वती, भरद्वाज तथा गरुड़ के शंकालु तथा विनम्र चरित्र का यथोचित परिचय मिलता है।

'मानस' में कथात्मक संवाद-निर्वाह की असमानताएं अखरती हैं। बालकांड के अंतर्गत कागमुषुण्डि चरित का संकेत मात्र मिलता है,[12] इसका विस्तृत प्रयोग उत्तरकांड में हुआ है। उपसंहार-भाग में जहां वक्ता-श्रोता शिव-पार्वती तथा कागभुषुण्डि का उल्लेख उपलब्ध है किंतु याज्ञवल्क्य-भरद्वाज का 175वें दोहे के पश्चात् कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता है। तीन वक्ता-श्रोताओं का परिचय देकर मानसकार ने कथा-सूत्र-वक्ता शिव के हाथ सौंपी है। इस तरह शिव-पार्वती संवाद के समक्ष अन्य संवाद दब से गए हैं।

3.1.3 अवतार के कारण

रामकथा-काव्य का मुख्य उद्देश्य रावण वध ही है। रावण-वध तथा पापों के संहार-हेतु राम अवतार धारण करते हैं। राम के अवतार-संबंधित विविध कारण प्रचलित हैं। दोनों भाषाओं के रामायणों में अवतार-धारणहेतु शाप एवं वरदानों सम्बधित मुख्य उपाख्यान इस प्रकार मिलते हैं :

3.1.4. जय-विजय उपाख्यान

कश्मीरी 'आनंद रामावतार-चरित' में लक्ष्मण के पूछने पर राम जय-विजय उपाख्यान सुनाते हैं, जिसके अनुसार सनकादिक ऋषि पहले जय और विजय को सात जन्म राक्षस होने का श्राप देते हैं और विनय-प्रार्थना करने पर तीन राक्षस जन्म धारण करने का। पहले जन्म में हिरण्यकश्यप-हरिण्याक्ष तथा दूसरे में रावण-कुम्भकरण का उल्लेख मिलता है, किंतु तीसरे जन्म का नहीं।[13] 'शर्मा-रामायण' में दो ही असुर-जन्मों का उल्लेख करके विष्णु द्वारा अवतार धारण करने पर उद्धार करने का वर्णन मिलता है।[14] ता० रा०' में इन्द्र की पत्नी के शृंगार का विस्तृत वर्णन मिलता है, जिसकी आज्ञा से ही द्वारपाल सनकादिक ऋषियों को भीतर जाने से रोकते हैं तथा उक्त रामायण में तीन असुर-जन्मों के पश्चात् उन्हें पुनः द्वारपाल बनने का वरदान मिलता है।[15] 'मानस' के अनुसार विष्णु के

10. मानस 7. 125.
11. मानस 1. 30-31
12. मानस 1. 120.
13. आ० रा०, पृ० 22-23.
14. शर्मा रा०, पृ० 32-37.
15. ता० रा०, पृ० 26-31.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों द्वारपाल जय और विजय 'विप्रशाप' के कारण तीन असुर-जन्म लेते हैं। यहां भी उनके पहले असुर जन्म हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष तथा दूसरे रावण-कुम्भकरण का ही उल्लेख मिलता है[16] तीसरे का नहीं।

3.1.5. जलंधर-उपाख्यान

कश्मीरी ताराचंद-रामायण' के अनुसार देवलोक में जलंधर का आतंक फैल जाता है। जलंधर की पतिव्रता स्त्री (वृन्दा) के कारण शिव जलंधर को युद्ध में परास्त नहीं कर सकते हैं। विष्णु साधु-वेष में आकर जलंधर की स्त्री का पातिव्रत्य नष्ट करने का सफल प्रयत्न करते हैं। वे आकाश से गिरते हुए मायावी शारीरिक अंग-प्रत्यंगों को दिखाकर जलंधर की मृत्यु का झूठा आश्वासन देते हैं। पतिव्रता उन अंगों को जोड़ कर विलाप करती है। तत्क्षण जलंधर शिव के हाथों मारा जाता है। रहस्य खुल जाने पर जलंधर की पत्नी विष्णु को पृथ्वी पर मनुष्य रूप में अवतार धारण करने का श्राप देती है और जलंधर को रावण के रूप में उसकी पत्नी का हरण करने का।[17] 'मानस' में उक्त प्रसंग का संक्षिप्त परिचय मिलता है। प्रभू छलपूर्वक जलंधर की पतिव्रता स्त्री का सतीत्व नष्ट करते हैं। उनके शाप से ही जलंधर रावण बन जाता है जिस को राम युद्ध में मारकर परमगति प्रदान करते हैं।[18]

3.1.6. नारद-मोह

कश्मीरी 'शंकर रामायण', 'अमर-रामायण' तथा 'तारा-रामायण' में नारद-मोह प्रसंग वर्णित है। अम्बरीष की पुत्री मोहिनी के रूप-सौंदर्य पर नारद मोहित होते हैं। विष्णु से नारद अलौकिक रूप का वरदान मांग कर मोहिनी के स्वयंवर में जाते हैं। नारद को निराश होना पड़ता है, जब गरुड़ पर सवार भगवान विष्णु के पहुंचने पर मोहिनी उनके गले में जयमाला डालती हैं। यहीं पर क्रोधित होकर नारद विष्णु को अवतार-धारण और पत्नी-हरण का शाप देते हैं और शिव के दो गणों को राक्षस बनने का।[19] 'ता० रा०' के अंतर्गत नारद के अभिमान का भी वर्णन मिलता है, जिसके कारण ही विष्णु माया द्वारा उनके मोह का खंडन करते हैं।[20]

'मानस' के अनुसार ही नारद शीलनिधि की पुत्री विश्वमोहिनी के स्वयंवर में विष्ण के कपट से क्षुब्ध होकर उन्हें 'नर-देह-धारण' और शिव के दो गणों को जो

---

16. मानस 1. 122.
17. ता० रामायण, बाल०, अ० 5, पृ० 31-33.
18. मानस, बाल० दो० 123.124 (1.2).
19. शंकर-रामायण, खण्ड 1. अ० 2.
20. ता० रामायण, बाल०, अ० 13.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हँस कर 'मुकुर' देखने को कहते हैं, राक्षस होने का शाप देते हैं।[21] दोनों का मुख्याधार 'शिवपुराण' ही है। 'शिवपुराण' में शीलनिधि के स्थान पर 'अम्बरीष' तथा विश्वमोहिनी के स्थान पर 'श्रीमती' का उल्लेख है।[22]

3.1.7. मनु-शतरूपा-चरित

कश्मीरी 'शर्मा रामायण' तथा ताराचंद-रामायण' में मनु-शतरूपा चरित सविस्तार वर्णित है। मनु-शतरूपा की तपस्या पर प्रसन्न होकर दर्शन देकर भगवान विष्णु उन्हें आश्वासन देते हुए सूचित करते हैं कि अगले जन्म में उक्त दम्पति दशरथ-कौशल्या के यहां वे पुत्र राम के रूप में जन्म लेंगे और उनकी माया जानकी के रूप में राजा जनक के यहाँ जन्म लेगी।[23] 'ता० रा०' में माया के जन्म का उल्लेख नहीं मिलता है।[24] 'आ० रा०' में दशरथ तथा कौशल्या के पिछले जन्म में वर-प्राप्ति का उल्लेख मिलता है, 'मनु-शतरूपा' नामोल्लेख नहीं।[25] 'प्र० रा०' में दशरथ-कौशल्या के पूर्व जन्म 'कश्यप-अदिति' का नामोल्लेख मिलता है, जिन्होंने भगवान विष्णु से पुत्र-प्राप्ति का वरदान मांगा था, यहां गुरु वशिष्ठ दशरथ से रामावतार रूप का वर्णन करते हुए इस वर की ओर संकेत करते हैं।[26] मनु-शतरूपा की तपस्या और विष्णु द्वारा उनके यहाँ पुत्र के रूप में जन्म लेने के वरदान का वर्णन 'मानस' में भी मिलता है।[27]

3.1.8. प्रतापभानु-चरित

कश्मीरी 'शर्मा रामायण' के अनुसार ब्राह्मणों के शाप से मृत्यु के पश्चात् 'प्रतापभानु' रावण बना, उसका भाई कुम्भकरण, मंत्री विभीषण तथा समस्त नौकरादि राक्षस बन गए।[28] 'ताराचंद-रामायण' में कपटी ऋषि के धोखे में जगत-विजयोपरांत प्रतापभानु का एक सुअर राक्षस का पीछा करना, एक लाख ब्राह्मणों को भोज देने का परामर्श स्वीकार करना, कपटी ऋषि द्वारा रसोइया बनकर भोज में ब्राह्मण-मांस डालना, आकाशवाणी द्वारा आमंत्रित ब्राह्मणों का अवगत होकर राजा प्रतापभानु को राक्षस बनने के शाप देने का विस्तृत वर्णन मिलता है।[29] अन्य किसी कश्मीरी रामायण में उक्त चरित का वर्णन

21. मानस 1. 130-139.
22. शि० पुराण. रुद्र, 4. 15.
23. शर्मा-रामायण, पृ० 39.
24. ता० रामायण, पृ० 37-40.
25. आ० रामायण, पृ० 10-12.
26. प्र० रामायण, पृ० 26.
27. मानस 1. 141-152.
28. शर्मा-रामायण, पृ० 40-45,
29. ता० रामायण, बाल०, अ० 8, पृष्ठ 40-44.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं मिलता है। 'मानस' के अंतर्गत भी 'विप्रशाप' से प्रतापभानु का सपरिवार राक्षस हो जाने का वृत्त मिलता है, जिसमें स्वयं वह रावण, उसका भाई कुम्भकरण, सचिव विभीषण तथा पुत्रादि सेवक राक्षस बन जाते हैं।[30] उक्त चरित अन्य किसी आधार ग्रन्थ में इस रूप में नहीं मिलता है। तुलसी इस मौलिक कल्पना का ही अनुकरण कश्मीरी रामायणों के अंतर्गत हुआ प्रतीत होता है।

3.1.9. रावण-चरित

रावण-चरित का विस्तृत-वर्णन कश्मीरी रामायणों में उपलब्ध है। 'प्रकाश-रामायण' में सुन्दरकाण्ड के अंतर्गत नारद हनुमान को लंका और रावण के सम्पूर्ण चरित के बारे में कहते हैं।[31] 'वि-प्र-रा०' में वनवास-काण्ड के अन्तर्गत लक्ष्मण के पूछने पर राम उन्हें लंका और रावण-चरित का वृतांत सुनाते हैं।[32] 'आ०रा में अगस्त्य मुनि राम-लक्ष्मण से राक्षसों की उत्पत्ति तथा सम्पूर्ण रावण-चरित के बारे में कहते हैं।[33] शेष सभी राम-काव्यों में रावणोंपाख्यान का वर्णन बालकाण्ड के प्रस्तावना-भाग में ही शिव-पार्वती संवाद के अन्तर्गत हुआ है।

3.1.9.1 . रावण जन्म

'प्रकाश-रामायण' के अनुसार पुलस्त्य ऋषि नदी के तट पर तपस्या करते हुए जल में बहते हुए एक सन्दूक को पाते हैं, जिससे एक स्त्री पुत्री समेत मिलती है। उस लड़की को पालकर उसका विवाह अपने पुत्र से करते है। वह राक्षिसनी थी, जिससे दस सिर और बीस भुजाओं वाले रावण, खर-देव शूपणखा तथा विभीषण ने जन्म ले लिया। विभीषण को छोड़कर अन्य सब की रूप-आकृति विचित्र थी—उनके सिरों पर सींग थे और पांव उलटे।[34] 'ता० रा०' में रावण के पिता (विश्रवा) की जन्म-कथा इस प्रकार वर्णित है—पुलस्त्य ऋषि पर्वत पर तपस्या-निमग्न थे। देव कन्याओं से उनका ध्यान विचलित होता था। उनके शाप से एक देव-बाला गर्भित होती है, जिससे एक पुत्र का जन्म होता है। पुलस्त्य ऋषि के उसी पुत्र की एक पत्नी से रावण, कुम्भकरण और शूपर्णखा ने जन्म ले लिया और दूसरी पत्नी से विभीषण का जन्म हुआ।[35]

'मानस' में प्रतापभानु-शाप कथा के अन्त पर ही रावण-चरित मिलता है, जिसमें प्रतापभानु दस सिर और बीस भुजाओं वाला रावण, अरिमर्दन कुम्भकरण

---

30. मानस 1. 176.
31. प्र० रा०, पृष्ठ 76-79.
32. वि० प्र० रा, वन । अ० 32-33.
33. आ० रा०, पृ० 23-28.
34. प्र० रा०, पृ० 78-79.
35. ता० रा०, पृ० 45-47.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और उनका सचिव विभीषण बने जो पुलस्त्य ऋषि के यहाँ जन्म लेते हैं।"[36]

3.1 9.2 तप और वर-प्राप्ति

'प्रकाश रामायण' में रावण की वर-प्राप्ति का उल्लेख बालकाण्ड में ही मिलता है। रावण अपने आराध्य इष्ट से वरदान मांगते हैं कि विष्णु के अतिरिक्त कोई उन्हें मार न सके, मनुष्य को हेय समझकर वह भूल जाता है।[37] 'शर्मा-रा०' में रावण की तपस्या से प्रसन्न होकर शिव उसे 'जगत-जयी' का वरदान देते हैं जिसका मुकाबला कोई न कर सके।[38] 'मानस' के अनुसार रावण तपस्या-पश्चात ब्रह्मा से वर मांगता है कि वानर और मनुष्य को छोड़कर किसी के भी हाथों उसकी मृत्यु न हो सके, कुम्भकरण सरस्वती द्वारा मति फेरने से छः मास की नींद मांगता है और विभीषण भगवद्-भक्ति का वरदान मांगते हैं।[39] विभीषण तथा कुम्भकरण के ऐसे ही वरों का उल्लेख आधार-ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण' में भी मिलता है।[40]

3.1.9.3 देवताओं से युद्ध और पापाचार का आतंक

'मानस' में मय की पुत्री मन्दोदरी से विवाह करने के पश्चात् लंका को फिर से बसाने, सेना संवार कर देवताओं को परेशान करने—कुबेर से पुष्पक-विमान छीनने कैलाश पर्वत उठाकर देवताओं को यातनाएं पहुचाने का वर्णन मिलता है। कुम्भ-करण के उत्पात मचाने, बारिदनाद (कुम्भकरण का पुत्र) तथा मेघनाद के शौर्य के वर्णन और देवताओं को विजित करके घोर पापाचार बढ़ाने का वृत्तांत मिलता है।[41] रावण अनेकानेक लड़कियों और स्त्रियों का अपहरण करता है :—

देव जच्छ गंधंब नर किन्नर नाग कुमारि।
जीति बरीं—जिज बाहु बल बहु सुन्दर बर नारि ॥ 1.182

देवताओं से विस्तृत युद्धों और देवलोक में आतंक फैलने का वर्णन 'शर्मा-रा०', तथा 'ता० रा०' में भी मिलता है। इन्द्र रावण से परास्त होते हैं और महाकाल कुम्भकरण से।[42]

3.1.9.4 रावण-बालि युद्ध

'प्रकाश रामायण' के लंकाकाण्ड के अन्तर्गत अंगद-रावण संवाद मे अंगद रावण को

---

36. मानस 1.176.
37. प्र० रा०, पृष्ठ 6.
38. शर्मा-रा०, पृष्ठ 50-51.
39. मानस 1.177.
40. वा० रा० 1.10.45.
41. मानस 1. 179-182.
42. शर्मा-रामायण, पृष्ठ 46 49। ता० रा०, पृ० 45-47.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मृति दिलाते हैं कि कैसे बालि ने नहाते समय रावण को अंगोछे में लपेट लिया था और दुधमुंहा अंगद ने स्वयं भी उसे (रावण को) खा लेने की ज़िद की थी।[43] 'शर्मा-रा०' के अनुसार रावण बालि को आराध्य ध्यान से विचलित करने का प्रयत्न करता है। गुस्सा होकर बालि उसे पकड़ कर अपने बगल में दबाकर रखता है, जहां से छः मास के पश्चात् कठिनता से वह छूट सकता है।[44] 'ता रा०' के अनुसार नारद से प्रेरित होकर रावण श्वेत द्वीप जाकर राजा सहस्रबाहु तथा बालि से युद्ध करके हारता है [45] 'मानस' के लंका-काण्ड में रावण के सहस्रबाहु से युद्ध और बालि से पराजय का उल्लेख मिलता है।[46]

3.1.9.5 **नल-कूबर का शाप :**

'ता० रा०' के अनुसार नल-कूबर के पास कोई अप्सरा आती थी। रावण ने कामवश उक्त सुन्दरी का अपहरण करने का दुस्साहस किया और क्रोधित होकर नल-कूबर ने उसे कुल के संहार का शाप दे दिया।[47]

3.2.10 **रावण के संहार हेतु विष्णु का अवतार**

दोनों भाषाओं की रामायणों में रावणादि राक्षसों के पापाचार तथा आतंक से संत्रस्त पृथ्वी द्वारा विष्णु को अवतार-धारण करने के लिए प्रार्थना करने का वर्णन मिलता है। 'प्र० रा०' में विष्णु पृथ्वी को आश्वासन देते हुए कहते हैं कि वे राम के अवतार-रूप में निःसंतान राजा दशरथ के यहां जन्म लेंगे और उन्हें (पृथ्वी को) योग माया सीता का रूप धारण करना पड़ेगा, समस्त देवता बानर-रूप में अवतरित होंगे—जभी वे पृथ्वी से पापों का बोझ हलका कर पायेंगे।[48] 'शर्मा रा०', 'ता० रा' और 'अमर-रा' में पृथ्वी कामधेनु के रूप में जाकर विष्णु से अवतार-धारण करने के लिए प्रार्थना करती हैं।

'मानस' के अनुसार भी पृथ्वी कामधेनु के रूप में अन्य देवताओं संग विष्णु से अवतार धारण करने के लिए प्रार्थना करती हैं। आकाशवाणी द्वारा विष्णु उन्हें सचेत करते हैं कि वे अंशों सहित दिनकर-कुल में दशरथ-कौशल्या के यहां अवतार ले लेंगे और अन्य देवता भी बानर रूप में अवतरित होंगे।[49] 'गो० रा०' में असुरों के उपद्रव के फ़लस्वरूप सभी देवता क्षीरसागर पर जाकर विष्णु से अवतार

---

43. प्र० रा०, पृष्ठ 93-94.
44. शर्मा-रामायण, पृष्ठ 49-50.
45. ता० रा० पृष्ठ 50.52.
46. मानस 6.24.
47. ता० रा०. बाल० अ० 12.
48. प्र० रा०, पृष्ठ 6-7.
49. मानस 1.184-187.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धारण कर चिरकाल तक अयोध्या में शासन करने के लिए प्रार्थना करते हैं ।[50] 'गीता' के आधार पर[51] धर्महानि या अधर्म-वृद्धि की पराकाष्ठा ही दोनों के अनुसार राम-जन्म का प्रमुख कारण है । 'मानस' में इसका स्पष्ट उल्लेख भी मिलता है ।[52] 'भागवत' 'पद्मपुराण' तथा 'ब्रह्मपुराण' में कृष्णावतार प्रसंग में पृथ्वी के गौ-रूप धारण करने का वर्णन मिलता है ।[53]

3.1.11. दशरथ-यज्ञ

दोनों भाषाओं की रामायणों में राजा दशरथ के नि:संतान शोक का वर्णन मिलता है—'शर्मा-रामामण' में नो सहस्र वर्षों के पश्चात् राजा की पुत्र-कामना तीव्र होती है ।[54] 'मानस' में निजी ग्लानि वे गुरु वशिष्ठ के समक्ष अभिव्यक्त करते हैं ।[55]

'मानस' के अनुसार वशिष्ठ शृष्य-शृंग को बुलवा कर पुत्रेष्टि-यज्ञ का आयोजन कराते हैं ।[56] कश्मीरी 'प्र० रा०' के अनुसार नारायण सपने में राजा दशरथ को आश्वासन देते हैं कि वे उनके यहां जन्म लेंगे और वशिष्ठ जी की आज्ञा से पुत्रेष्टि-यज्ञ रचा जाता है ।[57] 'शृष्य-शृंग-आनयन' प्रसंग कश्मीरी 'आनंद रामायण' में सविस्तार वर्णित है । वशिष्ठ ही उक्त ऋषि की सलाह लेने का परामर्श देते हैं । ऋषि का ध्यान आकर्षित करने के लिए 'सारंगी', नाम की सुन्दरी को वन भेजा जाता है जो मधुर भक्तिपरक गीत से मुग्ध करके नि:पुत्र राजा दशरथ के शोक का उल्लेख कर उन्हें विचार-विमर्श के लिए नगर पधारने का अनुरोध करती है । उक्त ऋषि ही पुत्रेष्टि-यज्ञ करने का परामर्श देते हैं ।[58] "वाल्मीकि रामायण' में वेश्याओं द्वारा श्रष्य-शृंग को मरवा कर लाने का वृतांत मिलता है ।[59] मर्यादानूकूल न समझ कर 'आनंद-रामायण' के कवि ने उक्त प्रसंग में संशोधन किया है ।

---

50. गो० रा०, पृष्ठ 1.
51. गीता 4. 7-8.
52. मानस 1. 121.
53. डा० शिवकुमार शुक्ल—रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन, पृ०129.
54. शर्मा-रामायण, पृ०58.
55. मानस 1. 189.
56. वही 1. 189.
57. प्र० रा०, पृ० 7.
58. आ० रा०, पृ० 13-15.
59. वा० रा०, पृ० 1. 10.
60. गो० रा०, पृ० 1-11.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'गो० रामायण' में दशरथ के दो यज्ञों का वर्णन मिलता है। अंधमुनि बालक-वध से क्षुब्ध दशरथ आकाशवाणी से सचेत किए जाते हैं कि उनके यहां विष्णु अवतार धारण कर रहे हैं और तदर्थ उनको यज्ञ रचना चाहिए। दशरथ गुरु वशिष्ठ की सहायता से राजसूय-यज्ञ रचते हैं और उसके पश्चात् ब्राह्मणों द्वारा पुत्रेष्टि-यज्ञ भी रचा गया।[60] आधार ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण' में भी अश्वमेघ तथा पुत्रेष्टि दो यज्ञों का वर्णन मिलता है किंतु यहां दोनों यज्ञ श्रष्य-शृंग के हाथों सम्पन्न होते हैं 'गो० रा०' में उक्त ऋषि का नामोल्लेख उपलब्ध नहीं है।

3.1.11.1. अग्नि प्रदत्त पायस वितरण

प्रायः सभी रामायणों में पुत्रेष्टि-यज्ञ एवं पायस-उपलब्धि का वर्णन मिलता है, किंतु रानियों में पायस-वितरण में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। कश्मीरी 'प्रकाश-रामायण' के अनुसार अग्नि से प्राप्त दो पात्र खीर एक कोशल्या को दिया जाता है और दूसरा कैकेयी को और दोनों अपने-अपने भाग में से आधा-आधा भाग सुमित्रा को देती हैं, इसी कारण कौलल्या- कैकेयी के एक-एक पुत्र हुए और सुमित्रा के दो।[61] विष्णु के चारों रूपों को समान मानने की भावना से ही सम्भवतः ऐसा वितरण कराया गया है। 'गो० रा०' में भी दशरथ द्वारा 'हवि' के चार भाग किए जाने और दो रानियों को एक-एक भाग तथा तीसरी को दो भाग देने का उल्लेख मिलता है, इसमें रानियों का नामोल्लेख नहीं है :—

> चतुर भाग कर्यो तिसे निज पाणि लै नृपराय।
> एक एक को दिए दुहुं तिय एक को दुइ भाय ।।[62]

'मानस' में 'हवि' का आधा भाग राम-जननी कौशल्या को मिलता है और चौथा-चौथा भाग बराबर कैकेयी और सुमित्रा को।[63] तुलसी ने रामादि चारों भाइयों में क्रमानुसार उच्चता या श्रेणि-विभाग की अभीष्ट भावना से ही प्रेरित हो कर ऐसा वितरण कराया है।

3.1.12 जन्म एवं बाल चरित

राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के जन्मोपरांत कुल-परिवार, प्रजा और देवलोक की प्रसन्नता का बखान, अद्भुत बाल-क्रीड़ाओं, विद्या अध्ययन एवं अन्य संस्कारों का वर्णन दोनों भाषाओं की रामायणों में वर्णित है। यहां कुछ विशिष्ट प्रसंगों की ओर ही संकेत किया जायेगा।

---

61. प्र० रा०, पृष्ठ 8.
62. गो० रा०, पृष्ठ 12.
63. मानस 1.190.
64. मानस 1.192.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.1.12.1 चतुर्भुज रूप

'मानस' में जन्मोपरांत राम के चतुर्भुज-रूप दर्शन और कौशल्या की विनय-प्रार्थना पर ही उनके शिशु रूप में रोने लगने का वर्णप मिलता है।[64] कश्मीरी 'शंकर रामायण' में राम चतुर्भुज रूप में जन्म लेते हैं, जिनके दर्शन करके इन्द्रादि देवता फूलों की वर्षा करते हैं,[65] 'मानस' की भांति केवल कौशल्या ही उनके दर्शन नहीं करती है। 'शर्मा-रामायण'[66] और 'ता० रा०'[67] में राम-जन्मोपरान्त उनके प्रति गाये गए भजनों में उनके चतुर्भुज रूप का उल्लेख मिलता है। वास्तव में कृष्ण-जन्म सम्बंधित अलौकिक घटनाओं एवं अद्भुत बाल-क्रीड़ाओं के अत्यधिक प्रचार-प्रसार के कारण ही भाषा-रामायणकारों ने राम के चतुर्भुज रूप का वर्णन किया है।

3.1.12.2 विराट्-रूप

'मानस' में अलग से राम के विराट रूप का वर्णन मिलता है जिसकी अद्भुत माया की वन्दना कौशल्या करती है।[68] 'ता० रा०' में भी इस प्रसंग का अनुकरण किया गया है।[69]

3. 1.12.3 राम-हनुमान भेंट

'शर्मा रा०' में बाल-चरित के अन्तर्गत राम-हनुमान भेंट का भी वर्णन किया गया है—बाल-हनुमान को देखकर राम पिता दशरथ से अनुरोध करते हैं उनके संग खेलने के लिए। पिता की अनुमति पाकर राम हनुमान को गले लगाकर उनके साथ खेलते हैं। दशरथ के पूछने पर गुरु वशिष्ट उन्हें पम्पासर के हनुमान का परिचय देते हैं।[70] 'ता० रा०' में राम-हनुमान भेंट और बाल-क्रीड़ाओं के अतिरिक्त 'लाल-फरोश' से लाल खरीदने का भी वर्णन मिलता है।[71]

3.1.12 4 पक्षी-रावण को आहत करना

'ता० रा०' के अनुसार रावण पक्षी के रूप में राम को देखने के लिए अयोध्या आता है और राम के एक ही बाण से बुरी तरह आहत होकर लंका लौट जाता है।[72]

---

65. शंकर रा०, खण्ड 1, अ० 2 (208-220).
66. शर्मा-रामायण, पृष्ठ 59.
67. ता० रा०, पृष्ठ 62.
68. मानस 1. 201-202.
69. ता० रा०, पृष्ठ 66.
70. शर्मा-रामायण, पृष्ठ 62.
71. ता० रा०, पृष्ठ 67-69.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.1.13 विश्वामित्र द्वारा राम-लक्ष्मण-याचना—

'मानस' में विश्वामित्र का प्रस्ताव सुनकर राजा दशरथ का हृदय कांपता है और राम-लक्ष्मण के बदले मुनि को भूमि, धेनु, धन कोष और देह-प्राण सर्वस्व देने के लिए तैयार होते हैं, किन्तु गुरु वशिष्ठ के समझाने पर ही वे विश्वामित्र का प्रस्ताव स्वीकार करते हैं।[73] वाल्मीकि रामायण' के आधार पर 'रामचंद्रिका' में दशरथ राम-लक्ष्मण के बदले स्वयं ससैन्य विश्वामित्र-संग चलने के लिए प्रस्तुत होते हैं[74] किन्तु विश्वामित्र का बढ़ता क्रोध देखकर और वशिष्ठ द्वारा राम के अलौकिक रूप और यज्ञ-रक्षा सामथर्य का वर्णन सुनकर अनिच्छापूर्वक राम-लक्षमण को विश्वामित्र को संग भेजते हैं।[57] गो०रा'० में विश्वामित्र 'पितृतोष यज्ञ' के रक्षार्थ, दशरथ से क्रुध होकर कहते हैं, या अपने दो पुत्र (राम-लक्ष्मण) मुझे दे दो, नहीं तो तुम्हें भस्म कर डालूंगा। विश्वामित्र का क्रोध देखकर ही दशरथ राम-लक्ष्मण को उनके साथ भेज देते हैं :—

आइ भूपति को कहा सुत देतु मोकों राम।
नात्र तोकों भस्म करिहों आज ही इह ठाम ॥
कोप देख मुनीश को नृप पुत्र ता संग दीन। (पृ० 12)

—'प्रकाश-रामायण' में विश्वामित्र पहले विनम्र शब्दों में याचना करते हैं फ़िर अत्यधिक हठ एवं क्रोध जताकर चेतावनी देते हुए कहते हैं—'यदि राम को मेरे संग नहीं भेज दोगे, अपने आप को यहीं पर नष्ट कर लूंगा, अपशब्द से सारी पृथ्वी भस्म हो जायेगी और शाप से समूल आपको भी नष्ट कर लूंगा। 'विश्वामित्र द्वारा राम के अवतारोद्देश्य को समझाने पर ही राजा दशरथ विश्वामित्र का प्रस्ताव स्वीकार करते हैं।[75] 'शंकर-रामायण' में राजा दशरथ की हिचकिचाहट देखकर विश्वामित्र राम के अलौकिक रूप का बखान करते हैं।[76] 'शर्मा-रामायण' में 'मानस' जैसी स्थिति राजा दशरथ की होती और गुरु वशिष्ठ के परामर्श से ही मुनि आज्ञा शिरोधार्य करते हैं।[78] 'वि० प्र० रा०' में विश्वामित्र और गुरु वशिष्ठ की विस्तृत ज्ञान-चर्चा दशरथ-दरबार में होती है—यहां बिना किसी संकोच

---

72. ता० रा०, पृ० 69.
73. मानस 1.108.
74. रा० चं० 2.17.
75. वही 2.18-26 .
76. प्र० रा०, पृष्ठ 10-11.
77. शंकर-रा, खंड 1, अ० 4.
78. शर्मा-रा० पृष्ठ 65.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के राजा दशरथ की आज्ञा से राम-लक्ष्मण सप्रसन्न यज्ञ-रक्षार्थ विश्वामित्र के संग चले जाते हैं।[79]

3.1.14 विश्वामित्र की दीक्षा

'वाल्मीकि-रामायण' के अनुसार[80] मानस में विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को ऐसी विद्यायें सिखाते हैं, जिनसे उन्हें भूख-प्यास न लगे और शरीर सदैव समर्थ और सशक्त बना रहे।[81] 'रामचंद्रिका' में भी विश्वामित्र ऐसी सिद्धियां सिखाते हैं, जिनसे—'लोभ क्षोभ मोह गर्व काम कामना हुई। नींद भूख प्यास त्रास वासना सबै गई।[82] कश्मीरी रामायणकारों ने इसका कोई उल्लेख नहीं किया है। 'अमर-रामायण' में अस्त्र-शस्त्र बिद्या एवं 'शल्फ' विद्या सिखाने का वर्णन अवश्य मिलता है।[83]

3.1.15 ताड़का वध

'मानस' और 'गो० रा०' में राम एक ही बाण से ताड़का का वध करते हैं।[84] 'वाल्मीकि रामायण' के अनुसार[85] 'रामचद्रिका में स्त्री होने के कारण राम उसे मारने में हिचकिचाहट महसूस करते हैं और विश्वामित्र प्राचीन उदाहरण देकर ताड़का-वध के लिए प्रेरित करते हैं। वे उनसे कहते है कि कैसे विरोचन की पुत्री दीर्घ जिह्वा ('वाल्मीकि रामायण' में जिसे मंथरा कहा गया है) को इन्द्र ने मार डाला आदि।[86] ताड़का-वध का संक्षिप्त वर्णन कश्मीरी रामायणों में मिलता है।[87]

3.1.16 अन्य राक्षस-वध

'मानस' में राम मारीच को बिना 'फर' के बाण से समुद्र के पास शत-योजना दूर फेंक देते हैं और अग्नि-बाण से सुबाहु को मार डालते है।[88] 'रामचंद्रिका में' एक ही पंकित 'मारीच बिडार्यो, जलधि उतार्यो मार्यो सबल सुबाहु[89] में इसका उल्लेख किया गया है। 'गोविंद-रामायण' में अन्य युद्धों की भांति मारीच सुबाहु तथा अन्य राक्षसों के साथ युद्ध का विस्तृत वर्णन किया गया है।[90] कश्मीरी

79. वि० प्र० रा०, बालकाण्ड, अ० 20-21.
80. वा० रा०, 1.22.16.
81. मानस 1.209.
82. रा० चं० 2.28.
83. अमर-रामायण, पृष्ठ 21.
84. मानस 1.209; गो० रा०, पृ० 16.
85. ता० रा– 1.25.19-20.
86. रा० चं० 3.8.
87. आ० रा०, पृ०21, शर्मा रा०, पृ० 66, ता० रा०, पृष्ठ 71.
88. मानस 1.210.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'प्रकाश-रामायण' में राम-लक्ष्मण अनेकानेक राक्षसों का संहार करते हैं, मारीच आहत होकर जीवित भागने में सफल होता है।[91] 'शंकर-रामायण' में देवता-गण भयानक युद्ध-दृश्य देखकर राम की स्तुति-वंदना करते हैं ।[92] और 'अमर-रामायण' में ऋषि-मुनि राम की अर्चना करते हैं ।[93]

3.1.17 अहल्योद्धार

'अहल्योद्धार' का प्रसंग विभिन्न रूपों में विविध रामकथा विषयक ग्रन्थों एवं पुराणों में मिलता है ।[94] 'मानस' में प्रस्तुत प्रसंग का उल्लेख मात्र मिलता है — मुनि उनसे बताते हैं कि गौतम नारी (अहल्या) 'श्राप बस' शिला बनी । यहां शिला रूपी अहल्या का उद्धार राम के चरण-रज के स्पर्श से होता है । राम की वंदना करके अहल्या सानंद 'पति-लोक' सिधारती है ।[95] कश्मीरी रामायणों में भी राम के चरण-धूलि स्पर्श से ही अहल्या का उद्धार वर्णित है । यहां अहल्या-गौतम की पूरी कथा मिलती है । 'प्रकाश-रामायण' के अनुसार इन्द्र कामवश अहल्या के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध हुए । एक देवता को मुर्गा बनाकर अर्धरात्रि को ही बांग देने की आज्ञा दे दी । प्रातः समझकर ऋषि गौतम कुटिया छोड़कर नदी पर स्नानादि के लिए चले गए । नदी ने ऋषि को इन्द्र की कुचाल से अवगत किया । क्रुद्ध होकर ऋषि अहल्या को 'शिला रूप धारण' का शाप दे देते हैं, जिसका उद्धार केवल राम ही अवतार धारण करके कर सकते हैं । इस तरह राम के चरणों की धूलि स्पर्श से शिला पुनः अहल्या में परिवर्तित होतीहै, वह राम के श्रीचरणों से लिपट कर उनकी वन्दना करती है ।[96] 'विष्णु-प्रताप रामायण' में 'अहल्योद्धार' प्रसंग 'वनवास काण्ड' के अन्तर्गत मिलता है । जहां ब्राह्मण राम-लक्ष्मण को अहल्या की कहानी सुनाते हैं और उनके निवेदन पर ही राम अहल्या का उद्धार कर लेते हैं । उक्त प्रसंग में इन्द्र कौआ बनकर गौतम को जगाता है।[97] 'आनंद-रामायण' में भी इन्द्र कौआ बनकर गौतम को धोखा देता है ।[98] 'अमर रामायण' के अनुसार अहल्या स्वयं अपनी कहानी राम को सुनाती हैं ।[99]

---

89 रा० चं० 2।10. (पृष्ठ 64 का नोट)
90. गो० रा०, पृ० 17-19. (")
91. प्र० रा०, पृ० 11.
92. शंकर-रामायण, खण्ड 1. अ० 5.
93. अमर-रामायण पृ० 24-28.
94. रामकथा (उत्पत्ति और विकास) —डा० कामिल बुल्के, अनु०, (344-348)
95. मानस 1. 210-211.
96. प्रकाश रामायण, सं० अ०, पृ० 44-46.
97. वि० प्र० रा०, वन, अ० 20.
98. आनंद रामायण, पृष्ठ 35.
99. अमर रामायण, पृष्ठ 31-32.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में वर्णित इस प्रसंग का मुख्याधार 'वाल्मीकि रामायण' तथा 'अध्यात्मरामायण' ही है, किन्तु दोनों उल्लिखित रामायणों में इसी लोक में अहल्या-गौतम मिलन का भी वर्णन मिलता है[100] जबकि तुलसी ने दूसरे लोक का निर्देश किया है—'गै पतिलोक आनंद भरी ।[101] कश्मीरी रामायणकारों ने इस प्रसंग को अनावश्यक समझकर उड़ा दिया । यहां राम द्वारा अहल्या-कल्याण करना ही मुख्य वर्ण्य-वस्तु है । 'अध्यातमरामायण' के अनुसार ही अहल्या द्वारा राम की स्तुति वन्दना करायी गयी है ।

3.1.18 गंगावतरण

'मानस' में गंगावतरण की कथा का उल्लेख-मात्र मिलता है—गाधिसूनु सब कथा सुनाई । जेहि प्रकार सुरसरि महि आई ।[102] कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' में भी कवि ने इसका उल्लेख मात्र करना यथेष्ट समझा कि विश्वामित्र गंगावतरण की सारी कथा सुनाते हैं ।[103] 'विष्णु-प्रताप-रामायण' के अन्तर्गत गंगावतरण प्रसंग के परिप्रेक्ष्य में राजा सगर के अश्वमेघ यज्ञ, इन्द्र से शत्रुता और कुल-परिवार के पापों के हितार्थ भगीरथ द्वारा तपस्या एवं गंगावतरण में शिवजी की सहायता आदि का पूरा वृत्त मिलता है ।[104] प्रस्तुत प्रसंग का सविस्तार वर्णन अन्य रामायणों में भी मिलता है ।[105]

3.1.19. सीता-जन्म

कश्मीरी रामकथा-काव्य में सीता-जन्म के मुख्यतः दो रूप मिलते हैं—मन्दोदरी रावणात्मजा तथा स्वतजा ।

'प्रकाश-रामायण' के अनुसार रावण-मन्दोदरी के यहां जन्म लेकर ज्योतिष पंडितों ने उसे पिता रावण तथा लंका के लिए अनिष्टकारी बताया । सीता को सन्दूक में बन्द करके नदी में बहाया जाता है, जो निः सन्तान राजा जनक को प्राप्त होती है । उक्त रामायण में सीता-रावण संवाद[106], सीता हनुमान संवाद'[107]

---

100. वा० रा० 1. 49 (22), अध्यात्म रामायण 1. 5. 61.
101. मानस 1.210 छं.
102. मानस 1.212 .
103. प्र० रामायण, पृ० 11 .
104. वि० प्र० रामायण, बाल०, अ० 23 .
105. 'आ० रा०', पृ० 37-39; शर्मा रामायण, पृ० 69; ता० रा०, पृ० 73-77, तथा—'अमर रामायण', पृ० 47-49 .
106. प्र० रामायण, पृष्ठ 51 .
107. वही पृ० 83 .

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीता मन्दोदरी भेंट[108], मन्दोदरी द्वारा राम की स्तुति[109] और निर्वासित सीता द्वारा पार्वती की वन्दना[110] आदि प्रसंगों के अन्तर्गत इस वृत्त का उल्लेख मिलता है। 'शंकर रामायण' में मन्दोदरी से सीता का जन्म होने पर उसे अनिष्टकारी समझकर रावण की आज्ञा से 'मिथिला नगर' में मिट्टी में गड़वाया जाता है और दुर्भिक्ष-ग्रस्त नगर के कल्याणार्थ हल चलाने पर राजा जनक को वह प्राप्त होतीहै।[111]

'वि० प्र० रामायण' के अनुसार रावण सात ऋषियों के सात बूंद रक्त को शीशी में रखता है, जिसकी गंध का सेवन करने पर मन्दोदरी गर्भित होती है और सीता के जन्म पर ज्योतिषियों की भविष्यवाणी से क्रुद्ध होकर रावण उसे मंजूषे में बन्द करके पानी में बहा देने का आदेश देता है जो 'निरूहत' में राजा जनक को प्राप्त होती है।[112] उक्त रामायण में सीता की पवित्रता की साक्षी देते समय राजा दशरथ ही सीता-जन्म कथा सुनाते हैं।

'आ० रा०' में सीता-जन्म के पीछे एक शाप-कथा का भी उल्लेख इस तरह मिलता है—पूर्वजन्म में कामासक्त रावण किसी सुन्दरी को छेड़ता है जो उसके यहां पुत्री के रूप में जन्म लेकर कुल-परिवार का नाश कर देने का शाप देती है।[113] आधार-ग्रन्थ 'उत्तर पुराण'[114] में तप-निमग्न राजकुमारी मणिमती द्वारा रावण को शाप देने का उलेख मिलता है। 'आ० रा०' के अनुसार ऋषियों द्वारा भेंट में प्राप्त रक्त का घड़ा अमृत समझकर रावण मन्दोदरी को पीने के लिए देता है। मन्दोदरी पीकर गर्भवती होती है। क्रोधित रावण ने उसका गर्भपात कराया और उसे घड़े में बन्द करके जनकपुर में गड़वाया जहां राजा जनक को हल चलाते हुए घड़े से सीता की प्राप्ति होती है।[115]

'ताराचंद-रामायण' में यह प्रसंग इस तरह मिलता है—रक्त का घड़ा ऋषियों द्वारा भेंट किए जाते समय रावण के पूछने पर ऋषि बताते है कि घड़े से उसका 'काल' उत्पन्न होगा। रावण जनकपुर में वह घड़ा गड़वाने का आदेश देता है ताकि उसका बैरी राजा जनक मारा जाय। यहां भी जनक द्वारा हल चलाते हुए

108. वही, पृ० 54-55.
109. प्र० रामायण, पृष्ठ 154.
110. वही पृष्ठ 212-13.
111. शंकर रा०, खण्ड 1, अ० 6.
112. वि० प्र० रा०, वन०, अ० 129.
113. आ० रा०, पृष्ठ 29.
114. दे० रामकथा—डा० बुल्के, अनु० 412.
115. आ० रा० पृ० 30-32.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीता की प्राप्ति वर्णित है ।[116] आधार-ग्रन्थ 'अद्भुत रामायण' में सीता-जन्म का ऐसा ही वृत्तांत मिलता है ।[117]

सीता के रावणात्मजा का उल्लेख विविध प्रकारों से वसुदेवहिण्डि, उत्तर पुराण तथा महाभागवत देवीपुराण में भी उपलब्ध है,[118] किन्तु सीता-जन्म का कश्मीरी वृत्तांत किसी भी आधार ग्रन्थ से पूर्णतः नहीं मिलता है ।

3.1.20 सीता-स्वयंवर

'मानस' 'गोविन्द-रामायण और कश्मीरी रामायणों में विश्वामित्र से ही सीता-स्वयंवर के बारे में सुनकर राम-लक्ष्मण उनके संग ही जनकपुरी जाते हैं । 'राम-चंद्रिका' में एक ब्राह्मण विश्वामित्र-आश्रम में आकर सीता-स्वयंवर आयोजन, स्वयंवर भवन, राजाओं का धनुर्भंग-प्रयत्न, रावण-बाणासुर संवाद के अतिरिक्त एक ऋषि पत्नी द्वारा सीता के भावी-पति राम का चित्र बनाने आदि का वृत्तांत सुनाते हैं । राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ मिथिला पुरी जाते हैं ।[119]

3. 1. 21 राम-सीता पूर्वानुराग

'मानस' के अनुसार मुनि की आज्ञा से राम जनक-वाटिका में पुष्प चयन के लिए पहुंचते हैं और सीता भी संयोगवश गौरी-पूजा के लिए मंदिर जाती हुई सखियों के संग वाटिका में पहुंचती हैं । राम और सीता के प्रथम भेंट में पूर्वानुराग की संयमित अभिव्यंजना हुई है । सीता गौरी से राम को पति रूप में प्राप्ति का आर्शीवाद पाकर सप्रसन्न घर लौटती हैं ।[120] राम स्पष्टतया विश्वामित्र से सारा वृत्तांत सुनाकर उनसे 'सफल मनोरथ होहुं तुम्हारे' का आशीर्वचन सुनकर अत्यधिक प्रसन्न होते हैं ।[121] 'गोविंद रामायण' में स्वयंवर-भवन में ही राम-सीता पहली बार एक दूसरे को देखते हैं और यहीं पूर्वानुराग की स्थिति अभिव्यक्त हुई है । राम को देखते ही सीता कामदेव के बाणों से बिंध गईं और मतवाले की भांति पृथ्वी पर गिर जाती हैं । फिर होश सम्भाल कर वह महावीर की भांति उठी और राम को ऐसे देखने लगी जैसे चकोरी चांद को । राम-सीता दोनों एक-दूसरे को देखते रहे और रण में दो वीरों की भांति खड़े रहे ।[122]

---

116. ता० रा० 1. अ० 13.
117. दे० रामकथा—डा० बुल्के, अनु 421.
118. दे० वही, अनु० 412.
119. रा० चं० 3, 12-5.3.
120. मानस 1, 227-236.
121. मानस 1.237.
122. गोविन्द रामायण, पृ० 22-23.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'पूर्वानुराग' का वर्णन कश्मीरी 'आनन्द-रामावतार-चरित[123] 'शर्मा-रामायण'[124] तथा 'ताराचंद रामायण[125] में भी मिलता है। यहां भी 'जनक वाटिका' में ही सीता राम के प्रथम दर्शन का उल्लेख मिलता है। तीनों में जनक वाटिका के प्राकृतिक चित्रण के अतिरिक्त राम तथा सीता के अलौकिक सौन्दर्य का वर्णन मिलता है। 'आ० रा०' तथा 'शर्मा रामायण' में सीता अपनी इष्ट देवी पार्वती की वंदना-अर्चना में अपनी मनोकामना भी अभिव्यक्त करती हैं।

3. 1.22 धनुर्भंग

'मानस' के अनुसार स्वयंवर-भवन में 'प्रण' की घोषणा होते ही आमंत्रित राजा 'धनुर्भग' के लिए पहले बारी-बारी फिर एक साथ सब मिलकर असफल प्रयत्न करते हैं।[126] जनक सब की असमर्थता जानकर अत्यधिक क्षुब्धता से 'वीर विहीन मही' की घोषणा करते हैं। यह तिरस्कार असह्य होकर लक्ष्मण क्रोधयुक्त प्रतिवाद करते हैं।[127] विश्वामित्र की आज्ञा से राम सहजतया 'धनुर्भंग करते हैं,[128] और सीता उनके गले में जयमाला पहनाती हैं।[129] 'रामचंद्रिका' में विश्वामित्र राम का परिचय जनक से दे देते हैं किन्तु 'जनक' को राजकुमार राम की सुकुमारता देखकर संदेह होता है 'सिगरे नरनायक असुर विनायक राक्षसपति हिय हारि गए' की बात स्मरण करके। जनक की निराशा देखकर विश्वामित्र की आज्ञा से राम क्षणांतर में ही 'घनुर्भग' करते हैं।[130] धनुर्भंग का भारी शब्द ब्रह्माण्ड तक को भेद गया। जनकादि सभी प्रसन्न हुए। सीता ने जयमाला राम को पहनाई।[131]

'धनुर्भंग' का वर्णन प्रायः सभी कश्मीरी रामकथा-काव्यों के अन्तर्गत एक जैसा मिलता है। कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं—'प्रकाश-रामायण' के अनुसार अनेकानेक महाबली वीर, राक्षस तथा राजा रोज़ प्रातः-सायं धनुर्भंग करने का असफल प्रयास करते हैं। सोलह सहस्र वीर जिस शिव-धनुष को उठा न सके राम ने सुगमता से एक क्षण में उठाकर उससे बाण चलाया।[132] 'वि० प्र० रा०' में राम के अलौकिक रूप का वर्णन भी मिलता है। जनक भी मन ही मन उनकी शरण होते

---

123. आन-रामायण, पृ० 41-43.
124. शर्मा रामायण, पृ० 73.
125. ता० रा०, बाल०, अ० 38 .
126. मानस 1, (250-251).
127. वही 1, 252-253.
128. वही 1, 254-261.
129. वही 1, 264.
130. रामचंद्रिका, प्र 5, 41.
131. रामचंद्रिका 1, 43-46 .
132. प्र० रा० पृ० 13.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं। धनुर्भंग पश्चात् सनातन-धर्मानुरूप स्वयंवर-मर्यादा का पालन होता है।[133] 'शर्मा-रामायण' में स्वयंवर-सम्पन्न होने पर कई राजाओं का रोष प्रकट होता है।[134] 'मानस' की भांति 'तारा-रामायण' में जनक की वाणी से लक्ष्मण क्रोधित होते हैं और राम धनुर्भंग करते हैं।[135] 'अमर-रामायण' में धनुर्भंग के पश्चात् राम शिवजी की आराधना करते हैं।[136]

3.1.23 रावण की उपस्थिति

'मानस' में 'सीता-स्वयंवर' के पूर्व ही रावण और बाणासुर आते हैं किंतु शिव धनुष को देखते ही निराश होकर चले जाते हैं—'रावन बातु महाभट मारे। देखि सरासन गवहिं सिधारे।[137] 'प्रसन्नराघव' के आधार पर केशवदास ने 'स्वयंवर-भवन' में रावण और बाण की भेंट का विस्तृत वर्णन किया है। 'रावण-बाण' वार्तालाप[138] पर आधारग्रन्थ 'प्रसन्नराघव'[139] की पूरी छाप है।

'सीता-स्वयंवर' में रावण की उपस्थिति का प्रसंग कश्मीरी 'ता० रा०' को छोड़कर किसी भी अन्य रामकथा-काव्य में उपलब्ध नहीं है। 'ता० रा०' के अनुसार रावण तथा बाणासुर दोनों धनुर्भंग में असफल होते हैं।[140] शेष रामायणों में इसका उल्लेख न मिलने का मुख्य कारण सीता का 'रावणात्वजा' होना ही प्रतीत होता है।

3.1.24. विवाहोत्सव

दोनों, कश्मीरी तथा हिन्दी भाषाओं के रामकथा-काव्यों में चारों भाई राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न के जनकपुरी में विवाहोत्सव का विस्तृत वर्णन हुआ है। 'मानस' में दशरथ को सूचना देने, विवाह-तैयारियां, बरात-स्वागत विवाह, विदाई तथा अवध-शोभा का विस्तृत वर्णन मिलता है।[141] 'रामचन्द्रिका' में भी विवाहोत्सव राजकीय ठाट-बाट के साथ वर्णित है, जिसमें चारों दूल्हा-दुल्हनों के रूप-सौन्दर्य का विपुल बखान, राम के अवतार रूप की वन्दना तथा विवाहोपरांत दशरथ द्वारा दान आदि का वर्णन हुआ है।[142] विवाहोत्सव का वर्णन प्रायः 'वाल्मीकि

---

133. वि० प्र० रा०, बाल०, अ० 25-26.
134. शर्मा रामायण, पृ० 81-83.
135. ता० रामायण, बाल०, अ० 42.
136. अमर रा०, पृ० 34.
137. मानस, 1, 250.
138. रा० चं०, 4, 1-30.
139. विशेष विवरण के लिए देखिए—'रामकाव्य की परम्परा में रामचन्द्रिका का विशिष्ट अध्ययन'—डा० गार्गी गुप्त, पृ 260-261.
140. ता० रा०, बाल०, अ० 41.
141. मानस 1, 287-361.
142. रामचन्द्रिका, प्र० 6.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामायण' के अनुसार ही है, जिसमें अधिक तड़क भड़क का सामंजस्य कवि की निजी मौलिकता है। 'गोविन्द रामायण' में विवाह वर्णन संक्षिप्त किंतु बारात की साज सज्जा तथा दान, हर्षोल्लास का अधिक विस्तृत वर्णन मिलता है।[143]

कश्मीरी 'प्रकाश-रामायण' में विश्वामित्र धनुर्भंग के पश्चात् राम के अलौकिक रूप का वर्णन राजा जनक के समक्ष करते हैं और शुभमुहूर्त देखकर राजा दशरथ को सन्देश भी भिजवाते हैं। चारों भाइयों के विवाह पर स्त्रियां विवाह-गीत गाती हैं और देवी-देवता स्तुति-गान[144] 'शंकर-रामायण' में विस्तृत वर्णित विवाहोत्सव में देवी-देवता ब्रह्मा, शिव आदि भी सम्मिलित होते हैं। यहां दान-दहेज का भी विस्तृत वर्णन मिलता है।[145] 'वि० प्र० रा०' में भी अष्टसिद्धियाँ एवं तीस कोटि देवी-देवताओं द्वारा स्तुति-गान वर्णित है।[146] अन्य रामायणों में भी स्त्रियां तथा देवी-देवताओं द्वारा गाये गए विवाह गीतों एवं भजनों का वर्णन मिलता है।[147]

3.1.25 परशुराम आगमन

'वाल्मीकि रामायण' के अनुसार[148] ही कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' तथा 'शंकर-रामायण' में परशुराम-राम भेंट प्रसंग का वर्णन चारों भाइयों के विवाहोपरांत बारात के अयोध्या लौटते हुए मार्ग में किया गया है। 'प्रकाश-रामायण' में वर्णन संक्षिप्त है, जिसमें परशुराम-भेंट तथा राम द्वारा उनके धनुष को तोड़-फेंक कर परशुराम के अभिमान को खंडित करने मात्र का उल्लेख मिलता है।[149] 'शंकर रामायण' में राम के प्रति परशुराम के क्रोधयुक्त व्यवहार, संवादों, रामावतार के अलौकिक कृत्यों द्वारा उनको शांत करने तथा परशुराम की वंदना का यथेष्ट वर्णन किया गया है।[150] 'रामचंद्रिका' में भी प्रस्तुत प्रसंग विवाहोपरांत ही वर्णित है। इसमें परशुराम के कर्कश शब्दों का व्यंगात्मक उत्तर भरत, शत्रुघ्न और लक्ष्मण आवेश में दे देते हैं। महादेव के समक्ष ही राम परशुराम-धनुष तोड़ देते हैं। महादेव ही दोनों को समझाते हैं। परशुराम राम के अलौकिक रूप से परिचित होकर चलते बनते हैं।[151] उक्त प्रसंग के संवादों पर भी अन्य संवादों की भांति 'हनुमन्ननाटक'

---

143. गो० रा०, पृ० 24-44.
144. प्र० रामायण, पृ० 13-19.
145. शं० रामायण, बाल० अ० 8-9.
146. वही, बाल०, अ० 27-28.
147. 'आन० रामायण', पृ० 50-57, शर्मा रामायण, पृ० 92-120; 'ता० रामायण', पृ० 95-105, बाल०, अ० 44; 'अमर रामायण' पृ० 35-39.
148. वाल्मीकि रामायण, बाल, सर्ग 74-76.
149. प्र० रामायण, पृ० 19.
150. सं० रा०, खण्ड 1, अ० 10.
151. रामचंद्रिका, प्र० 7.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है। केशव द्वारा वर्णित परशुराम के प्रति राम के व्यंगात्मक शब्द[152] हनुमन्नाटक[153] के उक्त संवाद का अनुवाद मात्र हैं।

मानस' में 'धनुर्भंग' के पश्चात् ही क्रुद्ध परशुराम सहसा आकर जनक से धमकी देकर पूछते हैं कि धनुष को किसने तोड़ा।[154] लक्ष्मण परशुराम पर 'रेणुका-वध' आदि कटु व्यंग करके उसका तिरस्कार करते हैं।[155] लक्ष्मण के कटु व्यवहार पर राम परशुराम से ब्राह्मण के नाते विनम्र क्षमा-याचना करते हैं, बदले में परशुराम के अधिक क्रुद्ध होने पर राम क्षत्रिय कर्म का भी वर्णन करके ब्राह्मणों के समक्ष अपनी विवशता का संकेत करते हैं।[156] राम की ईश्वरता की परीक्षा लेने के हेतु परशुराम उन्हें 'खेंचहु मिटै मोर संदेह' कहकर अपना धनुष दे देते हैं। राम की सफलता देखकर परशुराम उन्हें ईश्वर मानकर उनकी स्तुति करके चले जाते हैं।[157] 'गोविंद-रामायण' में धनुर्भंग में परशुराम की ललकार सुनते ही रण-सज्जा का विस्तृत वर्णन मिलता है, जिसमें अनेकानेक वीर योद्धा अस्त्र-शस्त्र समेत लड़ने के लिए तैयार होते हैं। परशुराम रण-क्षेत्र के बीच राम को क्रोध-युक्त ललकारते हैं। परशुराम के अभिमान युक्त शब्द सुनकर राम के बल-प्रदर्शन से चारों दिशाएं कांपती हैं, पृथ्वी, आकाश तथा सात समुद्रों में भूकम्प आता है। राम द्वारा धनुष के दो टुकड़े कर लेने पर परशुराम आश्चर्यचकित होकर राम के गले मिलते हैं।[158] कश्मीरी 'आ० रा०'[159] 'शर्मा रा०'[160] तथा 'ता० रा०'[161] में भी प्रस्तुत प्रसंग 'धनुर्भंग' के पश्चात् ही वर्णित है। तीनों में परशुराम के धनुष को तोड़ने और क्रोध को शांत करने पर परशुराम द्वारा राम की वन्दना करायी गयी है।

---

152. रामचंद्रिका, 7. 26.
153. हनु० ना० 1 42.
154. मानस 1. 270.
155. वही 1. 272-276.
156. वही 1, 282-284.
157. वही 1. 284-285.
158. गोविन्द रामायण, पृ० 25-34.
159. आन० रा०. पृ० 45.
160. शर्मा रामायण, पृ० 84.
161. ता० रामायण, पृ० 93.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.2. अयोध्या-काण्ड

3.2.1. राम को युवराज-पद देने की योजना

'आदि रामायण' में दशरथ भरत की अनुपस्थिति में ही राम का राज्याभिषेक करने में तत्परता दिखाते हैं, जिसका स्पष्ट उल्लेख वे राम से करते हैं।[162] 'मानसकार' ने राम-पिता दशरथ के चरित्र का यह धब्बा धुलने का प्रयत्न किया है किन्तु उन्हें पूर्णतः सफलता न मिल सकी। तुलसीदास ने श्वेतबाल के माध्यम से अकस्मात वृद्धावस्था का अनुभव कराके रामाभिषेक के लिए वशिष्ठ और नागरिकों की सहमति लेने का उल्लेख किया है, किन्तु जहां कौशल्या और सुमित्रा को रामाभिषेक का समाचार दिया जाता है, गुरु वशिष्ठ द्वारा राम को राजधर्म की शिक्षा दिलाने की व्यवस्था की जाती है और एक पक्ष के अन्तर्गत कैकेयी को सूचना नहीं मिलती है। डा० माताप्रसाद गुप्त के शब्दों में 'हमारा कवि राम के पिता को इस आक्षेप से मुक्त करने का प्रयत्न करता है किंतु इस प्रयास में वह अपने पाठकों से सत्य को छिपाता, किसी अत्यन्त आवश्यक सूचना को दबाता एवं किसी कालिमा के ऊपर सफेदी करता हुआ प्रतीत होता है जबकि वह उनकी राम को युवराज पद देने की अकारण आतुरता का चित्रण करता है'[163]

कश्मीरी रामकथा-काव्य में राम के युवराज्याभिषेक की घोषणा धूम-धाम से की जाती है। 'प्रकाश-रामायण' के अनुसार दशरथ की आज्ञा से सभी देशों एवं सात द्वीपों में ढिंढोरा पीटकर यह घोषणा की गई।[164] इसलिए यह सम्भव न था कि दशरथ की प्रिय रानी कैकेयी यह समाचार न सुन सकती प्रत्युत् कैकेयी इस समाचार का स्वागत करती है, किन्तु दैवी इच्छा या मति फिर जाने के फलस्वरूप परवशतः वह राम-वनगमन का प्रत्यक्ष कारण बन जाती है। यहां दशरथ किसी भी आशंका से ग्रस्त नहीं हैं। वे राम के युवराज्याभिषेक में सम्मिलित होने के लिए भरत एवं शत्रुघ्न को भी ननिहाल से बुलाने का प्रबन्ध करते हैं।[165]

3.2.2. मंथरा-कैकेयी प्रसंग

'मानस' के अनुसार देवता निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए सरस्वती से विनय करते हैं कि वह कैकेयी का मन फेर ले और अनिच्छा से सरस्वती दासी मंथरा की बुद्धि फेर लेती है।[166] मंथरा अवध की अभिषेक-सज्जा का वर्णन करके राम-अभिषेक को कौशल्या का एक घातक षड़यन्त्र बताकर आगामी सौतिया डाह को उभारते हुए कैकेयी से आग्रह करती है कि वह राजा के पास सुरक्षित दो वरों की

---

162. वाल्मीकि रामायण 2. 4.25.
163. डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, पृ० 295.
164. प्र० रामायण, पृ० 19.
165. वही पृ० 21.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

याचना करे।[167] 'रामचंद्रिका' में मंथरा का उल्लेख नहीं मिलता है, यहां दशरथ की रामाभिषेक-इच्छा तथा कैकेयी की वर-याचना का उल्लेख मात्र मिलता है।[168] 'गोविन्द-रामायण' के अनुसार दशरथ राज्य की तीन दिशाएं तीन पुत्रों में बराबर बांटते हैं और राजधानी राम को देने के लिए गुरु वशिष्ठ की मदद से अभिषेक-सामग्री एकत्रित करते हैं तो ब्रह्मा की आज्ञा से एक गंधर्विणी मंथरा कैकेयी को दो वर मांगने का अनुरोध करती है।[169]

3.2.3. वर-याचना

'कोपभवन' में कैकेयी द्वारा वरदान मांगने पर 'मानस' के दशरथ कैकेयी को समझाने में असफल रहते हैं। 'भरताभिषेक' के लिए वह तैयार होते हैं किंतु 'राम-निर्वासन' उनके जीवन-मरण का प्रश्न बनकर असह्य हैं।[170] उक्त प्रसंग में कैकेयी की हठधर्मिता और राजा दशरथ की करुणार्द्र दशा कश्मीरी रामायणों में भी भावातिरंजित शब्दों में व्यक्त हुई है।[171] गोविन्द-रामायण' में कैकेयी की वर-याचना पर दशरथ अत्यधिक क्रोधित होकर उसे 'पापिनी' कहकर दुत्कारते हुए कहत हैं, 'मेरा जी चाहता है धनुष लेकर इसी समय तुझे काट डालूं, परन्तु क्या करूं। तू नारी है इसलिए छोड़ देता हूं।' राम की अलौकिकता वर्णित करते हुए उसांसें भरते हुए अचेत भी होते हैं और कैकेयी को 'कलंकिनी, निर्लज्जा, कुकर्मिणी, अधर्म-रूपिणी, पापों की पिटारी, कुकर्मा तथा मारने पर भी न मरने वाली कहता है।[172] कैकेयी की हठधर्मिता तथा काम के बाणों के बिंध जाने पर— 'बिंध्यो काम के तीर', 'ना-ना' करके भी दशरथ को वर स्वीकार करने पड़े और वे वशिष्ठ द्वारा राम को बनवास की आज्ञा सुनाते हैं।[173]

3.2.4. लक्ष्मण-क्रोध और राम का उपदेश

कश्मीरी रामकथा-काव्य में लक्ष्मण-क्रोध तथा राम के उपदेश देने का प्रसंग भी मिलता है। 'प्रकाश रामायण' में राम राजा दशरथ से वनगमन के लिए आज्ञा मांगते हैं, तो लक्ष्मण सक्रोध ललकारते हुए राम वनगमन-आदेश का विरोध

166. मानस 2. 11-12.
167. वही 2. 12-22.
168. रामचंद्रिका 9. 2-4.
169. गोविन्द रामायण, पृष्ठ 49-50.
170. मानस 2. 31-37.
171. प्र० दे०, पृ० 20-21; शंकर रा०, खण्ड 1, अ० 11; वि० प्र० रा० पृ० 93-94; शर्मा रा०, 115-117 ता० रा०, पृ० 112.
172. गो० रा०. पृ० 50-52.
173. वही, पृ० 53-58.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकट करते हैं ।[174] राम लक्ष्मण के क्रोध को शांत करते हुए उन्हें आगामी महत्व पूर्ण घटनाओं के परिपेक्ष्य में उपदेश देते हैं।[175] 'शंकर-रामायण' में राम-लक्ष्मण-उपदेश को 'राम गीता' कहा गया है ।[176] वि० प्र० रामायण' में राम अपने उपदेश में उन्हें रावणादि राक्षसों के संहार और पृथ्वी को पाप-मुक्त करने के उद्देश्य का भी वर्णन करते हैं ।[177]

'मानस' में लक्ष्मण भक्तिपूर्ण राम के चरण पकड़कर उनके साथ वन चलने का अनुरोध करते हैं और सुमित्रा का परामर्श पाकर ही राम स्वीकृति प्रदान करते हैं ।[178] 'सुमंत्र-संवाद' में लक्ष्मण की कटु वाणी का संकेत मात्र मिलता है ।[179] 'गोविन्द-रामायण' में लक्ष्मण-क्रोध का भयंकर रूप मिलता है। वह धनुष-बाण लिये हुए अशोभनीय वचन कहता है :—

> कौन कुपूत भयो कुल में जिन रामहि वास बनै कहुं दीने ।
> काम के बाण बिंध्यो बस कामिनी कूर कुचाल महामति हीने ।
> रांड़ कुमांड के हाथ बिक्यो कपि नाचत नाच छरी जिमि चीने ।।[180]

इसी तरह वह कैकेयी की भी अपशब्दों में भर्त्सना है जो मदारी के रूप में कामदेव का दंड हाथ लिए राजा को बन्दर की तरह नचा रही है, जो अभिमानिनी ऐंठ से राजा को तोते की तरह पाठ पढ़ाती है आदि :—

> काम को दंड लिए कर कैकेयी बानर ज्यों नृप नाच नचावै ।
> ऐंठन ऐंठ अमैंठ लिए ढिग बैठ सुआ जिमि पाठ पढ़ावै ।।
> सौतिन सीस पै ईश को ईश पृथीश जू चाम के दाम चलावै ।
> कूर कुजाति कुपंथ दुरानन लोक गयो परलोक गंवावै ।।[181]

3.2.5 सीता-हठ

दोनों भाषाओं के रामकथा काव्यों में वन के विविध कष्टों का उल्लेख करके राम सीता को घर रोकने का प्रयत्न करते हैं किन्तु सीता वन में भी 'पति-संयोग' के आनंद को सर्वोपरि बतला कर संग चलने का सफल हठ करती हैं ।

---

174. प्र० रामायण, पृ० 21.
175. वही, पृ० 22.
176. शंकर रामायण, खण्ड 1. अ० 12.
177. वि प्र० रा०, वन०. अ० 3.
178. मानस 2. 70-75.
179. मानस 2.96 (5) .
180. गो० रामायण, पृष्ठ 61.
181. वही पृष्ठ 62.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.2.6 कौशल्या आग्रह और राम का उपदेश

'मानस' में कौशल्या राम के वनवास चर्चा से पहले क्षुब्ध होती हैं किन्तु माता (विमाता कैकेयी) और पिता की आज्ञा को सर्वोपरि बतलाकर उन्हें सप्रसन्न स्वीकृति दे देती है । [182] 'रामचंद्रिका' में कौशल्या राम को रोकने का प्रयत्न इन शब्दों में करती है :—

रहो चुप ह्वै सुत क्यों बन जाहु । न देखि सकैं तिनके उर दाहु ।
लगी अब आप तुम्हारेहि बाइ । करैं उलटी विधि क्यों कहि जाइ ।।[183]

'वाल्मीकि रामायण' के आधार पर मां कौशल्या वन में साथ चलने का अनुरोध करती हैं—'मोहि चलौ बन संगे लिये । पुत्र तुम्हें हम देखि जिये ।[184] और राम कौशल्या को 'पति-सेवा' एवं 'नारि धर्म' का उपदेश देते हैं ।[185] 'गोविंद रामायण' की कौशल्या भी राम से ऐसा ही अनुरोध करती हुई अपनी स्थिति व्यक्त करती है :—

केकइ आदिक सौतिन को लखि भौंह चढ़ाइ सदा गरबाती ।
ताकहु तात ! अनाथ जु आज चले वन को तजि कै बिलमाती ।।[186]

और राम-विरह सम्बंधित विलापों में सही आकांक्षा अभिव्यक्त करती है कि राम राज्य करे या उनको भी साथ ले लेते ।[187] किसी भी कश्मीरी रामायण में न कौशल्या के हठ का ही उल्लेख मिलता है और न राम के उपदेश का ही ।

3.2.7 प्रस्थान तथा वन-यात्रा

दोनों भाषाओं के रामकथा काव्यों में वल्कल वस्त्र धारण कर राम-लक्ष्मण सीता का माताओं, पिता, अयोध्यावासियों से विदा होने और वन-यात्रा के लिए प्रस्थान प्रसंग में घटनाओं का साम्य है, वर्णन का ढंग अलग-अलग है ।

---

182. मानस 2.51-57 .
183. रामचंद्रिका 9.8 .
184. वही 9.10 .
185. वही 9. 11-21 .
186. गोविन्द रामायण, पृष्ठ 64.
187. गोविन्द रामायण, पृष्ठ 67-69 .

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम-विरह में दशरथ और कौशल्या के विलापों की अत्यधिक करुणा-जनक विवेचना कश्मीरी 'प्रकाश-रामायण' के अन्तर्गत मिलती है।[188] दशरथ को गुरु वशिष्ठ राम के अलौकिक अवतार रूप का बखान करके सान्त्वना दे देते हैं।[189] 'वि० प्र० रा०' में केवट-निषाद मिलन एवं किश्ती द्वारा नदी पार करने का विस्तृत वर्णन मिलता है[190] 'शर्मा-रामायण'[191] तथा 'ता० रामायण[192] के अन्तर्गत निषाद-मिलन प्रसंग के अतिरिक्त वन-यात्रा अन्तर्गत भारद्वाज-मुनि से भेंट एवं वाल्मीकि आश्रम में जाने का भी वर्णन मिलता है जो उन्हें चित्रकूट जाने का परामर्श दे देते हैं।

3.2.8 तापस भेंट

'मानस' में किसी जघुवयस तेजस्वी तापस से भी राम की भेंट करायी गई है, जिसके दण्डवत करने पर राम उसे गले लगाते हैं और तापस लक्ष्मण-सीता का भी चरण स्पर्श करते हैं।[193] तापस-प्रसंग किसी आधार ग्रन्थ में नहीं मिलता है, कुछ विद्वानों के विचारानुसार वे स्वयं तुलसीदास ही हैं।

3.2.9 सुमंत्र-संवाद

'मानस' में सुमंत्र को गंगा-तट से विदा करते समय सुमंत्र राम को दशरथ का सन्देश सुनाते हैं जिसमें उनके अयोध्या लौटने का आग्रह था, राम शिव, दधीच, हरिश्चन्द्र आदि के उदाहरण देकर सत्य-पालन का समर्थन करके यह प्रस्ताव अस्वीकार करते हुए दशरथ के लिए सन्देश भी भेजते हैं।[194] लक्ष्मण कुछ 'कटु-बानी' में सन्देश भेजना चाहता है किन्तु राम टोकते हैं—'पुनि कछु लखन कही कटु बानी। प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी।[195] पुनः सुमंत्र सीता के लौटने का सन्देश सुनाते हैं किन्तु पति-संयोग के सुखों का बखान करके वह प्रस्ताव स्वीकार नहीं करती है।[196] अयोध्या लौटकर सुमंत्र राम की वन-यात्रा का पूरा विवरण दशरथ को सुनाते हैं।[197]

---

188. प्र० रामायण, पृष्ठ 24-29.
189. वही पृष्ठ 26.
190. वि० प्र० रा०, वन०. अ० 5.
191. शर्मा-रा०. पृ० 126-133.
192. ता० रा०. पृ० 120-131.
193. मानस 2. 110-111.
194: मानस 2. 94-95.
195. वही 2. 66.
196. वही 2. 296-99.
197. वही 2. 144-153.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.2.10 'अन्ध-मुनि-शाप' तथा 'दशरथ-मरण'

'अन्ध मुनि शाप' का विस्तृत वर्णन कश्मीरी राम-कथा-काव्य में मिलता है, जो इस प्रकार है दशरथ द्वारा एक दिन शिकार खेलते हुए किसी पशु की छाया भ्रम में बाण चलाने पर एक ऋषि बालक घायल होकर गिर पड़ता है जो अपने अन्धे माता पिता के लिए पानी ले जा रहा था । आहत बालक दशरथ से विनती करता है कि वह उसके माता-पिता को पानी पिलाये । अन्धे ऋषि को पुत्र की मृत्यु का समाचार मिला तो राजा को शाप देते हैं, कि उनके प्राण भी पुत्र-शोक में ही निकलें ।[198] इसी शाप के कारण ही मरते समय राजा दशरथ को पुत्र के हाथों पानी तक न मिला 'राम-राम' जपते ही प्राणों का विसर्जन करते हैं ।[199] 'शंकर-रामायण' के अनुसार स्वर्ग से पुष्प-विमान उनके लिए उतरा । इन्द्रादि देवताओं ने पुष्पों के भारी भण्डार से उनकी पूजा की ।[200] 'आनंद-रामावतारचरित में दशरथ की मृत्यु उस समय होती है जब भरत राम को लौटाने के उद्देश्य से चित्रकूट गए हुए होते हैं ।[201]

तुलसी ने अनावश्यक कथा-विस्तार समझकर अन्ध मुनि शाप का संकेत मात्र किया है :—

तापस अंध साप सुधि आई । कौशल्याहि सब कथा सुनाई ।[202]

'गोविन्द रामायण' के प्रारम्भ में ही राजा दशरथ के शासन-वर्णन के अन्तर्गत ही 'अन्ध मुनि शाप' प्रसंग सविस्तार वर्णित है । यहां बालक का नाम श्रवणकुमार बताया गया है । अन्ध मुनि की प्रार्थना पर दशरथ उनके लिए लकडियां लाता है चिता के लिए, किन्तु चिता की आग भी ब्राह्मण को देखकर ठण्डी होती है, तब वे दोनों योग की अग्नि में जलते हैं और जलते हुए राजा को शाप देते हैं—पुत्र-वियोग में प्राण-त्याग का ।[203] 'मानस' में सुमंत्र द्वारा रामवन-गमन का विवरण सुनकर कौशल्या को अन्ध मुनि शाप के बारे में कहकर राम-राम रटते हुए दशरथ

198. प्र० रा०, पृ० 26-27; वि० प्र० रा०, बन. आ० 8; आ० रा०, पृ० 67; शर्मा-रा० पृ० 140.
199. प्र० रा०, पृ० 29-30.
200. शंकर-रामायण, खण्ड 1. अ० 13.
201. आन० रा०. पृ० 84.
202 मानस 2. 155.
203. गो० रा०. पृष्ठ 5-8.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की मृत्यु होती है ।[204] वसिष्ठ संतप्त परिवार को सान्त्वना देकर दशरथ के शव को भरत-आगमन तक 'तेल-नाव' में सुरक्षित रखवाते हैं ।[205]

3.2.11 भरत-शत्रुघ्न आगमन

दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में भरत पिता-मृत्यु और रामवन-गमन के बारे में सुनकर अत्यधिक क्षुब्ध होकर कैकयी के प्रति रोष प्रकट करते हैं। 'मानस' में भरत कैकेयी को पापिनी, कुलनाशिनी और कुमति से अपशब्द कहकर घृणा से उसे फटकारते हैं ।[206] कश्मीरी रामायणों में भरत के उत्तम चरित्र की रक्षा की गई है। यहां भरत संयमित शब्दों में निजी क्षुब्धता एवं आत्मग्लानि व्यक्त करता है । कश्मीरी 'शंकर-रामायण' में शत्रुघ्न मंथरा को ही षडयंत्र का मूल कारण समझकर उसी पर क्रोध प्रकट करते हैं और भरत असह्य आत्मग्लानि एवं क्षुब्धता से दीवार से सिर पीट-पीट कर आहत भी होते हैं ।[207] कौशल्या के समक्ष दोनों भाई निजी आत्मक्षोभ व्यक्त करने जाते हैं और कौशल्या स्नेहसिक्त वाणी में उन्हें सान्त्वना दे देती है ।[208] 'ता० रा०' में भरत कौशल्या के समक्ष निजी सफाई देते हुए कसमें भी खाते हैं। 'वि० प्र० रा०' के अनुसार दशरथ के अन्तिम अन्त्येष्टि संस्कार भरत के हाथों ही सम्पन्न होते हैं ।[209]

'मानस' में सूचना मिलने से पूर्व भरत द्वारा देखे दुस्वप्नों का उल्लेख भी मिलता है ।[210] कौशल्या भरत-शत्रुघ्न को सान्त्वना देते हुए विधाता को ही दोषी ठहराती है ।[211] भरत फिर भी अनेक पातकों के पापों के सन्दर्भ में कसमें खा-खाकर अपनी सफाई दे देते हैं ।[212] 'रामचंद्रिका' में भरत कौशल्या से कहते हैं :-

> जिनके रघुनाथ विरोध बसै जू। मठ धारिन के तिन पाप ग्रसे जू ।
> रस राम-रस्यो मन नाहिन जाको । रन में नित होइ पराजय ताको ।।[213]

'गोविन्द रामायण' में भरत के ननिहाल 'कश्मीर' का स्पष्ट उल्लेख मिलता है जहां से सन्देश मिलते ही वे चले आते हैं :—

---

204. मानस 2.153-155.
205. वही 2.156-157.
206. वही 2.161-162.
207. शंकर रामायण, खण्ड 1. अ० 12.
208. प्र० रा०, पृ० 30-31
209. वि० प्र० रा०, बन०. अ० 11.
210. मानस 2. 157.
211. वही 2. 164-165.
212. वही 2. 167-68.
213. रामचंद्रिका 10. 8.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोप जीयं जाग । धर्म मर्म भाग ।। त्यागहू कश्मीर । भज्यौ रामवीर ।।[214]

यहां भी भरत कैकेयी को दुत्कारते हैं :–

लखसयौ कुसूत । बुल्लयो सुपूत ।। ध्रिगं मैया तोहि । लाइ लाजा मोहिं ।।
का कियो कूकाज । कीनि जी न लाज ।। मोंह जैबै तांहि । राम हैंगे जांहि ।।[215]

'साकेत' में अयोध्या लौटते भरत-शत्रुघ्न भी कुछ अपशकुन महसूस करते हैं और प्रकृति का विकृत रूप उनके सामने आता है।[216] भरत-शत्रुघ्न कैकेयी की कटु शब्दों में भर्त्सना करते हैं। शत्रुघ्न सक्रोध संयम खोकर कहते हैं :—

भ्रातृ-निष्कासन, पिता का घात, हो चुके दो दो जहां उत्पात,
और दो हों-मातृवध, गृहदाह । बस यही इस चित की चाह ।[217]

3.2.12 चित्रकूट-गमन :

राज्याभिषेक अस्वीकृत करके कुल-परिवार एवं अयोध्यावासियों समेत भरत का राम को लौटाने के लिए चित्रकूट जाने की धटनाओं में दोनों भाषाओं के रामकथा काव्य ग्रन्थों में साम्य मिलता है। प्रसंग-क्रम कुछ भिन्न रूपों में वर्णित अवश्य है। दोनों में वर्णित निजी विशिष्टताएं इस प्रकार हैं :—

3.2 13 लक्ष्मण-क्रोध एवं राम का सन्देह

'मानस' में भरत के ससैन्य चित्रकूट आगमन का समाचार पाकर राम को संकोच होता है और लक्ष्मन क्रुद्ध होकर भरत के कुटिलत्व तथा राजमद का वर्णन करके उसे समर-भूमि में मारने की आज्ञा तक राम से मांगते हैं। आकाशवाणी द्वारा लक्ष्मण को विवेक-पूर्वक कार्य करने का निर्देश मिलता है राम भी भरत के गुण-शील का विपुल बखान करते हैं।[218] 'रामचंद्रिका' में भी लक्ष्मण-क्रोध का संक्षिप्त वर्णन मिलता है।[219] भरत-आगमन सूचना पाकर 'साकेत' के लक्ष्मण भी भरत का प्रतिशोध लेने के लिए तैयार होते हैं।[220] 'गोविन्द-रामायण' के अनुसार ससैन्य भरत-आगमन पर राम ही धनुष पर तीखा बाण चढ़ाते हैं :—

214. गो० रा०, पृ० 70.
215. वही पृष्ठ 70-71.
216. साकेत, सर्ग 7, पृष्ठ 183-186.
217. वही, वही पृष्ठ 203.
218. मानस 2. 227-233.
219. रामचंद्रिका, प्र० 10.25.
220. साकेत, सर्ग 8, पृष्ठ 237

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लख जल थल्लं तज कुल धाए । मुनिगन संगे लइ तहं आए ।
लखि बल रामं खल दल मीरं । गहि धनु-बाणं सित धर तीरं ।।[221]

कश्मीरी 'वि० प्र० रामायण' में लक्ष्मण-क्रोध प्रसंग सविस्तार वर्णित है, जिसमें लक्ष्मण भरत के मुकाबले के लिए तैयार होते हैं और राम के उपदेश से ही उनका क्रोध शांत होता है ।[222] भरत-चरित्र पर राम के सन्देह का उल्लेख किसी भी कश्मीरी रामायण के अन्तर्गत वर्णित नहीं है ।

3 2.14 पिता की मृत्यु पर राम–लक्ष्मण का शोक

हिन्दी की अपेक्षा कश्मीरी रामायणकारों ने राम तथा लक्ष्मण के 'पितृ-शोक' का सविस्तार वर्णन किया है । 'प्रकाश रामायण में पितृहीन बालक की दयनीय स्थिति का चित्रण राम के आत्मालापों में आत्यन्तिम करुणापूर्वक मिलता है । दिवंगत राजा दशरथ से परिकल्पित राम के करुण आत्म-संवादों के परिप्रेक्ष्य में सांसारिक (पिता-पुत्र) सम्बन्धों की विवेचना में सुहृद आध्यात्मिक तत्वों की भी अभिव्यंजना हुई है ।[223] राम एक सच्चे भक्त के रूप में दुख-दोष, संताप निवारणार्थ महादेव की शरण होकर उनकी वन्दना करते हैं ।[224] वि. प्र. रामायण' में लक्ष्मण पिता दशरथ के देहावसान की सूचना पाकर करुण-विलाप करते हैं और राम सदुपदेश से उन्हें सांत्वना देते हैं ।[225] राम द्वारा महादेव की वन्दना-पश्चात दिवंगत पिता के प्रति शोक-व्यथा का करुण रूप राम के आत्मसंवादों के अन्तर्गत भी मिलता है ।[226] 'आनन्द रा०'[227] तथा शर्मा-रामायण'[228] में भी राम-लक्ष्मण का 'पितृ-शोक' सविस्तार अभिव्यंजित हुआ है । आत्मक्षोभ से उनकी स्थिति भयावह होती है ।

'मानस' के अनुसार वशिष्ठ दशरथ-मरण समाचार सुनकर राम निर्जल व्रत धारण करके उनकी वैदिक क्रिया करते हैं ।[229] 'रामचंद्रिका' में दशरथ-मरण समाचार का मनोवैज्ञानिक धरातल पर चित्रण मिलता है । राम द्वारा पिता की कुशलता पूछने पर सब रो देते है :

---

221. गो० रा०, पृष्ठ 71.
222. वि० प्र० रामायण, बन०. अ० 12.
223. प्र० रा०, पृष्ठ 33-35.
224. प्र० रा०, पृष्ठ 35-39.
225. वि० प्र० रामायण, बन०. अ० 14-17.
226. वही, बन०. अ० 18-19.
227. आन० रा०, पृष्ठ 84.
228. शर्मा रामायण, पृष्ठ 159.
229. मानस 2. 247–248.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तब पूछियो रघुराइ। सुख है पिता तन माइ।
तब पुत्र को मुख जोई। क्रम तें उठी सब रोइ।।
आंसुनि सों सब पर्वत धोए। जंगम को जड़ जीवनि रोए।
सिद्धबधू सिगरी सुनि आईं। राजबधु सबई समुझाईं।।[230]

'गो·रा॰' के अनुसार भरत और शत्रुघ्न के (अधीनता दिखाते हुए) सर झुकाने से ही राम-लक्ष्मण दशरथ-मरण के बारे में समझ लेते हैं। चारों भाई गले मिल कर रोते हैं।[231] 'साकेत' में प्रस्तुत प्रसंग के उल्लेख में अत्यधिक संयम दर्शाया गया है—वसिष्ठ ही सबको सान्त्वना दे देते हैं।[232] साकेत में भी राम द्वारा मुनियों के मध्य श्राद्ध विधि साधी[233] का उल्लेख प्राप्य है।

3.2.15 सीता–माया

'मानस' के अनुसार सीता अपनी माया से अनेक रूप धारण कर प्रत्येक सास की अलग-अलग सेवा करती हैं और अकेले राम उनकी माया समझ लेते हैं।[234] किसी भी कश्मीरी रामायण में सीता–माया का उल्लेख नहीं मिलता है।

3.2.16 चित्रकूट–सभा

चित्रकूट सभा, भरत का अयोध्या लौटने का आग्रह, कैकेयी की विनम्रता, राम द्वारा पादुकाएं दे देने तथा ससमाज भारत का अयोध्या प्रत्यागमन एवं नंदि ग्राम प्रवास प्रसंग दोनों भाषाओं के रामायणों में वर्णित है। 'मानस' में चित्रकूट-सभा का अधिक विस्तार से वर्णन मिलता है जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। कुछ मौलिक एवं विशिष्ट उद्भावनाएं इस प्रकार हैं—भरत राम को अयोध्या लौटने के लिए उनके सामने तीन विकल्प रखते हैं जिनके अनुसार या भरत-शत्रुघ्न दोनों बन चले जाएं और राम-सीता व लक्ष्मण अयोध्या लौटें, या बन मे भरत का साथ शत्रुघ्न व लक्ष्मण भी दें और राम-सीता अयोध्या लौटें या लक्ष्मण के स्थान पर वे (भरत) ही उनका साथ दे दें।[235] जनक-रानी कौशल्या के सामने याज्ञवल्क्य की भविष्यवाणी का उल्लेख करती है जिसमें राम-वनगमन, राक्षस-संहार एवं सुरकार्य-साधन तथा अयोध्या-शासन की सम्भाव्य अनिवार्यता परिलक्षित होती है।[236]

230. रामचंद्रिका 10.30-31.
231. गोविन्द रामायण, पृ॰ 72-73.
232. साकेत, सर्ग 8, पृ॰ 241-242.
233. साकेत, सर्ग 8, पृ॰ 245.
234. मानस, 2.252.
235. मानस, 2.268.
236. मानस 2.285.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.2.17 राम का पिण्डदान

कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' में 'श्राद्ध-दिवस' पर राम के हाथ से दशरथ का प्रत्यक्ष रूप में उपस्थित होकर पिण्डदान स्वीकार करने का अद्भुत वर्णन मिलता है। राम पुरोहित समेत 'श्राद्ध' के दिन नियमित रूप से पिण्डदान देते थे। एक दिन स्वर्गलोक से दशरथ न आ सके तो क्रोधित होकर बाणसंधान करके तक्षक को मार डाला, जिससे आगे के लिए भी कार्य सुगम हुआ।[237]

3.3. अरण्य काण्ड

3.3.1 जयंत-काग प्रसंग

कश्मीरी 'ता० रामायण' के अनुसार इन्द्र-पुत्र जयंत की पत्नी राम के दर्शनार्थ इन्द्रलोक से चली आती है। जयंत इस पर क्रोधित होता है और राम का बदला लेने के लिए ही कौवा बनकर सीता के पांव को काटता है। परिणामस्वरूप राम के तीर से उसकी आंख फूटती है।[238] 'आ० रा०' में भी कौवे द्वारा सीता का पैर काटने तथा राम के बाण चलाने का प्रसंग मिलता है।[239] 'प्रकाश-रामायण' के अन्तर्गत सीता के पास कपटी कौवे के आने और राम द्वारा दर्ब-तीर चलाकर उसे भगाने का उल्लेख उपलब्ध है।[240]

'मानस' में 'जयन्त' काक-वेश में आकर राम की बल-परीक्षा करने के उद्देश्य से ही सीता के चरणों में चोंच से प्रहार करता है, राम सीक के मंत्र प्रेरित 'ब्रलसर' चलाते हैं। जयंत सहायतार्थ इन्द्र, ब्रह्मा और शिव के पास जाता है और नारद के उपदेश से राम की शरण होता है, राम एक आंख निकाल कर छोड़ देते हैं।[241] 'अध्यात्म रामायण' को छोड़कर प्रायः सभी संस्कृत रामकथा-ग्रन्थों में जयंत-काग द्वारा सीता के स्तनों को 'नखक्षत' करने का वर्णन मिलता है। आधार ग्रन्थ 'अध्यात्म रामायण' में जयंत-काग सीता के अंगूठे में मांस के लोभ से ही प्रहार करता है।[242] दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने सीता के प्रति भक्ति-भावना के कारण ही जयंत द्वारा सीता के चरणों पर 'चोंच-प्रहार' का वर्णन किया है।

3 3 2 अत्रि–मुनि भेंट

'मानस'[243] और 'शर्मा-रामायण'[244] में 'अत्रि-मुनि भेंट' प्रसंग में साम्य मिलता है।

---

237. प्र० रामायण, पृ० 40.
238. ता० रा०, पृ० 166-167.
239. आ० रा०, पृ० 77-80.
240. प्र० रा० (अक०), पृ० 82-83.
241. मानस 3,1-2.
242. अ० रा०, सुन्दर कान्ड, 3,54.
243. मानस 3,3-6.
244. शर्मा-रामायण पृ० 177-179.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों में अत्रि राम की स्तुति-वन्दना करते हैं और अनुसूया सीता को पति-व्रताओं के लक्षण समझाकर उन्हें नारी धर्म का उपदेश भी देती है। 'रामचंद्रिका'[245] में मुनि-वन्दना का संक्षिप्त वर्णन तथा 'रिषि नारि' द्वारा सीता को 'बहु भांति ताहि उपदेस' देने का उल्लेख मात्र मिलता है।

3.3.3 बिराध-वध

'मानस[246] और 'रामचंद्रिका'[247] में बिराध-बध का संक्षिप्त वर्णन मिलता है। 'गोविन्द-रामायण' में अन्य युद्धों की भांति राम-बिराध युद्ध का विस्तृत वर्णन हुआ है। उक्त रामायण के अनुसार बिराध भोज्य-सामग्री समझकर राम के सामने बड़बड़ाता है, राम उसे अस्त्र-शस्त्र-युक्त अवध्य जानकर स्वयं शस्त्र सम्भालकर युद्ध के लिए तैयार होते हैं :

लख्खिए आलक्ख। तविकए समच्छ॥ पाइयौ वीराध। वंकड्यो वीबाद॥
लक्खियं अब्बइ। संवरयौ सानद्ध॥ सम्मलें तथ्यार। ऊरड़े लुज्झार॥[248]

'कश्मीरी 'आ० रा०', 'शर्मा-रा०' तथा 'ता० रा०' में बिराध-वध का संक्षेप में वर्णन मिलता है। 'वाल्मीकि-रामायण'[249] में बिराध सीता को पत्नी बनाने के उद्देश्य से गोद में उठा ले जाकर हरण करता है और राम के बाण से उद्धार होने पर अपना परिचय देता है कि वह कुबेर का तुंबरू नामक गंधर्व था, रम्भा पर मोहित होने पर शाप मिला था। अन्य संस्कृत काव्यों में भी ऐसा ही वृत्त मिलता है। दोनों भाषा-रामायणकारों ने विराधोद्धार के उद्देश्य से ही इस प्रसंग का वर्णन किया है।

3.3 4 शरभंग और शुतीक्षण से भेंट

'मानस' के अनुसार राम-कृपा से शरभंग योगाग्नि में अपने को भस्म करके बैकुण्ठ सिधारते हैं[250] और राम सुतीक्षण को अपना चतुर्भुज रूप दिखाते हैं, जिनकी वन्दना करके सुतीक्षण को भक्ति का वरदान भी मिलता है।[251] शरभंग मुनि से भेंट और उनका प्राण-त्याग करने और सुतीक्षण को दर्शन देने के वृतांत का अनुकरण कश्मीरी 'शर्मा रा० और 'ता० रा०' में भी किया गया है।[252]

---

245. रामचंद्रिका 11. 2-6.
246. मानस 3,7.
247. रामचंद्रिका 11. 8-9.
248. गो० रा०. पृ० 79.
249. वा० रा० 3. सर्ग 2-4.
250. मानस 3. 7-9.
251. वही 3. 10-11.
252. शर्मा रामायण, पृ० 183; ता० रा०, पृ० 169-170.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.3.5 अगस्त्य मुनि से भेंट

अगस्त्य मुनि से भेंट का प्रसंग दोनों भाषाओं के रामायणों में मिलता है। 'मानस' में राम स्वयं 'राक्षस-वध' को वन-गमन का उद्देश्य बतलाते हैं, अगस्त्य उनकी वन्दना करके भक्ति का वर प्राप्त करते हैं।[253] कश्मीरी रामायणों में भी अगस्त्य राम की वन्दना करते हैं, किन्तु राम द्वारा वन-आगमन के उद्देश्य का उल्लेख कहीं नहीं कराया गया है।

3.3.6 जटायु-मैत्री

'मानस' में जटायु-भेंट के सम्बन्ध में तुलसी ने केवल इतना लिखा है—'गीधराज से भेंट भइ बहु विधि प्रीति बढ़ाइ।[254] कश्मीरी 'प्र-रा०' में अगस्त्य आश्रम के पास ही एक वृक्ष पर जटायु-पक्षी को देखकर बुरी आशंका से राम तीर चलाना चाहते हैं किन्तु जटायु तत्शीघ्र उनके चरणों में शरण होते हैं। अपना भक्त समझकर राम उसे स्नेह करते हैं।[255]

3.3.7 शूर्पणखा-विरूपण

कश्मीरी 'प्र० रा०' के अनुसार राम के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर शूर्पणखा उनसे विवाह करने का अनुरोध करती है। राम उसे लक्ष्मण के पास भेज देते हैं, और टाल कर लक्ष्मण पुनः राम के पास। कुमति शूर्पणखा सोचती है कि सीता को पहले मार डाले ताकि राम उससे विवाह करेंगे। क्रोधित होकर राम एक ही तीर से उसकी नाक काट लेते हैं।[256] 'आ० रा०' में भीं राम ही उसकी नाक काट लेते हैं।[257] अन्य सभी कश्मीरी रामायणों में लक्ष्मण शूर्पणखा का विरूपीकरण करतेहैं।[258] 'ता० रा०' तथा 'अमर रामायण' में लक्ष्मण नाक और कान दोनों काट लेते हैं।

'मानस' में शूर्पणखा राम-लक्ष्मण के हास-परिहास से क्रुद्ध होकर भयंकर राक्षसी रूप प्रकट करती है और सीता के भयभीत होने पर लक्ष्मण राम के आदेश से उसकी नाक-कान काट लेते हैं।[259] 'रामचंद्रिका' में सीता को भक्षण करने का उपक्रम देखकर राम के आदेश से लक्ष्मण उसको 'श्रुति नासिका' विहीना

---

253. मानस 3. 63.
254. वही, 3. दो० 13.
255. प्र० रा० (अक०), पृ० 82.
256. वही ,, पृ० 42-44.
257. आन० रा०, पृ० 82.
258. शं० रा०, खन्ड 1. अ० 15; वि० प्र० रा०, वन०. अ० 22; शर्मा रा०, पृ० 187; ता० रा०, पृ० 172-175; अमर रा०, पृ० 112-116.
259. मानस 3.17.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते हैं ।[260] साकेत में भी ऐसा ही संक्षिप्त उल्लेख मिलता है—'आर्या को खाने आई वह—गई कटाकर नासा-कर्ण ।[261]

'भागवत' और 'पद्मपुराण' के अनुसार भी राम ही शूर्पणखा का विरूपण करते हैं और अन्य संस्कृत राम-काव्यों में लक्ष्मण ही यह कार्य पूरा कर लेते हैं ।[262] 'गोविन्द रामायण' के अनुसार राम अपनी विवशता समझाकर उसे लक्ष्मण के पास भेजते हैं यती (संयमी) लक्ष्मण ने भी जब वरण न किया तब उसकी नाक कट गई :—

> जात भई सुनि बैन त्रिया तहं । बैठ हुते रणधीर जती जहं ।।
> सो न वरै अति रोष भरी तब । नाक कटाइ गई गृह को सब ।।[263]

3.3.8 खर-दूषण युद्ध

खर-दूषण का राम-लक्ष्मण से युद्ध प्रसंग सभी रामायणों में उपलब्ध है । कश्मीरी 'प्र० रा०' के अनुसार 14 सहस्र सेना समेत राम खर-दूषण को मार डालते हैं ।[264] शूर्पणखा रावण के पास जाकर बात बनाकर कहती है कि कैसे राम ने सोते हुए उसे गाली देकर नाक काट ली । शूर्पणखा सीता के सौन्दर्य का भी बढ़चढ़कर बखान करती है, जिसे सुनकर रावण मन ही मन सीता के प्रति आकर्षित होता है । [265]

'मानस' में राम सीता के भयभीत होने की आशंका से सुरक्षाहेतु उन्हें गिरि कंदरा में ले जाने का आदेश लक्ष्मण को देते हैं [266] और राक्षसों के माया-युद्ध के विरोध में राम ऐसी माया का प्रयोग करते हैं कि सभी राक्षस एक दूसरे को राम समझकर आपस में ही लड़-मिटते हैं ।[267] सीता सुरक्षा प्रसंग का कवि ने 'अध्यात्म रामायण' [268] से अनुकरण किया है । 'रामचंद्रिका'[269] और 'साकेत' [270] में

---

260 रा० चं० 11.39-40.
261. साकेत 11. पृ० 413.
262. दे० रामचरित० का तुलनात्मक अध्ययन—डा० शिवकुमार शुक्ल, पृ० 181-82.
263. गोविन्द रामायण, पृष्ठ 90.
264. प्र० रा०, पृ० 44.
265. वही, पृ०, 44.
266 मानस 3. 18.
267. वही 3. 20.
268. अध्यात्म रामायण, अरण्य, 5. 30.
269. रामचंद्रिका 12.2-4.
270. साकेत 11. पृ० 414.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खरदूषण वध वर्णन संक्षिप्त है। 'गोविंद रामायण' के अनुसार शूर्पणखा की विनय प्रार्थना पश्चात् क्रोधित होकर रावण ही खर और दूषण नामक दानवों को युद्ध करने के लिए भेजता है, यहां भी खर-दूषण युद्ध सविस्तार वर्णित है।[271]

3.3.9 रावण-मारीच परामर्श

'प्र० रा०' में सीता-सौन्दर्य का अद्भुत वर्णन करके रावण मारीच को स्वर्ण-मृग बनने पर विवश करता है। रावण द्वारा वध की धमकी सुनकर राम के हाथों मृत्यु को श्रेयस्कर समझ मारीच रावण का प्रस्ताव स्वीकार करता है।[272] अन्य रामायणों में भी इसी प्रकार का वर्णन मिलता है।[273]

'अध्यात्म रामायण' में रावण की विरोध बुद्धि द्वारा भगवान के पास जाने की इच्छाभिव्यक्ति भावना[274] का विकसित रूप ही 'मानस' में दृष्टिगोचर होता है। मुक्ति-कामना से प्रेरित रावण राम का बदला लेने के लिए मारीच को वध की धमकी देकर स्वर्ण-मृग बनने के लिए बाध्य करता है।[275] 'रामचंद्रिका' व 'गो० रामायण' में भी उपदेश देकर हारते हुए मारीच राम द्वारा वध को श्रेयस्कर समझ स्वर्ण-मृग बनता है।[276]

3.3.10 सीता-छाया

'अध्यात्म रामायण' के अनुसार[277] 'मानस' में राम नर लीला करने के उद्देश्य से राक्षसों के संहार तक सीता को अग्नि में निवास करने और अपने प्रतिबिम्ब रूप में रहने का आदेश देते हैं।[278] 'रामचंद्रिका' में भी इसका संक्षिप्त उल्लेख मिलता है।[279] सीता-छाया का उल्लेख कश्मीरी 'ता० रा०' तथा 'अमर रामायण' में भी मिलता है।[280] यहां कपटी मृग का पीछा करने से पूर्व राम सीता के चारों ओर एक लकीर खींच कर वास्तविक सीता को अग्नि के हवाले करते हैं जिसके स्थान पर सीता का प्रतिबिम्ब मात्र रह जाता है, जिसका हरण बाद में रावण करता है।

---

271. गो० रा०, पृष्ठ 91–93.
272. प्र० रा०, पृ० 45-47।
273. शंकर रा० खण्ड 1, अ० 15; वि० प्र० रा०, वन०, 23; आ० रा०, पृष्ठ 86; शर्मा रा० पृ० 193-9?; ता० रा०, पृ० 175.
274. अध्यात्म रामायण 3. 5. 60.
275. मानस 3, 24-26.
276. रा० चं० 12. 7-11; गो० रा०, पृष्ठ 94-96.
277. अ० रा० 3. 7. 1-3.
278. मानस 3. 24.
279. रा० चं० 12. 12.
280. ता० रा०, पृ० 175; अमर रा०, पृ० 117-124.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.3.11 सीता-लक्ष्मण संवाद :

मारीच के कपटी शब्द सुनकर सीता लक्ष्मण को राम की सहायता के लिए जाने का अनुरोध करती हैं। लक्ष्मण सीता को राम का अलौकिक रूप समझाने का व्यर्थ प्रयत्न करते हैं और सीता उन्हें दुष्चरित, राम-शत्रु एवं उसे (सीता को) हथियाने की आकांक्षा रखने वाला आदि आरोप लगाते हुए आत्महत्या की धमकी देती हैं तो विवशत: लक्ष्मण सीता को अकेले छोड़कर बन की ओर चले जाते हैं[281] आधार ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण'[282] तथा 'अध्यात्म-रामायण'[283] में भी सीता लक्ष्मण के चरित्र पर ऐसे ही आरोप करती है। उक्त प्रसंग में सीता के आदर्शमयी मर्यादाशील चरित्र की रक्षा मानसकार ने की है :

मरम बचन जब सीता बोला। हरि प्रेरित लछिमण मन डोला ।।[284]

'रामचंद्रिका' में सीता के कटु शब्दों और लक्ष्मण के मूक प्रत्युत्तर की अभिव्यंजना इस तरह हुई है :—

राजपुत्रिका कह्यौ सु और को कहै सुनै।
कान मूंदि बार-बार सीस बीसधा धुनै ।।[285]

3.3.12 लक्ष्मण-रेखा

कश्मीरी 'शंकर रामायण' में लक्ष्मण बन जाने से पूर्व सीता की कुटिया के चारों ओर रेखा खींचकर निर्देश देते हैं कि वे रेखा से बाहर कदम न रखें।[286] 'रामचंद्रिका'[287], 'गोविंद रामायण'[288] तथा 'साकेत'[289] में भी लक्ष्मण के रेखा खींचने का उल्लेख मिलता है। 'मानस' में लक्ष्मण-रेखा का उल्लेख लंकाकाण्ड के अन्तर्गत मन्दोदरी के शब्दों में मिलता है :—

रामानुज लघु रेख खंचाई। सोउ नहिं नाघेहु असि मनुसाई ।।[290]

---

281. प्र० रा०, पृ० 49-50.
282 वाल्मीकि रामायण 3, 45.
283 अध्यात्म रामायण 3, 7 21-24.
284. मानस 3, 28 (5).
285. रा० चं० 12.18.
286. शंकर-रा०, खण्ड 1. अ० 15.
287. रामचंद्रिका 12.18.
288. गो० रा०, पृ० 96.
289. साकेत 11. पृ० 404.
290. मानस 6. 36.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.3.13 सीता-हरण

कश्मीरी रामायणों के अनुसार गोसाई के वेश में रावण आकर सीता का हरण करता है। 'प्रकाश-रामायण' में 'रावण-सीता संवाद' में रावण के रूप-लोभ और सीता के दृढ़ चरित्र एवं एकनिष्ठ पतिव्रता धर्म का परिचय मिलता है। रावण-लंका-वैभव एवं ऐश्वर्य का विपुल बखान करके उसे बल प्रयोग से उठा ले जाता है।[291] 'मानस' में 'यति वेश' में आकर रावण द्वारा विविध 'राजनीति, भय तथा प्रीति' जताने पर उसको बदले में फटकार मिलती है तब असली रूप में प्रकट होकर अपना नाम बताकर वह मन ही मन सीता के चरणों की वन्दना करते हुए उसे आकाशगामी रथ पर बिठाकर ले जाता है।[292] 'रामचंद्रिका' में भी 'भिक्षु' वेश में ही रावण राम की 'छायाजाया' सीता का हरण करता है।[293] 'गोविन्द-रामायण' में रावण भीख की याचना करते हुए सीता से कहते हैं—पहले रेखा मिटा दो फिर भीख लेंगे क्योंकि बंधन-युक्त भीख योगी नहीं लेते और रेखा मिटते ही रावण सीता को उठा कर आकाश-मार्ग से उड़ता है।[294]

3.3 14 रावण–जटायु–युद्ध

मूलाधार 'वाल्मीकि रामायण' में जटायु-रावण युद्ध का विस्तृत वर्णन मिलता है, किन्तु कश्मीरी राम-कथा में इसका पृथक रूप मिलता है। 'प्रकाश रामायण' के अनुसार जटायु के पंखों के प्रहार से बुरी तरह आहत होकर विवशत: रावण सीता को धमकी देकर जटायु को मारने की विधि पूछता है तो सीता के कहने पर रावण उसे रक्त-सने पत्थर खिलाता है, जिनको निगलते हुए भारी पड़कर जटायु पृथ्वी पर गिरता है। सीता रावण से कहती है कि जटायु राम को सारा वृतांत सुनाने के पश्चात ही मर जायेगा।[295] 'खेतानी' तथा 'तिब्बती' रामयणों में भी जटायु को रक्त-सने धातुओं के टुकड़े खिलाकर मारने तथा दक्षिण भारत की किसी राम-कथा में रावण जटायु को अपनी जांघ के रक्त से सना पत्थर खिलाने का वर्णन मिलता है।[296] 'मानस'[297] और 'रामचंद्रिका'[298] में भी सीता की आर्तनाद

---

291. प्र० रा०, पृ० 51-52.
292. मानस 3.28.
293. रा० चं० 12. 19·20.
294. गो० रा०, पृ० 97.
295. प्र० रा०, पृ० 52-53.
296. रामकथा-उत्पत्ति और विकास—डा० बुल्के, अनु० 470.
297. मानस 3 39.
298. रामचंद्रिका 12, (22-24).

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुनकर जटायु-रावण का मुकाबला करता है किन्तु रावण पंख काटकर उसको पृथ्वी पर गिरा देता है।

3.3.15 सीता–खोज

मृग-वध के पश्चात राम-लक्ष्मण का कुटिया में पहुंचकर सीता को न पाने और उनकी तलाश करने का वृतांत दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने विस्तृत रूप में वर्णित किया है।

3.3.16 बन में लक्ष्मण की मूर्च्छा

'विष्णु प्रताप रामायण' के अनुसार राक्षसों की कुचाल से अवगत होकर सीता-हरण के अत्यधिक क्षोभ से पीड़ित बन में लक्ष्मण की मूर्च्छा का भी वर्णन मिलता है। राम-लक्ष्मण को धैर्य-धारण करने का उपदेश देते हैं जिससे लक्ष्मण पुनः स्थिर हो जाते हैं।[299]

3.3.17 जटायु-उद्धार

कश्मीरी रामायणों के अनुसार सीता की खोज करते हुए राम-लक्ष्मण जटायु को एक स्थान पर घायल पड़ा पाते हैं। जटायु उनकी वन्दना करके सीता-हरण का सारा वृतांत सुनाकर प्राण-त्याग करते हैं और राम अपनी दो कलाइयों पर जटायु का दाह-संस्कार सम्पन्न करते हैं।[300]

'मानस' में जटायु से सीता-हरण का वृत्तांत सुनकर राम उनकी मृतप्राय दशा देखकर भी उन्हें जीवित रहने का आग्रह करते हैं, किन्तु जटायु इनकार करते हैं। राम उनसे सानुरोध कहते हैं कि वह स्वर्ग में जाकर राजा दशरथ से सीता-हरण की चर्चा न कर ले।[301] जटायु 'गीध देह तजि' कर श्याम-शरीर चार भुजाओं युक्त हरि-रूप धारण कर राम की स्तुति करके भक्ति का वरदान पाकर परमगति को प्राप्त होते हैं। राम अपने हाथों से उनकी दाह-क्रिया कर लेते हैं।[302] 'रामचंद्रिका' में संक्षेप में जटायु राम से युद्ध का विवरण सुनाते हैं कि कैसे उन्होंने रावण का रथ छत्र-ध्वजा-हीन किया। जटायु की दाह-क्रिया सम्पन्न कर राम-लक्ष्मण दक्षिण दिशा की ओर बढ़ते हैं।[303] 'गो० रा०' में भी पक्षिराज जटायु ही सीता हरण के बारे में कहते हैं।[304]

---

299. वि० प्र० रा, वन०. अ० 19.
300. प्र० रा०, पृ० 59, श० रा० 2, अ० 1; वि० प्र० रा०, वन०, अ० 31; आ० रा० पृ० 94–95; शर्मा रा०, पृ० 192, ता० रा०, पृ० 183 अमर० रा०, पृष्ठ 126.
301. मानस 3.30-31.
302. वही 3.32.
303. रा० चं० 12.28-32.
304. गो० रा०, पृ० 100.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.3.18 कबन्ध–वध

'मानस', 'रामचंद्रिका' और कश्मीरी 'आ० रा०' एवं 'शर्मा-रा०' में कबन्ध-वध संक्षेप में वर्णित है । 'मानस' में कबन्ध से 'दुर्वासा-शाप' की कथा सुनकर राम उसे 'विप्र-पूजा' का उपदेश देते हैं ।[305] 'रामचंद्रिका' में भी 'मधवा-शाप' का उल्लेख मिलता है, जिससे वह गंधर्व से राक्षस बन गया । कश्मीरी 'शर्मा रा०' के अनुसार राम द्वारा कबन्ध-वध के पश्चात् शाप-मुक्त होकर उसके पुनः गन्धर्व होने का भी उल्लेख मिलता है ।[306]

3.3.19 शबरी-उद्धार

'शंकर-रामायण' और 'अमर-रामायण' में शबरी की वर्षों प्रतीक्षा, राम-वंदना, राम-लक्ष्मण को मीठे बेर खिलाने और राम-कृपा से उसके उद्धार होने का विस्तृत वर्णन मिलता है ।[307] 'शर्मा-रामायण' में शबरी के वरदान और दस-सहस्र वर्षों की प्रतीक्षा का भी उल्लेख हुआ है ।[308]

'मानस' में शबरी के आश्रम पर पहुंचकर राम उसे नवधा-भक्ति का उपदेश भी देते हैं और शबरी, सीता के बारे में पूछने पर उन्हें पम्पासर जाकर सुग्रीव-मैत्री करने की सलाह देकर, 'योगाग्नि' में भस्म होकर परमधाम को प्राप्त होती है ।[309] 'रामचंद्रिका' में भी राम की वन्दना-पश्चात उन्हें फल-भोजन कराके सहर्ष 'पावक-पंथ' द्वारा हरि-लोक सिधारती है ।[310]

3.3.20 नारद–भेंट

'मानस में नारद-भेंट प्रसंग का विस्तृत वर्णन मिलता है । नारद के प्रश्न पूछने पर राम 'स्त्री-चरित्र' की निन्दा करके बताते हैं कि उनके चंगुल से उसे बचाने के लिए ही उन्होंने 'विश्वमोहिनी' से विवाह करने न दिया था । राम 'संतन्ह के लच्छन' (संत लक्षण) का भी विस्तारपूर्वक वर्णन करते हैं, जिसे ध्यान-मग्न सुनने पर नारद उनकी वन्दना करते हैं ।[311] पम्पासर में नारद द्वारा राम-वंदना एवं वरदान-प्राप्ति का वर्णन कश्मीरी 'शर्मा रामायण' में भी प्राप्य है, किन्तु यहां नारद के 'शाप' या राम के उपदेश का कोई उल्लेख नहीं मिलता है । वास्तव में 'बालकाण्ड' में वर्णित 'नारद-मोह प्रसंग' का उपसंहार मात्र प्रस्तुत करने के उद्देश्य से

---

305. मानस 3. 33-34.
306. शर्मा रामायण, पृष्ठ 197.
307. शंकर-रामायण, खण्ड 1. अ० 12; अमर-रामायण, पृष्ठ० 126-129.
308. शर्मा-रामायण, पृष्ठ 200
309. मानस 3.34-36.
310. रा० चं 12.43-46.
311. मानस 3.41-46.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुलसीदास ने राम द्वारा नारद का भ्रम-निवारण उक्त प्रसंग में किया है। संतों के लक्षण-वर्णन के लिए भी यही अवसर अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। यह प्रसंग किसी अन्य रामायण में उपलब्ध नहीं है।

3.4 किष्किंधा काण्ड

3.4.1 राम-सुग्रीव मैत्री :

दोनों भाषाओं की रामायणों में राम-लक्ष्मण को देखकर बानर घबड़ा जाते हैं। 'प्रकाश रामायण' में हनुमान आगंतुक दो अलौकिक बलवीरों राम-लक्ष्मण का परिचय अपने साथियों से देकर उनका वनागमन-प्रयोजन जानने के लिए उनके समीप जाते हैं और उनका आशय जानकर सुग्रीवादि बानरों को वहीं बुला लेते हैं। सुग्रीव राम की चरण-वंदना करते हैं और राम सीता-हरण के बारे में कहते हैं।[312] 'वि०प्र० रा०' में भेंट-परिचय होने पर राम अनुमान और सुग्रीव को उपदेश भी देते हैं, जिससे अत्यधिक प्रभावित होकर सुग्रीव, हनुमान, नल-नील राम की अलग अलग से स्तुति वंदना करते हैं। पारस्परिक सहायता-वचन से राम और सुग्रीव दोनों आश्वस्त होते हैं।[313] 'शर्मा रामायण' में प्रथम भेंट में ही हनुमान राम की वन्दना करते हैं।[314] प्रथम भेंट में ही हनुमान की पहचान का सामान्य कारण उक्त रामायण के बालकाण्ड में राम-हनुमान की भेंट पर ही निर्भर है।

'मानस' में बालिसुत की आशंका से सुग्रीव हनुमान को पता लगाने भेजता है। विप्रवेश में जाकर हनुमान को उनके 'तीनिदेव' (त्रिदेव), नारायण अवतार होने का भ्रम होता है, फिर राम का परिचय प्राप्त कर चरण-वंदना करके पीठ पर बिठाकर उन्हें सुग्रीव के पास ले जाते हैं और अग्नि को साक्षी बनाकर दोनों की पारस्परिक मित्रता-वचन पूरे कराते हैं।[315] 'मानस' में सुग्रीव सीता-हरण का आंखों देखा वर्णन करके उन्हें सीता का एक वस्त्र भी देते हैं, जिसको देखकर राम-लक्ष्मण अत्यधिक क्षुब्ध होते हैं।[316] 'रामचंद्रिका' में भी हनुमान भेंट से लेकर सुग्रीव द्वारा सीता का पट-नूपुर राम को देने तथा राम-लक्ष्मण के क्षोभ का संक्षिप्त वर्णन मिलता है।[317]

3.4.2 बालि-सुग्रीव जन्म

कश्मीरी 'शर्मा रा०' और 'ता० रा०' में बालि-सुग्रीव की जन्म कथा इस प्रकार

---

312. प्र० रा०, पृष्ठ 60-61.
313. वि० प्र० रा०, वन, अ० 35-40.
314. शर्मा रामा० पृष्ठ 213.
315. मानस 4.1-4.
316. वही 4.5.
317. रा० चं० 12.52-93.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वर्णित है—ब्रह्मा की आंखों के मेल से एक बानर उत्पन्न हुआ—ऋक्षरजा, जिसे राक्षसों के संहार करने की आज्ञा मिली। एक दिन किसी जल-कुण्ड में नहाने के लिए उतरा तो एक सुन्दर स्त्री के रूप में बाहर निकला। कामासवत इन्द्र और सूर्य का वीर्य क्रमशः उसके बालों और ग्रीवा पर पड़ने से उससे 'बालि' और सुग्रीव ने जन्म ले लिया।[318] 'आनन्द रामावतार चरित' में ऋक्षरजा के बदले वानर-राजा 'जामूदन' का ही नाम आया है। इसमें 'जल-सरोवर' के शाप का भी वर्णन मिलता है—शिव पार्वती उक्त सरोवर में जल-क्रीड़ा करते थे। किसी विघ्न के कारण एक दिन क्रुद्ध होकर शिवजी शाप देते हैं कि जो कोई पुरुष उक्त 'सरोवर' में उतरेगा तो स्त्री बन जायेगा। इसी शाप के कारण ही 'जामूदन' स्त्री बना। शेष कथांश समान है।[319] आधार-ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण' में प्रस्तुत वृत्त तनिक भिन्न है। उसमें वानर ऋक्षरजा के सुमेरु पर्वत पर रहने तथा जल में निजी प्रतिबिंब को शत्रु समझकर उसमें कूदने, बालि और सुग्रीव के जन्मोपरान्त इन्द्र का अपने पुत्र को स्वर्ण-माला देने तथा सूर्य का अपने पुत्र की सेवा में हनुमान् को नियुक्त करने और ऋक्षरजा का पुनः बानर बनकर किष्किंधा का राजा बनने का वर्णन मिलता है। 'भावार्थ-रामायण' में पार्वती द्वारा ही जल-सरोवर के प्रति शाप देना वर्णित है।[320]

3.4.3 बालि-सुग्रीव शत्रुता

दोनों भाषाओं के रामायणों में बालि-सुग्रीव शत्रुता के प्रसंग-चित्रण में थोड़ी भिन्नता मिलती है। 'प्रकाश रामायण' के अनुसार बालि बलवान मनासर राक्षस का पीछा करता हुआ एक बिल में प्रवेश करता है और सुग्रीव बिल के बाहर एक वर्ष तक प्रतीक्षा करते रहे फिर एक दिन भीतर रक्त-धारा देखी। समझा बालि मारा गया और एक 'पर्वत' उठाकर बिल के मुंह पर रख कर सुग्रीव राज्य कार्य सम्भालते हैं। तीन वर्ष पश्चात् कंदरा से निकल कर क्रुद्ध बालि सुग्रीव को राज्य से निकाल देता है।[321] 'मानस' में वर्णन अपेक्षाकृत संक्षिप्त है। यहां बालि 'मयसुत मायावी' का पीछा करता है और एक मास पश्चात् रक्त-प्रवाह देखकर उसे मरा समझ कर बिल पर पत्थर रखकर सुग्रीव राज्य-शासन सम्भालते हैं और बालि लौटने पर उन्हें निर्वासित करता है।[322]

3.4.4 पर्वत-शाप

'आदि रामायण' के अनुसार कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' में दुन्दमि राक्षस के

---

318. शर्मा रा०, पृ० 214, ता० रा० 4. अ० 1.
319. आ० रा० पृष्ठ 105.
320. रामकथा—डा० बुल्के, अनु० 513.
321. प्र० रा०, पृ०, 60,61, 62.
322. मानस 4.6.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युद्ध और मतंग ऋषि के शाप का भी वर्णन मिलता है जिसके कारण सुग्रीव उसी पर्वत पर भयवश रहते हैं।[323] 'मानस' में पर्वत-शाप का उल्लेख मात्र मिलता है— 'इहां स्राप बस आवत नाहीं'।[324]

3.4.5 शक्ति-परीक्षा

'वाल्मीकि रामायण' के अनुसार ही राम द्वारा सुग्रीव की संतुष्टि के लिए 'दुंदभि के अस्थि-कंकाल' को पांव की उंगली से दूर फेंकने और एक ही बाण से सप्त ताल तरुओं और पर्वत को भेदने का अद्भुत वर्णन 'प्रकाश-रामायण' में वर्णित है।[325] 'मानस' में अपेक्षाकृत बर्णन संक्षिप्त है :—

'दुंदभि अस्थि ताल देखराए। बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए।[326]

3.4.6 बालि–वध

दोनों भाषाओं के रामायणों में तारा बालि को युद्ध करने से रोकने का प्रयत्न करती हुई रामावतार का वर्णन करती हैं। 'मानस' का बालि टालकर राम के हाथों से मुक्ति-प्राप्ति का संकेत करता है।[327] बालि-सुग्रीव के द्वन्द्व-युद्ध में सुग्रीव की निराशा पर राम छिप कर एक ही बाण से बालि को भूमिशायी कर लेते हैं। 'प्रकाश-रामायण' में मृत-प्राय बालि राम से क्रुद्ध होकर कहता है—'रामावतार होकर भी तुम ने पौरुष की रक्षा नहीं की, करुणा-हीन बन कर मझ निर्दोषी को मार डाला' और उत्तर में समझाते हैं कि उसने अपने भाई की पत्नी का हरण किया और निर्दोषी सुग्रीव को निर्वासित।[328] 'मानस' में बालि अपेक्षाकृत विनम्रता-पूर्वक वध का कारण पूछता है और राम 'अनुज-वधू'-हरण और सुग्रीव-द्वेष का दोषी बताते हैं।[329] दोनों में बालि मृत्यु-पूर्व अंगद को राम के चरणों में सौंपता है।

3.4.7 वंदना एवं ज्ञानोपदेश

कश्मीरी 'वि० प्र० रा०, तथा 'आ० रा०' में बालि वध के पश्चात् भक्ति-भावना से 'अंगद' तथा 'तारा' दोनों द्वारा राम की वंदना करायी गई है। 'मानस' में बालि मरण पश्चात् सध-विधवा तारा को राम ज्ञानोपदेश देकर शांत करते हैं।[330] 'शर्मा

323. प्र० रा०, पृ० 62.
324. मानस 4.6.
325. प्र० रा०, पृ० 62-63.
326. मानस 4. 7.
327. मानस 4. 7.
328. प्र० रा० 63.
329. मानस 4. 9-10.
330. मानस 4. 11.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रा०' में भी रामोपदेश का वर्णन मिलता है।[331] सुग्रीव को राजपद और अंगद को युवराज-पद देने का वर्णन दोनों में प्राप्य है।

3.4 8 सुग्रीव-तारा विवाह

कश्मीरी 'अमर रामायण' में विधवा तारा का पुनर्विवाह सुग्रीव से कराया गया है,[332] अन्य किसी भी रामायण में इसका उल्लेख नहीं मिलता है।

3.4 9 सुग्रीव-प्रमाद

'मानस' में वर्षा-काल के बीत जाने पर भी सुग्रीव राज्य-प्रमाद में लीन हनुमान के समझाने पर भी सीता-खोज का प्रबन्ध नहीं कराते हैं। राम द्वारा भेजे गए लक्ष्मण के क्रोध प्रकट करने पर सुग्रीव राम से क्षमा-याचना करके बानर-दूतों को चारों दिशाओं में जाने और एक मास तक लौटने का आदेश देते हैं।[333] 'रामचंद्रिका' में भी लक्ष्मण के क्रुद्ध वचनों का संक्षिप्त वर्णन मिलता है और सुग्रीव सभी बानरों को सीता-खोज के लिए भेज देते हैं।[334] कश्मीरी रामायणों में सुग्रीव-प्रमाद का उल्लेख नहीं मिलता है, वे स्वयं सीता शोध का प्रबन्ध यथाशीघ्र कराते हैं।

3.4 10 स्वयंप्रभा

हनुमान, अंगद, नल-नील, जामवंत आदि का दक्षिण दिशा में सीता-खोज करते हुए कन्दरा-प्रवेश और वहां तपस्विनी स्त्री से भेंट और आंख मुंदवा कर उनको बाहर पहुंचाने का वर्णन दोनों रामकथाओं में वर्णित है। दोनों में 'स्त्री' का नामोल्लेख नहीं मिलता है—कश्मीरी रामायण में उसे अप्सरा सदृश तपस्विनी सुन्दरी कहा गया है[335] और 'मानस' में वह नारि 'तपपुंज तापसी' है।[336] 'प्रकाश रामायण' में आंखें खोलकर बानर अपने को सुमेरु और कैलाश से भी भारी बीहड़ पर्वत के समक्ष पाते हैं, जहां सम्पाति से भेंट होती है और 'मानस' में वे समुद्र के तट पर पहुंचते हैं। तुलसीदास ने 'तापसी' को राम-भक्त बताया है, जो स्वयं राम से मिलकर अनपायिनी भक्ति प्राप्त कर बदरी-वन चली जाती है।[337]

3 4.11 सम्पाति

दोनों भाषाओं की रामायणों में निजी आहार समझकर सम्पाति का सप्रसन्न बानर दूतों के समक्ष आना वर्णित है। 'प्रकाश रामायण' में सम्पाति को देखकर

---

331. शर्मा रा०, पृ० 221.
332. अमर रा०, पृ० 133.
333. मानस 4. 18-22.
334. रा० चं० 13. 28-30.
335. प्र० रा०, पृ० 65.
336. मानस 4. 24.
३37. मानस 4. 25.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंगद द्वारा जटायु के रूपाकार का उल्लेख [338] और 'मानस' में अंगद द्वारा 'जटायु-कथा' [339] सुनकर सम्पाति अधीरता से भाई जटायु की पूरी कथा उनसे पूछते हैं। दोनों में जटायु-सम्पाति के भ्रातृत्व, सूर्य-अभियान कथा और चन्द्रमा-ऋषि की भविष्यवाणी के उल्लेख में साम्य है। 'प्रकाश रामायण' में चन्द्रमा ऋषि द्वारा सम्पाति को जीव, जगत, सृष्टि के बारे में ज्ञानोपदेश का विस्तृत वर्णन मिलता है. जिसके अन्तर्गत जीव की गर्भ यात्रा से लेकर मृत्युपर्यन्त तक की दार्शनिक एवं ज्ञानपरक विवेचना अभिव्यंजित हुई है।[340] अन्य कश्मीरी रामायणों में सम्पाति का आत्म-कथ्य संक्षिप्त वर्णित है।[341] सम्पाति द्वारा लंका में बन्दी सीता का पता बताने का उल्लेख दोनों भाषाओं के रामायणों में मिलता है। जटायु की भांति सम्पाति को राम भक्त बताने के उद्देश्य से 'प्रकाश रामायण' में राम के प्रति वन्दना-स्तुति के पश्चात सीता का पता बताकर सम्पति राम-नाम स्मरण से मुक्ति प्राप्त करते हैं।[342] 'मानस' में सम्पाति को चन्द्र-मुनि द्वारा 'ज्ञान-सुनावा' का उल्लेख मात्र मिलता है और चन्द्रमुनि की भविष्यवाणी में रामदूतों के दर्शन और सीता का पता बताने पर पुनः पंखों की प्राप्ति का ही वर्णन मिलता है,[343] न कि मुक्ति का।

3 4.12 समुद्र-तट पर बानरों के संवाद

'प्रकाश रामायण' के अनुसार समस्त बानर समुद्र तट से सोलह सौ कोस दूर समुद्र में निर्मित लंका के भव्य-भवन को देखते हैं, जहां पहुंचना सहज न था।[344] दोनों भाषाओं के रामायणों में बानरों द्वारा अपने-अपने बल का वर्णन कराया गया है। 'प्रकाश रामायण' में हनुमान कहते हैं कि कैसे उन्होंने आकाश में उड़कर दस चक्कर सारे भूमंडल के काटे तो घबड़ाकर एक ऋषि ने एक 'दर्ब' (कुशा) फेंककर उसको गिरा दिया, जिससे उसकी टांग टूट गयी। अंगद अपने बल का अद्‌भुत वर्णन करके लंका जाकर रावण का सपरिवार संहार करने की उत्कट आकांक्षा अभिव्यक्त करते हैं इस पर पुनः उत्तेजित होकर हनुमान लंका समेत रावण का संहार करके और सीता को लाने का आत्मविश्वास प्रकट करते हैं। जामवंत हनुमान के बालरूप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि कैसे सूर्य को पकड़ने का अद्‌भुत

338. प्र० रा०, पृ० 66.
339. मानस 4.27.
340. प्र० रा०, पृष्ठ 67-71.
341. शर्मा रामायण, पृ० 232, ता० रा०, पृ० 197.
342. प्र० रा०, पृष्ठ 71-72
343. मानस 4.28.
344. प्र० रा० पृष्ठ 72-73

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रयास उन्होंने किया था ।[345] 'शर्मा रा०' में भी जामवंत ही हनुमान के जन्म एवं उनकी अलौकिक वीरता का बखान करते हैं।[346] 'मानस' के अन्तर्गत भी बानरों का 'निज निज बल सब काहू भाषा' उल्लेख के पश्चात् 'रिछेस' (जामवंत) निजी तरुणावस्था का बल बखान करते हैं—कैसे उन्होंने दो घड़ी में ही सारी पृथ्वी की सात परिक्रमाएं कीं 'उभय घरी महं दीन्हीं सात प्रदच्छिन धाइ' । अंगद के संक्षेप में बल वर्णन करने पर जामवंत 'पवनतनय' हनुमान का बल-वर्णन संक्षेप में करते हैं।[347]

3.4.13 हनुमान-जन्म

'मानस' [348] में हनुमान जन्म के बारे में 'पवनतनय' का उल्लेख मात्र मिलता है, अन्य हिन्दी-रामकथा काव्यों में भी ऐसे उल्लेख कई स्थलों पर मिलते हैं । कश्मीरी 'आनंद रामायण' में जन्म-कथा सविस्तार वर्णित है, जिसके अनुसार हनुमान गौतम की पुत्री अंजना के पुत्र हैं । अंजना के कामार्य रूपसौन्दर्य पर मारुत कामवश आसक्त हुए । वह गर्भवती हुईं । अविवाहित अंजना को घर से निकाला गया और हनुमान का जन्म उसी से हुआ, जिसे पवन का वरदान प्राप्त था ।[349]

3.5 सुन्दर काण्ड

3.5.1 समुद्र-लंघन

'मानस' में समुद्र-लंघन पूर्व मैनाक-भेंट[350] देवताओं द्वारा प्रेषित सुरसा द्वारा हनुमान की बल-बुद्धि परीक्षा और आर्शीवाद[351] तथा छाया-ग्राहिणी निश्चरी (सिंहिका) के वध[352] की कथाएं वर्णित हैं । 'रामचंद्रिका' में भी सुरसा-भेंट और सिंहिका-वध का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है ।[353] कश्मीरी 'ताराचंद रामायण' में सुरसा-भेंट के संक्षिप्त वर्णन[354] के अतिरिक्त किसी भी अन्य प्रसंग का उल्लेख नहीं मिलता है ।

'वाल्मीकि रामायण' के आधार पर हनुमान के उड़ान भरते समय पर्वत का

---

345. प्र० रा० पृष्ठ 73-74
346. शर्मा रामायण, पृष्ठ 324-325.
347. मानस 4. 29-30.
348. मानस 4.29.
349. आ० रा०, पृ० 100-102.
350. मानस 5.1.
351. मानस 5.2.
352. मानस 5.3.
353. रा० चं० 3.39.
354. ता० रा०, पृ० 200.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भार से पाताल तक धंस जाने का वर्णन दोनों भाषाओं के रामायणों में मिलता है। कश्मीरी 'प्रकाश-रामायण' में वर्णन अधिक अद्भुत है—उस समय आकाश पाताल भी भय से कांप जाते हैं।[355]

3.5.2 लंका प्रवेश

'मानस' में हनुमान मशक रूप धारण करके लंका में प्रवेश करते हैं. किन्तु लंकिनी राक्षसी से उसकी मुठभेड़ होती है जो उन्हें रोकती है। वीर हनुमान उस पर मुष्टि-प्रहार करते हैं, लंकिनी फिर सम्भलकर ब्रह्मा के वचनों—'जब तू बानर द्वारा मारी जायेगी, तो निशाचर-नाश होगा' का उल्लेख करती हुई हनुमान को लंका-प्रवेश करने की अनुमति देती है।[356] वाल्मीकि रामायण' और 'अध्यात्म-रामायण' के अनुसार लंकिनी लंका-नगरी का साक्षात् रूप है।[357] किन्तु 'मानस' में वह एक निश्चरी ही है-'नाम लंकिनी एक निसिचरी'।[358] 'रामचंद्रिका' में हनुमान का परिचय प्राप्त कर लंकिनी उनसे अपनी 'वर-प्राप्ति' का उल्लेख करके कहती है कि उसे मारने के पश्चात् ही वे आगे बढ़ सकते हैं और हनुमान उसे मार डाल कर लंका-भवन में प्रवेश करते हैं।[359]

कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' में लंकिनी का उल्लेख नहीं मिलता है। यहाँ लंका पहुंचने पर हनुमान एक भयानक विराट् द्वारपाल 'अजगर' के मुंह में गिरते हैं, जहां से राम-नाम स्मरण कर ही उनको मुक्ति मिलती है।[360] राम-नाम महिमा एवं राम-भक्ति का माहात्म्य-निर्देश करने के लिए ही कवि ने इस प्रसंग का वर्णन किया है। 'आनन्द-रामावतार' चरित में हनुमान द्वारा विविध राक्षसों को मारने का भी उल्लेख मिलता है।[361]

3.5.3 लंका-वर्णन एवं निर्माण

'प्रकाश रामायण' में स्वर्ण-लाल-जवाहरात एवं बहुमूल्य रत्न-जटित एवं सुन्दर लंका के भव्य भवनों तथा उनके सौन्दर्य-निर्माण में संलग्न इन्द्रादि देवी-देवताओं को देखकर हनुमान आश्चर्य चकित होते हैं—वहां पूजा करने स्वयं ब्रह्मा पधारते थे; लक्ष्मी समस्त कलाओं सहित विराजमान थीं और महाकाल सदा के लिए बन्दी हनुमान को यह सब देखकर प्रसन्नता भी होती है।[362]

---

355. प्र० रा०, पृ० 74.
356. मानस 5. 4-5.
337. वा० रा० 5.3-30; अध्यात्म रामायण 5.1.43.
358. मानस 5.4 (2).
359. रा० चं० 13. 44-47.
360. प्र० रा०, पृ० 74-75.
361. आ० रा०, पृ० 120.
362. प्र० रा०, पृ० 75-76.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'प्रकाश रामायण' में लंका-निर्माण की कथा नारद ही हनुमान को बताते हैं। संक्षेप में जो इस प्रकार है—पार्वती के अनुरोध पर शिव ने दनिष्ट कुमार तथा विश्वकर्मा को भवन-निर्माण की आज्ञा दे दी। समुद्र के मध्य वे स्थान-चयन करते हैं। लंका-भूमि के बारे में कहा गया है—गरुड़ को एक दिन भूख लगी। पिता कश्यप की अनुमति से एक हाथी और मगरमच्छ अपने पंजों में उठाकर आकाश में एक पुराने वृक्ष पर बैठकर क्षुधा-तृप्ति करने बैठा। भार से एक शाख वृक्ष की टूट गई, चोंच में उठाकर गरुड़ ने उसे समुद्र के बीच डाल दिया। यही स्थान 'लंका'[363] के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहीं पर भवन-निर्माण हुआ। गृह-प्रवेश मुहूर्त पर सभी ऋषि मुनियों में उपस्थित पितामह पुलस्त्य ऋषि के साथ आया हुआ रावण दक्षिणा में शिव जी से 'लंका' की याचना कर लेता है। इस प्रकार लंका रावण को मिल जाती है।[364] ऐसा कोई भी वृत्तांत हिन्दी रामायणों में नहीं मिलता।

3.5.4 हनुमान-विभीषण भेंट

'मानस' में हनुमान सीता को खोजते हुए विभीषण के रामायुध अंकित गृह-द्वार और 'तुलसी-वृन्द' देखकर हर्ष प्रकट करते हैं। विभीषण द्वारा 'राम-नाम' लिये जाने पर हनुमान उन्हें राम-भक्त समझते हैं। उनका परिचय प्राप्त कर वे सारा वृतांत सुनाते हैं। विभीषण ही हनुमान को सीता का पता और उनसे मिलने की युक्ति बताते हैं।[365] राम-मिलन से पूर्व ही विभीषण को राम-भक्त सिद्ध करने के लिए ही तुलसीदास ने हनुमान-विभीषण की इस तरह की भेंट करायी है जिससे बाद में विभीषण का चरित्र 'अवसरवादिता' के आरोप से बच सके।

3.5.5 अशोक-वाटिका

'प्रकाश रामायण' में हनुमान स्वयं सीता को खोजते हुए अशोक-वाटिका में पहुंचते हैं जहां सीता को संवेदनशील प्रकृति-रूप के मध्य राम की वंदना में निमग्न पाते हैं।[366]

3.5.6 सीता-रावण संवाद

दोनों भाषाओं की रामायणों में रावण सीता को धन-ऐश्वर्य का प्रलोभन देकर उसे अपनी बात मनाने का प्रयत्न करता है और सीता कटु शब्दों में फटकारती हुई पूर्ण आत्म-विश्वास एवं दृढ़ता के साथ विरोध करती हैं। 'मानस' में अपना अपमान असह्य होकर रावण उसे मार डालने का प्रयत्न करता है तो मन्दोदरी

---

363. कश्मीरी में वृक्ष की शाख को 'लंग' कहते हैं। वह स्थान पहले लंग कहलाया और फिर 'लंक' या 'लंका'।

364. प्र० रा०, पृ० 76-78.

365. मानस 5.5-8.

366. प्र० रा० पृष्ठ 80-81.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोक लेती है और एक मास की अवधि देकर राक्षसियों को उसे तंग करने का आदेश देकर चला जाता है।[367] 'प्रकाश-रामायण' में मन्दोदरी चाहती है कि जन्म-पत्री दिखाकर सीता-जन्म का रहस्य क्रुद्ध रावण के समक्ष खोल दे किन्तु उसे डर है, कहीं सीता को फिर सचमुच न मार डाले।[368]

3.5.7 त्रिजटा-स्वप्न

'मानस' में वर्णित त्रिजटा स्वप्न में लंका-दहन, राक्षस-नाश तथा विभीषण-राज्य-प्राप्ति का उल्लेख मिलता है।[369] कश्मीरी 'वि० प्र० रा०' और 'शर्मा रा०' में यह सविस्तार वर्णित है, जिससे सीता को राम-मिलन का पूर्ण विश्वास उत्पन्न होता है।[370] 'मानस' में सीता निराश होकर आत्मदाह का निर्णय कर लेती हैं और त्रिजटा से चिता बनाने का आग्रह करती हैं। सीता की अत्यधिक आकुलता देखकर ही हनुमान राम की मुद्रिका अशोक-वृक्ष से डाल देते हैं।[371]

3.5.8 हनुमान-सीता-भेंट

दोनों भाषाओं की रामायणों में हनुमान द्वारा राम की मुद्रिका देते हुए राम के सन्देश को सुनाकर सीता को सान्त्वना देने के प्रयत्न का वर्णन मिलता है। 'मानस' में हनुमान के लघु रूप को देखकर सीता उनकी शक्ति में सन्देह कर लेती हैं तो हनुमान उन्हें अपना 'कनक भूधराकार' शरीर दिखाते हैं।[372] कश्मीरी रामायणों में हनुमान सीता से विनम्र निवेदन करते हैं कि यद्यपि वे (सीता) उचित समझें तो वह उन्हें उसी समय उठाकर राम के पास पहुंचा सकता है। सीता उसे राम के बल का अपमान समझकर हनुमान के 'वीरोचित' प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करती हैं।[373] 'साकेत' में भी ऐसा उल्लेख मिलता है :

> मैंने कहा—अम्ब कहिए तो, अभी आपको ले जाऊं ?
> बोली वे—क्या चोरी चोरी मैं अपने प्रभु को पाऊं ?[374]

कश्मीरी 'आनंद रामायण' में सीता हनुमान को अपने जीवन का सारा वृतांत सुनाती हुई कहती हैं कि उसका विवाह पांच वर्ष की आयु में ही हुआ था। हनुमान

---

367. मानस 5.10.
368. प्र० रा०, पृ० 81-82.
369. मानस 5.11.
370. वि० प्र० रा०. वन०, अ० 46, शर्मा रा०, पृ० 245.
371. मानस 5.12.
372. मानस 5.16.
373. प्र० रा०, पृ० 83-84.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

374. साकेत, सर्ग 11, पृ० 434.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम द्वारा 'सीता-खोज' का सारा विवरण सुनाते हैं। हनुमान द्वारा राम सीता की वन्दना-अर्चना के पश्चात् सीता उनकी प्रशंसा करती हैं।[375]

'रामचंद्रिका' में सीता हनुमान पर सन्देह करती हुई पूछती है, —'प्रीति कहि धों सु नर—बानरनि क्यों भई'।[376] और वे मुद्रिका के माध्यम से ही हनुमान से वार्तालाप करती हैं।[377]

अशोक-वाटिका-भंग से लेकर हनूमान-रावण संवाद के प्रसंगों के वर्णन में साम्य है—कश्मीरी रामायणों में वाटिका-भंग, राक्षसों के युद्ध आदि का अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन हुआ है।

2.5.9 राक्षसों द्वारा हनुमान को बांधना

'प्रकाश रामायण' में वरदान में प्राप्त 'ब्रह्म-फांसी' के प्रयोग से भी इन्द्रजीत हनुमान को बांध लेने में विफल होता है, किन्तु हनुमान के प्रति ब्रह्मा की तद्विषयक विनम्र विनती पर वह स्वतः उसके पाश में बंध जाते हैं।[378] 'मानस' में भी अक्ष की मृत्यु के उपरान्त मेघनाद द्वारा ब्रह्मास्त्र से हनुमान को मूर्छित करने तथा 'नागपाश' से बांधने का वृत मिलता है। यहां भी ब्रह्मास्त्र के सम्मान की भावना से ही सहजतया हनुमान उसमें बंध जाते हैं।[379]

3.5.10 हनुमान का पांव–रोपना

'प्रकाश रामायण' में रावणाभिमान को खंडित करते हुए हनुमान के पांव को अनेक राक्षस लाख प्रयत्न करने पर भी उठा नहीं सकते हैं और हनुमान द्वारा सिर के हिलाने से रावण ऊंचे सिंहासन से दरिया में लुढ़क जाता है।[380] अन्य रामायणों में यह वृत दूत अंगद से संबंधित है, न कि हनुमान से।

3.5.11 लंका-दहन

दोनों भाषाओं की रामायणों में विभीषण ही 'दूत-वध' को नियम-विरुद्ध बताकर हनुमान को मृत्यु-दण्ड से बचाते हैं। रावण के आदेश से हनुमान की पूंछ में आग लगाई जाती है, जिससे हनुमान लंका-भवन को जला देते हैं। 'मानस' और 'रामचंद्रिका' में विभीषण-गृह को छोड़कर समस्त भवनों को जलाने के पश्चात सिन्धु में पूंछ बुझाने पर हनुमान सीता के समक्ष आते हैं।[381]

---

375. आ० रा०, पृ० 124-134.
376. रा० चं, 13.77.
377. वही, 12. 86-87.
378. प्र० रा०, पृ० 85-86.
379. मानस 5.19-20
380. प्र० रा०, पृष्ठ 86.
381. मानस 5.25-26, रा० चं० 14.12-13.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.5.12 सीता की व्याकुलता

'प्रकाश रामायण' में हनुमान को भीषण-अग्नि-लपटों से खेलते हुए देखकर अत्यधिक दुख-विह्वल होकर सीता आत्मग्लानि और पश्चाताप से आंसू बहाती हैं। 'बाल्मीकि रामायण' में सीता अग्नि को शीतल होने की प्रार्थना करती हैं,[382] कश्मीरी रामायणों में सीता अग्नि-देवता की वंदना करके उनसे रामदूत की सहायता-याचना करती हैं और अग्नि-देवता उन्हें आश्वासन भी देते हैं।[383] 'वि० प्र० रा०' में त्रिजटा से लंका-दहन का वर्णन सुनकर अत्यधिक दुखी होकर वह करुण प्रलाप करती हैं और लका-दाह पश्चात सहर्ष हनुमान की वंदना करती हैं।[384] 'अमर रामायण' में विलाप करते हुए सीता अचेत भी होती हैं और हनुमान के सकुशल लौटने पर ही उनके होश लौट आते हैं।[385]

3.5.13 हनुमान प्रत्यागमन :

सीता से राम के लिए सन्देश और प्रत्याभिज्ञान स्वरूप रत्न-चूड़ामणि लेकर हनुमान का किष्किधा लौटने का वृतांत दोनों में वर्णित है। 'प्रकाश रामायण' में लंका-दहन और सीता भेंट का शुभ-समाचार सुनकर राम की विरह जनित पीड़ा तीव्रतर होकर वे निजी मनःस्थिति को अत्यधिक करुण शब्दों में अभिव्यंजित करते हुए हनुमान से विविध प्रश्न पूछते हैं। तत्पश्चात सबके साथ समुद्र की ओर प्रयाण करते हैं।[386] 'मानस' में राम सूचना पाकर और हनुमान की वंदना-प्रार्थना से प्रेरित होकर ही सीता-मुक्ति के लिए उत्सुकता दिखाकर[387] सुग्रीव की सहायता से बानरों का संगठन करके लंका की ओर प्रस्थान करते हैं। 'रामचंद्रिका' में भी सीता की भेजी गई मणि पाकर राम अत्यधिक प्रसन्न होते हैं :-

> श्री रघुनाथ जबै मनि देखी। जी महं भागदसा सम लेखी।
> फूलि उठ्यौ मन ज्यों निधि पाई। मानहु अंध सुडीठि सुहाई।।[387]

3.5.14 विभीषण की शरणागति

'मानस' में 'लंका-दहन' पश्चात् रामभक्ति की सद्प्रेरणा से विभीषण रावण के समक्ष राम के अलौकिक रूप और ईश्वरत्व का उल्लेख करके सीता को वापस

---

382. वा० रा० 5.53.27-33.
383. प्र० रा०, पृष्ठ 87-88. शंकर रामायण, खण्ड 2. अ० 5, आ० रा०, पृ० 137, वि० प्र० रा०, लंका०. अ० 55-6.
384. अमर रामायण, पृष्ठ 156-162.
385. प्र० रा०, पृ० 89-91.
386. मानस 5.27-35.
387. रा० चं० 14.24.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करने और राम की शरण होने का परामर्श देते हैं और रावण इस प्रस्ताव से क्रुद्ध होकर विभीषण पर चरण-प्रहार करके उसे 'मंत्रिमंडल' से निकालता है। विभीषण राम की शरण होते हैं।[388] समुद्र-तट पर भेंट होकर सुग्रीव उनको 'रिपु-दूत' समझकर उनपर सन्देह करता है, किन्तु शरणागत वत्सल राम 'लंकेश' कहकर उनका स्वागत करते हैं, और उक्त पद का 'तिलक' भी सम्पन्न करते हैं, ।[389] 'रामचंद्रिका' में भी विभीषण रावण-दरबार में राम के अद्‌भुत अलौकिक बल और अन्य शूर-वीरों की आगामी घटनाओं की ओर संकेत करके रावण को समझाते हैं, इस पर 'धिक तोहि मोहि समुझावन आयों' कहकर रावण उसके सिर पर पद-प्रहार करता है।[390] शरणागत विभीषण के बारे में राम-सेना के शूरबीर अपने-अपने विचार प्रकट करते हैं. फिर उनकी वन्दना पर प्रसन्न होकर राम 'लंकेस आउ चिर जीवहि लंक धाम' कहकर उनकी शरणागति स्वीकारते हैं। [391] 'साकेत' में रावण 'देश-द्रोही' कहकर विभीषण को लंका से निकालता है। यहां विभीषण के शब्दों में राम की निर्मोहिता एवं सच्चे देश-प्रेम का भी वर्णन मिलता है। सप्रसन्न शरणागत 'वैरी के भाई' को राम 'बन्धु-समान' आदर देते हैं।[392]

'प्रकाश-रामायण' और 'गोविंद-रामायण' में प्रस्तुत प्रसंग अंगद-दूत के पश्चात वर्णित है, शेष दोनों भाषाओं के रामायणों में लंका-दहन पश्चात। 'प्र० रा०' में विभीषण रावण की राजनीतिक कटु आलोचना करके राम के संधि-सन्देश का समर्थन करते हैं, इस पर विभीषण को राजदरबार से निकाला जाता है जो भक्त-वत्सल राम की शरण आते हैं।[393] अन्य रामायणों में भी विभीषण के सीता-लौटाने एवं राम-मैत्री के प्रस्ताव का आग्रह करने पर रावण उसे अपमानित करके लंका से निकालता है, जिन पर राम पूरा भरोसा करते हैं।[394]

3.5.15 सेतु-बन्ध

'मानस' में विभीषण समुद्र-तरण का उपाय पूछे जाने पर राम को समुद्रोपासना का परामर्श देते हैं। लक्ष्मण के विरोध करने पर भी 'वाल्मीकि रामायण' के अनुसार राम तीन दिन की प्रतीक्षा करते हैं फिर कुपित होकर 'शर-शंधान' करके

---

388. मानस 5. 38-42.
389. वही 5. 43-49.
390. रा० चं० 15. 9-15.
391. वही 15. 18-26.
392. साकेत सर्ग पृष्ठ 436-438.
393. प्र० रा०, पृ० 95.
394. शंकर-रामायण, खण्ड 2. अ० 7; आनंद रामायण, पृष्ठ 142; शर्मा-रा०, पृ०272-276; ता० रा० पृ० 208-211; अमर-रामायण, पृ० 169.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समुद्र से अर्न्तज्वाला भभक उठती है, जिससे भयभीत होकर समुद्र विप्रवेश में शरण में आकर क्षमा-याचना करते हैं और समुद्र 'पारगमन' के लिए नल और नील को प्राप्त 'ऋषि' के 'आशीर्वाद' का उल्लेख करते हैं।[395] 'रामचंद्रिका' में भी राम के शर-संधान करने पर 'द्विजरूप' में समुद्र उपस्थित होकर नल द्वारा सेतु निर्माण के परामर्श का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है —'नल सेतु रचे यह मंत्र दियो।[396]

3.5.16 नल–नील की शाप-कथा

'वाल्मीकि रामायण' में नल विश्वकर्मा का पुत्र माना गया है,[397] कश्मीरी 'वि० प्र० रा०' में नल व नील को विश्वकर्मा के ही अवतार कहा गया है।[398] राम वरुण से 'पार-गमन' की विधि पूछते हैं किन्तु उत्तर न मिलने पर समुद्र-दाह हेतु एक बाण चलाते हैं, जिससे समुद्र घबड़ा कर राम की शरण होते हैं। 'प्र० रा०' तथा 'वि० प्र० रा०' में समुद्र द्वारा नल-नील के शाप की कथा विस्तार से वर्णित की गई है। संक्षेप में जो इस प्रकार है—नल तथा नील बानरों ने एक धोबी को परेशान किया और उसके सभी पत्थर दरिया में फेंकने की धमकी दे दी। धोबी किसी ऋषि के शरण हुआ, उन्होंने शाप दे दिया कि जो पत्थर नल व नील पानी में फेंकेंगे वे डूबेंगे नहीं, प्रत्युत तैरेंगे। इस तरह नल व नील सेतु निर्माण में सहायक हो सकते हैं।[399] नल-नील द्वारा सेतु-निर्माण का वर्णन दोनों भाषाओं की रामायणों में मिलता है। कश्मीरी 'प्र० रा०' के अनुसार तीन दिन में चार सौ कोस लम्बा और सौ कोस चौड़ा सेतु तैयार हुआ।[400]

3.6 लंका-काण्ड

3.6.1 शिवलिंग-स्थापना

'मानस' और 'रामचंद्रिका' में शिवलिंग-स्थापना और शिवजी की पूजा एवं उपास्य-महिमा का संक्षिप्त वर्णन मिलता है।[401] कश्मीरी 'वि० प्र० रा०' में शिव की आराधना करने के पश्चात प्रसन्न होकर शिव राम को 'विजयी' का वरदान भी देते हैं।[402] शिव आराधना का वर्णन 'ता० रा०' में भी मिलता है।[403] 'शर्मा रामायण' में राम रामेश्वर महादेव के मंदिर की स्थापना करते हैं, किन्तु पूजा

---

395. मानस 5, 50–60.
396. रा० चं० 15.27.
397. वा० रा० 6. 22. 44.
398. वि० प्र० रा०, लंका. अ० 63.
399. प्र० रामायण, पृ० 92; वि० प्र० रा०, लंका०. अ० 63.
400. प्र० रा०, पृ० 92–93.
401. मानस 6. 2-3; रा० चं० 15. 34-35.
402. वि० प्र० रा० लं० अ० 64.
403. ता० रा० पृ० 213.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करने के लिए पुजारी रावण को बुलाया जाता है। पूजा के पश्चात राम दक्षिणा देना चाहते हैं, किन्तु दक्षिणा लेने के बदले रावण यही वरदान मांगता है कि शीघ्र ही राम उसे परमगति प्रदान करे।[404] रावण की शिव-भक्ति और राम के हाथों मुक्ति-प्राप्ति की आकांक्षा को यह प्रसंग प्रतिपादित करता है। 'अमर रामायण' में रावण-वध पश्चात अयोध्या लौटते हुए राम रामेश्वर मंदिर का निर्माण करते हैं, जिसमें सेक्त-लिंग (बालू के लिंग) की स्थापना करके पूजा की जाती हैं।[405] 'स्कंध पुराण' और 'कृतिवासी बंगला रामायण' में सेतुबंध के समय तथा युद्धोपरान्त दोनों बार लिंग-स्थापना का वर्णन किया गया है[406] किन्तु दोनों ग्रन्थों में वर्णन विस्तृत और भिन्न है।

3.6.2 रावण-पराभव

'आध्यात्मरामायण'[407] में राम रावण के छत्र मुकुट काट फेंककर उसके अभिमान को खंडित करते हैं। 'मानस' में सेतु-निर्माण के पश्चात् राम का लंकागमन समाचार सुनकर मन्दोदरी रावण को उपदेश देती है, जिसे अनसुनी करके रावण रास-रंग में मग्न होता है। राम को दक्षिण दिशा में रावणछत्र को बादल, मन्दोदरी ताटंक को विजली ओर वायु-ध्वनि को मेघ-गर्जन समझने का भ्रम होता है। विभीषण से स्पष्टीकरण पाकर वे एक ही बाण से रावण के छत्र-मुकुट और मन्दोदरी के ताटंक को गिराते हैं। अत्यधिक क्षुब्ध मन्दोदरी पुनः पति को समझाती है, किन्तु रावण पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता हैं।[408] कश्मीरी 'शर्मा रामायण' में भी राम द्वारा रावण के छत्र-मुकुट और मन्दोदरी के कर्ण-कुण्डल एक ही बाण से गिराने तथा मन्दोदरी के समझाने का अपेक्षाकृत संक्षिप्त वर्णन मिलता है, अन्य कश्मीरी रामयणों में प्रस्तुत प्रसंग की उपेक्षा की गई है। दोनों 'अध्यात्मरामायण' से ही प्रभावित हैं, यद्यपि मानसकार ने प्रस्तुत प्रसंग का सुन्दर एवं विस्तृत वर्णन किया है। 'वाल्मीकि रामायण' में वर्णन भिन्न है, इसके अनुसार त्रिकूट-शिखर पर लंका देखते समय लंका के गोपुर पर रावण को खड़ा देख सुग्रीव छलांग लगाकर उसके पास पहुंच जाता है और मल्ल-युद्ध में उसका मुकुट गिराकर उसकी विविध चालें देख, लोट आता है।[409]

3 6.3 अंगद-दूतत्व

कश्मीरी 'प्र० रा०' के अनुसार सेतु-बन्ध के बारे में सुनकर लंका के चारों ओर

---

404. शर्मा रा०, पृष्ठ 293-94.
405. अमर रामायण, पृ० 214-219.
406. दे० रामकथा—डा० बुल्के, अनु० 580,
407. आध्यात्मरामायण 6.5.44.
408. मानस 6. 6-16.
409. वाल्मीकि रामायण, 6. सर्ग 40.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रावण पुनः दीवार निर्मित कराता है, जिसे अंगद-दूत नष्ट करता है।[410] रावण द्वारा नाम-परिचयादि पूछे जाने पर अंगद उत्तर देता है कि वह बालि का पुत्र है, नहाते समय जिसके बांधे हुए अंगोछे से रावण लिपट गया था। स्वयं वह (अंगद) दुधमुंहा बच्चा था जब रावण को खोलने की ज़िद्द की थी। अंगद राम के हाथों बालि बध की चर्चा करता है तो रावण राम से पिता की मृत्यु का बदला लेने का परामर्श देता है, प्रत्युत्तर में अंगद उसे प्रताड़ित करता है। अंगद रावण का मुकुट छीनते हुए राक्षसों को रोंधता–मारता राम के पास पहुंचता है।[411] आनन्द रामावतारचरित' में अंगद रावण को राम का पत्र देता है, जिसमें राम उसके मोह अंधकारमयी अपराधों को चेतावनी देते हैं, जिसे देखकर रावण अत्यधिक गुस्सा होता है।[412]

'वाल्मीकि रामायण' में राजधर्मानुसार युद्ध पूर्व विभीषण की सम्मति से राम अंगद को दूत बनाकर रावण के पास भेजते हैं[413] और 'मानस' में जाम्वान् के मत से। शेष वर्णन भी 'वा० रा०' से भिन्न है। यहां अंगद नाम-परिचय देकर अपने पिता वालि से रावण की मित्रता का उल्लेखकर सीता को वापस करके राम की शरण होने का परामर्श देता है। रावण उसको 'कुलघातक' नाम से सम्बोधित करता है जिसने राम की शरण ली हो। अंगद उसके परपत्नी-हरण करने तथा शूर्पणखा के अपमान पर व्यंग करता है, हनुमान को 'लघुदूत' कहकर रावण पर उपहास करता है और उसके विजेताओं का नामोल्लेख करके उस पर व्यंग्य कसता है।[414] अंगद की अपनी भुजाएं ज़ोर से पटकने पर रावण सिंहासन से लुढ़कता है। उसके मुकुटों को उठाकर राम-सेना की ओर फेंक देता है। बल-प्रदर्शन करता हुआ अंगद पैर रोप कर उसे उठाने की शर्त लगाता है। सभी राक्षसों के हारने पर रावण स्वयं उठता है तो उसे यह कहता हुआ कि उसे चाहिए कि राम के ही पैर पकड़े, राम के पास लौटता है।[415] यों तो 'मानस' के लम्बे संवादों पर भी हनुमन्नाटक' का प्रभाव है, किन्तु 'रामचंद्रिका' में तो वर्णित 'अंगद रावण संवाद' 'हनुमन्नाटक' का अनुवाद मात्र है।[416] 'रामचंद्रिका' में भी रावण की गर्वोक्तियों एवं अंगद के

---

410. प्र० रामायण, पृष्ठ 92.
411. वही पृष्ठ 93-64.
412. आ० रा० पृ० 150-151.
413. वा० रा० 6. 41. 59.
414. मानस 6. 17-24.
415. मानस 6. 29-35.
416. विस्तृत विवेचना के लिए देखिए—'रामकाव्य की परम्परा में रामचंद्रिका का विशिष्ट स्थान'—डा० गार्गी गुप्त, पृ० 248-249.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपदेश का विस्तृत वर्णन मिलता है ।[417] यहां भी अंगद रावण का मुकुट लेकर राम के पास चला जाता है :—

'अंगद रावन को मुकुट लै करि उड़्यो सुजान'[418]

'गोविंद रामायण' में भी रावण गर्वोक्तियों में अंगद के सद्परामर्श का तिरस्कार करता है। पैर रोप कर रावण को अपमानित करने पर अंगद विभीषण के साथ राम के पास लौटते हैं और विभीषण राम की शरण होते हैं।[419]

कश्मीरी 'वि० प्र० रा०' तथा शर्मा रा०' में भी अंगद द्वारा रावण सभा में पैर रोपकर उसे उठाने की शर्त लगाने का वर्णन मिलता है। दोनों में अंगद रावण को पहले शांतपूर्वक सलाह की सीख देता है, किन्तु रावण की गर्वोक्तियों से अनुप्रेरित एवं क्रुद्ध होकर उसका मुकुट छीन कर रावण-सभा का अपमान भी करता है ।[420]

3.6.4 राम-सेना गणना

'वाल्मीकि रामायण' में राम-सेना के पारगमन के समय रावण का शुक और सारण से अपने महल की अटारी पर चढ़कर राम-सेना के शूरवीरों के बारे में पूछने और उनके द्वारा सेना के शूरवीरों के बल-पराक्रम का विस्तृत वर्णन मिलता है ।[421] इसी के आधार पर कश्मीरी 'प्रकाश-रामायण' में भी रावण राम-सेना की कुल संख्या जानने का इच्छुक है। सारण राम-सेना की कुल तादाद अलग-अलग सेनापतियों एवं शूरवीरों, नल, नील, अंगद, सुग्रीव, जाम्बवान् तथा हनुमान आदि के विशिष्ट बल-पराक्रम के साथ वर्णित करता है, जिससे रावण प्रतिपक्षी के अनुरूप ही सेना की तैयारी कर लेता है ।[422] 'वि० प्र० रा०' में शुक और सारण से ही रावण राम-सेना का पूरा विवरण मांगता है ।[423] 'आ० रा०' में कुल सेना की तादाद सो पद्म बतायी गई है ।[424]

3.6.5 राम का मायामय शीर्ष

'प्रकाश रामायण' में रावण राम का एक हूबहू मायावी शीर्ष बनाकर सीता को दिखाते हुए कहता है—'यह तुम्हारे पति राम का सिर है जो युद्ध करने आया था

---

417. रा० च० 16, 10.33. (313-321).
418. वही 16. 34.
419. गो० रा०, पृष्ठ 106-108.
420. वि० प्र० रा०, लं. अ० 69, शर्मा रामायण, पृ० 313-321.
421. वा० रा० 6. सर्ग 26-28.
422. प्र० रा०, पृ० 95-101.
423. वि० प्र० रा०, लं० अ० 67.
424. आ० रा०, पृ० 147-148.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब सप्रसन्न मेरे साथ विवाह कर लो।' सीता विलाप करती हैं और सरमा रावण के कपट से अबगत कर उसे सान्त्वना देती हैं।[425] आधार-ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण' में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है।[426] यहां विधुज्जिह्व राक्षस द्वारा बनाये गए राम के मायावी शीर्श और धनुष को रावण सीता को दिखाते हैं, राक्षसी सरमा ही सीता को सान्त्वना देती है, जिसे सीता वास्तविक परिस्थिति का पता लगाने भेजती हैं। 'शर्मा रामायण' में भी 'विधुज्जिहव' नामक राक्षस द्वारा बनाया हुआ राम का मायामुंड और धनुष सीता को दिखाया जाता है, यहां सरमा को विभीषण की पत्नी कहा गया है, जो सीता को सान्त्वना देती है।[427]

3.6.6 राम-लक्ष्मण और सीता के मायामय शीर्ष

'अमर रामायण' में शुक और सारण विभीषण के वेष में राम की सेना में आकर सीता का मायावी शीर्ष और धड़ नेज़ों पर उठाकर राम को दिखाते हैं और उधर लंका-भवन में राम-लक्ष्मण दोनों के मायावी शीर्ष सीता को दिखाये जाते हैं, जिन्हें देखकर सीता विलाप करती हैं।[428] अन्य किसी रामायण में यह प्रसंग यहां पर वर्णित नहीं है।

3.6.7 सेना-प्रशिक्षण

कश्मीरी 'वि० प्र० रा०' में दोनों ओर से युद्ध की तैयारियों का विस्तृत वर्णन मिलता है। राम धर्म-शास्त्र अन्तर्गत वर्णित राजनीति-अनुकूल युद्ध-कर्म का सदुपदेश अपनी सेना और सेनाधिकारियों को देते हैं। हनुमान तथा मेघनाद द्वारा अपनी-अपनी सेना को प्रशिक्षण देने का भी वर्णन हुआ है—हनुमान 'गरुड़' और 'कमल' के रूप में अपनी सेना को प्रशिक्षण देते हैं, और मेघनाद 'सर्प' और वृक्ष के रूप में।[429]

3.6.8 माया-युद्ध

दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने मेघनाद द्वारा युद्ध में अपने माया-बल के प्रयोग का वर्णन किया है। 'प्रकाश-रामायण' और 'मानस' दोनों प्रतिनिधि रामायणों में चारों ओर अन्धकार फैल जाने का चित्रण हुआ है। 'प्रकाश-रामायण' के अनुसार आकाश से भयानक हिमपात और वर्षा में भी बानर-सेना युद्ध में लीन रहती है।[430] मानस' में मायावी अन्धकार का नाश राम के पावकास्त्र से ही होता

425. प्र० रा०, पृ० 103-107.

426. बा० रा० 6. सर्ग 31-34.

427. शर्मा रा० पृष्ठ 325-327.

428. अमर रा०, पृष्ठ 171-184.

429. वि० प्र० रा० लं०. अ० 70.76.

430. प्र० रा० पृ० 906.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है ।[431] आकाश से अंगार रुधिर, पत्थर और धूलि आदि की बर्षा होती है और राम के दूसरे बाण से इस माया का भी नाश होता है ।[432]

3.6.9 लक्ष्मण-मूर्च्छा

'प्रकाश-रामायण' में विभीषण युद्ध-पूर्व इन्द्रजीत के माया-बल से राम को अवगत करते हैं, परिणामस्वरूप लक्ष्मण की रक्षा के लिए हनुमान की नियुक्ति होती है और हनुमान की अनुपस्थिति में इन्द्रजीत लक्ष्मण को ब्रह्मास्त्र से मूर्च्छित करता है ।[433] मानस में भी मेघनाद की चलाई गई 'शक्ति' से लक्ष्मण मूर्च्छित होते हैं ।[434] इन्द्रजीत का उल्लेख 'साकेत' में भी मिलता हैं ।[435] कश्मीरी 'आनंद-रामावतार-चरित' में लक्ष्मण रावण के ही शक्ति-बाण से मूर्च्छित होते हैं । लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध-दृश्य अवलोकन करते हुए मेघनाद को कमज़ोर देखकर रावण लक्ष्मण पर छिपकर शक्ति-बाण चलाता है जिसे पकड़कर हनुमान वापिस फेंकते हैं । नारद के बजाए गए सितार के मधुर स्वर सुनकर हनुमान को नींद आती है और अवसर को उपयुक्त समझकर रावण पुनः शक्ति-बाण चलाकर लक्ष्मण को मूर्च्छित करता है ।[436] आधार ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण' में भी रावण द्वारा ही शक्ति-बाण चलाकर लक्ष्मण के दो स्थलों पर मूर्च्छित होने का उल्लेख मिलता है, किन्तु यहां प्रयत्क्ष युद्ध का भी वर्णन हुआ है ।[437] रावण द्वारा लुकछिप कर बाण चलाने और हनुमान द्वारा बाण वापिस फेंकने की कलाबाज़ी आदि की कल्पना कवि की निजी और मौलिक है ।

3.6.10 विभीषण की रक्षा

'मानस' में मेघनाद और कुम्भकरण की मृत्यु के पश्चात् युद्ध में रावण द्वारा चलायी गई शक्ति से लक्ष्मण मूर्च्छित होते हैं और विभीषण पर चलाई गई शक्ति से विभीषण की रक्षा करते हुए राम भी मूर्च्छित होते हैं ।[438] आधार ग्रंथ 'वाल्मीकि रामायण' में लक्ष्मण विभीषण की रक्षा करते हैं और रावण फिर लक्ष्मण पर ही शक्ति छोड़ता है । 'मानस' में राम ही विभीषण की रक्षा करते हैं, इससे 'मानस' के कथानक का चरित्र पूर्ववर्ती राम-साहित्य के नायकों की अपेक्षा और भी ऊंचा हो गया है ।[439] 'रामचंद्रिका' में रावण द्वारा विभीषण पर चलाई गई पहली शक्ति

---

431. मानस 6. 46-47.
432. मानस 6. 49-52.
433. प्र० रा०, पृ० 107.
434. मानस 6.54.
435. साकेत, सर्ग 11, पृ० 441-42.
436. आ० रा०, पृ० 153-156.
437. वा० रा० 6.59. 103-4, 6.101.27-36.
438. मानस 6.83, 94.
439. डा० माता प्र० गुप्त, तुलसीदास, पृ० 333.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को हनुमान तथा दूसरी को लक्ष्मण रोक लेते हैं। रावण की शक्ति से लक्ष्मण अचेत होते हैं।[440]

3.6.11 संजीवनी-आनयन

आधार ग्रन्थ 'अध्यात्म रामायण' में हनुमान द्वारा संजीवनी लाने के प्रसंग में 'कालनेमि प्रसंग' का विस्तृत वर्णन हुआ है।[441] और 'हनुमन्नाटक' में भी माया-ऋषि और मकरी आदि राक्षसों के वध तथा कोटि-गंधर्वों को पराजित करने का उल्लेख मिलता है।[442] इन्हीं के आधार पर दोनों भाषा-रामायणकारों ने इस प्रसंग का वर्णन अपने-अपने ढंग से किया है।[443] अन्तर यह है कि कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' में कपटी 'ऋषि' का नामोल्लेख नहीं मिलता है। यहां भी मकरी के द्वारा ही 'ऋषि' की कुचाल से अवगत होकर उसको मार कर 'संजीवनी पर्वत' उठाकर हनुमान चले आते हैं। 'गो० रा०' के अनुसार रावण की शक्ति से लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर हनुमान पैर रोपकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके राम की आज्ञा से कपटी ऋषि और मगर को मार कर संजीवनी पर्वत उठा ले जाते हैं।[444]

3.6.12 भरत-हनुमान भेंट

'प्रकाश रामायण' में राम-वैरी समझकर हनुमान को बाण से गिराकर और सारा वृतांत सुनने पर अपने वैबाण पर बिठाकर भरत उन्हें तुरंत लंका भेज देते हैं।[445] 'मानस' में सारा वृतांत सुनकर भरत उन्हें अपने बाण पर बिठा कर लंका पहुंचाने का आग्रह करते हैं, किन्तु भरत के बल पर पूर्ण विश्वास होकर हनुमान स्वयंमेव चले जाते हैं[446] 'साकेत' में हनुमान को 'साकेत' से ही संजीवनी उपलब्ध होती है—मायावयी राक्षस समझकर भरत हनुमान को वाण से गिरा देते हैं और संजीवनी औषधि के ही प्रयोग से पुनः संभल कर सीता-हरण से लेकर लक्ष्मण-मूर्च्छा तक का वृतांत सुनाकर वहीं से संजीवनी प्राप्त कर लंका की ओर प्रयाण करते हैं।

3.6.13 सुमित्रा का स्वप्न

कश्मीरी 'वि० प्र० रा०' में लक्ष्मण-मूर्च्छा की रात को सुमित्रा का एक भयानक स्वप्न देखने का भी उल्लेख मिलता है—जिसमें एक काला नाग उन्हें आ घेरता है, भयानक भूकम्प होता है, आकाश से लहू-बर्षा में पृथ्वी डूब जाती है और लक्ष्मण

---

440. रा० चं० 17.40.
441. अध्या० रा० 6.36-63, 7.1-33.
442. हनुमन्नाटक 13.32.
443. प्र० रा०, पृ० 109-122, मानस 6.56-58.
444. गो० रा०, पृ० 155-162.
445. प्र० रा० पृ० 111-112.
446. मानस 6.59.60.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी उसी लहू-धारा में गिर जाते हैं। कौशल्या प्रातः ही यह दुःस्वप्न सुनकर उन्हें सान्त्वना देती है। हनुमान के समक्ष तीनों माताएं रोती हैं।[447] 'हनुमन्नाटक' में भी सुमित्रा के स्वप्न का उल्लेख उपलब्ध है, जिसमें वह अपने बाये हाथ को सांप डसा हुआ देखती है। उक्त नाटक में भरत और गुरु वशिष्ठ द्वारा दुःस्वप्न की शांति के लिए यज्ञ-रचने का भी उल्लेख मिलता है।[448] इस तरह 'वि० प्र० रा०' का प्रत्यक्ष आधार हनुमन्नाटक नहीं हो सकता। अन्य किसी कश्मीरी रामायण में उक्त प्रसंग का उल्लेख अप्राप्त है।

3.6.14 कुम्भकरण-जागरण

कश्मीरी रामायणों में कुम्भकरण-जागरण के प्रयत्नों का अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन मिलता हैं। 'प्रकाश-रामायण' के अनुसार उसके विराट शरीर पर हाथी-घोड़ों को दौड़ाया गया, घुघरू बांधे दस सहस्र युवतियों का नाच कराया गया जिससे कुम्भ-करण की नींद खुली। जगने पर उसने सोलह सौ जीवों को खा लिया और सहस्रों घड़े मदिरा के पी लिये।[449] 'मानस' में वर्णन-विस्तार अनावश्यक समझकर केवल इतना कहा गया है—'करि बहु जतन जगावत भएऊ'।[450] 'रामचंद्रिका' में भी 'दुंदुभि' बजाने आदि के विफल प्रयत्न पर स्त्रियों द्वारा बीन बजाकर जगाने पर उसके भयानक रूप का संक्षिप्त वर्णन मिलता है।[451] कुम्भकरण को भयानक, कामुक और विलास-प्रेमी दर्शाने के लिए ही कवियों ने एसा वर्णन किया है।

3.6.15 कुम्भकरणोपदेश

रावण से युद्ध-कारण का वृतांत सुनकर 'मानस' का कुम्भकरण रावण को सीता हरण और राम की शत्रुता के लिए उसे फटकारता है, युद्ध-भूमि में विभीषण की राम-भक्ति की सराहना करके उससे सस्नेह मिलता है।[452] रामचंद्रिका में भी कुम्भकरण रावण को उपदेश देता हुआ कहता है :—

वानर न जानु सुर जानु सुभगाथ है। मानुष न जानु रघुनाथ जगनाथ हैं।[453]
कश्मीरी रामायणों में कुम्भकरण रावण को ज्ञानोपदेश न देकर अपने भ्रातृत्व एवं वीरता के बखान से पुनरुत्साहित करता है।

---

447. वि० प्र० रा०, लं०. अ० 85-86.

448. हनुमन्नाटक 13. 22-24.

449. प्र० रा०, पृ० 118-119.

450. मानस 6.62.

451. रा० चं० 18—2-24.

452. मानस 6. 63-64.

453. रा० चं 18.11.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.6.16. कुम्भकरण-वध

दोनों भाषाओं के रामायणों में कुम्भकरण के भयानक युद्ध और राम के एक ही बाण से उसके वध का वर्णन हुआ है। 'मानस' में कुम्भकरण को भी राम अपना भक्त समझकर उसे 'निज धाम' प्रदान करते हैं।[454] 'वाल्मीकि रामायण' के आधार पर 'रामचंद्रिका' में हनुमान द्वारा कुम्भकरण को कान-नासिका विहीन करने का उल्लेख मिलता है, राम भी उसके हाथ-पांव काटते हैं।[455]

3.6.17 राम की स्तुति

'वि० प्र० रा०' में कुम्भकरण-मरण पर नारद सुग्रीव, सनत् सनकादिक राम की स्तुति-वन्दना करते हैं।[456], 'मानस' में भी देवताओं एवं ऋषियों की स्तुति का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है।

3.6.18. मेघनाद-युद्ध

कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' और 'वि०प्र०रा०' में कुम्भकरण-वध पूर्व लक्ष्मण के पुनर्जीवित होने पर ही लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध और लक्ष्मण द्वारा उसके वध का वृतांत मिलता है, शेष सभी रामायणों में यह वृतांत कुम्भकरण वध के उपरांत वर्णित हैं।

3.6.19 नाग-पाश-बद्धता

आधार ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण' में क्रुद्ध इन्द्रजीत मायावी युद्ध में अंगद से पराजित होने पर अदृश्य होकर सर्पमय बाणों से राम-लक्ष्मण को क्षतविक्षत करके नाग-पाश में आबद्ध करता है। रावण सीता और त्रिजटा को पुष्पक पर बिठाकर मूर्च्छित राम-लक्ष्मण को दिखाता है। सीता विलाप करती है, त्रिजटा उन्हें सान्त्वना देती है और गरुड़ के स्पर्श राम से राम-लक्ष्मण पुनः जीवित होते हैं।[457] 'मानस' में कुम्भकरण-मृत्यु के उपरांत मायावी रथ पर बैठ आकाश में अदृश्य होकर मेघनाद राम-सेना पर शक्ति, शूल, तलबार, कृपाण आदि अस्त्र-शस्त्र की वर्षा करके राम को नाग-पाश में बांध लेता है और नारद द्वारा भेजा गया खगपति (गरूड़) माया-नागों से राम को मुक्त करते हैं।[458] 'गोविन्द रामायण' में मेंघनाद के मन्त्र पढ़े तीरों से अन्य योद्धाओं सहित राम मूर्च्छित हो जाते हैं। रावण समाचार मिलते ही सहर्ष त्रिजटा को आदेश देता है कि वह सीता को समर-भूमि में मरा हुआ राम दिखा दे। यह सब देख क्रोधित होकर सीता

---

454 मानस 6. 70-71.

455 रा० च० 18. 25-27.

456 वि० प्र० रा०, लं०. अ० 101.

457 वा० रा० 6. 44-50.

458 मानस 6. 72-74.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नागमंत्र द्वारा नाग-पाश काटकर राम-लक्ष्मण को पुनः जीवित करती हैं।[459] तुलसीदास ने गरुड़ द्वारा नाग-पाश काटने का वृत्त 'वाल्मीकि रामायण' से लिया है और सीता द्वारा नाग-पाश काटने की कल्पना गोबिन्द सिहं की निजी है। कश्मीरी रामायणों में प्रस्तुत प्रसंग नहीं मिलता है।

3.6.19. मेघनाद-यज्ञ और वध

'मानस' और 'गोविन्द रामायण' में विजय-प्राप्ति के लिये मेघनाद द्वारा यज्ञ-रचने और बानरों द्वारा यज्ञ-विध्वंस का वर्णन मिलता है। कश्मीरी राम-कथा-काव्य में मेघनाद-यज्ञ का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। 'मानस' के अनुसार मेघनाद एक गुफा में यज्ञ रचता है, विभीषण से सूचना पाकर राम लक्ष्मण को यज्ञ-विध्वंस और मेघनाद-वध करने का आदेश देते हैं। बानर यज्ञ विध्वंस करते हैं और लक्ष्मण मेघनाद का वध।[460] 'गोविन्द रामायण' के अनुसार मेघनाद यज्ञ-क्रिया में निमग्न था उसके मन में देवी की प्रचण्ड मूर्ति विराजित थी, उसी क्षण लक्ष्मण आकर एक ही बाण से उसके दो टुकड़े कर देते हैं।[461] लक्ष्मण द्वारा लुकछिप कर मेघनाद को मारने से उनके चरित्र पर एक ऐसा कलंक लगता है जो धुलने पर भी नहीं धुल सकता। 'मानस' में यज्ञ-विध्वंस मेघनाद के लिये चुनौती का कार्य करता है। आधार ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण' में विभीषण के परामर्श से ही लक्ष्मण राक्षस-सेना पर बाणों की वर्षा करते हैं, मेघनाद यज्ञ-कर्म अधूरा छोड़कर युद्ध-भूमि में उतरता है।[462] यहां विस्तृत युद्ध-वर्णन के पश्चात् ही लक्ष्मण मेघनाद को मार डालते हैं।[463] 'साकेत' में संजीवनी से पुनः जीवित होकर लम्बे संवादों के पश्चात लक्ष्मण मेघनाद का वध करते हैं।[464] कवि ने 'शांति' और 'शत्रु-नाश' की भाव-भूमि स्पष्ट करने के लिये ही उक्त असम्बद्ध संवादों का वर्णन किया है।

3.6.20 मेघनाद की राम-भक्ति

'प्रकाश रामायण' में युद्ध-पूर्व मेघनाद राम के अवतार रूप और अपनी वीरता का वर्णन सुलोचना के समक्ष करता है। युद्ध में लक्ष्मण के बाण से एक हाथ कट कर सुलोचना के गृह-द्वार के समीप गिर पड़ता है तो सुलोचना रावण-मंदोदरी के सामने विलाप करती है। मन्दोदरी उसे राम की शरण होने का परामर्श देती है। सुलोचना की वन्दना से प्रसन्न होकर राम के आदेश से मृत-प्राय मेघनाद को

---

459. गो० रा०, पृष्ठ 136-137.
460. मानस 6. 75-76.
461. गो० रा०, पृष्ठ 138.
462. वा० रा० 6. 86. 2-14
463. वा० रा० 6. 91.
464. साकेत, सर्ग 12, पृष्ठ 479-488.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समर-भूमि से लाया जाता है—मरते समय वह पत्नी से राम-लक्ष्मण के अवतार रूप की पुनः चर्चा करके उससे मुक्ति- प्ति के लिए राम की शरण होने की सलाह देता है। सुलोचना की वन्दना से सन्तुष्ट होकर राम दोनों को स्वर्ग-धाम देते हैं और राम-आदेश से हनुमान उनकी दाह-क्रिया का प्रबन्ध करते हैं।[465] 'वि.प्र.रा' में रावण-मन्दोदरी दोनों मेघनाद की मृत्यु पर विलाप करते हैं और सुलोचना की वन्दना पर प्रसन्न होकर मेघनाद का सिर उसे लौटाया जाता है।[466] 'आनंद रामावतारचरित' में भी सुलोचना के विलाप एवं राम-वन्दना का विस्तृत वर्णन मिलता है।[467] 'शर्मा रा०' में मेघनाद की तपस्या, इन्द्र तथा वासुकी को जीतने और वासुकि की पुत्री सुलोचना से विवाह का भी परिचय मिलता है। मेघनाद-वध के पश्चात् सुलोचना के समक्ष रावण अपनी वीरता का बखान करता है और रावण-मन्दोदरी के रूखे व्यवहार से चिढ़कर सुलोचना राम की शरण में जाकर मुक्ति प्राप्त करती है।[468]

आधार ग्रन्थ संस्कृत 'आनंद रामायण' में भी पति की कटी भुजा देखकर सुलोचना विलाप करती है, और भुजा के रक्त से ये शब्द लिखे जाते हैं—'शेष के हाथ से मरकर मैंने मुक्ति पाई है। तुम राम के पास जाकर मेरा सिर मांग लो और उसके साथ अग्नि में प्रवेश कर मेरे पास आओ।' सुलोचना राम के पास जाकर पति का सिर मांग कर फिर उसके साथ ही सती होती है।[469] राम भक्ति के प्रतिपादन एवं माहात्म्य-निर्देश के विचार से ही कश्मीरी कवियों ने विपक्षी मेघनाद-सुलोचना को भी राम-भक्त बनाकर राम से उनको मुक्ति प्रदान कराया है।

3.6.21 महिरावण[470] से सहायता-याचना:

पाताल लोक जाकर रावण इन्द्रजीत और कुम्भकरण की मृत्यादि का सारा वृत्तांत सुनाकर, महिरावण से सहायता याचना करता है। राम की सेना का विवरण देता हुआ रावण हनुमान के अद्वतीय बल-पराक्रम एवं राम की अनन्य भक्ति का उल्लेख करता है। महिरावण भी अपने बल का बढ़चढ़कर बखान करके उसे सहायता का आश्वासन देता है।[471]

---

465. प्र० रा०, पृष्ठ 112-117.
466. वि० प्र० रा०, ल०. अ० 88-92.
467. आ० रा०, पृ० 167-169.
468 शर्मा रा० पृष्ठ 358-370
469. रामकथा—डा० कामिल बुल्के, अनु० 594.
470. 'प्र० रा०' और 'अमर रा०' में महीरावण का नामोल्लेख मिलता है, शेष सभी कश्मीरी रामायणों में अहिरावण' का।
471. प्र० रा०, पृ० 121-124.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.6.22 महिरावण का राम-लक्ष्मण को पाताल-लोक उठा ले जाना

विभीषण राम को रावण-महीरावण की सांठ-गांठ से अवगत कराके उन्हें सतर्क रहने और रात भर कड़ा पहरा लगवाने का परामर्श देते हैं। हनुमान पहरा लगाते हैं। अर्धरात्रि को सबको निद्रामग्न देखकर महिरावण राम-लक्ष्मण को कन्धे पर उठा कर पाताल लोक ले जाता है। जागने पर सारी वानर-सेना रुदन विलाप करती है।[472] विभीषण ही हनुमान को पाताल-लोक और महिरावण के राज्य के बारे में बताते हैं, जहां राम-लक्ष्मण छिपाए गये हैं।[473]

3.6.23 महीरावण जन्म और जीवन-गाथा

कश्मीरी 'शर्मा रा०' के अनुसार अहिरावण रावण का ही पुत्र है। जिसने सर्प के रूप में मन्दोदरी से जन्म लिया था। जन्म लेने के पश्चात ही अहीरावण को पृथ्वी में गड़वाया जाता है। अहिरावण तप के बल पर पाताल-लोक को जीतकर, राजा दर्ब की पुत्री से विवाह करता है।[474]

3.6.24 हनुमान-मकरध्वज भेंट

पाताल लोक में एक बालक द्वारपाल से हनुमान की भेंट होती है जो उन्हें भीतर जाने से रोकता है। हनुमान बालक को देखकर पहले हंसते हैं, फिर बालक की वीरता भरी ललकार सुनकर उसके अद्भुत रूप-सौंदर्य और पौरुष को देखकर हर्षित होते हैं। उसके साथ युद्ध में प्रसंग-वश उसके मुंह से 'पिता हनुमान' का नामोल्लेख सुनकर हनुमान आश्चर्य चकित होते हैं। हनुमान के पूछने पर बालक उन्हें अपना जन्म-वृत्तांत सुनाता है तो अधिक हर्षित होकर हनुमान अपना परिचय देकर उसे गले लगाते हैं। मकरध्वज विनम्र शब्दों में पिता हनुमान की वन्दना करता है।[475]

3.6.25 मकरध्वज जन्म-कथा

'वि० प्र० रा०' और 'अमर रा०' में मकरध्वज-जन्म प्रसंग हनुमान द्वारा लंका-दहन पश्चात किष्किंधा लौटने के अवसर पर ही वर्णित है। 'प्रकाश रामायण' के अनुसार उड़ान भरते समय हनुमान का स्वेद-बिन्दु निगलने पर मछली गर्भिणी होकर उसे जन्म देती है।[476] 'वि० प्र० रा०' में हनुमान द्वारा समुद्र में नहाने का भी वर्णन मिलता है जिसका स्वेद मकरी खा लेती है।[477] 'आनन्द रामावतारचरित'

---

472. प्र० रा०, पृ० 125-132.
473. वही, पृ० 132.
474. शर्मा रा०, पृ० 375-378.
475. प्र० रा० पृ० 133-138.
476. प्र० रा०, 136.
477. वि० प्र० रा०, लं०. अ० 57.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के अनुसार मकरी के मुंह में हनुमान का स्वेद गिर कर वह गर्भिणी होती है। मल्लाह के जाल में फंस कर मकरी को राजा अहिरावण के पास पहुंचाया जाता है। राजा द्वारा उसका पेट चीरने पर उसमें से पांच भुजाओं और तीन सिरों वाला बच्चा निकलता है, अहिरावण ही उसका नाम मकरध्वज रखता है।[478]

3.6.26 हनुमान-महिरावण युद्ध

हनुमान यज्ञ-सामग्री नष्ट करके महिरावण का सामना करता है। महिरावण का माया-बल विफल होकर वह हनुमान के हाथों मारा जाता है। हनुमान राम-लक्ष्मण को कन्धे पर उठाकर बाहर ले जाते हैं। राम-लक्ष्मण को देखकर बानर प्रसन्न होते हैं, देवता दर्शन करने पधारते हैं। हनुमान द्वारा अपने वीर पुत्र का परिचय देने पर राम उसे महिरावण के राज्य-सिंहासन पर बिठाते हैं।[479]

3.6.27 अन्य वृत्तान्त

'वि० प्र० रा०' में महिरावण युद्ध-प्रसंग कुम्भकरण-युद्ध से पूर्व का है—वर्ण्य-प्रसंगों में विशेष अन्तर नहीं है।[480] अमर रामायण' में रावण एवं महिरावण दोनों मिलकर विपक्षी राम-सेना से युद्ध करते हैं और तत्पश्चात महिरावण द्वारा राम-लक्ष्मण को पाताल-लोक उठा ले जाना वर्णित है।[481]

महिरावण युद्ध-प्रसंग जैमिनी भारत, आनन्द रामायण, कृतिवासी बंगला रामायण, भावार्थ रामायण आदि देशी रामायणों तथा कुछ विदेशी वृत्तांतों में भी मिलता है [482], किन्तु कश्मीरी वृत्तांत किसी से भी पूर्णतः मेल नहीं खाता है। कृतिवासी बंगला रामायण में अहिरावण को रावण का पुत्र कहा गया हैं, इसमें हनुमान के पुत्र की चर्चा नहीं है। जैमिनी भारत, गुजराती नर्मकथा-कोष में लंका-दहन पश्चात् हनुमान के समुद्र में नहाते समय मछली (या मकरी) के स्वेद-पान से गर्भ-वती होने का वर्णन मिलता है। 'आनन्द रा०' तथा 'भावार्थ रामायण' के अनुसार भी मकरध्वज का जन्म मकरी द्वारा हनुमान का श्लेषमी खाने के फलस्वरूप ही हुआ।[483]

3.6.28 नरान्तक-दधिबल युद्ध

प्रस्तुत युद्ध-प्रसंग 'वि० प्र० रा०', 'शर्मा रामायण' तथा 'ता० रा०' में वर्णित है। 'वि० प्र० रा०' के अनुसार नरांतक रावण का पुत्र था और दधिबल सुग्रीव

---

478. आ० रा०, पृ० 182-183
479. प्र० रा०, पष्ठ 138-143.
480. वि० प्र० रा०, लं०. अ० 93-97.
481 अमर रा०, पृ० 190-198.
482 डा० कामिल बुल्के—रामकथा-उत्पत्ति और विकास, अनु० 614.
483 वही—अनु० 615.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का । अहिरावण एवं कुम्भकरण के संहार की सूचना नरांतक को नारद देता है। रावण की सहायता के लिए नरांतक ससैन्य लंका पहुंचता है । युद्ध पूर्व बिन्दुमती अपने पति को राम-लक्ष्मण के अवतार रूप से सचेत करती है । राम हनुमान द्वारा 'बद्रीनारायण' से दधिबल को बुलवाते हैं । सात दिन के भीषण युद्ध के पश्चात् नरांतक मारा जाता है । रावण दुखित होता है और मन्दोदरी, चित्रलेखा तथा बिन्दुमती विलाप करती हैं । बिन्दुमती की वन्दना से प्रसन्न होकर राम नरांतक के मृत शरीर को लौटाते हैं, जिसके साथ बिन्दुमती सती होती है ।[484] 'शर्मा रा०' में नरांतक के 72 करोड़ राक्षसों समेत 'मूल नक्षत्र' पर लंका में उत्पत्ति, नरांतक के तप और महादेव के वरदान का भी वर्णन मिलता है । यहां रावण ही नरांतक को सहायता के लिए सन्देश भेजता है तथा बिन्दुमती और मन्दोदरी दोनों ही राम का यश गाती हैं । नारद ही राम को नरांतक के मृत्यु की विधि सुझाते हैं और दधिबल को बुलाया जाता है । दधिवल द्वारा नरांतक की मृत्यु पर राम दधिबल को 'बेहवाबल' का राज्य सौंपते हैं। उक्त रामायण में भी बिन्दुमती की वन्दना पर ही मृत नरांतक का शरीर लौटाया जाता है, जिसके साथ सोलह रानियों समेत बिन्दुमती सती होती हैं ।[485] 'वाल्मीकि रामायण' में नरांतक को रावण के प्रहस्त का सचिव ही बताया गया हैं ।[486]

3.6.29 मकेश्वर लिंग

रावण कैलाश पर्वत पर शिवजी से सहायता-याचना करते हैं। शिवजी उसे मकेश्वर लिंग यह कहकर देते हैं कि लंका में रखने पर कोई उस पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता और रावण को सचेत करते है कि कहीं भी वह इसे रास्ते में पृथ्वी पर न रखे । रावण लिंग लेकर लौटता है । नारद एक ब्राह्मण का रूप धारण कर रास्ते में मिलता है । रावण को लघुशंका लगी, वह 'मकेश्वर' ब्राह्मण के हाथ देता है, 'नारद-माया' से रावण की लघुशंका अधिक देर तक नहीं रुकती है, तंग आकर ब्राह्मण मकेश्वर को भूमि पर रखकर चलता बना । रावण ने पुनः लिंग उठाना चाहा, किन्तु लाख प्रयत्न करने पर भी उसे हिला तक न सका ।[487] 'वि० प्र० रा०' तथा 'शर्मा रा०' में भी उक्त प्रसंग इसी रूप में मिलता है ।[488]

3.6.30 रावण-यज्ञ

'प्र० रा०' के अनुसार शंकर रावण को सात दिन का ऐसा यज्ञ रचने का परामर्श देते हैं, जिससे उसका ध्यान कदापि विचलित न हो । विभीषण के परामर्श से

---

484. वि० प्र० रा०, लं०. अ० 103-115.
485. शर्मा रामायण, पृ० 378-420.
486. वा० रा० 6. 57. 31-32.
487. प्र० रा०, पृ० 143-144.
488. वि० प्र० रा०, लं०. अ० 125-127; शर्मा रा०, पृ० 421-422.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हनुमान मन्दोदरी के पास गाली-गलौच देने जाते हैं। क्रुद्ध होकर मन्दोदरी रावण को ध्यान से हटाकर सारा वृत्तांत सुनाती है। निजी भाग्य को कोसता हुआ रावण मन्दोदरी से राम के अवतार रूप की चर्चा करके उनके हाथों मुक्ति-उपलब्धि की अभीष्ट आकांक्षा प्रकट करता है।[489] 'शर्मा रा०' में राम की ही आज्ञा से हनुमान बानर यज्ञ में बाधा डालते हैं।[490]

रावण-यज्ञ प्रसंग 'मानस' और 'रामचंद्रिका' में भी वर्णित है। 'मानस' के अनुसार भी राम ही यज्ञ विध्वंस के लिए हनुमानादि बानरों को आज्ञा देते हैं। मन्दोदरी को केश पकड़ कर रनिवास से बाहर निकाला जाता है। इस असह्य अपमान को देखकर यज्ञ अधूरा छोड़कर रावण भीषण युद्ध के लिए प्रस्तुत होता है।[491] 'रामचंद्रिका में यज्ञ-विध्वंस के प्रयत्न में अंगद मन्दोदरी को नग्न करता है और मन्दोदरी द्वारा निजी अपमान का दुखड़ा रोने पर रावण यज्ञ छोड़कर समर-भूमि में उतरता है।[492] आधार-ग्रन्थ 'अध्यात्म-रामायण'[493] में उक्त प्रसंग में मन्दोदरी की पूर्ण नग्नावस्था का वर्णन किया गया है, किन्तु मर्यादा-उल्लंघन के डर से केशव ने मन्दोदरी के कंचुकी-विहीन उरोजों के वर्णन तक ही इसको सीमित किया है। 'गो० रा०' में भी बानरों द्वारा मन्दोदरी को सताने का वर्णन मिलता है,[494] यद्यपि इसमें रावण-यज्ञ का उल्लेख मिलता है।

3.6.31 माया-सीता वध

'प्रकाश रामायण' में रावण मायावी सीता को रथ पर बिठा कर समर-भूमि में मार डालता है। राम समेत बानर-सेना के विलाप करने पर विभीषण रावण के छल-कपट से अवगत कराते हैं। राम गुस्सा होकर समर-भूमि में रावण के मुकाबले के लिए प्रस्तुत होते हैं। 'वाल्मीकि रामायण' में इन्द्रजीत द्वारा समर-भूमि में मायावी सीता के वध, राम-विलाप और विभीषण के आश्वासन का वृत्तांत मिलता है, इसी के आधार पर 'प्र० रा०' में थोड़ा सा परिवर्तन राम की रावण-विरोध में युद्धोतेजना के अभिप्राय से किया गया है।

3.6.32 माया-युद्ध

रावण के माया-युद्ध का वर्णन दोनों भाषाओं की रामायणों में उपलब्ध है।

---

489. प्र० रा०, पृ० 145-146.
490. शर्मा रा०, पृ० 424.
491. मानस 6. 85-88.
492. रा० चं० 19.24-26.
493. अध्यात्म रामायण 6.10. 24-34.
494. गो० रा०, पृ० 149.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मानस' में रावण अपने माया बल से पहले अनेक राम-लक्ष्मण, तत्पश्चात् 'रावण' उत्पन्न करता है। राम एक-एक बाण से रावण की माया शक्ति को नष्ट करते हैं।[495] कश्मीरी 'आनंद रामावतारचरित' में रावण अनेकानेक मायावी अंगद, हनुमान रीछादि पैदा करता है, राम एक बाण से इस माया को समाप्त करते हैं। रावण की माया-शक्ति से पुनः आकाश से अजगरों की वर्षा होती है और शीघ्र ही राम एक दूसरे बाण से इस माया को भी बेकार करते हैं।[496] माया-युद्ध का उद्देश्य रावण की अद्भुत माया-शक्ति और राम के अलौकिक रूप-बल या प्रभुत्व का दर्शाना ही है। औत्सुक्य और चमत्कार-प्रदर्शन की दृष्टि से भी माया-युद्ध वर्णन विशिष्ट महत्व रखता है। इसीलिए इसका वर्णन विविध युद्धों के अन्तर्गत हुआ है।

3.6.33 इन्द्र का रथ

'वाल्मीकि रामायण' के अधार पर[497] 'मानस'[498], 'रामचंद्रिका'[499] और कश्मीरी 'शर्मा-रामायण'[500] में युद्ध करने के लिए इन्द्र राम को अपना रथ भेज देते हैं।

3.6.34 रावण-वध

'मानस' में रावण-वध में विलम्ब देखकर घबड़ाई हुई सीता को त्रिजटा समझाती है कि रावण के हृदय में उनका वास है और उनके हृदय में राम का वास है, जिसमें समस्त लोक बसे हुए हैं अतः राम विश्व-रक्षा के निमित ही रावण का वध नहीं कर पा रहे हैं।[501] 'वाल्मीकि रामायण' में राम द्वारा रावण के कटे हुए सिरों के स्थान पर नये सिर निकल आते हैं,[502] 'मानस' में राम द्वारा रावण के सिर और भुजाएं कई बार काटने पर पुनः उग आते हैं :—

कटत झटिति पुनि नूतन भए। प्रभु बहु बार बाहु सिर हए ॥[503]

विभीषण के कथनानुसार रावण के नाभिकुण्ड का अमृत समाप्त होने पर ही वह मर सकता है। इसीलिए राम इकतीस बाण एक साथ चलाकर एक से

---

495. मानस 6.91, 96-97.
496. आ० रा०, पृ० 174-175.
497. वा० रा० 6.103. 8-11.
498. मानस 6 89.
499. रा० चं० 19-37.
500. शर्मा रा०, पृ० 436.
501. मानस 6 99.
502. वा० रा० 6.110.
503. मानस 6.92.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाभिकुण्ड सोख लेते हैं, अन्य तीस से बीस भुजाएं और दस सिर काटते हैं।[504] आधार-ग्रन्थ 'अध्यात्म रामायण' में 'आग्नेयास्त्र' द्वारा नाभि-कुण्ड सोख कर एक सिर और दो भुजाओं को छोड़कर समस्त सिर और भुजाएं काट लेने और मातलि के याद दिलाने पर ब्रह्मास्त्र द्वारा—हृदय फाड़कर उसे मार डालने का वर्णन मिलता है।[505] मानसकार ने इसमें कुछ परिवर्तन किया है। 'वाल्मीकि रामायण' में मातलि के स्मरण दिलाने पर ही राम ब्रह्मास्त्र से रावण का वध करते हैं।[506]

'प्रकाश रामायण' में भी बार-बार रावण के दस सिर काटने पर राम ग्यारहवां सिर काटने का प्रयत्न करत हैं, तो सब सिर उसके पुन: निकल आते हैं। रावण शिव भक्त था। रोज़ अपने दस सिर काट कर शिव की पूजा करता था, ग्यारहवां सिर भी पूजा में भेंट चढ़ाने पर उसके सभी सिर पुन: बराबर हो जाते। इस तरह शिव के वरदान से ही राम को उसका वध करने में असफलता मिलती है। नारद उनसे कहते हैं कि उसके हृदय में 'अमृत का घड़ा' है जो शिव के वरदान से उसे मिला है, अत वह शिव का ध्यान धारण करने का परामर्श देते हैं। शिव की वन्दना एवं उनके दर्शन और वरदान पश्चात् ही राम ब्रह्मास्त्र से रावण का वध करने में सफल होते हैं।[507] यहां रावण और राम दोनों शिव-भक्त हैं किन्तु लोक-कल्याणार्थ ही इष्ट शिव राम का यज्ञ करते हैं।

3 6 35 राम के प्रति वन्दना-स्तुति

'वि० प्र० रा०' में रावण-वध पूर्व वानर, देवता तथा नारद रावण के नाश के लिए राम से बंदना करते हैं और तीस कोटि देवता सीता से भी प्रार्थना करते हैं।[508] 'शर्मा रामायण' में त्रिजटा से युद्ध-विवरण सुनकर निराश सीता भी रावण-संहार-हेतु राम के प्रति मन ही मन वन्दना करती हैं।[509]

3.6 36 रावण द्वारा राम की स्तुति

'आनंद-रामावतारचरित' में मरते समय रावण राम की स्तुति वन्दना करता है।[510] 'मानस में भी रावण को भक्त जानकर राम 'निजधाम' प्रदान करते हैं।

3.6 37 अपूर्ण आकांक्षाएं

कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' तथा 'शर्मा रामायण' में राम के आदेश से लक्ष्मण द्वारा पूछे जाने पर रावण की तीन अपूर्ण आकांक्षाओं का उल्लेख मिलता है—

---

504. मानस 6.102-103.
505. अध्यात्मरामायण 6.11.
506. वा० रा० 6.111.
507. प्र० रा० (अक), पृ० 178-179.
508 वि० प्र० रा०, ल०. अ० 116-128.
509. शर्मा रा०, पृष्ठ 437-438.
510. आ० रा०, पृ० 188.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अग्नि से धुआं समाप्त करना, स्वर्गलोक तक सीढ़ी निर्मित करना तथा स्वर्ण में सुगंधि स्थापित करना।[511] इन तीन अपूर्ण कार्यों में से केवल स्वर्ग तक पथ-निर्माण करने का उल्लेख बंगला कृतिवासी रामायण में उपलब्ध है।[512]

3.6.38 ज्ञानोपदेश

'वि० प्र० रा० में राम के आदेश से लक्ष्मण मृत-प्राय रावण के समक्ष ज्ञानोपदेश सुनने के लिए चले जाते हैं और सादर अपनी आकांक्षा अभिव्यक्त करने पर रावण विविध विषयों पर ज्ञान-प्रवचन देता है।[513]

3.6.39 देव-स्तुति

दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने रावण-वध पर देवी-देवताओं द्वारा राम की स्तुति-अर्चना करायी है। ललित कृष्ण-काव्य के प्रभाव से कश्मीरी 'वि० प्र० रा०' में प्रसन्न होकर तीस-कोटि देवता, गंधर्व और अप्सराएं गाते-नाचते हैं, विविध रास-क्रीड़ाएं होती हैं, मृत बानरों को जिलाने के लिए इन्द्र रास-क्रीड़ा-रत ही आकाश से अमृत-वर्षा करते हैं।[514]

'मानस' में राम की आज्ञा से लक्ष्मण भ्रातृ-वध से क्षुब्ध विभीषण को सान्त्वना देते हैं और रावण की विधिवत् अंतिम क्रियाएं सम्पन्न होने पर विभीषण का तिलक होता है।[515]

3.6 40 अग्नि परीक्षा

'वाल्मीकि रामायण' में अग्नि-परीक्षा पूर्व राम अपमानजनक कठोर दुर्वचन कहकर सीता का निरादर करते हैं।[516] आलोच्य भाषाओं के कथाकारों ने आदर्श एवं मर्यादा की रक्षा करते हुए उक्त प्रसंग में यथोचित परिवर्तन किए हैं। 'मानस' की अग्नि-परीक्षा का उद्देश्य लोक-भ्रम निवारण और असली सीता की प्राप्ति ही है। सीता के प्रति 'कछुक दुर्वाद' कहे गए हैं। सीता चिता में सप्रसन्न प्रविष्ट होती हैं। प्रतिबिंब एवं लौकिक कलंक जलकर अग्नि-देवता द्वारा धरोहर सीता लौटाने पर देवगण इन्द्र तथा शिव राम की स्तुति-वंदना करते हैं और दशरथ आशीष देते हैं।[517] 'रामचंद्रिका' में दुर्वचनों का संकेत नहीं मिलता है। सीता-शुद्धि प्रसंग में

---

511. प्र० रा० (अक०), पृ० 180; शर्मा रा०, पृ० 441.
512. डा० रमानाथ त्रिपाटी—कृतिवासी बंगला रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन. पृ० 219.
513. वि० प्र० रा०, लं०. अ० 129.
514. वि० प्र० रा०; लं०, अ० 131-137.
515. मानस 6. 104-106.
516. वा० रा० 6. 118-119.
517. मानस 6. 108-115.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन्द्र, वरुण, ब्रह्मा, इन्द्रादि के अतिरिक्त दशरथ की उपस्थिति वर्णित है। सीता से स्वीकार करने पर ब्रह्मा, महादेव तथा दशरथ के अलौकिक माहात्म्य की बड़ाई एवं वन्दना-स्तुति करते हैं।[518] 'गो० रा०' में अग्नि-परीक्षा के पश्चात् शुद्धि-साक्षी को प्रसन्न होकर राम सीता को सप्रेम गले लगाते हैं।[519]

'प्र० रा०' में वर्णन थोड़ा सा भिन्न है। राक्षसों के संहार के पश्चात् राम सीता की सुध नहीं लेते हैं। सीता द्वारा आत्म व्यथा के प्रकटीकरण पर उसे सांत्वना देकर मन्दोदरी राम के पास उन्हें ले जाकर उनसे सीता के पुनः ग्रहण करने का अनुरोध करती हैं। राम के मुंह फेर लेने के दो कारण वर्णित हैं—सीता पर रावण का मोह तथा राम की आसक्ति पर सीता का गर्व। सीता स्वयं अपनी पवित्रता एवं निष्कलुषता की कोई भी साक्षी देने के लिए तैयार होती हैं। सूर्य, इन्द्र तथा स्वर्ग-लोक से पधारे दशरथ उनकी पवित्रता की साक्षी शपथ खा-खा कर देते हैं। राम द्वारा अग्नि-परीक्षा के सुझाव पर सप्रसन्न सीता अग्नि की धधकती लपटों में उतरती हैं और चौदह दिन के पश्चात् अग्नि के बुझ जाने पर अनुपम देवी वस्त्र पहनकर बाहर निकलती हैं जिससे सर्वत्र प्रसन्नता छा जाती है।[520] यहां अग्नि-देवता के प्रकट होने का संकेत नहीं है। 'वि० प्रा० रा०' में भी सूर्य, इन्द्र, चन्द्रमा एवं दशरथ सीता की पवित्रता की साक्षी देते हैं, दशरथ सीता-जन्म-कथा भी सुनाते हैं।[521] 'अमर-रामायण' के अनुसार सीता की अग्नि-परीक्षा लोकापवाद के फैल जाने पर अयोध्या में ही होती है।[522]

3.6.41 अयोध्या की ओर प्रस्थान

दोनों भाषाओं के रामायणों में पुष्पक-विमान द्वारा राम-लक्ष्मण तथा सीता का सुग्रीव, अंगद, हनुमान, जाम्बवान्, नल-नील आदि शूरवीरों समेत अयोध्या की ओर प्रस्थान का वर्णन मिलता है। 'मानस' में राम रास्ते में सीता को समर-भूमि, समुद्र, रामेश्वर-मंदिर, दण्डक वन, अगस्त्याश्रम, चित्रकूट आदि स्थान दिखाते हुए गंगा पर भारद्वाज-आश्रम में रुककर हनुमान के द्वारा अयोध्या सूचना भिजवाते हैं। गुरु से भेंट कर पुनः अयोध्या की ओर चलते हैं।[523] 'रामचंद्रिका' में भी मार्ग में सेतु, पंचवटी, अगस्त्याश्रम को देखते हुए भारद्वाज के आश्रम में पहुंचते हैं।[524] भारद्वाज आश्रम में सुग्रीव तथा लक्ष्मण वन्दना करते हैं और राम के पूछने पर

518. रा० चं० 20. 3-25.
519. गो० रा०, पृ० 183-184.
520. प्र० रा०, पृ० 151-158.
521. वि० प्र० रा०, लं०. अ० 139.
522. अ० रा०, पृ० 221-226.
523. मानस 6. 118-121.
524. रा० चं० 20. 27-28.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारद्वाज दान के बारे में विस्तृत वर्णन करते हैं, यहीं से राम के आदेश से अयोध्या जाकर रामागमन की सूचना देते हैं।[525]

3.7 उत्तर-काण्ड

3.7.1 अयोध्या प्रत्यावर्तन

दोनों भाषाओं की रामायणों में हनुमान द्वारा राम-लक्ष्मण की सूचना पाकर अयोध्या में स्वागत की तैयारियों और राजकुल परिवार तथा पुरवासियों से राम-लक्ष्मण एवं सीता की भेंट का विस्तृत वर्णन विभिन्न रूपों में मिलता है। 'मानस' में राम सर्वप्रथम गुरु वशिष्ठ से मिलते हैं तत्पश्चात् भरत-शत्रुघ्न से मिलकर अनेक रूप प्रकट कर पुरवासियों से एक साथ भेंट करते हैं। अन्त में कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी से मिलते हैं।[526] अयोध्या-प्रवेश करके विभीषण, नल-नील आदि मनुष्य-रूप धारण कर लेते हैं और राम उनका परिचय गुरु वशिष्ठ से कराते हैं। कैकेयी की झेंप मिटाने के लिए राम पुनः उससे मिलते हैं।[527] "रामचंद्रिका' में राम गुरु वशिष्ठ से सभी शूरवीरों का विस्तृत परिचय देते हुए, उन्हें विजय-प्राप्ति के श्रेय का समभागी सिद्ध करके[528] अपनी उदारता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

'प्रकाश रामायण' में अत्यधिक हर्षोल्लास के मध्य कौशल्या, सुमित्रा तथा कैकेयी सभी माताएं राम-लक्ष्मण और सीता की अलग-अलग वन्दना-स्तुति करती हैं।[529] 'शंकर रामायण' में अयोध्यावासियों की विस्तृत 'मंगल-लीला' का बखान मिलता है।[530] 'वि० प्र० रा०' में सचेत होकर भरत राम और सीता की अलग-अलग वन्दना-स्तुति करते हैं और माताएं भी पृथक्-पृथक् राम को आशीष देती हैं।[531]

3.7 2 रामराज्याभिषेक तथा रामराज्य

रामाभिषेक तथा रामराज्य का वर्णन विविध रूपों में सभी रामायणों में मिलता है। 'मानस' में अभिषेक सम्बन्धी मांगलिक पदार्थ एकत्र करने, वशिष्ठ द्वारा प्रथम तिलक लगाते समय देवताओं द्वारा पुष्प-वर्षा, गंधर्व-किन्नर के गुण गान, अप्सराओं के नाच और वेद, शिव आदि की स्तुति-वन्दना का वर्णन मिलता है।[532] 'रामराज्य'

---

525. रा० चं० 20. 29-55 तथा 21. 1-33.
526. मानस 7. 5-6.
527. वही 7. 8-10.
528. रा० चं० 21. 26-50.
529. प्र० रा०, पृ० 156-166.
530. शंकर रा०, खण्ड 4. अ० 5.
531. वि० प्र० रा०, लं०. अ० 132-135.
532. मानस 7. 10-14.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में त्रैलोक्य में प्रेम-आनन्द का विकास होता है और बैर, शोक एवं दुखों का सर्वनाश। रामराज्य के भाव-परिवेश में वर्णाश्रम, धर्मपालन, एकपत्नी-व्रत, पतिव्रता-धर्म तथा रामभक्ति की सुदृढ़ विवेचना समाहित है। 'मानस' में प्राकृतिक सम्पन्नता तथा पशु-पक्षियों की प्रसन्नता का चित्रण रामराज्य के भावक्षेत्र को विस्तार देता है।[533] 'रामचंद्रिका' में 'रामराज्याभिषेक' के प्रसंग में राम वशिष्ठ एवं अगस्त्य की ज्ञान-वाणी एवं सदोपदेश का विस्तृत वर्णन मिलता है।[534] अभिषेक-पश्चात् ब्रह्मा, इन्द्र, पितृ, अग्नि, वायु, देवता, ऋषि तथा किन्नर, यक्ष, गंधर्व आदि राम की वन्दना करते हैं।[535] रामराज्य-वर्णन अन्तर्गत अयोध्या सुख-शोभा, सुखद उपवन-शोभा का विस्तृत वर्णन[536] अन्य वर्णनों की भांति वर्णन मात्र के लिए ही किया गया है, जिसमें अत्यल्प प्रसंग-संबद्धता दिखती है। 'गो० रामायण' के वर्णन पर राजकीय तड़क-भड़क का मुलम्मा चढ़ा हुआ है।[537] यहां राम के विभिन्न रूपों पर वीर नृप रूप ही अधिक हावी है।

कश्मीरी रामायणों में वर्णन मर्यादित एवं संयत है। राम दरबार का वर्णन भक्ति-भावना के प्रसार की दृष्टि से स्तुत्य है। 'रामराज्य' के भाव-परिवेश में प्रायः सभी रामायणों में भक्ति-माहात्म्य का प्रतिपादन मिलता है। सर्वमंगल-वर्णन, अभिषेक-शोभा एवं वेद, सदाशिव, सनत् सनकादिक ऋषि-मुनियों की स्तुति आदि में यही भक्ति-भावना प्रखर है। 'शर्मा रा०' तथा 'तारा रा०' में वर्णन अपेक्षाकृत विस्तृत है।[538] वर्णन में कही भी विषयन्तर, कृत्रिमता या शिथिलता दृष्टिगोचर नहीं होती है।

3.7 3 कागभुषुण्डि-गरुड़-चरित

'मानस' के बालकाण्ड में सभी चरितों का उल्लेख मिलता है, किन्तु शिव-पार्वती संवाद अन्तर्गत कागभुषुण्डि-गरुड़ चरित का विस्तृत रूप यहीं पर उपसंहारस्वरूप चित्रित हुआ है। नारद के आदेश से राम को नाग-पाश से मुक्त कर गरुड़ अहंकारवश राम के ईश्वरत्व से शंकालु होते हैं। ब्रह्मा और शिव से शंका का निवारण न होकर उनके संकेत से ही वह शंका-समाधान-हेतु मुक्तभोगी कागभुषुण्डि के पास चला जाता है और कागभुषुण्डि गरुड़ को निजी विगत शंका का प्रारूप प्रस्तुत करके राम के विराट रूप दर्शन का उल्लेख करते हैं। यहां कागभुषुण्डि के पूर्वजन्म

533. मानस, 7. 21-23.
534. रा० चं०, सर्ग 23-24.
535. वही, 27.
436. वही, 28-32.
537. गो० रा० 185-196.
538. शर्मा रा०, पृष्ठ 458-475; ता० रा०, पृष्ठ 269-279.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिवेश में कलियुग-चित्रण करने का स्तुत्य प्रयत्न किया गया है, जिसमें राम-भक्ति भावना के प्रतिपादन एवं राम-माहात्म्य प्रदर्शन-हेतु ज्ञानोपदेश का निरूपण मिलता है।[539] राम के पूर्ण ईश्वरत्व का विश्वास अधिक दृढ़ बनाने के लिए ही तुलसी ने इस चरित का उल्लेख यहां पर किया है, ताकि किसी भी तत्सम्बन्धी भावगत शंका के लिए कोई स्थान न रहने पाये। मुख्य कथा से असम्बद्ध इस प्रसंग की योजना भक्ति-प्रतिपादन की दृष्टि से की गई है, इसीलिए आधार-ग्रन्थों में इस प्रसंग का संकेत नहीं मिलता है। प्रस्तुत प्रसंग इसी रूप में 'शर्मा रा०' तथा 'ता० रा०' में भी मिलता है।[540] उद्देश्य एक होने पर भी वर्णन में असमानताएं मिलती हैं। 'मानस' में जिस सुन्दरता एवं कला-कौशल से प्रसंग का निर्वाह हुआ है, वैसा कश्मीरी रामायणों में नहीं।

3.7.4 सीता द्वारा महारावण-बध

कश्मीरी 'विष्णु प्रताप रामायण' तथा 'आनन्द रामावतारचरित' में महारावण युद्ध प्रसंग अलग-अलग रूपों में वर्णित है। 'वि० प्र० रा०' के अनुसार एक दूत से महारावण द्वारा देवलोक जीतने का समाचार पाकर सेना एवं शूरवीरों सहित राम महारावण के साथ युद्ध करने जाते हैं, किन्तु विफल होकर अयोध्या लौटना पड़ता है। गुरु वशिष्ठ सूझाव देते हैं कि सीता महाकाली का रूप धारण करके महारावण का ससैन्य संहार कर सकती हैं। राम के आदेश से महाकाली रूप धारण कर सीता महारावण को ससैन्य अपने अग्नि-मुंह में भस्म कर लेती हैं। तीस कोटि देवताओं द्वारा सीता की वन्दना करने के पश्चात् सीता अयोध्या लौटती हैं।[541] 'आनन्द रामावतारचरित' में राम द्वारा अपने शूरवीरों का गर्वपूर्ण बखान करने पर सीता महारावण के अद्वितीय बल का वर्णन करती हैं। राम ससैन्य महारावण को जीतने के लिए उत्तराखण्ड पहुंचते हैं, राम-लक्ष्मण के नाम तक से अनभिज्ञ महारावण संदेशवाहक हनुमान की बात पर हंसता है। राम के ससैन्य हारने पर अन्य देवताओं के संग विमान-आरूढ़ सीता मुस्कराती है, इस पर गुरु वशिष्ठ का उलाहना सुनकर क्रुद्ध होकर सीता उनसे आज्ञा चाहती है ताकि वे स्वयं महारावण का संहार करे। महाकाली के रूप में सीता सौ शीर्ष वाले महारावण का एक-एक सिर काट लेती हैं तो भक्त महारावण एक-एक वन्दना-श्लोक पढ़ता है। सीता द्वारा उसके सभी सिर काट कर धरने पर गुरु वशिष्ठ एवं अन्य देवी देवता उनकी वन्दना करते हैं।[542] 'अद्भूत रामायण', 'आनन्द-रामायण' तथा उड़िया, बंगाली

---

539. मानस 7. 58-103.
540. शर्मा रा०, पृ० 475-490; ता० रा०, पृष्ठ 279-280.
541. वि० प्र० रा०, लं०. अ० (161-6).
542. आ० रा०, पृष्ठ 201-216.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और मराठी रामकथा-काव्यों में भी सहस्र स्कन्ध रावण का सीता द्वारा वध प्रसंग वर्णित है,[543] किन्तु कश्मीरी वृत्तान्त पूर्णतः किसी से नहीं मिलता है। इस प्रसंग में शाक्त प्रभाव स्पष्ट है। एक ब्रज लोकगीत में भी सीता द्वारा रावण-वध प्रसंग वर्णित है।[544]

3.7.5 सीता-वनवास

विभिन्न रामकथाओं में प्रचलित सीता-त्याग के विविध कारणों में से सीता द्वारा रावण का चित्रांकन तथा रजक-वृत्तांत भी प्रमुख है।

3.7.5.1 चित्रांकन

'प्रकाश रामायण' में ननद के अनुरोध पर सीता रावण का चित्र बनाती हैं, जिसे लेजाकर वह राम को दिखाती हुई कहती है कि सीता प्रतिदिन रावण के चित्र की पूजा करती है। राम लक्ष्मण को सीता को एकान्त में मार डालने या वन में छोड़ देने का आदेश देते हैं।[545] यही कारण विविध देशी-विदेशी रामकथाओं में भी उपलब्ध है।[546] किन्तु कश्मीरी वृत्तांत पूर्णतः किसी भी अन्य वृत्तांत से नहीं मिलता है।

3.7.5.2 रजक वृत्तांत

दोनों भाषाओं की रामायणों में इसका वर्णन मिलता है। 'प्रकाश रामायण' में इसका संकेत मात्र मिलता है, अन्य कश्मीरी रामायणों में सविस्तार वर्णन है।[547] इसके अनुसार एक दूत सूचना देता है कि एक धोबी ने कैसे धोबिन को मित्र-गृह से लौटने पर कहा कि वह राम नहीं है जो उसे पुनः स्वीकार करले। 'वैदेही-वनवास' में रजक-वृत्तांत एवं लोकापवाद सुनकर राम द्वारा अपने भाइयों, गुरु वशिष्ठ और सीता के साथ मंत्रणा करके, सीता सप्रसन्न लोकारावन-निमित्त वन जाने के लिए प्रस्तुत होती हैं।[548] कवि ने सीता के चरित्र को लांछन-कलंक से रक्षा करने के उद्देश्य से कुल प्रथा-पालन की ओर भी निर्देश किया है, जिसके अनुसार गर्भवती स्त्री ऋषि-आश्रम में रहती हैं :—

> अन्य स्त्री जा, न सकी यह। है पूत प्रथा बतलाती ।।
> नृप गर्भवती पत्नी ही। ऋषि-आश्रम में है रहती ।। (6.73)

---

543. दे० डा० बुल्के : रामकथा, अनु० 639-641.
544. दे० प्रस्तुत शोध निबन्ध, पृष्ठ 25.
545. प्र० रा०, पृष्ठ 169 170.
546. दे० डा० बुल्के : रामकथा, अनु० 722-724.
547. प्र० रा०. पृष्ठ 169; वि० प्र० रा०, लं०. अ० (167-169); आ० रा० पृष्ठ 220-223; शर्मा रा०, पृष्ट 494-499; अमर रा०, 225-226.
548. वै० वन०, सर्ग (2-4).

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.7.5.3 वनगमन इच्छा

'प्र० रा०' में सीता द्वारा वन देखने की इच्छा-अभिव्यक्ति का भी उल्लेख मिलता है।[549] 'ता० रा०' में विचार-विमर्श पश्चात् राम लक्ष्मण संग उन्हें वन भेजते हैं।[550] रामचंद्रिका' में भी सीता इच्छा प्रकट करती हैं—जितने रिषि देवनदी तट। हौं तिनकौ पहिराइ फिरौं पट।'[551] लोकापवाद की सूचना पाकर भरत और लक्ष्मण के विरोध करने पर भी वे सीता के वनवास का आदेश देते हैं।[552] 'गो० रा०' में सीता बन-घूमने की इच्छा प्रकट करती हैं और लक्ष्मण द्वारा अकेली बन में छोड़ देने पर ही उसे अपने 'त्याग' का परिचय मिलता है।[553]

आधार ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण' में सीता द्वारा तपस्वियों के आश्रम देखने की अभिलाषा प्रकट करने, दूतों से लोकापवाद सुनने, भरत और लक्ष्मण के सम्मुख जनश्रुति कहकर सीता को वन में छोड़ने के आदेश का विस्तृत वर्णन मिलता है,[554] जिसका अनुकरण दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में विविध रूपों में उपलब्ध है।

3.7.5.5 सीता-वन-गमन

कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' में विवशत: लक्ष्मण को आदेश का पालन करना पड़ता है। सीता को 'वाल्मीकि आश्रम' में अचेत छोड़कर लौटते हैं। सचेत होने पर सीता को अकेली पाकर करुण विलापों के अन्तर्गत बीते जीवन की स्मृति, स्वामी राम से परिकल्पित आत्मसंवादों के परिवेश में करती हैं। अश्रु भीगी जिह्वा एवं विदीर्ण हृदय से राम की वन्दनाएं करती हैं। वाल्मीकि मुनि उन्हें देखकर सादर अपनी कुटया में ले जाते हैं।[555]। 'आ० रा०' में सीता वाल्मीकि ऋषि के पूछने पर अपने जीवन का सारा वृत्तांत सुनाती है।[556] 'अमर रामायण' के अनुसार सीता के करुण प्रलाप सुनकर सरस्वती उन्हें सान्त्वना देने आती हैं। क्षुब्ध लक्ष्मण के अयोध्या लौटने पर राम उन्हें धैर्य बंधाते हुए राजा नृग की कहानी सुनाते हैं।[557] 'वाल्मीकि रामायण' में भी राजा नृग के उपाख्यान सुनाने का वर्णन मिलता है।[558]

---

549. प्र० रा०, पृ० 169.
550. ता० रा०, पृ० 282-284.
551. रा० चं० 32-23.
552. वही 33. 26-45.
553. गो० रा०, पृ० 204.
554. वा० रा० 7 सर्ग 42-45.
555. प्र० रा०, पृ० 171-177.
556. आ० रा०, पृष्ठ 229.
557. अमर रा०, पृष्ठ 226-234.
558. वा० रा० 7. सर्ग 53-54.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'शर्मा रामायण' में सीता को वाल्मीकि आश्रम पहुंचाकर लक्ष्मण के लौटने पर कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा की मोक्ष-प्राप्ति वर्णित है।[559] अन्य किसी रामायण में यह प्रसंग यहां नहीं मिलता है।

'वाल्मीकि रामायण' में वनगमन-प्रसंग में मार्ग में सीता-लक्ष्मण संवाद, गंगा पार करने, लक्ष्मण द्वारा सीता-परित्याग की सूचना देने, सीता विलाप, लक्ष्मण द्वारा सीता का राम के लिए सन्देशा कहने तथा सीता के आश्रम-गमन का विस्तृत वर्णन मिलता है।[560] 'रामचंद्रिका' में गंगा पार करने पर गहन निर्जन बन देखकर सीता के मन में सन्देह उत्पन्न होता है और लक्ष्मण को निरुत्तर पाकर वह अचेत सी होती हैं। लक्ष्मण के लौटने पर वाल्मीकि सीता का परिचय प्राप्त कर अपना परिचय देते हुए उनको दो पुत्र होने की भविष्यवाणी करके अपने संग आश्रम ले चलते हैं।[561] 'गो० रा०' में वाल्मीकि सीता को दुर्गा समझकर वन्दना करके उन्हें अपने आश्रम ले जाते हैं।[562] 'वैदेही वनवास' में लक्ष्मण वन में अकेला न छोड़कर उन्हें 'वाल्मीकि-आश्रम' पहुंचाते हैं। वाल्मीकि सीता का सत्कार करते हैं।[563] लक्ष्मण राम से सीता की आतुर विरह-दशा का वृतांत सुनाते हुए सीता का सन्देश भी सुनाते है।[564]

3.7.6 लव-कुश जन्म

लव-कुश जन्म के दो मुख्य रूप मिलते हैं—सीता द्वारा यमल लव-कुश को जन्म देना तथा वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि। 'वाल्मीकि रामायण' में सीता यमल पुत्र-लव-कुश को जन्म देती हैं.[565] इसी के आधार पर 'मानस', 'रामचंद्रिका' और 'वैदेही-वनवास' में क्रमशः लव-कुश जन्म का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है :

1. दुइ सुत सुन्दर सीता जाए। लव कुस वेद पुरानन्ह गाए।[566]

2. पुत्र द्वै भए एक श्रीकुस दूसरो लव जानि।
जातकर्मंहि आदि दै सब किए बेद बखानि।।[567]

---

559. शर्मा रा०, पृ० 502.
560. वा० रा० 7. सर्ग 46-49.
561. रा० चं० 33. 46-55.
562. वही पृ० 204-205.
563. वै० वन०, सर्ग 7-8.
564. वही, सर्ग 9.
565. वा० रा० 7.66.
566. मानस 7.25.
567. रा० चं० 33.56.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. पग वन्दन कर ले विदा गये दनुजकुल काल।
इसी दिवस सिय ने जने युगल अलौकिक लाल।[568]

कश्मीरी—'आनंद रामावतार चरित', 'शर्मा-रा०' तथा 'ता० रा०' में भी लव-कुश का जन्म एक साथ हुआ वर्णित है।[569]

3.7.7 वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि

वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि का वर्णन तिब्बती रामायण, कथा-सरित सागर, रामायण मसीही, आनंद रामायण, राम जातक, ब्रह्मचक्र, रामकियेन, रामकेर्ति, सेरी राम, हिकायत महाराज रावण तथा सिंहली रामकथा आदि देशी तथा विदेशी राम-कथाओं में विभिन्न रूपों में मिलता है।[570] हिन्दी और कश्मीरी रामायणकारों ने भी इस पूर्व प्रचलित वृत्त को निजी ढंग से अपनाया है। 'गोविन्द रामायण' के अनुसार 'वाल्मीकि' ही सीता की अनुपस्थिति में लव को पालने में न देखकर कुश की सृष्टि करते हैं, महामुनि की असीम कृपा समझकर आश्रम लौटने पर सीता दूसरे पुत्र को पाकर प्रसन्न होती हैं।[571]

'प्रकाश रामायण', 'वि० प्र० रा०' तथा 'अमर रामायण' में सीता केवल लव को जन्म देती हैं और कुश की सृष्टि वाल्मीकि द्वारा होती है।[572] 'प्र० रा०' के अनुसार एक दिन सीता लव को साथ लेकर वन चली जाती हैं। वाल्मीकि पालने में शिशु को न पाकर सन्देह करते हैं कि कहीं कोई पशु-पक्षी उसे उठा न ले गया हो। एक कुशा उठाकर सदाशिव के वरदान से उसे जीवन प्रदान कर लव की ही शक्ल का शिशु बनाकर पालने में सुलाते हैं। सीता लौटकर दूसरे शिशु को देखकर आश्चर्य-चकित होती हैं। ऋषि नव-शिशु का नाम कुश रखते हैं, सीता सहर्ष उसे भी पुत्रवत ग्रहण करती हैं।[573] 'वि० प्र० रा०' में लव-कुश के जन्म पर गंगा, यमुना, सरस्वती आदि अष्टदेवियां, शिव-पार्वती और गणेश लव कुश को आशीर्वचन देने के लिए वाल्मीकि-आश्रम पधारते हैं। सीता पार्वती की और वाल्मीकि शिव जी की अराधना भी करते हैं।[574] शिव प्रतिष्ठा-प्रतिपादन के उद्देश्य से ही शिव-भक्ति की विस्तृत विवेचना की गई है।

---

568. वै० वन० 11.98.
569. आ० रा०, पृष्ठ 229-230; शर्मा रा०, पृष्ठ 517; ता० रा०, पृ० 284
570. रामकथा-उत्पत्ति और विकास, अनु० 743-745.
571. गो० रा०, पृष्ठ 206-207.
572. प्र० रा०, पृ० 179-180, वि० प्र० रा०, लं०. अ 190:, अमर रा०, पृ० 234-43.
573. प्र० रा०, पृ० 179-180.
574. वि० प्र० रा०, अ० 177-189.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.7.8 लव-कुश वर-प्राप्ति

'प्रकाश रामायण' के अनुसार वाल्मीकि ऋषि घास के बने धनुष और 'दर्ब' (कुशा) के बाण बनाकर लव कुश को सौंपते हुए वरदान देते हैं कि जिस किसी पर भी दो बालक ये बाण चलायेंगे, उसकी मृत्यु निश्चित है।[575]

3.1.9 अश्वमेध यज्ञ

'प्रकाश रामायण' में अश्वमेध-यज्ञ के उल्लेख दो स्थानों पर मिलते हैं, एक सीता त्याग पूर्व और दूसरा पश्चात्। 'रामराज्य' के सुखद-वर्णन के अन्तर्गत राम दिवंगत पिता की याद में पुत्र-कामना से क्षुब्ध होते हैं, तो गुरु वशिष्ठ उन्हें अश्वमेघ यज्ञ करने का परामर्श देते हैं। यज्ञ का 'प्रसाद-अमृत' सीता को पिलाया जाता है।[576] सीता-त्याग पश्चात् सीता-विरह में राम पुनः दुखी होते हैं, वशिष्ट इस दुख क निवारण एवं सर्वकल्याणार्थ अवश्वमेध यज्ञ करने की सलाह देते हैं। यज्ञाश्व के साथ भरत शत्रुघ्न भारी सेना लेकर साथ हो लेते हैं।[577] 'वि० प्र० रा०' के अनुसार अनेकानेक राक्षसों समेत रावण के मरणोपरांत राम द्वारा शिव जी से पाप-दोष के निवारणार्थ उपाय पूछे जाने पर शिव जी उन्हें अश्वमेघ-यज्ञ रचने का परामर्श दे देते हैं। वशिष्ठ जी के निर्देशन में सामग्री-संचयन तथा वेदविविद्यानुरूप यज्ञ किया जाता है।[578] 'आ० रा०' में भी ब्राह्मणों (रावण तथा महारावण आदि) की हत्या के पाप के निवारणार्थ ही राम अश्वमेध यज्ञ रचते हैं।[579] 'शर्मा रा०' के अनुसार अश्वमेध्र यज्ञ में महादेव, ब्रह्मा इन्द्रादि देवता राजा सुग्रीव एवं हनुमान आदि समस्त बानर भाग लेते हैं।[580] 'अमर रा०' में गोमती नदी के तट पर यज्ञ का आयोजन किया जाना वर्णित है।[581] 'रामचंद्रिका' में कश्यप की सलाह से सीता की स्वर्णमयी मूर्ति बनाकर राम अश्वमेध यज्ञ रचते हैं। शत्रुघ्न यज्ञाश्व के साथ ससैन्य जाते हैं।[582]

आधारग्रन्थ 'वाल्मीकि-रामायण' में लक्ष्मण ही अश्वमेध-यज्ञ का महात्म्य-कथन सुना कर यज्ञ रचने का प्रस्ताव रखते हैं।[583] इसमें यज्ञ का विस्तृत वर्णन मिलता है, जिसमें वाल्मीकि-आश्रम से आए लव-कुश रामायण-कथा गा-गा कर सुनाते हैं।[584]

---

575. प्र० रा०, पृष्ठ 180-181.
576 प्र० रा०, पृष्ठ 168.
577. प्र० रा०, पृष्ठ 182.
578. वि० प्र० रा०, अश्व. अ० 1-3.
579. आ० रा०, पृष्ठ 232-233.
580. शर्मा रा०, पृ० 510-512.
581 अमर रा०, पृष्ठ 243-245.
582. रा० चं० 25. 2-9.
583. वा० रा० 7.84.
584. वा० रा० 7. 91-94.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3.7.10 शत्रुघ्न-लवणासुर युद्ध

'बाल्मीकि रामायण' में महर्षि च्यवन तथा अन्य ऋषियों द्वारा लवणासर के अत्याचारों का वर्णन करने पर राम शत्रुघ्न को उक्त असुर का संहार करने भेजते हैं और युद्ध में लवणासुर का वध करके शत्रुघ्न मथुरा बसाते हैं।[585] यहां लवणासुर-वध का अश्वमेध-यज्ञ से कोई सम्बन्ध नहीं है, बल्कि उसके पूर्व का प्रसंग है। इसी का अनुकरण 'रामचंद्रिका' में किया गया है।[586] 'गोविन्द रामायण' में राम द्वारा लवणासुर को मारने के लिए अभिमंत्रित तीर देने और लवणासुर वध पर मथुरा का शासन करने का भी वर्णन मिलता है।[587] 'वाल्मीकि रामायण' के आधार पर[588] 'वैदेही-वनवास' में शत्रुघ्न मथुरा जाते हुए वाल्मीकि आश्रम में सीता से भेंट करते हैं।[589]

कश्मीरी वि० प्र० रा०' तथा 'शर्मा रामायण' में शत्रुघ्न-लवणासुर युद्ध राम के अश्वमेध यज्ञ से ही सम्बंधित है। लवणासुर द्वारा यज्ञाश्व पकड़ लेने पर यह युद्ध छिड़ता है। दोनों रामायणों में युद्ध का विस्तृत वर्णन मिलता है, जिसमें लवणासुर कई पुत्रों तथा विराट सेना समेत मारा जाता है।[590] अन्य किसी भी रामायण में इस युद्ध का उल्लेख नहीं मिलता है।

3.7.11 लव–कुश युद्ध

'वाल्मीकि रामायण' में लव-कुश युद्ध प्रसंग नहीं है, किन्तु विविध देशी-विदेशी रामकथा-काव्यों में इसका वर्णन इतना प्रचलित हो गया[591] कि दोनों आलोच्य भाषाओं के रामायणकारों ने वनवास-प्रसंग के अन्तर्गत इसका वर्णन अनिवार्य समझा। पूर्व प्रचलित विविध युद्ध-कारणों में दोनों भाषाओं के रामकथा काव्यों में लव कुश द्वारा यज्ञाश्व बांधना ही वर्णित है। विस्तृत युद्ध-वर्णनों में से यहां पर प्रमुख विशेषताओं की ओर ही संकेत किया जाता है।

'प्रकाश रामायण' के अनुसार यज्ञाश्व पकड़ने पर कुश को भरत शत्रुघ्न अबोध बालक समझ कर स्नेह-पूर्ण शब्दों में समझाते हैं, किन्तु ललकारने पर तथा युद्धारम्भ करने पर कुश युद्ध में भरत के बाण से मूच्छित होते हैं। फिर लव समर-भूमि में पहुंचते हैं। लव-कुश के बाणों से क्रमशः भरत तथा शत्रुघ्न की मृत्यु होती है, दूसरे

---

585. वा० रा०, 7. 60-63, 68-70.
586. रा० चं० 34. 35-57.
587. गा० रा०, पृष्ठ 200-202.
588. वा० रा० 7 65-66.
589. वै० वन०, सर्ग 11.
590. वि० प्र० रा०, अश्व. अ (4-11), शर्मा रा० पृष्ठ 513-516.
591. रामकथा—उत्पत्ति और विकास, अनु० 746-751.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युद्ध में लक्ष्मण लव के बाण से आहत होते हैं । तीसरे युद्ध में राम लव-कुश को पुनः स्नेह-पूर्वक समझाने का असफल प्रयत्न करते हैं, उन्हें अपना एक रथ युद्ध करने के लिए देने को प्रस्तुत होते हैं, किन्तु प्रत्युत्तर में लव उलाहने देकर सूर्य से रथ मांग लेते हैं । युद्ध में राम भी ससैन्य आहत होते हैं ।[592] वि० प्र० रा०' में लव ही स्वर्ण-माल-पट पढ़कर यज्ञाश्व पकड़ लेते हैं और कुश तत्पश्चात् युद्ध में सम्मिलित होते हैं ।[593] लव-कुश द्वारा दिखाए गए मृत राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न के मुकटों को देखकर पुत्रों से उनका परिचय देते हुए समस्त अयोध्या सेना को भूमिशायी पाकर सीता रुदन-प्रलाप करती हैं । वाल्मीकि द्वारा अमृत वर्षा से ही समस्त धराशायी सेना पुनः जीवित हो उठती है ।[594] 'वि० प्र० रा०' में अकेले बचे हनुमान सीता को सारा युद्ध-वृत्तांत सुनाते हैं ।[595]

'रामचंद्रिका' तथा गोविन्द रामायण में भी लव माल-पट के लेख को पढ़कर यज्ञाश्व को बांध लेते हैं ।[596] 'रामचद्रिका के अनुसार युद्ध में लव शत्रुघ्न के बाण से मूर्छित होते हैं और कुश ससैन्य शत्रुघ्न को भूमिशायी करके लव के शरीर से बाण निकालते हैं ।[597] इसी तरह क्रमशः लक्ष्मण और भरत के समझाने पर वीरोचित ललकार के साथ लव-कुश युद्ध में उनको भी धराशायी करते हैं ।[598] राम युद्ध-पूर्व लव-कुश से माता-पिता के बारे में पूछते हैं, उनकी जननी 'सीता' का नाम सुनकर उनका हृदय स्नेह से गद्गद् हो उठता है. युद्ध में लव-कुश उनको भी भूमिशायी करते हैं ।[599] 'रामचंद्रिका' में लव-कुश विभीषण शत्रुघ्न, अंगद आदि शूरवीरों पर तीखे व्यंग्य करते हैं ।

विभीषण से कहते हैं :

> देव बधू जबहीं हरि ल्यायो । क्यों तबहीं तजि ताहि न आयो ।
> यों अपने जिय के डर आयो । क्षुद्र सबै कुल-छिद्र बतायो ।।[600]

---

592 प्र० रा०, पृ०, पृष्ठ 183-193.

593. वि० प्र० रा०, अश्व अ०. 22-23.

594. प्र० रा०, पृष्ठ 193-200.

595. वि० प्र० रा०, अश्व०. अ० 30.

596. रा० चं० 35.12, गो० रा०. पृ० 208.

597. रामचंद्रिका 35. 19-31.

598. रामचंद्रिका, सर्ग 36-37.

599. वही, सर्ग 38.

600. वही 37. 38.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शत्रुघ्न से कहते हैं :

"कौन शत्रु तू हत्यो जू नाम शत्रु हा लियो ।"[601]

अंगद से कहते हैं :

"अंगद जो तुम पै बल हो तौ । तौ वह सूरज को सुत को तौ ।।
देखत ही जननी जु तिहारी । वा संग सोवति ज्यों बर नारी ।।"[602]

'रामचंद्रिका' में भी विभिन्न मुकुटों को देखकर और हनुमान को पहचानकर सीता शोक का वर्णन मिलता है ।[603] उनकी पीड़ा इन शब्दो में मुखर हो उठती है :

'माता सब काकी करी विधवा एकहि बार ।।
मो सी और न पापिनी पाए बंस कुठार ।।[604]

'रामचंद्रिका' में सीता की सतीत्व साक्षी से ही समस्त मृत सेना पुनः जीवित हो उठती है ।'[605]

'गोविन्द रामायण' में भी युद्ध का विस्तृत वर्णन हुआ है जिसमें क्रमशः शत्रुघ्न लक्ष्मण भरत और राम ससैन्य लव-कुश के हाथों मारे जाते हैं ।[606] सीता मुकुट देखकर रुदन-प्रलाप करती हैं और पति के साथ सती होने के लिए लकड़ियां एकत्रित करने के लिए पुत्रों को आदेश देती हैं । योगाग्नि मे अपने को भस्म करने के प्रयत्न में वह आकाशवाणी होने से रुक जाती हैं । सीता के सतीत्व की शपथ से सारी मृत सेना, पुनः जीवित होती है ।[607]

3.7.12 अयोध्या-आगमन :

'रामचंद्रिका' तथा गो० रा०' में ससैन्य राम के पुनर्जीवित होने पर सीता से सप्रेम मिलन और लव-कुश तथा सीता समेत अयोध्या लौटने का वर्णन मिलता है ।[608] 'वैदेही वनवास' में युद्ध का कोई उल्लेख नहीं है, रामादेश से बारह वर्ष बीत जाने पर सीता पुत्रों–सहित अयोध्या लौटती हैं ।[609]

---

601. रा० चं, 35.18.
602. वही, 38.9.
603. वही, 39.1.
604. वही, 39.2.
605. वही, 39.10-11.
606. गो० रा०, पृ० 208-228.
607. गो० रा०, पृ० 228–230.
608. रा० चं० 39, गो० रा०, पृष्ठ 230-232.
609. वै० वन० सर्ग 12.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'प्रकाश रामायण' के अनुसार पुनर्जीवित होने पर राम वाल्मीकि आश्रम में सीता से अयोध्या चलने के लिए विनम्र शब्दों में अनुरोध करते हैं किन्तु सीता हठपूर्वक विरोध कर लेती हैं।[610] सीता पार्वती के प्रति वन्दना में अपने जीवन की आद्यन्त समस्त दुखमयी गाथा वर्णित करती हैं।[611] वाल्मीकि पतिव्रता धर्म की प्रतिष्ठा एव धर्म-कर्म का वर्णन करके उनसे रामाज्ञा स्वीकार करने का अनुरोध करते हैं। वाल्मीकि मुनि सीता के भूमि-अवतार का उल्लेख करके राम को परामर्श देते हैं कि वे अयोध्या में यज्ञ रचने की तैयारियां करें, जिसमें वे भी सीता समेत सम्मिलित होंगे। यज्ञ-शाला पर ब्राह्मण, ऋषि-मुनि सीता की अनिवार्य उपस्थिति पर बल देते हैं तो शत्रुघ्न को सीता के पास बुलाने के लिए भेजा जाता है। वाल्मीकि के समझाने पर राम के प्रति वन्दना-स्तुति के पश्चात् सीता अयोध्या लौटती हैं।[612] 'वि० प्र० रा०' में अमृत-वर्षा से पुनर्जीवित होकर राम वाल्मीकि से सीता के बारे मे पूछते हैं। वाल्मीकि सीता की वन्दना-अर्चना करते हैं।[613] यहां राम-सीता के विस्तृत संवादों का वर्णन मिलता है। सीता राम की शरण होकर वन्दना करती हैं और राम द्वारा ज्ञान, भक्ति और तीर्थों की विवेचना पश्चात् सीता सहर्ष राम के साथ अयोध्या लौटती हैं। अश्वमेघ यज्ञ की सफलता पर ब्राह्मण, ऋषि-मुनि और देवता प्रसन्न होते हैं। समागत राजाओं को राजनीति धर्मादि विषयक उपदेश देकर राम उन्हें सादर विदा करते हैं।[614]

3.7.13 'राजलीला' चित्रण

'विष्णु प्रताप रामायण' में 'राजलीला-काण्ड' के अन्तर्गत रामराज्य सतसंग-वर्णन, राजकुमारों के विवाह संस्कारों, माताओं के स्वर्गारोहण तथा राज्य-विभाजन आदि का विस्तृत वर्णन मिलता है।[615] राजकुमारों के राज्याभिषेक और निजी राज्यों में गमन पश्चात् राम-सीता द्वारा लव के कश्मीर राज्य-मण्डल और हरिद्वार यात्रा करने के पश्चात् अयोध्या लौटने का वर्णन उपलब्ध है।[616]

3.7.14 सीता का भूमि-प्रवेश

महाकाव्य के सुखांत प्रिय कवियों ने इस घटना का कोई उल्लेख नहीं किया सीता की पुनः परीक्षा और राम के विलापों का वर्णन उन्होंने उचित न समझा।

---

610. प्र० रा० पृ० 201-202.
611. वही, पृष्ठ 202-205.
612. वि० प्र० रा०
613. वि० प्र० रा०, अश्व. अ० 40, 51-52.
614. वही, अश्व. अ० 53-70.
615. वही, राज. अ० 1-5
616. वही, राज. (10-25).

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'वाल्मीकि रामायण' के आधार[617] पर कुछ कश्मीरी रामायणों में इसका वर्णन मिलता है। 'प्रकाश रामायण' में यज्ञशाला में राम सीता को आदेश देते हैं कि वे वहीं ऋषि-मुनियों के समक्ष अपनी पवित्रता की साक्ष दें। सीता द्वारा वन्दना करने पर पृथ्वी साक्षात् उपस्थित होती हैं। विष्णु रूप राम की वन्दना-स्तुति पश्चात् भूमि फट जाती है और सीता उसमें समा जाती हैं।[618] उक्त रामायण के अनुसार सीता 'कुरीगाम' (कवि के गांव) से चार मील दूरी पर 'शंकरपुर' (डूरु-कश्मीर) में ही भूमि में समा जाती हैं और वाल्मीकि ही करुण-प्रलाप करते हुए राम से वह स्थान दिखाते हैं।[619] 'अमर रामायण' में भी इसी स्थान का उल्लेख मिलता है।[620]

'शर्मा रामायण' तथा 'आनन्द रामावतारचरित' के अनुसार वाल्मीकि आश्रम की भरी सभा में ही सीता साक्षी देकर पृथ्वी में समा जाती हैं, तत्पश्चात् राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न सारी सेना के साथ अयोध्या लौटते हैं।[621] अन्य रामायण-कारों ने न सीता के भूमि-प्रवेश का वर्णन किया है और न राम के विलापों का ही।

'गोविन्द रामायण' में भूमि-प्रवेश के लिए एक नया कारण ढूंढ़ा गया है। अयोध्यागमन और अनेकानेक वर्षों के पश्चात् स्त्रियों के अनुरोध पर सीता रावण का चित्र बनाती हैं। राम के दिल में सन्देह उत्पन्न होता है, सीता उनका सन्देह दूर करने के लिए पृथ्वी से वर मांगकर उसमें समा जाती हैं।[622]

3.7.15 स्वर्गारोहण

राम द्वारा लव-कुश में राज्य विभाजित करने के पश्चात् राम का समस्त मित्रों, भक्तों आदि के साथ स्वर्ग-धाम जाने का संक्षिप्त वृत्त कश्मीरी 'प्र० रा०,' 'शं० रा० तथा 'ता० रा०' में उपलब्ध है।[623] 'वि०प्र०रा०' तथा 'शर्मा रामायण' में वाल्मीकि रामायण' के आधार पर काल से राम की मंत्रणा, दुर्वासा-आगमन, लक्ष्मण-अपराध एवं अन्तर्ध्यान होना तथा राम का अभीष्ट मित्रों और भक्तों समेत बैकुण्ठधाम पहुंचने का विस्तृत वर्णन मिलता है।[624]

3.7.16 लक्ष्मण-शाप

कश्मीरी 'अमर रामायण' में लक्ष्मण-मृत्यु सीता के शाप के कारण वर्णित है,

617. वा० रा० 7.97.
618. प्र० रा०, पृ०, 214-217.
619. वही, पृ० 217.
620. अमर रा०, पृ० 262.
621. शर्मा रा०, पृ० 529-531; आ० रा०, पृ० 246.
622. गो० रा०, पृ० 226-237.
623. प्र० रा०,पृष्ठ 219-222; शं० रा०, खण्ड 4. अ 6; ता० रा०, पृ० 291-294.
624. वि० प्र० रा० बैकुण्ठ. अ० 1-16; शर्मा रा०, पृ०532-538.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिसके दो अपराध बताए गए हैं —बनवास में राम-सीता से छिपाकर उनका 13 वर्ष लगातार व्रत रखना तथा सीता को अकेले बन में छोड़ देना।[625]

'गोविन्द रामायण' में सीता का विरह असह्य होने पर राम योगाभ्यास द्वारा परमधाम चले जाते हैं तत्पश्चात भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न भी क्रमशः उनका अनुकरण करते हैं। उनके साथ सभी स्त्रियां सती होती हैं। पूरा राज्य चारों पुत्र आपस में बांट लेते हैं।[626]

3.7.17 अन्त :

दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों के अन्त पर राम-वन्दना तथा रामकथा माहात्म्य के निर्देश विभिन्न रूपों में उपलब्ध हैं।

3.8 निष्कर्ष

दोनों कश्मीरी और हिन्दी रामकथा-काव्यों की तुलनात्मक कथा-विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि रामकथा विषयक मुख्य घटनाओं के वर्णन में प्राप्य अधिकतर साम्य का मूलाधार 'वाल्मीकि रामायण' ही है। राम-भक्ति के उत्तरोत्तर विकास एवं रामकथा के मुख्य पात्रों में अलौकिकता या अवतारवाद के निरूपण के परिणामस्वरूप मूल परम्परागत रामकथा के प्रसंगों के चित्रण में दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने यथोचित परिवर्तन एवं परिवर्द्धन किए हैं। ऐसे परिवर्तनों के लिए कई स्थलों पर दोनों भाषाओं के भक्त-कवियों ने प्रधान रूप से 'अध्यात्म-रामायण' से प्रेरणा ले ली है। रावण की रामभक्ति-भावना और 'सीता-छाया' की नवीन उद्भावना का आधार 'अध्यात्मरामायण' ही है। 'वाल्मीकि रामायण' और 'अध्यात्मरामायण' के अतिरिक्त दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में वर्णित कई प्रसंगों का आधार विभिन्न पुराण, उपनिषद और अन्य संस्कृत राम-साहित्य भी है। पौराणिक कथाओं का सूत्रपात दोनों रामकथा-काव्यों में अपने-अपने ढंग से हुआ है, जिनमें प्रधानतः साम्य मिलता है। रामाख्यान से सम्बधित संस्कृत के नाटकों एवं काव्यों का प्रभाव वस्तु-सगठन की अपेक्षा काव्य-शैली पर अधिक पड़ गया हैं। हिन्दी रामकथा-काव्यों पर जिनका अधिक व्यापक रूप से प्रभाव देखा जा सकता है।

दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में कई प्रसंगों के चित्रण में अलग-अलग से आदि-काव्य से लेकर समस्त पूर्ववर्ती संस्कृत एवं अन्य भाषाओं के राम-साहित्य के आधार पर तथा नवीन उद्भावनाओं के परिणामस्वरूप वैषम्य भी मिलता है। कश्मीरी रामायणों में ऐसे अनेक प्रसंगों का चित्रण हुआ है जिनका वर्णन या उल्लेख हिन्दी रामकथा-काव्यों में अप्राप्य है, यद्यपि उन प्रसंगों का उल्लेख या

---

625. अमर रा०, पृष्ठ 276-280.
626. गो० रा०, पृष्ठ 239-240.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सविस्तार वर्णन संस्कृत के विभिन्न आधार ग्रन्थों एवं अन्य देशी-विदेशी भाषाओं के रामकथा-काव्यों में उपलब्ध है। कश्मीरी-रामायणों में वर्णित निम्नलिखित प्रसंग प्रधान रूप से उल्लेखनीय है, जिनके मूल रूप में कवियों की मौलिकता एवं नवीन उद्भावनाओं का भी यथेष्ट समावेश हुआ है।

गंगावतरण-प्रसंग, अहल्या-गौतम की कथा, सीता-जन्म वृत्तांत —रावणात्मजा एवं रक्तजा, राम का पिंडदान करना, रावण-जटायु युद्ध के अन्तर्गत सीता के परामर्श से रावण द्वारा जटायु को रक्त सने पत्थर खिलाना, बालि-सुग्रीव की जन्म कथा, हनुमान का जन्म-वृत्त, नारद द्वारा हनुमान को लंका-निर्माण की कथा एवं रावण-चरित सुनाना, नल-नील की शाप-कथा, रावण द्वारा राम-सेना की गणना सेना-प्रशिक्षण, सुमित्रा का स्वप्न, मेघनाद-सुलोचना की राम-भक्ति, महीरावण-युद्ध, पाताललोक में हनुमान-मकरध्वज भेंट, हनुमान के पुत्र मकरध्वज की जन्म-कथा, नरांतक-दधिबल युद्ध, निराश रावण द्वारा कैलाश-यात्रा और मकेश्वर लिंग लाना, माया-सीता वध, रावण की अपूर्ण आकांक्षाएं, लक्ष्मण को ज्ञानोपदेश, सीता द्वारा महारावण का वध, रावण के चित्र के कारण सीता का त्याग आदि। कई प्रसंगों का हिन्दी काव्य ग्रन्थों में उल्लेख-मात्र मिलता है और उनका सविस्तार वर्णन कश्मीरी रामकथा-काव्य में हुआ है। इसी तरह हिन्दी रामकथा काव्य में कई प्रसंगों का चित्रण हुआ है जिनका वर्णन कश्मीरी रामायणों में नहीं हुआ है, जैसे 'मानस' में सीता का माया रूप धारण कर चित्रकूट में सासों की सेवा करना, सुमत्र-संवाद, लक्ष्मण-निषाद संवाद, सुग्रीव-प्रमाद, लंका में हनुमान-विभीषण भेंट, नागपाश बद्धता आदि। इसी तरह परवर्ती राम-काव्य में भी कई प्रसंगों के चित्रण में नवीन उद्भावनाओं का समावेश हुआ है जिसका निर्देश ऊपर कथा-विवेचन के अन्तर्गत हुआ है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4 चरित्र-चित्रण

कश्मीरी और हिन्दी रामकथा-काव्यों के सभी पात्रों का पारस्परिक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत निबन्ध-परिधि में संभव न समझते हुए यहां प्रमुख काव्य-ग्रन्थों के आधार पर रामकथा के मुख्य चरित्रों की ही तुलना की गयी है। पुरुष पात्रों में से राम, भरत, लक्ष्मण, दशरथ, हनुमान तथा रावण और नारी पात्रों में से सीता कौशल्या, कैकेयी तथा मन्दोदरी के ही चरित्रों को तुलना के लिए चुना गया है।

4.1 पुरुष-पात्र

4.1.1 राम

दोनों भाषा-रामायणकारों ने राम का चरित्रांकन अलौकिक और लौकिक रूपों में किया है। अलौकिक रूप में वे निर्गुण-सगुण ब्रह्म और विष्णु-अवतार के रूप में चित्रित हुए हैं और लौकिक रूप में आदर्श मानव-चरित्र एवं कथा-नायक के रूप में।

4.1.1.1 निर्गुण-सगुण ब्रह्म रूप

कश्मीरी 'प्रकाश-रामायण' के अनुसार जीव, जगत्, प्रकृति के अतिरिक्त सगुण ब्रह्म, विष्णु और शिव में उनका ही रूप समाहित है।[1] 'वि० प्र० रा०' में भी राम 'परब्रह्म', 'विष्णु' और 'महेस' के त्रिगुणात्मक समरूप हैं, जीव-जगत् की सृष्टि, पालन और संहार वे स्वयं करते हैं। वे सर्वज्ञ, अजस्र, अगम, अपार आनंद गण एवं शांतिप्रदत्त अलौकिक गुणों से सर्वसम्पन्न हैं।[2] राम को नौ-गृहों, अष्ठ-सिद्धियों तथा नौ-निधियों का स्वामी कहा गया है, जिनका सुप्रकाश सूर्य और चन्द्रमा में विद्यमान है।[3] राम त्रिलोकस्वामी ब्रह्म हैं और सीता उनकी माया-शक्ति।[4] राम को वेदों तथा उपनिषदों का सार और ब्रह्म, विष्णु तथा शिव से

---

1. प्र० रा०, पृष्ठ 125.
2. अगम अपार सर्विज्ञ राम जानुन त्रिगुणात्मक सिथावर राम जानुन ॥
   अजर अमर परमात्मन राम अलौकिक परमानन्द गण राम ॥
   प्रभु परमात्मा निर्लीक रामइ महेश क परमानंद गणरामई ॥—
   —वि० प्र० रा०, पृ०.
3. वि० प्र० रा०, पृष्ठ 587.
4. यौहै माया पिता त्रिलूकी दाता महामायायि अभिरुंजि नाव सीता.
   —वि० प्र० रा० वन अ 30

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊंचा माना गया है।[5] राम के निर्गुण ब्रह्म-रूप का चित्रण 'आ० रा०' में भी सविस्तार हुआ है। 'शर्मा रा०' में राम को निर्गुण-सगुण ब्रह्म, विष्णु और शिव से भी ऊंचा माना गया है, वे सभी उनकी स्तुति-अर्चना करते हैं।[7]

'मानस' के राम भी केवल 'दाशरथि राम' न होकर निर्गुण, निर्विकार तथा मायेश ब्रह्म हैं, जिसका उल्लेख मानसकार पग-पग पर करते हैं। अलौकिक निर्गुण रूप में सारा विश्व उनकी माया से वशीभूत है।[8] राम के विराट् ब्रह्म-रूप के बारे में तुलसीदास स्पष्ट कहते हैं :—

राम ब्रह्म व्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना ।। (1.1।6)

कवि ने उसी ब्रह्म-रूप की व्याख्या 'एक अतीह अरूप अनामा'[9] शब्दों में की है। चरित-नायक राम के अखण्ड ब्रह्मत्व का उल्लेख गो० तुलसीदास ने 'विधि हरि शम्भु नचावन हारे'[10] तथा 'विष्णु कोटि सम पालन कर्ता'[11] के सर्वोत्तम रूप में किया है। 'रामचंद्रिका' में भी राम निराकारावस्था में साक्षात् ब्रह्म हैं।[12] वे अन्तर्यामी निर्गुण-सगुण, अनिर्वचनीय ज्योति-स्वरूप हैं, रज, सत और तम तीनों गुणों द्वारा वे जीव-जगत् की सृष्टि, पालन तथा संहार करते हैं। कच्छप, मीन, वाराह, वामन, नृसिंह, परशुराम, बुद्ध और वाल्मीकि सभी उनके विविध रूप धारण कर अवतरित हुए हैं।[13]

4.1.1.2 **विष्णु-रूप**

निर्गुण-ब्रह्म की अपेक्षा राम के सगुण-ब्रह्म या विष्णु-रूप का चित्रण कथा-काव्य में अधिक यथार्थ और स्वाभाविक ज्ञात होता है। राम के विष्णु-अवतार की वन्दना दोनों भाषा-रामायणों में देवी-देवताओं और पात्रों द्वारा करायी गई है। 'प्रकाश रामायण' में अहल्या, कैकेयी, मन्दोदरी, मारीच राक्षस, इन्द्रजीत तथा वाल्मीकि ऋषि आदि राम के विष्णुअवतार रूप की ही वन्दना करते हैं।[14] 'वि० प्र० रा०'

5. वि० प्र० रा०, पृष्ठ 723.
6. आ० रा०, पृ० 2-3.
7. शर्मा रा०, पृष्ठ 11.
8. मानस 1. श्लोक 6.
9. वही 1.13.
10. वही 2.127.
11. वही 7.92.
12. रा० चं० 10.40.
13. वही 20. 15-24.
14. प्र० रा० (अक०), पृष्ठ 55-56; पृष्ठ 51; प्र० रा०, पृ० 153-154; 47, 114-115, 210.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में शिवाजी[15], सुलोचना[16] और बिन्दुमती[17] भी राम के विष्णुअवतार की स्तुति करते हैं। 'आ० रा०' में शेषनाग पर आसीन समस्त कलाओं से युक्त विष्णु-राम की वन्दना कवि[18] और देवता[19] अलग-अलग से करते हैं। 'शर्मा-रामायण' में भी ब्रह्मा, इन्द्र, महादेव शिवजी के अतिरिक्त मारीच, बिन्दुमती और मन्दोदरी द्वारा राम के विष्णुअवतार रूप की अलग-अलग वन्दना करायी गई है।[20]

तुलसीदास ने विष्णु को 'हरिपद'[21] से अभिहित करके 'रामचरितमानस' को 'हरिचरितमानस'[22] कहा है। 'मानस' में राम और विष्णू की एकरूपता या अभिन्नता का प्रतिपादन कथारम्भ में राम-जन्म से ही मिलता है, विष्णु-रूप राम कौशल्या के ही अनुरोध पर शिशु-लीला करते हैं। परवर्ती हिन्दी राम-काव्य में भी अधिकतः राम के विष्णु अवतार रूप का ही उल्लेख मिलता है।

4.1.1 3 लौकिक–रूप

राम का लौकिक आदर्श चरित्र ही उनको ब्रह्मकक्षीय ऊंचाई तक ले जाकर उन्हें 'मर्यादा-पुरुषोतम' की सज्ञा से अभिहित करता है। राम में आदर्श मानवोचित सरलता, सहृदयता, उदारता, सहिष्णुता, वीरता, विवेक, संयम तथा रागानुराग के वे सभी गुण-तत्व विद्यमान हैं, जिनके विपुल सामंजस्य से उनका चरित्र लोक में प्रतिष्ठित आदर्श की संस्थापना करने में समर्थ सिद्ध होता है। सभी उदात्त गुणों से सर्वसम्पन्न वे आदर्श पुत्र, भाई, पति और राजा के रूप में पाठकों के सामने आते हैं।

4.1.1-4 पुत्र-रूप

'प्रकाश रामायण' में माता-पिता की आज्ञा शिरोधार्य करके और उनके विदा होते हुए उनकी आंखों से अश्रु-मोती टपकते हैं।[23] इसी तरह पिता की मृत्यु की सूचना पाकर वे साधारण मानव की भांति करुण प्रलाप करते हुए फूट-फूट कर रोते हैं।[24] दिवंगत पिता के 'सत्य-धर्म' पर बार बार 'बलि होने' की आकांक्षा

---

15. वि० प्र० रा०, लं. अ० (125-6).
16. वही, पृष्ठ 413 तथा वन०. अ 73.
17. वि० प्र० रा०, वन. अ 114.
18. आ० रा०, पृष्ठ 7.
19. आ० रा०, पृष्ठ 16.
20. शर्मा रामायण, पृष्ठ 446, 448, 449, 466-7, 194, 417, 269 तथा 302.
21. मानस 1. श्लोक 6.
22. वही 7.53.
23. प्र० रा०, पृष्ठ 21.
24. शर्मा रामायण, पृष्ठ 159.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिव्यक्त करते हैं ।[25] विमाता कैकेयी के प्रति उनके हृदय में लेश-मात्र भी द्वेष-भाव नहीं है, उनके सामने अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए अपने भाग्य को ही वन-गमन के लिए उत्तरदायी ठहराते हैं ।[26]

'मानस' में राम की पितृ-भक्ति की सुन्दर अभिव्यंजना राम के इन शब्दों में हुई है :—

सुनु जननी सोई सुत बड़भागी । जो पितृ मातु बचन अनुरागी ।।
तनय मातु पितु तोष निहारा । दुर्लभ जननि सकल संसारा ।।[27]

'सुमंत्र-संदेश' में भी उनकी पितृ-भक्ति की अभिव्यंजना हुई है ।[28] विमाता कैकेयी के प्रति भी उनके मन में कोई क्षोभ नहीं है, कैकेयी का क्षोभ-निवारण के लिए वे चित्रकूट और अयोध्या आगमन पर उनसे मिलकर विशिष्ट स्नेह का परिचय देते हैं ।[29]

4.1.1.5 **भ्रातृ-रूप**

भरत लक्ष्मण और शत्रुघ्न तीनों अनुजों के प्रति राम के भ्रातृ-प्रेम का परिचय दोनों भाषा-रामायणों में उपलब्ध है, किन्तु भरत और लक्ष्मण के प्रति उनके भ्रातृ-प्रेम का निरूपण प्रधान रूप में हुआ है । कश्मीरी रामायणों में 'लक्ष्मण-मूर्च्छा' पर करुण रुदन-प्रलाप और निजी असमर्थता एवं निःसहायावस्था व्यक्त करना[30] उनके अद्वितीय भ्रातृ-प्रेम का परिचायक है। लक्ष्मण के पुनर्जीवित होने पर राम के अत्यधिक हर्षोल्लास और इष्ट आराध्य की स्तुति-अर्चना का भी उल्लेख मिलता है ।[31] इसी प्रकार चित्रकूट में राम-भरत भेंट और अयोध्या-आगमन पर 'भरत-मिलन' प्रसंगों में भरत के प्रति उनके प्रेम की सुन्दर अभिव्यंजना हुई हैं ।

'मानस' में भी राम के भरत और लक्ष्मण के प्रति अद्वितीय भ्रातृत्व का ही सविस्तार परिचय मिलता है । अयोध्या में शुभ अंगों के फड़कने को वे भरत-भेंट का ही सूचक मानते है :—

---

25. वि० प्र० रा०, वन. अ 17.
26. प्र० रा०, पृष्ठ 39.
27. मानस 2.41.
28. मानस 2.96, 151-152.
29. वही 2.244, 7.10.
30. वदनि लोग ज़ोरे ज़ोवुन नाल फरियाद । प्र० रा०, पृ० 108 तथा वि० प्र० रा०, पृष्ठ 379, शर्मा रा०, पृष्ठ 344, आ० रा०, पृष्ठ 158.
31. आ० रा० पृष्ठ 162.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं । भरत आगमनु सूचक अहहीं ।।

भरत सरिस प्रिय को जग माहीं । इहइ सगुन फलु दूसर नाहीं ।।[32]

चित्रकूट में राम लक्षमण से भरत के विषय में कहते हैं :–

सुनहु लखन भल भरत सरीसा । विधि प्रपंच महं सुना न दीसा ।।[33]
लखन तुम्हारा सपथ पितु आना । सुधि सुबंधु नहि भरत समाना ।[34]

राम का लक्ष्मण के प्रति भ्रातृ-प्रेम इन शब्दों में व्यक्त होता है :––

जोगवहिं प्रभु सिय लखनहिं कैसें । पलक बिलोचन गोलक जैसें ।।[35]

'मानस' में भी 'लक्ष्मण-मूर्च्छा' प्रसंग में उनके उत्कृष्ट भ्रातृ-प्रेम का उदाहरण मिलता है ।[36]

4.1.1.6 **पति-रूप**

वे एकनिष्ठ पत्नीव्रतधारी हैं । वनगमन पूर्व सीता के अंग-प्रत्यंग का कोमल रूप-वर्णन करके वनवास के असह्य दुखों की परिकल्पना से संत्रस्त वे उन्हें घर रोकने का प्रयत्न करते हैं ।[37] अपनी प्रिया की आंखों में अश्रु सहन न कर और उन्हें धीरज बंधाने में अपने को असमर्थ पाकर उनकी मनोकामना पूरी करते हैं ।[38] सीता-हरण के पश्चात् व्याकुल होकर प्रकृति के कण-कण से सीता का पता पूछते फिरते हैं ।[39] सीता-परित्याग के पश्चात् विक्षुब्धता की गहरी सीमाओं में विचरण करते हुए सीता के प्रति भ्रमास्पद दुष्कल्पनाएं करके और अधिक दुखी होते हैं ।[40] सीता-परित्याग-प्रसंग उनकी संवेदनाओं को अधिक स्पष्ट रूप में पाठक के सामने लाता है । राम करुणासिक्त आत्मीय शब्दों में सीता को वाल्मीकि-आश्रम से घर

32. मानस 2.7.
33. वही 2.231.
34. वही 2.232.
35. वही 2.142.
36. वही 6.61.
37. प्र० रा०, पृष्ठ 22-23.
38. आ० रा०, पृ० 62.
39. पवत न्यधरौ चकन रथ पान मारन, प्रछ्न शेछि आस्य सुबह्वयन सितारन.
प्र० रा०; पृ० 59 तथा शर्मा रा०, पृष्ठ 221-223.
40. प्र० रा०, पृष्ठ 181.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लौटने का अनुरोध करते हैं और उसके पृथ्वी में समा जाने पर करुण विलाप करते हैं।[41]

'मानस' में भी वन-गमन पूर्व 'राम-सीता संवाद'[42] में आदर्श पत्नी-परायणता का रूप मिलता है और संयोग सुख का सुन्दर चित्रण वन में सीता के 'पुष्प-शृंगार'[43] प्रसंग में प्राप्य है। 'सीता-हरण' के पश्चात् उनकी विरह-जन्य व्याकुलता का भी अद्वितीय चित्रण हुआ है।[44] सीता के प्रति हनुमान द्वारा राम के सन्देश में भी उनके विरही पति-रूप का मार्मिक चित्रण प्राप्त है :—

तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एक मनु मोरा॥
सो मन सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहिं माहीं॥[45]

4.1.1.7 **राजा-रूप**

दोनों भाषाओं-रामायणकारों ने राम को आदर्श शासक और राजनीतिज्ञ के रूप में भी चित्रित किया है। 'रामराज्य' का विशद वर्णन दोनों के राम-काव्यों में उपलब्ध है 'वि० प्र० रा०' में राम कुशल राजनीतिज्ञ हैं, लंका-युद्ध पूर्व वे समस्त सेना और सेनाधिकारियों को राजनीति के अन्तर्गत अनिवार्य युद्ध कर्म का उपदेश देते हैं।[46]

केशवदास ने भी 'रामचंद्रिका' में युगीन भावनाओं से प्रेरित होकर उन्हें राजनीतिकुशल राजा के रूप में चित्रित करने का प्रयत्न किया, किन्तु उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त न हो सकी। भरत जैसे आदर्श भाई के प्रति स्नेह और सौहार्द रखते हुए भी राम उनपर सन्देह करके लक्ष्मण को अयोध्या में रहने का आदेश देते हैं।[47] 'वैदेही-वनवास' में उनके आदर्श नृपत्व के दर्शन होते हैं राम शांतिप्रिय हैं, सामनीति के उपासक हैं तथा दमन उन्हें अभीष्ट नहीं है।[48] उनकी राजनीति पर गांधी के अहिंसावाद की पूरी छाप है।[49] लवणासुर के अत्याचारों से पीड़ित

---

41. प्र० रा०, पृष्ठ 201-202 तथा 217.
42. मानस 2. 61-62.
43. मानस 3.30.
44. मानस 3.30.
45. वही 5.15.
46. वि० प्र० रा०, लं०. अ० 70.
47. रा० चं० 9.27.
48. वै० वन० सर्ग 3.93.
49. वही 3.97.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मथुरा की जनता में पुनः शांति स्थापित करने के लिए वे शत्रुघ्न से कम रक्तपात करने और संयम से काम लेने का आदेश देते हैं।[50] शांति-स्थापना के लिए युद्ध-नीति का विरोध कई स्थलों पर करते हैं।[51]

4.1.1.8 युद्ध-वीरता

दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में बालरूप में मारीच-ताड़का युद्ध से लेकर सभी युद्ध-वर्णनों में राम की अलौकिक वीरता एवं उनके अद्भुत शौर्य का वर्णन मिलता है किन्तु सर्वत्र उनकी युद्धवीरता अलौकिक शक्ति के अधीन है और केवल 'गोविन्द रामायण' में राम की युद्ध-वीरता पर युगीन राजा-महाराजों के युद्ध-कौशल की पूरी छाप है।

4.1.1.9 राम की शिव-भक्ति

कश्मीरी रामायणों में राम शिव के अनन्य आदर्श भक्त के रूप में भी चित्रित हुए हैं। प्रबल शिवोपासना से प्रेरित होकर कश्मीरी कवियों ने विविध स्थलों पर राम द्वारा सहायतार्थ शिव की अराधना कराई है। 'प्रकाश रामायण' और 'विष्णु प्रताप रामायण' में उनकी शिव-भक्ति मुखर है। 'प्रकाश रामायण' में राम अपनी वांच्छाओं की पूर्ति तथा रावण-वध में सफलता-प्राप्ति के लिए शिव की वन्दना करते हैं।[52] 'वि० प्र० रा०' में राम पिता-मृत्यु के पश्चत् निजी दुःख निवारणार्थ शिव-कृपा की आकांक्षा करते हैं,[53] समुद्र-लंघन प्रसंग में शिव पार्वती की वन्दना करते हैं।[54] और कार्य सिद्धि के लिए एकाध स्थल पर महागणेश की भी स्तुति-वन्दना करायी गई है।[55]

'मानस' में राम द्वारा शिव-भक्ति या शिवोपासना की प्रशंसा करने पर भी राम का चरित्र 'शिव-भक्त' के रूप में प्रसिद्ध न हो सका।

4.1.1.10 आदर्श मानव–चरित्र का निर्वाह

दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने राम के चरित्र में प्रायः सभी उदात्त मानवीय गुणों का सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। गोस्वामी तुलसीदास ने परम्परागत राम के चरित्र में आदर्श मानवोचित सरलता, नम्रता, सहज-भ्रातृ-प्रेम गुरु-सेवा, उदारता, निःस्वार्थता, कर्त्तव्यपालन, संवेदनशीलता, दृढ़ आशावादिता, शत्रुपक्ष के प्रति सद्भावना की प्रवृत्ति तथा असाधारण शौर्य आदि गुणों का मौलिक रूप से विकास किया है।[56] आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने आदर्श मानवीय

---

50. वै वन० सर्ग 11.91.
51. वही 3. 88-9, 12-14.
52 प्र० रा०, पृष्ठ 37-38, तथा पृष्ठ (अक) 163.
53. वि० प्र० रा०, पृष्ठ 143.
54. वही, लं० अ० 64.
55. वि० प्र० रा०, पृष्ठ 334.
56. डा० माताप्रसाद गुप्त — तुलसीदास, पृष्ठ 287-289.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुणों-शील शक्ति और सौन्दर्य-की पराकाष्ठा 'मानस' के राम में मानते हुए उनके चरित्र में शील की प्रधानता बतलाई है।[57] इस तरह शील तत्व की प्रधानता रहते हुए भी 'आकृति, प्रकृति और परिस्थिति' तीनों दृष्टियों से राम को आदर्श पुरुष माना गया है।[58] किन्तु तुलसीदास राम-भक्ति की प्रबल भावना से दबकर राम को लोक के बीच केवल आदर्श चरित्र तक ही नहीं ले जा सके, उन्होंने पग-पग पर अपने चरित्र-नायक में ईश्वरत्व के प्रदर्शन कराये, परिणामस्वरूप लोक के बीच राम के केवल मानवीय आदर्श की संस्थापना न हो सकी। 'मानसकार' का मुख्य उद्देश्य राम को परब्रह्म या विष्णु के रूप में चित्रित करना ही था, जहां-कहीं भी उन्हें राम के मानवीय दोष की स्वल्प सम्भावना भी प्रतीत हुई, कवि ने शीघ्र ही उसे 'नर-लीला'[59] के आवरण में छिपाने का प्रयत्न किया है। कश्मीरी रामायणों में राम के अलौकिक रूप का पग-पग पर प्रतिपादन होने पर भी वह कहीं भी उनके लौकिक आदर्श चरित्र के निरूपण में बाधक सिद्ध नहीं होता है, उनके चरित्र में मानवोचित सभी गुण-दोषों का समन्वय मिलता है और उनके अलौकिक चरित्र का संकेत अधिकतः पात्रों एवं देवी-देवताओं की स्तुतियों में ही मिलता है।

'रामचंद्रिका' में केशवदास राम के 'रामत्व' की रक्षा चरित्र की दृष्टि से पूर्णतः न कर पाये। राम के चरित्र में उदात्त गुणों[60] और सुशीलता[61] का यथेष्ट परिचय मिलने पर भी केशवदास के राम में विविध मानवीय दोषों का रूप ही मुखर है। 'राम-परशुराम संवाद,' सुग्रीव के प्रति भेजे गए सन्देश, लक्ष्मण-मूर्छा आदि प्रसंगों में राम के उग्र-स्वभाव के दर्शन होते हैं।

अमर्यादित शृंगारिकता —'रामचंद्रिका' के राम किंचित शृंगारिक मनोवृत्ति का परिचय देते हैं। वनगमन पूर्व राम सीता से कहते हैं :—

तुम जननि सेव कहं रहहु बाम। कै जाहु आज ही जनक-धाम॥
सुनि चन्द्रबदनि गजगमनि रानि। मन रुचै सो कीजै जलजनैनि॥[62]

बन में सीता के थक जाने पर किसी शीतल छांव में बैठकर राम अपने वल्कल अंचल से पंखा झलकर सीता के परिश्रम और थकान को दूर करते हैं :

मग कौ श्रम श्रीपति दूर करैं, सिय को शुभ बाकल अंचल सों।[63]

57. गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ 60.
58. डा० बलदेवप्रसाद मिश्र-तुलसी-दर्शन, पृष्ठ 15९.
59. मानस 1. 204, 3 18.
60. रा० चं० 1. 17.
61. वही 7.27.
62. वही 9.23.
63. रा० चं० 9.44

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामराज्याभिषेक पश्चात् राम की शृंगार-प्रियता एवं स्त्रैणता देखते हुए आलोचक डा० दीक्षित के शब्दों में यह कहना युक्तिसम्मत होगा कि 'केशव के राम बिल्कुल केशव के समकालीन शृंगारिक मनोवृत्ति रखने वाले राजा-महाराजाओं के रूप में दिखाई देते हैं'।[64] केशव स्वयं ऐसे ही वातावरण में रहे है, इसीलिए उनके आदर्श पात्र राम पर भी अर्जित शृंगारिक मनोवृत्ति की छाप पड़नी अस्वाभाविक नहीं है।

'साकेत' में राम का लोकादर्श चरित्र ही प्रमुख है। शील, शक्ति और सौन्दर्य से सर्वसम्पन्न उनका चरित्र धर्म-संस्थापन लोक-कल्याण एवं लोक-शिक्षक की प्रबल भावनाओं एवं सद्वृत्तियों से सम्पुष्ट है। राम का लोकादर्श, मर्यादा एवं कर्तव्य-पालन का रूप गुप्त जी की निम्न-लिखित पंक्तियों में स्पष्टतया उद्घोषित हुआ है :—

मैं आर्यों का आदर्श बताने आया
....

सुख शांति हेतु क्रांति मचाने आया
....

सुख देने आया, दुख झेलने आया
सन्देश यहां मैं नहीं स्वर्ग का लाया
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।[65]

'वैदेही-वनवास' में राम के उदात्त लोकादर्श चरित्र में त्याग, धैर्य, सहिष्णुता और लोकहित की उदार भावना का पूर्ण सामंजस्य मिलता है। सीता उनके प्रति कहती हैं :—

त्याग आप का है उदात्त धृति धन्य है।
लोकोत्तर है आपकी सहनशीलता॥
है अपूर्व आदर्श लोकहित का जनक।
है महान भवदीय नीति धर्मज्ञता॥[66]

---

64. आचार्य केशवदास, पृ० 141

65. साकेत, सर्ग 8, पृ० 234.

66. वैदेही वनवास 4.49.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4.1.1.11 चरित्र सम्बन्धी दोष

दोनों भाषाओं की रामायणों में परम्परागत लोक-विश्रुत आदर्श चरित-नायक राम का चरित्र युगानुरूप परिवर्तित एवं विकसित हुआ। फिर भी कुछ ऐसे परम्परागत चरित्र सम्बन्धी दोष अत्यल्प परिवर्तित हो सके, जिनका घनिष्ट सम्बन्ध कथा से होने पर पूर्णतः बहिष्कार सम्भव न हो सका। उनमें से प्रमुख हैं राम द्वारा ताड़ना का वध, शूपर्णखा के प्रति दुर्व्यवहार, छिप कर बालि का वध और सीता के पावन चरित्र पर अविश्वास करके उनका परित्याग। यद्यपि आदर्श चरित नायक राम से सम्बंधित उक्त 'कृत्यों' को अनुचित न ठहराने का काफी प्रयत्न किया जाता है, किन्तु राम के आदर्श लोक-चरित्र पर आरोपित ये दोष सहज ही मिट नहीं सकते हैं।

4.1 2 भरत

दोनों भाषाओं की रामायणों में भरत के चरित्र में त्याग प्रेम, कर्त्तव्यपरायणता, विनम्रता, उदारता आदि सभी उदात्त मानवीय वृत्तियों का सामंजस्य मिलता है, किन्तु उनका चरित्र अनन्य भ्रातृ-भक्ति के लिए ही अधिक प्रसिद्ध है।

4.2.2.1 अलौकिक गुण-तत्व

कश्मीरी रामकथा-काव्य में भरत को विष्णु के सुदर्शन चक्र का अवतार कहा गया है,[67] भरत का यश-गान चित्रकूट–सभा में राजा जनक और महारानी मुक्त-कण्ठ से करते हैं। जनक के शब्दों में भरत का चरित्र भव-बंधन से मुक्ति प्रदान करने के लिए सहायक है और उनके नामस्मरण से पापों का सर्वनाश होता है।[68] भरत-चरित के प्रेम-पूर्ण श्रवण से राम के चरणों की भक्ति सहजतया उपलब्ध होती है।[69]

'मानस' में भी भरत विष्णु के 'अंशावतार' तो हैं ही, और उनमें सभी अलौकिक गुण तत्वों का सामंजस्य मिलता है। 'उनकी बुद्धि की थाह वशिष्ठ जैसे पंडित, जनक जैसे ज्ञानी और स्वयं राम भी नहीं पा सकते हैं। स्वयं बुद्धि और वाणी की देवी सरस्वती उनके इन दो गुणों की थाह नहीं पा सकती हैं। उनकी वाणी में निष्पक्षता, विवेक, नीति, न्याय आदि भावतत्व तथा सुगमता, अगमता, मृदुता, मंजुता, संक्षिप्तता और ध्वन्यात्मकता आदि कला तत्वों का सहज सामंजस्य विद्यमान था''।[70] दोनों काव्यों में भरत के अलौकिक गुण तत्व उनके आदर्श मानवीय

---

67. प्र० रा०, पृ० 26.
68. छि मरधन्य कथा भव-बंधन चटान। तसुन्द नाव ह्यने सअथ्य सारी पाय हटान॥—शर्मा रामायण, पृष्ठ 165.
69. ता० रा०, पृ० 166.
70. डा० रामप्रकाश अग्रवाल वाल्मीकि और तुलसी : साहित्यिक मूल्यांकन, पृ० 167-168.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चरित्र पर बोझ बनकर नहीं हैं, प्रत्युत उनके चरित्र को अधिक विकसित होने में ही सहायक हैं।

4.1.2.2 **भ्रातृ-भक्ति :**

भरत की भ्रातृ-भक्ति उनकी पितृ-भक्ति या मातृ-भक्ति से कहीं अधिक प्रबल है। 'प्रकाश रामायण' में भरत की पितृ-भक्ति का भी निरूपण मिलता है। पितृ-मरण और राम-वनगमन की सूचना पाकर धैर्य खोकर वे करुण प्रलाप करते हैं,[71] पत्थरों और दीवारों से सिर टकराते हुए उनका सारा शरीर घायल हो जाता है।[72] भरत राम के अनन्य भक्त हैं, राम की स्तुति-वन्दना वे सदैव इष्ट-आराध्य के रूप में करते हैं। ननिहाल से लौटने पर राम के प्रति उनकी वन्दना में विरहजन्य अन्तर्पीड़ा एवं आतुरता के स्पष्ट दर्शन होते हैं।[73] चित्रकूट में भी उनकी निश्छल भक्ति-भावना की मर्मस्पर्शी अभिव्यंजना हुई है—भरत निःशब्द राम के चरण-कमल पकड़ कर अविरल अश्रु प्रवाहित करते हैं,[74] उनकी रामभक्ति एवं अनुपम आत्म-समर्पण की भावना पर मोहित होकर देवता उन पर पुष्पों की वर्षा करते हैं।[75] राम की भक्ति के समक्ष राज्य-ऐश्वर्य का उन्हें तनिक भी मोह नहीं है—राम-प्रेम में उनका त्याग ही सर्वोत्तम है। राम की चरण-पादुकाओं को सिंहासन पर रखकर वे चौदह वर्ष तक 'नंदिग्राम' में कुटिया बनवाकर लोक-सेवा में रत राम की प्रतीक्षा करते हैं।[76] राम के अयोध्या प्रत्यावर्तन पर भरत उनकी वन्दना-अर्चना 'सतचित-आनन्द दीनबन्धु'[77] के रूप में करते हैं। वे राजसिंहासन पर आसीन श्रीराम की पादुकाओं को अपने शीर्ष-केशों से पोंछकर सादर राम के चरणों में पहनाकर[78] अपने कर्त्तव्य-भार से सहर्ष मुक्त होते हैं। दिन-रात राम की वन्दना-स्तुति करने में ही भरत अपना धर्म—कर्म समझ लेते हैं।[79]

'मानस' में राम के प्रति भरत की भक्ति-भावना का उत्कृष्ट रूप मिलता है, यही अनन्य भ्रातृ-प्रेम भावना ही भरत के चरित्र की परम-विभूति है। तुलसीदास ने

---

71. प्र० रा०, पृ० 3.
72. वरदान कले ओस कन्यन छावनतै छोकेलद पान जो तस हन-हन. शंकर रामायण, खण्ड 1. अ 13.
73. वि० प्र० रा०. पृ० 125; शर्मा रामायण, पृष्ठ 149.
74. प्र० रा०, पृ० 32.
75. शर्मा रामायण, पृ० 156.
76. प्र० रा०, पृ० 40.
77. वि० प्र० रा०, पृ० 574.
78. प्र० रा०, पृ० 162.
79 शर्मा रामायण, पृष्ठ 457.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भरत की प्रेम-भावना का विस्तार करके कई स्थलों पर उन्हें राम-प्रेम की प्रति-मूर्ति तक कहा है ।[80] भरत की प्रेम-भावना में अलौकिकता की छाया स्पष्ट झलकती है :—

भरत प्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकै न सेषु ।
कबिहिं अगम जिमि ब्रह्म सुखु अहमम मलिन जनेषु ।।[81]

'मानस' में भरत के चरित्र-विकास की दृष्टि से पिता-मृत्यु और राम-वनगमन की सूचना पाकर उनके करुण रुदन,[82] राम की अनन्य भक्ति[83] एवं अन्त पर राम के पुनर्मिलन पर उनकी प्रसन्नता[84] का चित्रण अत्यधिक मार्मिक है । 'मानस' के पश्चात् भरत की भ्रातृ-भक्ति का सुन्दर परिचय 'साकेत-सन्त' में मिलता है । युद्ध और हिंसा का विरोध राज्य के प्रति उदासीनता और अग्रज राम के प्रति अनन्य भ्रातृ-प्रेम एवं भक्ति का परिचय मामा के साथ उनके वार्तालाप में उपलब्ध होता है ।[85] पितृमरण और राम-वनगमन की सूचना पाकर उनकी दशा शोचनीय होती है :—

झंझा से कांपे, धधक उठे दावा से,
क्षण भर में रुक कर अचल हुए ग्रावा से
मस्तक पर सौ सौ गिरीं बिजलियां आकर,
गिर पड़े भूमि पर भरत सुचेत गंवा कर ।।[86]

आत्मग्लानि और पश्चाताप से द्रवित होकर समस्त उपद्रव का मूल कारण समझकर वे अपने आपको कोसते हैं ।[87] चित्रकूट-सभा में उनकी भ्रातृ-भक्ति का सुचारु रूप मिलता है जिनकी मनोवृत्तियों का चित्रांकन मनोवैज्ञानिक धरातल पर हुआ है ।[88] भरत की अद्वितीय भ्रातृ-भक्ति के समक्ष राम को भी अपनी हार स्वीकार करनी पड़ती है :—

आज भरत खोकर भी जीते, और जीत कर भी मैं हारा ।[89]

---

80. डा० माताप्रसाद गुप्त-तुलसीदास, पृ० 290-291.
81. मानस 2.225.
82. वही 2.160
83. वही 2 206, 208.
84. वही 7.2.
85. साकेत सन्त 2.59
86. वही 3.19.
87. वही 3.44.
88. वही 13.51
89. वही 13.69.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4.2.2.3 चरित्र-सम्बन्धी दोष

भरत के आदर्श चरित्रोत्कर्ष मे यदि कोई बाधा उपस्थित होती है तो वह उनके माता के प्रति कहे गए दुर्वचन ही हैं। कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' में वे कठोर भावातिरेक में एकाध शब्द कहकर ही चुप रहते हैं।[90] और अन्य रामायणों में भी अत्यधिक संयम से काम लेते हैं।

'मानस' में भी भरत कैकेयी को अपशब्द कहकर उनकी निंदा करते हैं[91] किन्तु बाद में इसके लिए पश्चाताप करते हुए दिखाई देते हैं :—

बिनु समझें निज अघ परिपाकू। जारिउं जायं जननि कहि काकू ।।[92]

'साकेत सन्त' मे भी कवि परम्परागत मटमैले दोषों से अपने चरित-नायक को बचा न सके। भरत कैकेयी के कुकृत्यों पर रुष्ट होकर आवेश में उन्हें 'नृप कुल यश खाने वाली, दानवी डाकिन आदि अशिष्ट एवं अमर्यादित शब्द कहते हैं।

4.1.2.4 रामचंद्रिका में भरत का चरित्र

भरत-चरित्र के विषय में डा० विजयपाल सिंह लिखते हैं कि वाल्मीकि और तुलसी के समान केशव ने अपनी काव्य कृतियों के माध्यम से भरत के आदर्श चरित्र को राम से भी बढ़कर चित्रित किया है।[93] किन्तु आधार ग्रन्थों और तुलसी के भरत में जहां विनम्रता, साधुता, संयम, शील और सौहार्द देखने को मिलता है, ऐसा 'रामचद्रिका' के भरत में नहीं। परशुराम के कटु शब्दों पर क्रोधित होकर सर्वप्रथम वहीं ललकार उठते हैं।[94] केशव के भरत हठी हैं—वे गंगा तट पर हठ साध कर बैठते है और उन्हें समझाने के लिए गंगा को साक्षात् प्रकट होना पड़ता है।[95] अन्याय के विरुद्ध वे अवश्य हैं, राम द्वारा सीता के निर्वासन का प्रश्न उठाये जाने पर वे कठोरतम शब्दों में विरोध करते हैं :—

वा माता वैसे पिता तुम सो भैया पाइ।
भरथ भए अपवाद के भाजन भूतल आइ ।। (33.35)

4.1.3 लक्ष्मण

रामकथा में लक्ष्मण का नाम राम के साथ अभिन्न रूप में सम्बंधित है। दोनों

---

90. दपन मिय ओस वनन कीकी बु मारन—प्र० रा०, पृ० 30.
91. मानस 2.162.
92. साकेत सन्त 3. 21-22.
93. केशव और उनका साहित्य, पृ० 307.
94. रा० चं०, 7. 22.
95. वही 10. 36-42.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषाओं की रामायणों में वे शेषावतार माने गए हैं, इस तरह अलौकिक रूप में भी वे विष्णु-अवतार राम के पूरक हैं और पूरी कथा में उनका चरित्र 'उपनायक' की भांति कथा-नायक राम के चरित्र-विकास में आधन्त सहायक सिद्ध होता है। दोनों भाषाओं की रामायणों में उनके चरित्र में उत्साह, कर्तव्यनिष्ठा, निश्चयात्मकता निर्भीकता, वीरता और निःस्वार्थ भावना आदि उदात्त मानवीय गुणों एवं मनोवृतियों का पूर्ण रूप से विकास दृष्टिगत होता है। उनका सुदृढ़ भ्रातृ-प्रेम और उग्र स्वभाव उनके चारित्रिक आदर्श और यथार्थ पक्ष को अभिव्यंजित करने वाली दो मुख्य परम्परागत विशेषताएं हैं।

4.1.3.1 भ्रातृ-प्रेम

लक्ष्मण का भ्रातृ-प्रेम असंदिग्ध है, राम के प्रति सुदृढ भक्ति-भावना में वे अपना सम्पूर्ण व्यक्तित्व समर्पित करते हैं। डा० माताप्रसाद गुप्त के शब्दों में 'महत्वाकांक्षाओं से हीन यह चरित्र राम में अपने व्यक्तित्व को इस प्रकार परिसमाप्त किए हुए हैं कि इसकी जोड़ का उदाहरण अन्यत्र कहीं कठिनाई से मिलेगा'[96] आधार ग्रन्थों में प्रतिष्ठित लक्ष्मण के आत्मसर्पण एवं भ्रातृ-प्रेम के गुण तत्वों से युक्त लक्ष्मण के चरित को दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने विषद एवं स्वाभाविक रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है। 'प्र० रा०' तथा 'वि० प्र० रा०' में अनन्य भ्रातृ-प्रेम के कारण ही वन-गमन पूर्व लक्ष्मण राम-वनवास की आज्ञा पर रोष प्रकट करते हैं और राम का ज्ञानोपदेश ही उन्हें पुनः शान्त करता है।[97] राम के संग वन जाने के लिए उनके विनम्र हठ में भी उनकी भ्रातृ-भक्ति का रूप समाहित है।[98] रामादेश ही उनके लिए सर्वस्व है। राम द्वारा सीता-निर्वासन की आज्ञा का वह पहले विरोध करते हैं किन्तु रामाज्ञा का उल्लंघन वे कर नहीं सकते हैं। लक्ष्मण राम का कठोर आदेश सुनकर रो पड़ते हैं और अश्रु-भीगी पलकों से अपने इष्ट आराध्य राम की ओर सदाशा से मुड़-मुड़ कर देखते हुए, जैसे वे दया की भीख मांगते से प्रतीत होते हैं।[99]

तुलसीदास 'मानस' में लक्ष्मण के चरित्र को भ्रातृत्व की ऊंची सीमा तक ही नहीं लाये, प्रत्युत उनके चरित्र में उन्होंने एकनिष्ठ भ्रातृ-भावपरक भक्ति का भी समावेश किया। 'मानसकार' ने लक्ष्मण को प्रधानतः राम के सेवक के रूप में ही चित्रित किया। दास्य भक्ति-भावना से दबकर इसी कारण राम और लक्ष्मण के बीच भ्रातृत्व की स्वाभाविक मधुरता कुछ कुंठित सी हुई दिखती हैं। दोनों के

96. तुलसीदास, पृ० 292.
97. प्र० रा० 21-22; वि० प्र० रा०, वन०. अ० 3.
98. शर्मा रामायण, पृ० 125.
99. प्र० रा०, पृष्ठ 170-171.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीच अनपेक्षित दूरी का आभास प्रायः खटकता है—लक्ष्मण वन में उत्कट भक्ति-भावना के कारण राम-सीता के चरण चिह्नों तक को बचाकर चलते हैं।[100] 'रामचंद्रिका' मे भ्रातृ-प्रेम के कारण ही लक्ष्मण राम द्वारा अवध-निवास और राजसेवा-प्रस्ताव पर विरोध प्रकट करते हैं :—

शासन मेटी जाइ क्यों जीवन मेरे हाथ ।
ऐसी कैसे बूझिए, घर सेवक बन नाथ ।। (9.28)

4.1.3.2 साकेत में लक्ष्मण का नायकत्व

आधुनिक हिन्दी ग्रन्थों में 'साकेत' में ही लक्ष्मण का चरित्र अधिक विकसित हुआ है। 'साकेत' में ऊर्मिला के पश्चात यद्यपि किसी अन्य पात्र का चरित्र अधिक निखर आया है तो वह लक्ष्मण का ही है। कुछ आलोचक उन्हें 'साकेत' का नायक मानते हैं,[101] किन्तु वे सदैव राम के अनुवर्ती रहे—'सुहृद, सहचर, सचिव, सेवक'[102] इसलिए उनके नायकोचित गुणों में सहज सन्देह उत्पन्न होता है। 'साकेत' में लक्ष्मण अपने बारे में स्वयं कहते हैं :—

मेरे लिए विषाद व्यर्थ है, धन्य मैं,
सुप्त नहीं हूं, सतत सजग चैतन्य मैं।
में तो निज भव-सिंधु कभी का तर चुका,
राम चरण में आत्मसमर्पण कर चुका।[103]

4.1.3.3 उग्र-स्वभाव

कश्मीरी रामकथा-काव्य में लक्ष्मण के उग्र स्वभाव का परिचय लक्ष्मण-परशुराम संवाद, वनगमन पूर्व पिता के न्याय पर रोष प्रकट कर चेतावनी देने, शूर्पणखा—विरूपण, मेघनाद.—युद्ध आदि प्रसंगों में मिलता है। इसी तरह 'मानस' में उनके स्वाभाविक उग्रता के दर्शन जनक-वाणी के प्रतिवाद,[104] लक्ष्मण-परशुराम संवाद'[105]

---

100. सीय रामपद अंक बराएं। लखन चलहिं मगु दाहिन लाएं।
—मानस 2.123.
101. डा॰ कमलाकांत पाठक—मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य, पृ॰ 445.
102. साकेत, सर्ग 2, पृ॰ 87.
103. वही, सर्ग 5- पृ॰ 142.
104. मानस 1.253.
105. वही 1. 271-80.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुमन्त्र-सन्देश,[106] भरत-शत्रुघ्न के प्रति रोष'[107] सुग्रीव-प्रमाद[108] आदि प्रसंगों में होते हैं। 'रामचंद्रिका' में परशुराम-भेंट प्रसंग में उनका उग्र स्वभाव संयत और शिष्ट है। परशुराम के प्रकोप पर भरत और शत्रुघ्न के बाद ही वे बोलते है :—

> जिनको सु अनुग्रह वृद्धि करै, तिनको किमि निग्रह चित परै।
> जिनके जग अक्षत सीस धरै। तिनको तन सक्षत कौन करै ।।[109]

भरत के दलबल सहित वनागमन पर बुरी आशंकाओं से वे आवेश में आते हैं।[110] दोनों भाषाओं की रामायणों में सर्वत्र वे अपने इष्ट आराध्य राम के प्रति असीम अनुराग-भावना से प्रेरित होकर ही बाह्य सुध-बुध या मर्यादा-भावना से अचिंतित किसी भी प्रकार के विरोधी तत्वों पर रोष प्रकट करते हैं। लक्ष्मण की उत्कट भक्ति-भावना को दृष्टि में रखकर इस तरह लक्ष्मण का यह उग्र स्वभाव कदाचित चारित्रिक दोष नहीं माना जा सकता है।

4.1.3.4 अन्य विशेषताएं

दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में लक्ष्मण के चरित्र सम्बन्धी कुछ अन्य विशेषताएं इस प्रकार हैं :—

4.1.3.4.1 युद्ध-औत्सुक्य

'आनंद-रामावतारचरित' में लक्ष्मण के बाल-चरित्र में उनके युद्ध-औत्सुक्य का सुन्दर निरूपण मिलता है। विश्वामित्र-संग यज्ञरक्षार्थ जाते हुए वे राम से युद्धों के बारे में विविध प्रश्न पूछते हैं और भीषण तथा भयंकर युद्ध-दृश्य देखने की आकांक्षा अभिव्यक्त करते हैं।[111]

4.1.3.4.2 पितृ-भक्ति

'वि० प्र० रा०' के अनुसार पितृमरण की सूचना पाकर लक्ष्मण अबोध बालक की भांति करुण रुदन-विलाप करते हैं।[112]

4.1.3.4.3 सीता के प्रति मातृ-भक्ति

सीता के प्रति मातृ-भक्ति की उत्कट भावना से प्रेरित होकर वे राम द्वारा सीता

---

106. मानस 2.96.
107. वही 2. 229-30.
108. वही 4.18.
109. रा० चं० 7.32.
110. वही 10.25.
111. आ० रा०, पृ० 22.
112. वि० प्र० रा०, वन. अ 17.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निर्वासन के प्रस्ताव का विरोध प्रकट करते हैं[113] और विवशतः वन में अचेत सीता को अकेली छोड़कर लौटते समय करुणार्द्र शब्दों में वे चरणों में पड़कर बार-बार क्षमा-याचना भी करते हैं।[114]

4.1.3.4.4 बाल सुलभ-चापल्य एवं उत्सुकता

'मानस' में जनकपुर एवं पुष्पवाटिका के दर्शन-लालसा में[115] लक्ष्मण की बालसुलभ सरल जिज्ञासा, चापल्य एवं उत्सुकता का निरूपण मिलता है।

4.1.3.5 दार्शनिकता

विद्वानों ने 'गुहापदेश' प्रसंग में लक्ष्मण की दार्शनिकता को अस्वाभाविक बताया है,[116] लक्ष्मण के शब्दों में यहां दार्शनिक तत्व-निरूपण के उद्देश्य की अपेक्षा गुह को शांत करने की प्रवृति प्रबल है जो उनके स्वाभाविक मानवीय चरित्र के विरुद्ध प्रतीत हो सकती है किन्तु विष्णु राम के अंशावतार रूप को दृष्टि में रखकर नहीं।

'रामचंद्रिका' में लक्ष्मण चरित्र का बहुमुखी आदर्श गुण-रूप सुमित्रा से कहे गए राम के इन शब्दों में व्यक्त हुआ है :—

पोरिया कहौं कि प्रतिहार कहौं किधौं प्रभु,
पुत्र कहौं मित्र किधौं मन्त्र सुखदानियैं

सुभट कहौं कि सिष्य दास कहौं किधौं दूत,
केसोदास' हाथ को हथ्यार उर आनियै ।

नैन कहौं किधौं तन मन किधौं तनत्रान,
बुद्धि कहौं किधौं बल बिक्रम बखानियै ।

देखिवे कौं एक हैं अनेक भांति कीन्हीं सेवा,
लखन के मात कौन कौन गुन मानियै ।।[117]

4.2.4 दशरथ

आधार ग्रन्थों में वर्णित राजा दशरथ के दुखपर्यवसायी चरित्र[118] का विकास दोनों भाषाओं की रामकथा-काव्यों में सम-दृष्टिकोण से हुआ है। 'वात्सल्य' और 'प्रतिज्ञापालन' के बीच मानसिक अन्तर्द्वन्द्व ही उनके चरित्र की विशेषता है। वे

113. प्र० रा०, पृ० 170.
114. वही, पृ० 172.
115. मानस 1.218.
116. डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, पृष्ठ 293.
117. रा० चं० 22.21.
118. डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, पृ० 294.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों का एक साथ निर्वाह करना चाहते हैं, किन्तु कैकेयी द्वारा बाधा उपस्थित किए जाने पर उन्हें निजी कुल-धर्म एवं प्रतिज्ञा पालन के लिए प्राणों तक को विसर्जित करना पड़ता है। प्राणों के ही मूल्य पर वे 'वात्सल्य' और 'सत्य-वचन पालन' का निर्वाह करने में सफल होते हैं। दशरथ का चरित्र रामकथा में पति, पिता और राजा के रूप में ही पाठकों के सामने आता है।

4.2.4.2 **दशरथ का पति-रूप**

दोनों भाषा-रामायणों में तीनों रानियों—कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी में से छोटी रानी कैकेयी के प्रति ही दशरथ के विशिष्ट प्रेम का निरूपण मिलता है। कैकेयी-प्रेम ही उनके चरित्र की एक ऐसी दुर्बलता है जिसके सामने उनका आदर्श पुत्र-प्रेम भी डगमगाता है। कैकेयी के समक्ष वे अपना नृपति रूप भूलकर विवशता दर्शाकर अपनी स्त्रैणता का परिचय दे देते हैं। वे कैकेयी के समक्ष दूसरा वचन (राम-वनवास) वापिस लेने के लिए आर्तवाणी में गिड़गिड़ाते हैं। कोपभवन में रूठी-कैकेयी को मनाने में दशरथ के पत्नी-प्रेम का सरस परिचय भी मिलता है।[119] कौशल्या और सुमित्रा की अपेक्षा कैकेयी के प्रति वे अधिकतः कामासक्त हैं। 'मानस' में दशरथ कैकेयी से कुछ आशंकित भी रहते हैं, जहां वे रामाभिषेक का समाचार कौशल्या और सुमित्रा तक भिजवाते हैं,[120] कैकेयी को सूचना नहीं देते हैं। कश्मीरी रामायणों में ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता है। फिर भी दोनों भाषारामायणों में दशरथ के आदर्श पति-रूप के दर्शन नहीं होते हैं।

4.1.4.2 **पितृत्व**

दोनों काव्यों में राजा दशरथ के वात्सल्य का सुन्दर निरूपण हुआ है। विश्वामित्र द्वारा राम-याचना प्रसंग में दोनों में राम के प्रति उनके सर्वाधिक वात्सल्य' का परिचय मिलता है। राम और भरत के प्रति 'समवात्सल्य' का निरूपण भी दोनों काव्यों में द्रष्टव्य है। 'प्रकाश रामायण' में वे रामराज्याभिषेक समारोह में सम्मिलित होने के लिए भरत और शत्रुघ्न को भी ननिहाल से बुलवाने का प्रबन्ध करते हैं।[121] दोनों में उन्हें भरत को राज्य देने में आपत्ति नहीं है, दुख है तो बस राम-निर्वासन का ही।[122] 'मानस' में दशरथ राम और भरत को अपनी दो आंखों के समान बताकर उनके प्रति 'समवात्सल्य'—भाव दर्शाते हैं।[123] राम के प्रति दशरथ का प्रगाढ़ वात्सल्य उनकी अनन्य 'भक्ति' का रूप

---

119. प्र० रा०, पृष्ठ 20; मानस 2.25.
120. मानस 2.8.
121. प्र० रा०, पृ० 21.
122. प्र० रा०, पृ० 21; मानस 2.32-32.
123. मानस 2.31.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धारण करता है। दशरथ राम के विरह में उनकी स्मृति-अर्चना भी इसी भक्ति-भावना से करते हैं।[124] राम का विरह उनके लिए असह्य है उसका मूल्य प्राणों का परित्याग करके चुकाना पड़ता है। स्वर्गलोक में भी दशरथ को चैन नहीं पड़ता, राम द्वारा लंकाविजयोपरांत दशरथ अत्यधिक प्रसन्न होकर उनके दर्शनार्थ स्वर्ग-लोक से चले आते हैं और राम के दिव्य-प्रताप को देखते हुए उनके नेत्रों से प्रेमाश्रुओं की प्रबल धारा फूट कर उनके मन की विरह-विदग्धता को मिटाती है।[125]

दोनों भाषाओं के कवियों ने दशरथ के आदर्श वात्सल्य को प्रश्रय देते हुए उसके साथ-साथ यथार्थ का यथोचित निर्वाह किया है। पुत्र के लिए प्राणों का विसर्जन वैयक्तिक आदर्श को प्रतिपादित करता है, किन्तु सत्यरक्षा या प्रतिज्ञा-पालन के कुल-धर्म के लिए पुत्र-त्याग में विस्तृत एवं लौकिक आदर्श की प्रतिष्ठा है। 'मानस' के दशरथ के चरित्र के बारे में आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं—"वे "(दशरथ) राम को वनवास देने में सत्य की रक्षा और प्रतिज्ञा का पालन हृदय पर पत्थर रखकर उमड़ते हुए स्नेह और वात्सल्य भाव को दबाकर करते हुए पाये जाते हैं। इसके उपरांत राम उन्हें स्नेह के निर्वाह में तत्पर और प्रेम की पराकाष्ठा को पहुंचते हुए पाते हैं"।[126] 'मानस' के राम दशरथ के इस लोकोत्तर त्याग के विषय में कहते हैं :—

राखेउ राउ सत्य मोहि त्यागी। तनु परिहरेउ प्रेम पनु लागी।(2.264)

'मानस में राज्याभिषेक सम्बन्धी तैयारियों का कथा-क्रम देखने पर प्रतीत होता है कि दशरथ किसी सीमा तक कैकेयी और भरत के पक्ष से आशंकित हैं—न वे कैकेयी को ही रामाभिषेक की सूचना देते हैं और न भरत को ननिहाल से बुलवाने का प्रबन्ध ही करते हैं, बल्कि कवि ने राम के राज्याभिषेक में अनावश्यक तत्परता दिखाई है। विद्वान आलोचक यहां पर दशरथ के परम्परागत चरित्र को नये रूप में प्रस्तुत करने की कलात्मक त्रुटि मान लेते हैं।[127] 'साकेत' में प्रस्तुत प्रसंग में यथोचित सुधार हुआ है—रामाभिषेक के शुभ अवसर पर दशरथ को भरत की अनुपस्थिति खलती है। शुभमुहूर्त के शीघ्र उपस्थित होने और वृद्धावस्था

---

124. प्र० रा०, पृ० 28-29; शर्मा रामा०, पृ० 117.

125. वेमानस खसिथ आव सुय तीज़वान करुन ओस श्री रामुन दर्शुन यछ़ान
वुछिथ राम विरहुक ज़ल हम्योस वोथुस ओश अछव मन स्यष्ठा शाद गोंस।
शर्मा रा०, पृष्ठ 447.

126. गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ 123.

127. डा० माताप्रसाद गुप्त–तुलसीदास, पृष्ठ 295-296.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की अस्थिरता के कारण समय पर वे भरत को ननिहाल से बुला न सके। भरत-वियोग में श्रवण के वृद्ध पिता से प्राप्त पुत्र-विरह सम्बन्धी शाप का स्मरण कर भरत की अनुपस्थिति के दुख को वे कठिनता से ही सहन कर लेते हैं।[128]

4.1.4.3 'साकेत' में सत्यनिष्ठा और पुत्र-प्रेम

'साकेत' में राम और भरत के प्रति दशरथ के समवात्सल्य का यथेष्ट परिचय मिलता है किन्तु उनकी सत्यनिष्ठा का निर्वाह पुत्र-प्रेम की प्रबलता के नीचे दब सा गया है। एक ओर वे स्वयं मानिनी कैकेयी को प्राप्त दो वरों की स्मृति दिलाते हैं[129] और वर-याचना सुनकर उनका हृदय सत्यनिष्ठा और पुत्र-प्रेम के मानसिक द्वन्द्व में डूब जाता है :—

> वचन पलटें कि भेजे राम को वन में,
> उभय विध मृत्यु निश्चित जान के मन में,
> हुए जीवन-मरण के मध्य धृत से वे,
> रहे बस अर्द्ध-जीवित, अर्द्ध-मृत से वे। (पृष्ठ 68)

इस मानसिक द्वन्द्व में पुत्र-प्रेम की प्रबलता से विजित होकर वे लक्ष्मण से अपने को बन्दी बनाकर रामाभिषेक का कार्य सम्पन्न कराना चाहते हैं।[130] इतना ही नहीं राम से भी पितृ-आदेश न मानने का स्वयं अनुरोध करते हैं :—

> सुनो हे राम तुम ही धर्म धारो
> पिता को मृत्यु के मुंह से उबारो।
> न मानों आज तुम आदेश मेरा,
> प्रवल इससे नहीं क्या क्लेश मेरा। (पृ॰ 84)

'राम-राम रटते हुए दशरथ पुत्र-वियोग में प्राणों का विसर्जन करते हैं, वास्तव में उनके कर्तव्य-पालन का श्रेय उन्हें न होकर राम को ही प्राप्त है।

4.1.4.4 नृपत्व

दोनों भाषाओं की रामायणों में दशरथ एक आदर्श राजा के रूप में भी पाठकों के सामने आते हैं। 'रघुवंशी' राजा होने के नाते सत्यवादिता एवं 'प्रतिज्ञा-पालन' उनका कुल धर्म है, जिसके सकुशल निर्वाह के लिए प्राणों के त्याग से भी अचिंतित हैं। वे एक ऐसे राजा हैं जो लोक-कल्याणार्थ धार्मिक कार्यों एवं अनुष्ठानों में विशेष

---

128. साकेत, सर्ग 2, पृ॰ 58-59.
129. साकेत, सर्ग 2, पृष्ठ 63.
130. वही, सर्ग 3, पृ॰ 83.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिरुचि प्रदर्शित करते हैं तथा निःस्वार्थ लोक-सेवा ही अपना कर्तव्य-धर्म समझते हैं। 'प्रकाश रामायण' में दशरथ के आदर्श नृपत्व की अपेक्षाकृत अधिक विशद रूप में विवेचना हुई है।[131]

उक्त तीनों रूपों में से राजा दशरथ पिता-रूप में राम के प्रति अत्यधिक वात्सल्य के कारण ही रामकथा में अधिक प्रसिद्ध हैं और इसी रूप का चित्रांकन दोनों भाषा-रामायणकारों ने अधिक विस्तार के साथ किया है। पुत्र-प्रेम के लिए ही वे न तो पति-रूप के आदर्श पर प्रतिष्ठित हो सके और न आदर्श राजा के रूप में ही उनका चरित्र अधिक विकसित हो पाया।

4.1.5 हनुमान

आधार ग्रन्थों में पूर्वप्रतिष्ठित हनुमान् के महच्चरित्र में बल, बुद्धि, विवेक, निर्भीकता, निःस्वार्थता, संयम, साहस, दृढ़ता, आशावादिता आदि समस्त उदात्त-वृतियों का निरूपण सभी भाषा-रामायणों में उपलब्ध है। राम के प्रति उनकी अनन्य निःस्वार्थ सेवा-भावना या कर्तव्य-परायणता उत्तरोत्तर विकसित होकर दोनों आलोच्य भाषाओं की रामायणों में उनकी दास्य-भक्ति के परिनिष्ठित अर्थ में अभिहित हुई। उनके आदर्श चरित्र में अलौकिक तत्वों का समावेश होना स्वाभाविक था। मानवादर्शमूलक परमोदात्त गुण-तत्वों का निरूपण तथा उनके चरित्र में अलौकिकता की परिणति ही प्रस्तुत चरित्र का विकास है, यही उसकी महता है।

4.1.5.1 अवतार-रूप

'प्रकाश रामायण' में राम शिवजी से 'हनुमत-लदर' (हनुमान) का अवतार धारण करने के लिए प्रार्थना करते हैं।[132] शिवजी के अवतार होकर हनुमान् स्वयं भक्ति के आलम्बन रूप में प्रतिष्ठित हुए। भय-त्रस्त बानर-सेना संकट-निवारणार्थ एवं समुद्र परागमन के लिए उनकी शरण में जाकर प्रार्थना करते हैं।[133] हनुमान की अलौकिकता प्रतिपादित करने के उद्देश्य से यहां समुद्र से 'भव-सिन्धु' का श्लेषार्थ स्पष्टतः लक्षित होता है। और तो और राम तक लक्ष्मण से हनुमान के अलौकिक रूप की ओर इंगित करते हुए कहते हैं कि हनुमान के राम-स्मरण से ही भवसंकटों का नाश होता है।[134]

'मानस' में भी हनुमान के अवतार रूप का स्पष्ट उल्लेख मिलता है—'राम

---

131. प्र॰ रा॰, पृ॰ 7.

132. च् छुख ना वुनि 'हल्मत लद्दर लागन'।—प्र॰ रा॰, पृ॰ 37.

133. प्र॰ रा॰ अक॰, पृ॰ 82.

134. सोरुन गछि़ कष्टस अन्दर सु यारइ वन्योमुत आसि यस संकट निवारी।
निवारन संकटस छुय हनुमान······वि॰ प्र॰ रा॰ पृ॰ 435.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काज लगि तव अवतारा'[135] और 'विनय पत्रिका' में उनके 'रुद्र अवतार'[136] होने का संकेत उपलब्ध है।

4.1.5.2 **राम-भक्ति**

दोनों भाषाओं की रामायणों में हनुमान राम के अनन्य भक्त हैं। रामकथा में निरुपित 'दास्य-भक्ति' का सर्वोत्कृष्ट प्रतिपादन उनके चरित्र में ही उपलब्ध होता है। हनुमान का अन्तर्वाह्य रूप राम-लक्ष्मणमयी है, राम के चरणों में उन्होंने अपने को पूर्णतः समर्पित किया है और राम-लक्ष्मण की सेवा-अर्चना ही उनका परमधर्म एवं कर्तव्य है।[137] निःस्वार्थ भावना से सदैव वे अपने इष्ट आराध्य राम की वन्दना-स्तुति करते हैं।[138] अशोकवाटिका में सीता जी के प्रथम-दर्शन पर वे विनीत शब्दों में माता-सीता की वन्दना करके उनसे भक्ति और स्नेह का वरदान मांगते हैं।[139] राम-लक्ष्मण का विरह उनके लिए असह्य है। महीरावण द्वारा राम-लक्ष्मण को पाताल लोक उठा ले जाने पर उनकी स्थिति करुणार्द्र होती है—मानों समस्त बानर सेना पर वज्र या तुषाराघात हुआ हो। 'हनुमान् के अश्रुओं के प्रवाह को देखकर नदियां तक लज्जा जाती हैं।[140] इष्ट-स्वामी राम के विरह में निःसहाय सेवक एवं भक्त की तरह करुण रुदन-प्रलाप करते हुए राम से दर्शन देने की याचना करते हैं'।[141]

'मानस' में भी हनुमान् की आत्मसमर्पण-भावना प्रखर है। हनुमान् के चरित्र में सेव्य-सेवक भावना या दास्य-भक्ति की पराकास्ठा अभिव्यंजित हुई है—"सेव्य-सेवक भाव का पूर्ण स्फुरण उनमें पाया जाता है।'[4142] अलौकिक महावीरता के साथ-साथ विनम्रता, दृढ़ता, निश्छलता, निःस्वार्थता, निरभिमानता, निर्भीकता आदि समस्त गुणों का उनकी दास्य-भक्ति के साथ अभूतपूर्व समन्वय ही 'मानस' के हनुमान् की अनन्य विशेषता है। मानसकार हनुमान् को 'दास्य भक्ति की मूर्ति' के रूप में आदिकाव्य में पाये जाने वाले उनके समस्त गुणों के साथ उपस्थित करते हैं।[143] वास्तव में हनुमान् की सेव्य-सेवक भावना ही हनुमान् को उस ऊंचाई पर

135. मानस 4.30.
136. 'देवमनि रुद्र-अवतार संसारपाता'— विनय-पत्रिका 25.
137. प्र० रा०, पृ० 122-123.
138. वि० प्र०, रा० कि०, अ० 38; आ० रा०, पृ० 188; शर्मा रा० पृ० 214.
139. आ० रा०, पृ० 122.
140. सपनुख चस वदनि येलि लोग हनुमान् अशिवानि सपुन नदियन ति अवमान —प्र० रा० अक, पृ० 147.
141. प्र० रा०, पृ० 129.
142. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल—गो० तुलसीदास, पृ० 127.
143. डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, पृष्ठ 298.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ले जाती है, जहां वे स्वयं लोक के बीच पूजनीय बन जाते हैं। परवर्ती हिन्दी काव्यों में हनुमान् को राम-सेवक या भक्त के रूप में ही प्रस्तुत करने का प्रयास तो किया गया, किन्तु उनके चरित्र में विशेष विकास न हो पाया। 'साकेत' में भरत द्वारा बाण से गिराये जाने पर वे सूपर्णखा-आगमन से लेकर लक्ष्मण-मूर्छा तक की कथा सुनाते हैं।[144] राम हनुमान् की बाट जोहते हैं तो 'समुपस्थित यह दास'[145] कहते हुए हनुमान् राम के समक्ष प्रकट होते हैं।

4.1.5.3 **बल-पराक्रम**

दोनों भाषाओं की रामायणों में हनुमान् के बल-पराक्रम का विस्तृत परिचय आधार ग्रन्थों की भांति अपरिवर्तित एवं विकसित रूप में प्राप्त होता है। अन्तर बस इतना है कि आदि काव्य में उनका बल-पराक्रम अत्यधिक लौकिक और यथार्थ है, परवर्ती रामाख्यानों में उस पर अलौकिकता का मुलम्मा चढ़ा हुआ मिलेगा। कश्मीरी रामायणों में अशोकवाटिका में उनके राक्षसों के साथ युद्ध, लंका दहन, महीरावण और रावण-युद्ध प्रसंगों में उनके अद्भुत बल-पराक्रम का अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन मिलता है।

4.1.5.4 **चरित्र से सम्बन्धित अन्य विशेषताएं :**

दोनों भाषाओं की रामायणों में हनुमान् के चरित्र की अलौकिक शक्ति के साथ-साथ उनके मानवीय गुण-वृत्तियों का निरूपण भी हुआ है। यहां पर मुख्य विशेषताओं की ओर संकेत किता जाता है।

वात्सल्य—कश्मीरी रामकथा काव्य में अपने वीर पुत्र मकरध्वज के प्रति हनुमान् के वात्सल्य का सर्वोत्तम निरूपण हुआ है, जिनसे उनकी भेंट अकस्मात् पाताल-लोक में होती है। हनुमान् का प्रबल वात्सल्य अपने पुत्र की अपूर्व वीरता देखकर मनोवैज्ञानिक ढंग से स्वतः प्रस्फुटित होता है।[146]

स्वाभिमान—'अमर रामायण' मे हनुमान् के चरित्र पर स्वाभिमान की झीनी छाया सी पड़ती है किन्तु उसका बहिष्कार तुरन्त कराया गया है। 'संजीवनी-पर्वत' उठाकर लौटते समय उनके मन में अपने बल पर हल्के अभिमान की भावना उद्दीप्त होती है, भरत हनुमान का वह क्षणिक अभिमान खंडित करने के लिए ही उन्हें बाण से भूमि पर गिराकर पुनः उसी बाण पर बिठाकर लंका भेज देते हैं।[147]

रामचंद्रिका में हनुमान की स्वार्थ-भावना—रामचंद्रिका में हनुमान् के चरित्र के साथ यथोचित न्याय न हो सका। वीर और साहसी होने पर भी वे स्वार्थ-भावना

144. साकेत, सर्ग 11, पृष्ठ 418-429.
145. साकेत, सर्ग 12, पृष्ठ 479.
146. प्र० रा०, पृ० 133-134; वि० प्र० रा०, पृ० 443; आ० रा० पृ० 184 आदि।
147. अमर रा० पृ० 191-200.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से पूर्णतः मुक्त नहीं हैं। यही स्वार्थ-भावना ही इन्हें आदर्श चरित्र या भक्त रूप में प्रतिष्ठित नहीं कर सका। प्रथम भेंट में राम से परिचय प्राप्त कर सीता-हरण की घटना जानकर वे उसी स्वार्थ-भावना से प्रेरित होकर उनसे कहते है :—

या गिरि पर सुग्रीव नृप, ता संग मंत्री चारि।
बानइ लइ छड़ाइ तिय, दीन्ही बालि निकारि ॥
ता कहूं जो अपनो करि जानो, मारहु बालि बिनै यह मानो।
राज दै देहु जो बाकी तिया कौं, तौ हम देहिं बताइ सिया कों ॥
(12. 56-57)

4.2.6 रावण :

रामकथा के प्रतिनायकत्व की पूरी योग्यता रावण-चरित्र में विद्यमान है। राक्षसों का अधिपति होने के कारण उसका चरित्र समस्त तामसिक प्रवृत्तियों एवं दुर्गुणों से युक्त है। राम-विरोधी तामसिक प्रवृत्तियों के आधिक्य के कारण ही भक्त कवियों के काव्य में रावण का अप्रतिम शक्तिशाली वीर, पराक्रमी एवं विद्वत्व-पूर्ण चरित्र उभर न सका प्रत्युत उस पर यत्र-तत्र दुरुपयोगिता का उपहास करके और अधिक प्रताड़ित करने का प्रयत्न किया गया।

4.2 6.1 क्रोध, अभिमान और कामुकता :

दोनों भाषाओं की रामायणों में रावण के चरित्र में सभी अनुदात्त दुर्गुणों एवं तामसिक प्रवृत्तियों का निरूपण मिलता है। क्रोध, अभिमान और कामुकता जैसे अनुदात्त तत्व ही उसके रावणत्व के मुख्य परिचायक हैं। विभीषण, मन्दोदरी, मारीच, माल्यवान, कुम्भकरण आदि के अतिरिक्त हनुमान् और अंगद उसे राम के अलौकिक रूप के बारे में समझा कर उनसे वैर व्रत न लेने का सदुपदेश देते हैं, किंतु रावण के दम्भ एवं अहंकार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' में सीता के प्रति रावण की कुदृष्टि, पापाचार तथा कामुकता की कठोर निंदा एवं भर्त्सना रावण के भाई विभीषण द्वारा करायी गई है। विभीषण उसकी भर्त्सना यहां तक करते हैं कि 'पुत्री-सीता को कुदृष्टि से देखने के घोर अपराध में पापी रावण का शरीर जीते जी आंखें निकलवाकर कुत्तों द्वारा नोच खाने योग्य है।'[148] रावण के क्रोध और अभिमान की अभिव्यंजना विविध स्थलों पर हुई है, किंतु उसके असंयमी उग्र-स्वभाव एवं असहनशीलता का पर्याप्त परिचय 'आनंद रामावतारचरित' में उस स्थल पर मिलता है जब रामदूत अंगद सलाह और शांति का प्रस्ताव रखते हैं और प्रत्युत्तर में अभिमानी रावण तत्क्षण क्रोधाग्नि

148. ····· चे वातख अछ कड़िय हीन्यन जिन्दे ख्योन।—प्र० रा०, पृष्ठ 103.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में दुत्कारता है ।[149] रावण की कामुकता एवं परदारा-गमन को ही उसके पतन का सबसे बड़ा कारण बताया गया है ।[150]

रावण के क्रोध, अभिमान और कामुकता का परिचय 'मानस' में भी मिलता है। सूपर्णखा-निरूपण और खर-दूषण वध का समाचार पाकर उसका क्रोधित हो उठना स्वाभाविक है ।[151] 'रामचंद्रिका' में सीता-स्वयंवर प्रसंग के अन्तर्गत बाणसुर द्वारा ललकारने पर भी रावण के तीव्र क्रोध तथा अभिमान का परिचय मिलता है ।[152] इसी तरह लंका में रामागमन की सूचना पाकर उसकी भीषण क्रोध-ज्वाला धधक उठती है ।[153] रावण की तीव्र कामुकता उसे निर्लज्ज और विवेकशून्य बना देती है । वह राम की चारित्रिक बुराई करता हुआ सीता से कहता है :—

तुम्हैं देखि दूषै हितू ताहि मानै । उदासीन तोसों सदा ताहि जानै ।
महा निर्गुनी नाम ताकौ न लीजै । सदा दास मोपै कृपा क्यों न कीजै ।।

(13-59)

4.1.6.2 शक्ति और बल-पराक्रम :

रावण की अप्रतिम शक्ति एवं बल-पराक्रम का चित्रण दोनों भाषाओं की रामायणों में प्राप्त है । 'मानस' में वरदान प्राप्त कर [154] पुष्पक-हरण, कैलाशगिरि उठाने, सूर्य, चन्द्रमा, पवन, वरुण, कुबेर आदि देवताओं को वश में करने से उसकी अद्भुत शक्ति का परिचय मिलता है ।[155] किन्तु तुलसी ने प्रतिनायक के इन महत्कृत्यों पर व्यंग्य करके उनको महत्ता नहीं दी; वे अंगद द्वारा कैलाश-गिरि—उत्तोलन की तुलना गधों द्वारा बोझ उठाने से और यज्ञ-आहुतियों की तुलना बाज़ीगरों के खेलों से कराते हैं । प्रतिनायक रावण को युद्ध-पूर्व और युद्ध-भूमि में बार-बार अपमानित किया गया है । राम एक ही बाण से रावण के छत्र-मुकुट और मन्दोदरी के ताटंक गिरा देते हैं युद्ध में रावण क्या हनुमान् के एक मुक्के से वह मूर्छित होकर गिर पड़ता है, जाम्बवान की एक लात-प्रहार से वह रथ के नीचे गिर जाता है और विभीषण के गदा चलाने पर भूमिशायी होता है, आदि ।

---

149. तिबूजिथ न्यथरन खोतुस रथ म्य छुमना बौन्य पंज्यन सुम्ब केंह ति ताकत —आ० रा०, पृष्ठ 150.
150. अमर रामायण, पृ० 12-13.
151. मानस 3. 32.
152. रामचंद्रिका 4. 9.
153. वही 14. 2.
154. मानस 1. 177.
155. वही 1. 179-182, 6-29, 6-13, 6-84; 6-48; 6-94.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीरी रामायणों में अपेक्षाकृत रावण की शक्ति एवं बल-पराक्रम प्रदर्शित करने वाले समस्त महत्कृत्य प्रतिनायकानुरूप वीरोचित रूप में चित्रांकित किए गये हैं। प्रतिनायक को अधिक शक्तिशाली और वीर पराक्रमी के रूप में चित्रित करके अन्ततः उस पर राम की विजय दिखाने के मुख्य उद्देश्य को दृष्टि में रखकर कवियों ने उसकी वीरता पर न स्वयं व्यंग किया है और न पात्रों द्वारा ही कराया है। 'प्र० रा०' में अवसर पाकर अंगद बालि का उदाहरण देकर उसके बल पर व्यंग अवश्य करते हैं [156] और दो-एक रामायणों में रावण-पराभव का प्रसंग भी वर्णित है, किंतु रावण को प्रताड़ित करने वाले व्यंग-वचनों का प्राधान्य किसी भी रामायण में नहीं मिलता है।

4 1.6.3 **राम-भक्ति**

दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने भक्ति की भावना से प्रेरित होकर रावण को भी राम-भक्त बना दिया है, इसके उदाहरण विविध स्थलों पर मिलते हैं। 'प्रकाश रामायण' में रावण मन्दोदरी से स्पष्ट कहते हैं कि राम नारायण के अवतार हैं और उनके हाथों मुक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से ही उसने वैरव्रत साध लिया हैं।[157] रावण राम की महिमा गाकर उनसे मुक्ति-प्राप्ति की अभिलाषा व्यक्त करता है।[158] 'शर्मा रा०' के अनुसार युद्ध-पूर्व रामेश्वर मंदिर में पूजा के पश्चात् रावण राम से दक्षिणा के बदले 'मुक्ति' का वरदान ही मांगता है।[159]

'मानस' में खर-दूषण वध के पश्चात् रावण राम के अवतार रूप से परिचित होकर उनके बाण से मुक्ति प्राप्त करने का निश्चय कर लेता है।[160] सीता-हरण के समय वह सीता के वचनों पर बाह्य रोष प्रकट करते हुए भी मन ही मन उनके चरणों की वन्दना करता है :

सुनत वचन दससीस रिसाना। मन महुं चरन बंदि सुख माना ॥ (3.28)

राम रावण की आकांक्षा समझ कर उसका वध करके उसे मुक्ति प्रदान करते हैं।[161]

4.2.6.4 **शिव-भक्ति**

कश्मीरी रामायणों में रावण की शिव-भक्ति का भी विस्तृत परिचय मिलता

---

156. प्र० रा०, पृष्ठ 93.
157. वही, पृ० 145.
158. वही (अक), पृ० 147.
159. शर्मा रामायण, पृ० 293-294.
160. मानस 3.23.
161. वही 6.103.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। शिवजी से सहायता मांगने जाने पर शिवजी भी उसे राम के अलौकिक अवतार रूप से अवगत कराते हैं।[162]

4.1.6.5 घोर भौतिकता और विद्वत्ता का दुरुपयोग :

सुविज्ञ आलोचक डा० श्यामसुन्दरदास के विचारानुसार घोर भौतिकता ही 'मानस' के रावण की आधन्त चारित्रिक विशेषता है, "कदाचित आत्मा की उपेक्षा करते हुए भौतिक शक्ति का अर्जन ही गोसाई जी राक्षसत्व का अभिप्राय समझते थे।"[163] रावण के पांडित्य, विद्वत्ता एवं दूरदर्शिता को देखते हुए कश्मीरी राम-काव्य में रावण के लिए उपर्युक्त परिभाषा उचित न होगी। रावण के धर्म के बारे में यह कहना यथोचित होगा कि उसका धर्म अपने और राक्षस वर्ग तक ही सीमित रहा, विस्तृत समाज में उसका सदुपयोग न हो सका। आचार्य शुक्ल के विचारानुसार रावण पंडित था तपस्वी था, राजनीति कुशल था, धीर था, वीर था पर सब गुणों का उसने दुरुपयोग किया।[164] प्रस्तुत विवेचना भी एकपक्षीय है, रावण के समस्त उक्त गुण उसके 'प्रतिनायकत्व' या 'रावणत्व' के संरक्षक हैं और उसके चरित्रोत्कर्ष में सहायक सिद्ध होते हैं।

4.1.6.6 विद्वत्ता एवं पांडित्य :

कश्मीरी रामकथा-काव्य में रावण की विद्वता, महत्ता और पांडित्य का अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत रूप मिलता है और सर्वत्र उसके इन गुणों का आदर किया गया है। रामादेश से लक्ष्मण द्वारा सादर पूछे जाने पर मृतप्राय रावण अपनीअपूर्ण महत्वाकांक्षाओं का वर्णन करता है।[165] 'वि० प्र० रा०' में राम लक्ष्मण को रावण से ज्ञान-दीक्षा लेने भेजते हैं और लक्ष्मण की विनम्रता पर प्रसन्न होकर द्वेष-रहित रावण उन्हें ज्ञानोपदेश देता है।[166] रावण के उपदेश में उसकी अपूर्व विद्वता, ज्ञान और राजनीतिक विचारों का परिचय मिलता है।

4.1.6.7 चरित्र सम्बन्धी विशेषताएं :

दोनों भाषाओं की रामायणों में रावण-चरित्र के निर्माण में विविध मौलिक उद्भावनाओं का समावेश हुआ है, जिसमें मानवीय गुण-अवगुणों का निरूपण सहज और स्वाभाविक है। यहां पर दो-एक उदाहरण प्रस्तुत हैं :

4.1.6.7.1 कूटनीतिज्ञ रावण

केशवदास ने समकालीन राजनैतिक दांव-पेच एवं कूटनीति से प्रेरित होकर

162 वि० प्र० रा०, लं०. अ० 125.

163. गो० तुलसीदास. सं० 1952, पृ० 132-133.

164. वही पृ० १२९.

165. प्र० रा० (अक), पृ० 179-180.

166. वि० प्र० रा०, लं०. अ० 129.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'रामचंद्रिका' में रावण को कूटनीतिज्ञ बनाया है। कूटनीति की एक चाल से रावण दूत द्वारा राम को यह सन्देश भिजवाता है कि ब्रह्मा विष्णु आदि उसकी वन्दना-अर्चना करते हैं, उन्हें भी रावण के प्रताप—ऐश्वर्य को मानना चाहिए और यज्ञ-होम की एक ऐसी नई विधि उसे ज्ञात हुई है जिसके प्रयोग से वह राम के वश का भी न रहेगा, अतः अजेय होगा।[167] किसी भी कश्मीरी रामायण में कूटनीति का संकेत नहीं मिलता है।

4.1.6.7.2 वात्सल्य और संवेदना

'वि० प्र० रा०' और 'शर्मा रा०' में मेघनाद[168] और कुम्भकरण[169] मृत्यु की दो अप्रत्याशित घटनाओं पर रावण के मन में उनके प्रति अपार ममता स्नेह और वात्सल्य का परिचय मिलता है। रावण धैर्य खोकर करुण शब्दों में रुदन-प्रलाप करता है। वीर-पुत्र मेघनाद और भाई कुम्भकरण के सदैव के लिए बिछुड़ने पर रावण का रुदन-प्रलाप उसे सामान्य रागानुरागपूर्ण दुख-संवेदनाओं युक्त मानवीय चरित्र के समकक्ष खड़ा करता है।

4.1.6.8 रावण के वीर चरित्र का अपमान

मानसकार राम के प्रति उत्कट भक्ति के कारण रावण के वीर-चरित्र के साथ पर्याप्त न्याय नहीं कर पाये हैं।[170] अंगद द्वारा उसके प्रति अपमानजनक शब्दावली का प्रयोग और मन्दोदरी द्वारा उसकी मृत्यु को न्यायोचित कहलाने तथा उसके पापमय जीवन के अन्त करने के लिए राम की प्रशंसा करना सुविज्ञ आलोचक द्वारा प्रस्तुत किए गए उदाहरण इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं। इसकी अपेक्षा कश्मीरी रामकथा-काव्य में दोनों प्रसंगों में रावण के कुल-धर्म और मर्यादा की रक्षा करने का प्रयत्न सुलभ है। राम की भक्ति न होकर भी रावण की मृत्यु पर मन्दोदरी एक दीन विधवा की भांति करुण रुदन प्रलाप करती हैं।[171]

4.2 नारी-पात्र

4.2.1 सीता :

सीता रामकथा-काव्य की नायिका है अतः राम के समान ही उसके भी दो चारित्रिक रूप मिलते हैं—अलौकिक और लौकिक।

4.2.1.1 सीता का अलौकिक रूप :

दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने सीता के चरित्र में विविध अलौकिक रूपों

---

167. रा० चं० 19.16.
168. वि० प्र० रा०, पृष्ठ 415; शर्मा रा० (223-224).
169. वि० प्र० रा०, पृष्ठ 461.
170 डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, पृष्ठ 297.
171. शर्मा रामायण, पृष्ठ 442.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की प्रतिष्ठा करके राम के बहुमुखी अलौकिक चरित्र के साथ उनका पूर्णत: सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' में सीता पृथ्वी की अवतार हैं, जिसे भगवान विष्णु ही योग-माया सीता का अवतार धारण करने का आदेश देते हैं।[172] उक्त रामायण में गुरू वशिष्ठ राजा दशरथ से[173] और वाल्मीकि ऋषि कथा-नायक राम से[174] सीता के भूमि-अवतार के रूप की चर्चा करते हैं। 'लक्ष्मी रूप' में सीता का चरित्रांकन प्राय: सभी कश्मीरी रामायणों में अलौकिकता की दृष्टि से प्रमुख है[175] क्योंकि लक्ष्मी का सम्बन्ध राम के विष्णु-रूप से है। 'प्रकाश रामायण' में सीता की वन्दना 'उमादेवी'[176] और 'जगदम्बा'[177] के रूप में भी की गई है। 'वि० प्र० रा०' की सीता परब्रह्म की आधाशक्ति महामाया की समस्त अपूर्व कला-शक्तियों से सम्पन्न है,[178] लंका में विजयोपरान्त भक्त हनुमान उनकी वन्दना 'भव-भय विनाशिनी' त्रिजगत्-ईश्वरी तथा रामेश्वरी देवी भवानी'[179] के रूप में करते हैं और अयोध्या-गमन पर भरत उनकी स्तुति-अर्चना 'माता सती-पार्वती, शक्ति भवानी सरस्वती, सर्वमंगला, ज्वाला, हिंगला, पिंगला देवी एवं सर्वसंकट-विनाशिनी—माता[180] के विराट् भव्य रूप में करते हैं। 'वि० प्र० रा०' तथा 'आ० रा०' में सीता द्वारा महाकाली रूप धारण करने पर महारावण के विनाश करने पर गुरु वशिष्ठ तथा देवतागण द्वारा सीता की वन्दना सर्वशक्ति-सम्पन्न 'महाकाली-रूप'[181] में भी कराई गई है। 'शर्मा रा०' के प्रारम्भ में सीता की स्तुति पाप एवं संताप विनाशिनी जगदम्बा जानकी और सुबुद्धि प्रदान करने वाली सरस्वती के रूप में भी की गई है।[182]

---

172. प्र० रा०, पृष्ठ 6.

173. छि सीता पाने आमचयभूम ज़न्मस — प्र० रा०, पृ० 26.

174 सती सीता छि ज़न्मस भूम आमच् — प्र० रा०, पृ० 213.

175. प्र०रा०, पृ० 12; प्र० रा० (अक), पृ० 51, 158; शं० रा० उत्तर 6. 191, वि० प्र० रा०, पृ० 66,101.

176. प्र० रा०, पृ० 172.

177. वही, पृष्ठ 12.

178. वि० प्र० रा० पृष्ठ 101.

179. वही, ल, अ 136.

180. वही, लं०, अ 142, पृ० 575.

181. वि० प्र० रा०, लं०. अ 164-165, आ० रा०, पृ० 210-216.

182. शर्मा रा०, पृ० 3.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मानस' में सीता के भूमि-अवतार के जन्म-कथा की चर्चा नहीं की गई है और न उनके 'पृथ्वी-प्रवेश' का ही उल्लेख प्राप्य है, हां एकाध स्थल पर उनके पृथ्वी-पुत्री या 'अवनि कुमारी'[183] का संकेत मिलता है। 'रामाज्ञा प्रश्न' में 'सीता अवनि-प्रवेसु[184] का उल्लेख मिलता है। 'गोविन्द रामायण' में सीता के पृथ्वी-प्रवेश' प्रसंग का वर्णन किया गया है, किन्तु उनके भूमि-अवतार का उल्लेख नहीं मिलता है। 'मानस' में राम को विष्णु कहा गया है, इसीलिए सीता को लक्ष्मी कहना स्वाभाविक प्रतीत होता है। 'लक्ष्मी' रूप में गो० तुलसीदास ने उनकी वन्दना स्तुति विविध स्थलों पर की है।[185] फिर भी 'मानस' में सीता के अलौलिक रूप का चित्रण परब्रह्म की 'आदिशक्ति' या महामाया के रूप में ही अधिकतः किया गया है। सीता की अलौकिक परमशक्ति 'उद्भवस्थिति-संहार-कारिणी' का निर्देश तुलसीदास ने 'मानस' के प्रारम्भ में ही किया है।[186] सीता सृष्टि की रचयित्री वह 'आदिशक्ति' हैं जिसके 'भृकुटि-विलास' पर सांसारिक गतिविधि अवलम्बित है।[187] सीता परब्रह्म राम की अभिन्न प्रेरक 'आदिशक्ति' है,[188] जिनके साथ अवतार धारण कर,[189] वे नर-लीला उद्देश्य की पूर्ति के लिए अग्नि-प्रवास भी करती हैं।[190] मायापति राम की अभिन्न माया सीता का निर्देश तुलसीदास स्पष्टतः करते हैं :

श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी। (2.126)

'मानस' में सीता के परब्रह्म-माया-रूप का निर्देश-निरूपण विविध स्थलों पर प्राप्य हैं।

4.2.1 2 **लौकिक रूप :**

दोनों भाषाओं के रामाख्यानों में चरित्र-चित्रण की दृष्टि से सीता का अलौकिक रूप कहीं भी बाधक सिद्ध नहीं होता है। सीता का परम्परागत लौकिक आदर्श चरित्र ही इतना महान् है जिसमें सामान्यतः किसी भी प्रकार की दुरूहता की अत्यल्प सम्भावनाएं हो सकती हैं। समग्र रूप से देखने पर सीता के चरित्र में

183. मानस 2. 64.
184. रामाज्ञा-प्रश्न 6.7.6.
185. मानस 3.7, 6.111-313, 7.14 आदि।
186. वही 1, श्लोक 5.
187. वही 1. 148.
188. वही 1. 228.
189. वही 1. 187.
190. वही 3. 24.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक-पक्षता कहीं भी निरूपित नहीं हुई है। 'मानसकार' भी राम की भांति सीता के चरित्र में पग-पग पर उनके अलौकिक रूप को आरोपित नहीं करते हैं, सीता नर-रूप ब्रह्म की आदर्श पत्नी हैं और उसका चरित्र आदर्श लज्जाशील भारतीय कुलवधू के रूप में सर्वत्र ग्राह्य है। चित्रकूट में सीता द्वारा विविध रूप धारण कर सासों की सेवा करना तथा सीता-हरण प्रसंग में रामादेश से छाया रूप ग्रहण करना आदि सीता के लौकिक चरित्र मे अस्वाभाविकता की ओर इंगित अवश्य करते हैं, किंतु भाषा रामायणकारों ने ऐसे स्थलों पर चित्रण को अधिकाधिक सीमित और संयमित बनाने का प्रयत्न किया है। सीता के लौकिक या सामाजिक पक्ष के अन्तर्गत उनके कुमारी, कुलवधू, पत्नी—संयोगिनी, वियोगिनी, राजमहिषी और सद्गृहिणी आदि सभी रूपों का चित्रण दोनों भाषाओं की रामायणों में उपलब्ध है। यहां पर हम सीता-चरित्र के आदर्श नारीत्व के विकास, नारी सुलभ साधारण गुण-दोषों आदि की ही चर्चा करेंगे।

4.2.1.3 सीता का आदर्श नारीत्व :

दोनों भाषाओं की रामायणों में सीता के आदर्श नारीत्व का निरूपण विविध रूपों में विकसित हुआ है। कश्मीरी रामायणों में सीता का चरित्र आदर्श पत्नी या नारीत्व के रूप में ही अधिक निखरा हुआ है। उनमें प्राप्य परम्परागत विनयशीलता, निष्कलुषता, निरीहता, कर्त्तव्य-परायणता, त्याग, संयम और सारल्य के साथ-साथ दृढ़ निश्चयात्मक बुद्धि, पातिव्रत्य, तेजस्विता और मानवीय संवेदनाओं सुन्दर सामंजस्य मिलता है।

4.2.1.4 आत्मविश्वास और निर्भीकता :

दोनों भाषा-रामायणकारों ने 'लंका-काण्ड' में सीता द्वारा रावण को कटु शब्दों से प्रताड़ित और अपमानित करने का उल्लेख किया है किन्तु 'वि० प्र० रा०' में पापाचार के विरुद्ध सीता का कठोर विरोध अधिक सुन्दर है। उक्त रामायण में 'सीता-हरण' प्रसंग के अन्तर्गत सीता के आत्मविश्वास एवं निर्भीकता का सुन्दर परिचय सीता के इन शब्दों में मिलता है—"तुम्हारी लंका भस्म हो जायेगी, घोर पापों के अन्दर राजदरबार समेत घुल जाओगे, जिसके लिए शीघ्र ही महाप्रलय का आह्वान होगा'।[191] अन्य स्थलों पर भी सीता दृढ़-निश्चयात्मक बुद्धि का परिचय देती है।

4.2 1.5 आदर्श पतिव्रता-धर्म :

पतिव्रता-धर्म आदर्श नारीत्व का सार है। दोनों भाषाओं की रामायणों में इस की सुन्दर विवेचना हुई है। कश्मीरी रामायणों में सीता की एकनिष्ट पतिपरायणता एवं स्वामि-भक्ति का निरूपण विविध स्थलों पर अपेक्षाकृत अधिक विस्तार

191. मानस 1.306-7, 2. 252.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से प्राप्य है। 'प्रकाश रामायण' में 'सीता-रावण-संवाद' ।[192], 'सीता की हनुमान से की गई वार्ता'[193]. रामादेश से सप्रसन्न सीता का अग्नि-कुण्ड में प्रवेश[195] और वर मांग कर सीता का पृथ्वी में समा जाना[196] आदि प्रसंगों में सीता के आदर्श पतिव्रता धर्म का निरूपण हुआ है। 'वि० प्र० रा०' में सीता के पातिव्रत्य, सत्यनिष्ठा एवं पवित्रता की साक्षी सूर्य, चन्द्रमा और राजा दशरथ बड़े गौरव के साथ देते है।[197]

4.2.1 6 **सहृदयता और मानवीय संवेदना :**

कश्मीरी रामकथा काव्य में सीता की विनम्रता, सहृदयता और आदर्श नारी सुलभ संवेदनाओं का सुन्दर चित्रण हुआ है। 'लंका-दहन' प्रसंग में हनुमान को धधकती अग्नि-लपटों से जूझते हुए देखकर अशुभ आशंकाओं से उसका चित्त भर जाता है, एक क्षण उसकी गहन पीड़ा द्रवीभूत होकर आंखों की राह बहती है और वे सुध-बुध खोकर करुण-रुदन-प्रलाप करती हैं। कुछ रामायणों में उक्त प्रसंग में सीता की सहृदयता घनीभूत संवेदना और करुणार्द्र मन.स्थिति का आत्यंतिक मर्मस्पर्शी चित्रण मिलता है।[197]

4.2.1.7 **आदर्श कुलवधू रूप:**

'मानस' की सीता लज्जाशीला तथा विनयशीला कुलवधू है।[199] सास के समक्ष वे लज्जावश राम से वन-सहगमन की प्रबल आकांक्षा स्पष्टतया प्रकट करने में असमर्थ हैं[200] और विवशतः पति से वार्तालाप करने की अविनय तथा अशिष्टता के लिए सास कौशल्या से क्षमा-याचना करती हैं।[201]

4.2.1.8 **पतिसेवा-परायणता :**

पतिसेवा-परायणता ही उनका परमधर्म एवं कर्त्तव्य है। पति-सेवा और उनके चरणों के दर्शन ही वे प्रेरक तत्व हैं. जिनसे वे सदैव प्रसन्न रखकर वन के समस्त

---

192. वि० प्र० रा०, पृ० 167.
193. प्र० रा०, पृ० 81-82.
194. वही, पृ० 83-84.
195. वही, पृ० 157-158.
196. वही, पृ० 217.
197. वि० प्र० रा०, लं०. अ० 139.
198. प्र० रा०, पृ० 87, वि० प्र० रा०, लं०. अ० 55, पृ० 293. अमर रा०, पृ० 156-162.
199. डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, पृ० 304.
200. मानस 2. 57-60.
201. वही. 2. 64.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कष्ट-संकटों को झेलती हैं।[202] अग्नि-परीक्षा के अवसर पर कहे गए उनके ये शब्द एकनिष्ठ पतिव्रता-धर्म के परिचायक हैं :

जो मन वच क्रम मम उर माहीं। तजि रघुबीर आन गहि नाहीं ॥
(6.109)

4.2.1.9 **सद्‌गृहिणी का रूप :**

चित्रकूट में लग्न और तन्मयता से वे सभी सासों की सेवा अलग-अलग से करती हैं।[203] अयोध्या-प्रत्यावर्तन पर रामाभिषेक पश्चात् अनेक दास-दासियों के रहने पर भी वे स्वयं अपने ही हाथों समस्त गृह-परिचर्या या कार्य करती हैं तथा रामाज्ञा का पालन करते हुए माताओं की सेवा करने में उनके निरभिमान एवं सद्-गृहिणी की कर्त्तव्यनिष्ठा का आदर्श रूप मिलता है।[104]

4.2.1.10 **आधुनिक हिन्दी रामकथा-काव्य में सीता का चरित्र-विकास :**

सीता के आदर्श नारीत्व का पर्याप्त विस्तार आधुनिक काव्य-ग्रन्थों में भी मिलता है। परम्परागत गुण-तत्वों के साथ-साथ उनमें युगानुरूप नवीन उद्भावनाओं का प्रारूप द्रष्टव्य है। चरित्र-विकास की दृष्टि से 'साकेत' और 'वैदेही-वनवास' उल्लेखनीय हैं।

4.2.1.11 **साकेत में सीता का नारीत्व :**

'साकेत' में सीता राम की प्रिया ही नहीं, सहधर्मिणी भी हैं। संवेदना, कर्त्तव्य-परायणता एवं पतिव्रत ही उनका सौंदर्य और धर्म है। वन में स्वामी राम के संग रहने पर वे राजभवन का सुख-आनन्द अनुभव करती हैं—"प्रिया संग यहां सब प्रेय श्रेय हैं मेरे"।[205] वे स्वावलम्बिनी, कर्त्तव्यपरायणता या आदर्श नारी-स्वातंत्र्य की प्रतिमूर्ति हैं :

"औरों के हाथों यहां नही पलती हूं, अपने पैरों पर आप खड़ी चलती हूं ॥"
(पृ० 223)

'साकेत' की सीता नव-युगीन गांधीवादी विचार-धाराओं से भी प्रभावित हैं। बेकार समय नष्ट करना वे नही चाहती, वन की 'भोली कोल किरात भिल्ल

---

202. मानस 2. 66, 103.

203. वही, 2. 252.

204. वही, L. 24.

205. साकेत, सर्ग 8, पृ० 225.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बालाओं' से निवेदन करती हैं—"मुझको कुछ करने योग्य काम बतलाओ" और फिर उन्हें उपदेश देती हैं :—

सब ओर लाभ ही लाभ बोध विनिमय में,
उत्साह मुझे है विविध वृत्त संचय में ।
तुम अर्द्ध-नग्न क्यों रहो अशेष समय में,
आओ हम कातें बुने गान की लय में ।। (पृ॰ 227)

4 21.12 **'वैदेही-वनवास में सीता का नारीत्व :**

'वैदेही-वनवास' में सीता के पतिव्रता-धर्म में सरलता, विनम्रता, आत्मसंयम लोक-प्रेम और उदारता का सुन्दर सामंजस्य मिलता है । राम उनके गुणों को इन शब्दों में व्यक्त करते हैं :—

नहीं सकती जो पर दुख देख, हृदय जिसका है परम उदार ।
सर्वजन सुख संकलन निमित्त, भरा है जिसके उर में प्यार ।।
सरलता की जो है प्रतिमूर्ति, सहजता है जिसकी प्रिय नीति ।
बड़े कोमल हैं जिसके भाव, परम पावन है जिसकी प्रीति ।।
(2. 41-42)

गुरु वशिष्ठ सीता के बारे में कहते हैं :—

सती शिरोमणि पति परायणा पूत थी । वह देवी है दिव्य विभूतियों से भरी ।।
है उदारतामयी सुचरिता सद्व्रता । जनक सुता है परम पुनीता सुरसरी ।।
(4.60)

पति राम से 'वाल्मीकि आश्रम' में रहने का निर्णय-आदेश सुनकर पहले विरह की कल्पना से वे अधीर एवं विक्षुब्ध-सी होती हैं ।[206] परन्तु शीघ्र ही कर्त्तव्य और ओकाराधन भावना उनकी स्वार्थमयी प्रेमजनित पीड़ा एवं अधीरता पर विजित होती हैं ।[207] वाल्मीकि-आश्रम में वे राज-भोग या ऐश्वर्य को भूलकर एक तपस्विनी के रूप में रहकर वन के चींटी-कीड़ों और पशु-पक्षियों की सेवा में ही आनंद प्राप्त करती हैं ।[208]

सीता के चरित्र में आदर्श सतीत्व, दाम्पत्य-प्रेम तथा मातृत्व के साथ-साथ

---

206. वैदेही वनवास 5. 22.
207. वही 5. 27.
208. वही 12. 5.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोक-मंगल भावना एवं अनुपम त्याग का सुन्दर विकास मिलता है। एक उदार चरित्र की भांति वे निजी सुख-लिप्सा को विश्व-प्रेम एवं लोक-मंगल में परिणत करती हैं :—

सर्वोत्तम साधन है उर में। भवहित पूत भाव का भरना ।।
स्वाभाविक सुख लिप्साओं को। विश्व-प्रेम में परिणत करना ।। (7.75)

यहीं पर सीता का आदर्श चरित्र या नारीत्व अपने विकास की चरम परिणति प्राप्त करता है, सीता का अनुपम त्याग ही उन्हें ऐसा चरित्रोत्कर्ष प्रदान करता है।

4.2.1.13 नारी सुलभ चरित्रगत दोषों का आरोप :

दोनों भाषा-रामायणों में सीता के आदर्श नारीत्व के साथ-साथ उनके चरित्र में साधारण मानवीय अवगुणों का निरूपण भी हुआ है। यहां पर कुछ प्रमुख प्रसंगों के आधार पर सीता के मानवीय चरित्रगत दोषों का उल्लेख किया जाता है।

4.2.1.14 लक्ष्मण पर कोप प्रकट करना :

'वाल्मीकि रामायण' में सीता-हरण प्रसंग के चित्रण में सीता लक्ष्मण पर कठोर शब्दों में कोप प्रकट करती हैं,[209] इसी के आधार पर कुछ भाषा-रामायणकारों ने भी उक्त प्रसंग में वाल्मीकि का अनुकरण किया। 'प्रकाश रामायण' में भी लक्ष्मण द्वारा कपटी स्वर्ण-मृग (मारीच) के बारे में समझाने पर सीता देवर एवं भक्त लक्ष्मण के चरित्र को लांछित करती हुई यहां तक कहती हैं—'वास्तव में शत्रु होकर तुम कपटी मित्र के रूप में हमारे साथ-साथ अयोध्या से आये हो। सौतेला भाई कभी अपना नहीं होता है। लगता है तुम लोभ-वश मेरे रूप-सौंदर्य पर आसक्त हो······मैं विष खाकर तुम्हारी सभी कपटी आकांक्षाएं मिटा दूंगी'।[210] 'मानस' की सीता भी उक्त प्रसंग में लक्ष्मण के प्रति 'मर्म वचन' बोलती हैं,[211] किन्तु यहां सीता के मर्यादाशील चरित्र की रक्षा करते हुए उनमें उग्रता और असंयम के दर्शन नहीं होते हैं।

4.2.1.15 हठधर्मिता :

कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' में सीता की साधारण नारी-सुलभ हठधर्मिता का परिचय विभिन्न स्थलों पर मिलता है। सीता से ही 'स्वर्ण-मृग' को पकड़ कर लाने के लिए राम से अनुरोध करती हैं।[212] लव-कुश द्वारा राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न ओर समस्त अयोध्या की सेना के मारे जाने परसीता हृदय-विदारक

209. वा० रा०, 3. 45.
210. प्र० रा०, पृ० 49.
211. मानस 3. 28.
212. प्र० रा०, पृ० 47.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्दों में रुदन-प्रलाप करती हैं,[213] किन्तु अमृत-वर्षा से पुनः सबके जीवित होने पर तत्क्षण सीता का हठी नारी-हृदय भी जागता है औरअयोध्या लौटने के लिए की हुई राम की विनती एवं क्षमा-याचना को वे हठपूर्णकठोर शब्दो में ठुकराती हैं।[214] किसी भी अन्य रामायण में सीता की हठधर्मिता का ऐसा परिचय नहीं मिलता है।

4.2.1.16 स्वाभिमान

सीता की हठधर्मिता स्वाभिमान की भावना से ओतप्रोत है। अयोध्या के अश्वमेध-यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए शत्रुघ्न के सन्देश-प्रस्ताव पर आत्मक्षोभ से विह्वल वे अपनी स्वाभिमान पूर्ण विवशता को प्रकट करती हुई कहती हैं कि कैसे वे अयोध्या लौट सकती हैं, लोग कहेंगे कि राम द्वारा अयोध्या से निर्वासित सीता आत्म-सम्मान को तिलांजलि देकर पुनः अयोध्या लौटी है।[215] इसी आत्म-सम्मान की प्रबल भावना से प्रेरित होकर सीता अयोध्या में पवित्रता की साक्षी देने के बहाने पृथ्वी में समा जाना अधिक श्रेयस्कर समझती हैं।

परवर्ती कश्मीरी रामायणों में सीता के उपरिलिखित साधारण चरित्रगत त्रुटियों का पर्याप्त परिष्कार दृष्टिगत होता है। 'वि० प्र० रा०' में राम का अनुरोध ठुकराये बिना ही एक आज्ञाकारिणी पत्नी की भांति निर्वासित सीता राम के साथ अयोध्या लौटकर यज्ञ-मण्डप में राम के साथ बैठकर प्रसन्नचित अनिवार्य यज्ञ-क्रियाएं सम्पन्न करती हैं।[216] सीता के उत्तरोत्तर चरित्र-विकास में पूर्व-प्रतिपादित या आरोपित दौर्बल्य या चारित्रिक दोषों पर पर्दा डालकर उनके स्थान पर चरित्रगत आदर्श भावनाओं का यथोचित समावेश किया गया है।

4.2.1.17 'रामचंद्रिका' में सीता का पत्नीत्व

आलोचक डा० विजयपाल सिंह लिखते हैं "कवि (केशव) ने जगजननी जानकी को एक आदर्श पत्नी के रूप में चित्रित किया है। अप्रतिम सुन्दरी, पतिपरायणता, साध्वी सीता में सभी गुण निहित है।"[217] जहां तक सीता के प्रधान परम्परागत गुणतत्वों का निरुपण है, केशव ने उन्हें आदर्श पत्नी के रूप में चित्रित करने का प्रयत्न अवश्य किया, किन्तु सीता के सौन्दर्य-वर्णन एवं कार्य-व्यवहार को तदनुकूल यथोचित मोड़ नहीं मिला है। कवि की श्रृंगारिक मनोवृत्ति एवं पांडित्य-प्रियता सीता के चरित्र को उभरने में बाधा उपस्थित करती है। परिणामतः सीता के पूर्व प्रतिष्ठित आदर्श पत्नीत्व की रक्षा न हो सकी।

---

213. प्र० रा०, पृ० 194-196,
214. वही, पृ० 201-202.
215. वही, पृष्ठ 212-213.
216. वि० प्र० रा०, अश्व. अ 59 तथा 62.
217. केशव और उनका साहित्य, पृष्ठ 304.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीता केशव-युगीन साधारण नायिका सी प्रतीत होती है। पति के मनोरंजन के लिए साधन उनके पास अनेक हैं। वीणा-वादन में प्रवीण सीता इसका सहारा लेकर पति को प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हैं।[218] इतना ही नहीं 'केशव की सीता आधुनिक सभ्यतानुगामिनी स्त्रियों के समान ही सुखपूर्वक राम से पंखा झलवाती हैं और बीच-बीच में 'चंचल चारु दगंचल' से राम की ओर निहार कर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझती हैं।"[219] सीता का हृदय सन्देह से भरा हुआ है, वे सहजतया हनुमान के कथन पर विश्वास नहीं करती हैं।[220] इस तरह अन्य चरित्रों की भांति 'रामचंद्रिका' में सीता के चरित्र का कोई भी उल्लेखनीय विकास नहीं हो सका है।

4.2.2 कौशल्या

रामकथा में कौशल्या पत्नी, सपत्नी, सास, विमाता, राजमहिषी और राजमाता के विविध रूपों में हमारे सामने आती हैं। दोनों भाषाओं की रामायणों में उनके उदात्त मातृत्व एवं समवात्सल्य की भावना का ही अधिक विकास हुआ। राम-भक्त एवं आदर्श-प्रिय कवियों ने राम-माता कौशल्या के चरित्र में समस्त उदात्त गुण-तत्वों का सामंजस्य स्थापित किया, जिसके परिणामस्वरूप कौशल्या का चरित्र आदर्श माता के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। दोनों भाषा-कवियों ने कौशल्या के बहुमुखी चरित्र में से उनके 'मातृत्व' को ही अपनी दृष्टि का प्रमुख केन्द्र बनाकर उनका चरित्रांकन आदर्श रूप में किया है।

4.2.2.1 समवात्सल्य

दोनों भाषाओं की रामायणों में चारों पुत्रों के प्रति कौशल्या के सम-वात्सल्य का सुन्दर निरूपण मिलता है। 'प्रकाश रामायण' के अनुसार राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न चारों के बीच उनके हृदय में तनिक भी भेदभाव नहीं है। राम-लक्ष्मण के वन-गमन के पश्चात् भरत और शत्रुघ्न ननिहाल से लौटकर मां कौशल्या के समक्ष अपनी आत्मग्लानि प्रदर्शित करते हुए रोते है, कौशल्या दोनों को स्नेहपूर्वक गले लगाकर ममतापूर्ण शब्दों में उन्हें सान्त्वना देते हुए आश्वासन दिलाती है कि भरत और शत्रुघ्न उन्हें राम से भी कहीं अधिक प्रिय हैं।[221]

'मानस' में भरत के प्रति किसी भी प्रकार का द्वेष भाव उनके मन में नहीं है, वे भरत को राजमुकुट धारण करने का उपदेश देकर[222] अपने उदार वात्सल्य का

---

218. रा० चं० 11. 27.

219. डा० हीरालाल दीक्षित—आचार्य केशवदास, पृ० 142.

220. रा० चं० 13-78.

221. प्र० रा०, पृष्ठ 30-31.

222. मानस 2. 176,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिचय देती हैं। इसी तरह चित्रकूट-यात्रा में भरत-शत्रुघ्न को रथ पर चढ़ने का अनुरोध करके[223] उनके प्रति अतुल सौहार्द तथा वात्सल्य प्रदर्शित करती हैं और इससे पहले ननिहाल से भरत-शत्रुघ्न के लौटने पर उनके प्रति सुहृद व्यवहार में अतिशय मातृत्व और उदार वात्सल्य के दर्शन होते हैं।[224] परवर्ती हिन्दी राम-काव्यों में 'साकेत' में ही कौशल्या के 'समवात्सल्य' का उत्कृष्ट रूप मिलता है। राम और भरत को अभिन्न मानते हुए कौशल्या कहती हैं—"मुझे राज्य का खेद नहीं, राम, भरत में भेद नहीं।"[225] उनकी यही आकांक्षा है—" भरत राज्य की जड़ न हिले, मुझे राम की भीख मिले।[226] राम-भरत को अभिन्न समझती हुई उनमें केवल नाम-मात्र का अन्तर बताती हुई वे भरत से सम्बोधित होकर कहती हैं :

मिल गया मेरा मुझे तू राम, तू वही है भिन्न केवल नाम। (पृ० 205)

चारों पुत्रों के प्रति समवात्सल्य के उदाहरण अन्य स्थलों पर भी मिलते हैं। लक्ष्मण-मूर्छा का समाचार पाकर वे अत्यधिक क्षुब्ध होती हैं और शत्रुघ्न को लंका जाने से रोकती हुई कहती है :—

बेटा बेटा नहीं समझती हूं यह सब मैं,
बहुत सह चुकी, और नहीं सह सकती अब मैं।
हाय, गये सो गये, रह गये सो रह जावें,
जाने दूंगी तुम्हें न, वे आवें जब आवें। (पृ० 457)

8.2.2.2 राम के प्रति वात्सल्य का रूप

दोनों भाषाओं की रामायणों में राम के प्रति कौशल्या के 'वात्सल्य' की सुन्दर अभिव्यंजना विवध रूपों में हुई है। 'प्रकाशक रामायण' में राम के प्रति कौशल्या के प्रगाढ़ वात्सल्य का परिचय राम की विदाई के अवसर पर किए गए कौशल्या के रुदन-विलापों में मिलता है।[227] 'वि० प्र० रा०' में इस वात्सल्य की अभिव्यंजना अधिक मार्मिक ढंग से हुई है। राम लक्ष्मण और सीता के विदा होते ही मां कौशल्या सुधबुध खोकर अचेत हो जाती हैं, जैसे राम नहीं उनके शरीर से प्राण ही चले गए हों।[228] चेतना लौटने पर वे राजा दशरथ के साथ-साथ करुण

223. मानस 2. 188.
224. वही 2. 165.
225. साकेत, सर्ग 4, पृ० 100.
226. वही।
227. प्र० रा०, पृ० 25.
228. वि० प्र० रा० पृ० 108-109.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विलाप करती हैं।[229] कौशल्या की विरहजन्य पीड़ा में जिस अद्‌भुत 'वात्सल्य' का समारम्भ 'प्रकाश रामायण' में हुआ, उसका उत्तरोत्तर विकसित एवं परिष्कृत रूप 'शर्मा-रामायण' तक आते-आते 'भक्ति' के रूप में परिणत हुआ। कौशल्या राम की वन्दना-स्तुति निष्फल, निष्काम, आनंददायक, नयनाभिराम एवं दुःख-संताप-विनाशक भगवान् राम के रूप में करती हैं। इतना ही नहीं, निजी पापों की गणना करती हुई वे धर्म-भीरु भक्तिन के रूप में अपने दुर्भाग्य को कोसती प्रतीत होती हैं।[230] 'ता० रा०' और 'अमर रा०' में भी कौशल्या राम-नाम को सर्वोपरि समझकर राम की वन्दना-स्तुति इसी अलौकिक रूप में करती हैं। इस तरह कौशल्या का राम के प्रति अतिशय वात्सल्य भक्ति में परिवर्तित होकर वात्सल्य के माधुर्य को खो देता है। यहां राम-माता कौशल्या राम के पर-ब्रह्म रूप से भली भांति अवगत हैं।

'मानस' की कौशल्या भी राम के परब्रह्म रूप से पूर्णतः परिचित हैं। इसीलिए उनके वनगमन पर वे अधिक चिंता न करके सीता की कोमलता देखकर उनके वन-गमन पर अधिक चिंतित दिखाई देती हैं।[331] 'मानस' की कौशल्या अधिक विवेक और संयम का परिचय देती हैं। "तुलसीदास की कौशल्या कर्त्तव्याकर्त्तव्य-निर्णय की, जिसका दूसरा नाम 'विवेक' है, सूक्ष्म वृत्ति प्रदर्शित करती है·· राम को वन जाने की आज्ञा देने के लिए प्रार्थना के उत्तर में दिया हुआ उनका कथन विवेक, समत्व बुद्धि, कर्त्तव्य-बुद्धि और धर्म-बुद्धि का उत्कृष्ट उदाहरण है।[232] इस तरह कौशल्या विवेक-शून्य होकर कर्त्तव्याकर्त्तव्य को नहीं भूलती और न उनके चरित्र में अंध-वात्सल्य या उग्रता के दर्शन होते हैं। 'मानस' की कौशल्या में किसी भी प्रकार की अनुदात्तता का परिचय हमें नहीं मिलता है, उन्हें राम-वियोग था वन में उनके कष्ट-क्लेशों की उतनी चिंता नहीं है, जितनी कि दशरथ, भरत और अयोध्या की।[233] 'साकेत' में भी कौशल्या के उदार वात्सल्य के साथ-साथ कर्तव्य-परायणता का अद्‌भुत सामंजस्य मिलता है। 'मानस' के आदर्श का अनु-करण करके साकेतकार ने कौशल्या के चरित्र को पुनः ऊपर उठाया है— "मूर्तिमयी ममता माया, कौशल्या कोमलकाया"[234] सादृश रूप-चित्रण उनका

229. वि० प्र० रा०, वन. अ० 7.
230. शर्मा रामायण पृ० 123.
231. मानस, 2. 58-59.
232. डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, पृ० 300.
233. मानस, 2.55.
234. साकेत, सर्ग 4, पृ० 93.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अद्‌भुत है। कर्त्तव्यनिष्ठ कौशल्या कर्त्तव्य-पालन को प्रमुखता देकर राम को वन-गमन का आदेश देती हैं :

जाओ बेटा ! वन ही, पाओ नित्य-धर्म धन ही।
पूज्य पिता प्रण रक्षित हो, मां का लक्ष्य सुरक्षित हो। (पृ० 107-108)

'राम-वनगमन' को अपने ही बुरे कर्मों का फल मानती हुई वे किसी को दोष नहीं देती हैं—"होते मेरे सुकृत कहीं, तो क्यों आती विपद यहीं"[235] इस तरह कैकेयी के प्रति उनका औदार्यपूर्ण व्यवहार स्वच्छ एवं अद्वितीय है। दशरथ से वे यही वर मांगती हैं कि कैकेयी कभी पुत्र-वंचिता न हो।[236]

8.2.2.3 'रामचंद्रिका' में कौशल्या का चरित्र

'मानस' में प्रतिष्ठित कौशल्या के उदात्त आदर्श चरित्र के साथ 'रामचंद्रिका' में केशवदास यथोचित न्याय न कर सके। 'रामचंद्रिका' की कौशल्या का स्वभाव 'वाल्मीकि रामायण' की कौशल्या की भांति अत्यधिक उग्र एवं स्वार्थमयी है। कौशल्या राम से अनुरोध करती हैं कि वे उन्हें भी अपने साथ वन ले चले, फिर अयोध्या में चाहे भरत राज करे या नगर पर 'गाज पड़े', उससे उनका कोई मतलब नहीं :—

मोहि चलो वन संग लियें। पुत्र तुम्हें हम देखि जियें।।
औधपुरी महं गाज परै। कै अब राज्य भरथ्य करै।। (9.10)

'रामचंद्रिका' में कौशल्या को शांत करते हुए राम उपदेश भी देते हैं। किसी भी कश्मीरी रामायण में कौशल्या के चरित्र में इस प्रकार का दौर्बल्य नहीं दिखाई पड़ता।

4.2.3 कैकेयी

रामकथा-काव्य में कैकेयी का चरित्र-विकास किसी भी विशिष्ट 'प्रवृत्तिप्रमुख चरित्र' या 'टाइप' के अन्तर्गत पूर्णतः समाहित नहीं होता है। प्रारम्भ में पाठक के मन में उनके प्रति उपजी हुई घृणा या दुर्भावना अकस्मात् सहानुभूति, सद्-भावना एवं श्रद्धा में परिवर्तित होती है। आदिकाव्य में कैकेयी के चरित्र को समालोचक 'रावण के प्रतिरूप' 'अधार्मिक' तथा 'प्रवृत्ति-प्रमुख' मानते हुए भी लिखते हैं, "उनकी अंतिम झलक अनुताप आत्मग्लानि तथा घोर आन्तरिक व्यथा से ओतप्रोत है।"[237] दोनों भाषाओं की रामायणों में कैकेयी के इस परम्परागत चरित्र का विकास कुछ नवीन आदर्शमूलक परिवर्तनों के साथ-साथ हुआ।

---

235. साकेत, सर्ग 4, पृ० 108.
236. साकेत, सर्ग 6, पृ० 168-169.
237. डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, पृ० 301-302.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4.2.3.1 चारित्रिक दोष

दोनों भाषाओं के आदर्शप्रिय रामभक्त कवियों ने कैकेयी को चारित्रिक लांछन से बचाने के लिए राम-वनवास सम्बन्धी कैकेयी की वर-याचना को दैवी प्रेरणा का परिणाम माना है। 'प्रकाश रामायण' के अनुसार कैकेयी की मति बदल जाने के परिणामस्वरूप ही प्रारम्भ में वह अविवेकशील, हठ-धर्मिणी, कुटिल, ईर्ष्यालु, अदूरदर्शिनी, निर्दयी, स्वार्थमयी, उग्र नारी-स्वभाव का परिचय देती है। निरपराध राजा दशरथ उसके कुटिल वाग्जाल में फंस कर छटपटाते हैं और वह तनिक भी दया नहीं दिखाती है। समस्त राजपरिवार के सदस्यों तथा रोती-बिलखती जनता के समक्ष वह राम-लक्ष्मण और सीता के राजसी वस्त्राभूषण उतार कर उन्हें 'भूर्ज-वस्त्र' (संन्यासी वस्त्र) पहनाती हैं, कैकेयी के अतिरिक्त कोई भी ऐसा दुस्साहस करने में असमर्थ था।[238] कैकेयी के उग्र-रूप की तुलना कवि ने अगहन की बर्फीली वायु के साथ की है, जिसकी तीव्र गति से लोगों के मन में उसके प्रति घृणा एवं वैमनस्य की ज्वाला क्षणांतर में ही अधिकाधिक प्रज्ज्वलित हुई।[239]

'मानस' में भी दैवी प्रेरणा अथवा 'सुर-प्रपंच' के परिणामस्वरूप ही वह राम-वनवास का प्रत्यक्ष कारण बन जाती है, जिससे वह अत्यधिक हठधर्मिता एवं अविवेकशीलता का परिचय देती है। राजा दशरथ की विनम्र प्रार्थना का उत्तर वह कठोर और अमर्यादित शब्दों में देती है।[240]

8.2.3.2 राम के प्रति वात्सल्य

दोनों भाषाओं की रामायणों मे मूलतः कैकेयी के हृदय में राम के प्रति अगाध स्नेह और वात्सल्य की अभिव्यंजना हुई है। 'वि० प्र० रा०' के अनुसार बाल्यावस्था में राम को कैकेयी की ही गोद में अद्वितीय सुख और आनंद प्राप्त होता था, कैकेयी राम को प्राणों से अधिक चाहती थी, उनके चरण-कमलों को बार-बार चूमती और गले लगाकर आनंद-निमग्न होती, कैकेयी पथ में आंखें बिछा कर राम की बाट जोहती और 'राम' 'राम' की रट उनके होठों पर सदैव विराजमान रहती।[241] यही था कैकेयी के उदार मातृत्व एवं वात्सल्य का मूल रूप। 'शर्मा रामायण' में कैकेयी धूर्त-मति वाली मन्थरा को डांट-डपट कर राम के प्रति अगाध वात्सल्य का परिचय देती है। मूलतः राम ही उनके प्राणाधार हैं और भरत से भी कहीं अधिक प्रिय।[242] वास्तव मे कैकेयी का हृदय-परिवर्तन

238. प्र० रा०, पृ० 20-22.
239. वही, पृ० 24.
240. मानस, 2.33.
241. वि० प्र० रा०, पृ० 35.
242. शर्मा रामायण, पृ० 112.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनोवैज्ञानिक ढंग से हुआ है, जिसमें विमाता का ईर्ष्यालु रूप उतना तीव्र नहीं होता है, जितना कि उसका सपत्नी द्वेष।

'मानस' में भी राम के प्रति कैकेयी के वात्सल्य का परिचय मिलता है। राम और भरत में भेद-भाव न समझ कर राम के अभिषेक का समाचार सुनकर कैकेयी प्रसन्न होती है।[243] राम के प्रति कैकेयी के अपार स्नेह को जानते हुए दशरथ भी कैकेयी के आकस्मिक परिवर्तन पर आश्चर्य प्रकट करते हैं :

तुहुं सराहसि करसि सनेहू। अब सुनि मोहि भएउ संदेहू॥ (2.32)

4.2.3.3 दोषों का निवारण

दोनों भाषाओं के कवियों ने कैकेयी के चरित्र में अकस्मात् परिवर्तन करके उनके सभी सामयिक चारित्रिक दुष्कृत्यों पर पर्दा डालने का प्रयत्न किया है। सभी कश्मीरी रामायणों में कैकेयी का चरित्र एक बार पुनः स्वच्छ आदर्श रूप में पाठकों के सामने लाया गया है। उसका सामयिक चारित्रिक कलंक पश्चात्ताप एवं आत्मग्लानि के आंसुओं से पूर्णतः धुल जाता है। 'प्रकाश-रामायण' के अनुसार दशरथ की मृत्यु और भरतागमन पर वह अपनी पथ—भ्रष्ट मति को समझकर अपनी कुमति को दुत्कारती हुई करुण रुदन-प्रलाप करती हैं।[244] चित्रकूट में निरंतर नेत्रों से अश्रु प्रवाहित करती हुई वह अपने कुकृत्य के लिए राम से बार-बार क्षमा-याचना करती हुई कहती है—'मैंने वर रूपी कटार स्वयं अपनी ग्रीवा पर मारी, अपने प्राणों को निकलने के लिए विवश किया। इस घोर कलंक से तुम ही मेरी रक्षा कर सकते हो।[245] इस तरह स्वतः अपराध स्वीकार करने पर राम कैकेयी के उदार मातृत्व की प्रशंसा करके 'होनी' को ही अपने वनवास का उत्तरदायी ठहरा कर कैकयी के प्रति श्रद्धा और मधुर भाव व्यक्त करते हैं।[246] इसी तरह परवर्ती राम-काव्यों में भी कैकेयी का चरित्र-परिवर्तन करके उनके परम्परागत चरित्र में आदर्शमूलक गुण-तत्वों के सामंजस्म द्वारा उनके चरित्र को एक आदर्श मां की प्रतिष्ठा प्रदान की।

'मानस' में गो० तुलसीदास उत्कट राम-भक्ति भावना से प्रेरित होकर कैकेयी के इस देव-प्रेरित अपराध को अन्त तक क्षमा नहीं करते हैं। कैकेयी के चरित्र

---

243. मानस, 2.15.

244. वही, पृ० 31.

245. वही, पृ० 39.

246. प्र० रा०, पृ० 39-40.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को उन्होंने आद्यन्त लांछित बनाये रखा है और पर्याप्त अवसर मिलने पर भी कैकेयी के कलंक को पूर्णत: मिटाने का प्रयत्न नहीं किया। तुलसीदास ने चित्रकूट-प्रसंग और अयोध्या लौटने पर कैकेयी की ग्लानि, लज्जा और आत्म-पश्चाताप की ओर संकेत-मात्र किया है :—

गई गलानि कुटिल कैकेयी। काहि कहइ केहि दूषनु देई॥ (2.273)
रामहि मिलत कैकइ हृदयं बहुत सकुचानि॥
लछिमन सब मातन्ह मिलि हरषे आसिस पाइ।
कैकइ कहं पुनि पुनि मिले मन कर छोभ न जाइ॥ (7.6)

4.2.3.4 'रामचंद्रिका' में कैकेयी का चरित्र

रामचंद्रिका में कैकेयी का चरित्र दब-सा गया है, उसमें किसी भी तरह का विकास नहीं हुआ है। जिस पुत्र भरत के लिए वह राज्य मांगती है[247] वह उसे 'धिक तोकों'[248] कहकर उसके चरित्र को और अधिक उभरने नहीं देता है।

आधुनिक हिन्दी रामकथा-काव्यों में 'साकेत' और 'साकेत-सन्त' में ही कैकेयी के चरित्र का पूर्ण विकास एवं उनके चारित्रिक दौर्बल्य का बहिष्कार हुआ है।

4.2.3 5 'साकेत' में कैकेयी का चरित्र

'साकेत' में कैकेयी सती-साध्वी पत्नी और सरल-हृदया माता के रूप में चित्रित हुई है। भरत और राम में भेद-भाव न समझकर वे कुटिल-बुद्धि मन्थरा से उसी सरलता से पूछती है—"भला दोनों में है क्या भेद ?"[249] कैकेयी के मन में सन्देह का निरूपण मनोवैज्ञानिक धरातल पर ही होता है और केवल इतना कह पाती है :

'भरत से सुत पर भी सन्देह, बुलाया तक न उन्हें जो गेह।" (पृ० 49)

'साकेत' में कैकेयी के निजी अपराधों पर आत्मग्लानि और पश्चात्ताप का सुन्दर निरूपण हुआ है। पति की मृत्यु पर उनकी विकट दशा होती है :

कैकेयी का मुंह भी न खुला, पाषाण शरीर हिला न डुला।
बस फट सी गईं बड़ी आंखें, मानों थीं नई जड़ी आंखें।
रोना उसको उपहास हुआ, निज कृत वैधव्य-विकास हुआ।
तब वह अपने से आप डरी, किस कुसमय में मन्थरा मरी। (पृ०179)

---

247. रा० चं०, 9.4.

248. वही, 10. 4.

249. साकेत, सर्ग 2, पृ० 42.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भरत और शत्रुघ्न के समक्ष वह अपना अपराध स्वीकार करती है—'मैं स्वयं पतिघातिनी हाय !'[250] अपने घोर अपराध से मुक्ति-प्राप्ति के लिए वह पति की देह के साथ सती होने की आकांक्षा प्रकट करती है, किन्तु भरत ही ऐसा करने से रोक लेते हैं ।[251]

कैकेयी के हृदय की समस्त रही-सही आत्मग्लानि चित्रकूट-सभा में बह जाती है, भरत के प्रति भी वह सफाई देती है :

'यदि मैं उकसाई गई भरत से होऊं ! तो पति समान ही स्वयं पुत्र भी खोऊं ।'
(पृ० 248)

राम के समक्ष अपना अपराध स्वीकार करती हुई वे अपने आपको दुत्कारती है, जिससे भाव-विह्वल होकर सारी जनता श्रीराम के साथ चिल्ला उठती है :

सौ बार धन्य वह एक लाल की माई,
जिस जननी ने है जना भरत-सा भाई । (पृ० 249)

4.2.3.6 'साकेत-सन्त' में कैकेयी का चरित्र

'साकेत-सन्त' में भी कैकेयी का चरित्र ममतापूर्ण कोमल हृदया आदर्श मां के रूप में चित्रित हुआ है । महाकाव्य के नायक भरत की माता होने का पूरा गौरव उन्हें प्राप्त है । राम के प्रति उनके हृदय में अपार स्नेह और ममता है, इसीलिए प्रारम्भ में भरत उनके हृदय-परिवर्तन पर आश्चर्य प्रकट करते हैं ।[252] चित्रकूट में वे उसी प्रगाढ़ स्नेह-भावना से राम से निवेदन करते है :

तुम को वन भेजा अहह ! हुई मैं वन्या,
तुम गहो भरत का हाथ बनूं मैं धन्या ।
तुम एक बार 'मां' कहो लाल ! बलि जाऊं,
मैं जो कुछ हूं खो चुकी पुनः वह पाऊं । (11.45)

राम को अवध लौटने के लिए वे हठपूर्वक अनुरोध करती हैं :—

साथ सबों के यदि न चलोगे, आज द्वार पर धरना दूंगी ।
इन पापी प्राणों को धारण कर घर में क्यों और मरूंगी ।

---

250. साकेत सर्ग 7, पृ० 194.
251. वही, पृ० 207.
252. साकेत-सन्त, 3.29.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रायश्चित करूंगी वन में, जिससे क्षमा तुम्हारी पाऊं ।
तुम मां कह मुझसे फिर लिपटो, मैं लल्ला कह बलिबलि जाऊं ।
(13.17)

इस तरह हिन्दी रामकथा-काव्य में कैकेयी के चरित्र का पूर्ण विकास आधुनिक काव्यों 'साकेत' और 'साकेत-सन्त' में ही मिलता है । कैकेयी के चरित्र में युगानुरूप आदर्शमूलक गुण तत्वों का सामंजस्य भी सुन्दर ढंग से निरूपित किया गया है ।

4.2.4 मन्दोदरी

'आदि-काव्य' में मन्दोदरी का चरित्र महत्वपूर्ण नहीं है. उसका चरित्र-चित्रण महाकाव्य के प्रतिनायक रावण की पत्नी के अनुरूप ही हुआ है । रावण-मृत्यु के पश्चात् अपने राजसी सुख-बिहार को स्मरण करके उसे अत्यधिक दुःख होता है, उसे सीता तक से ईर्ष्या होती है और वीरगति को प्राप्त पति के सौन्दर्य और वीरता का यथोचित बखान करती है ।[253] आलोच्य भाषा-रामायणों में मन्दोदरी का चरित्र विकास विविध रूपों में हुआ है । उत्कट भक्ति भावना से प्रभावित होकर दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने उसे भी राम की भक्तिन बनाया । कश्मीरी रामकथा काव्य में मन्दोदरी के मातृत्व की सुन्दर अभिव्यंजना हुई है । यहां पर मन्दोदरी के तीन प्रमुख रूपों राम-भक्तिन, पत्नी और माता रूप के विकास पर ही विचार किया जायेगा ।

4.2.4.1 राम की भक्तिन

दोनों भाषा-रामायणकारों ने मन्दोदरी को राम की प्रशंसिका और भक्तिन के रूप में चित्रित किया है । 'मानसकार' ने मन्दोदरी के पूर्व-प्रचलित चरित्र में केवल इतना परिवर्तन किया है कि वह रावण को बार-बार सीतार्पण और रामशरण-गमन का उपदेश देकर[254] राम के प्रति अपनी भक्ति-भावना, सद्‌बुद्धि और दूरदर्शिता का परिचय देती है । कश्मीरी रामायणों में भी मन्दोदरी राम के अलौकिक परब्रह्म-अवतार रूप से पूर्णतः परिचित है । 'शर्मा रामायण' में राम के अलौकिक रूप का स्पष्ट उल्लेख करके वह रावण को राम से वैरव्रत न लेने के लिए समझाने का प्रयत्न करती है ।[255] राम के प्रति उनकी विस्तृत वन्दना-अर्चना में मन्दोदरी की भक्ति-भावना अन्य रामायणों में भी और अधिक स्पष्ट होती है ।[256]

4.2.4.2 पत्नी-रूप

'मानसकार' ने राम-भक्ति के प्राबल्य और राम-शत्रु रावण के प्रति कठोर

---

253. वा० रा०, 6. 114.
254. मानस, 5. 10, 36, 6. 6, 14, 36.
255. शर्मा रामायण, पृ० 269-302.
256. प्र० रा०, पृ० 154. वि० प्र० रा०, पृ० 561; आ० रा०, पृ० 158.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुर्भावना के कारण ही मन्दोदरी के 'पत्नी रूप' के साथ न्याय नहीं किया है। उन्होंने मन्दोदरी के चरित्र में पतिव्रताधर्म की रक्षा नहीं की जिस पतिव्रता-धर्म के आदर्श की स्थापना उन्होंने स्वयं अनुसूया के द्वारा उपदेश द्वारा पहले की थी।[257] मन्दोदरी पति के लिए नीच और निर्लज्ज सरीखे कटु तथा अशोभनीय शब्द प्रयुक्त करती है।[258] इतना ही नहीं मन्दोदरी रावण की मृत्यु को न्यायोचित कहती हुई राम प्रसंशा करती है, जिन्होंने उसके पापमयी जीवन को समाप्त किया।[259] कश्मीरी रामायणों में मन्दोदरी की पति सेवाप रायणता, पतिव्रता-धर्म का भी यथोचित निरूपण हुआ है। मन्दोदरी अपने पति के प्रति अशोभनीय वचन कहकर उसे लांछित नहीं करती है, उसके क्रोध के समय भी वह मौन रहती है। रावण-वध के पश्चात् मन्दोदरी करुण शब्दों में रुदन-प्रलाप करती है, जिसमें मन्दोदरी की उत्कट दीन-दशा एवं सद्य-वैधव्य की अन्तर्पीड़ाओं का यथार्थ रूप अभिव्यंजित हुआ है।[260]

4.2..4.3 मातृत्व

कश्मीरी रामकथा-काव्य में मन्दोदरी के उदात्त चरित्र-विकास का कारण ही दूसरा है, वह प्रतिनायक रावण की पत्नी ही नहीं अपितु नायिका सीता की माता भी है। 'प्रकाश रामायण' के अनुसार मन्दोदरी अप्सरा थी जो रावण के संहार-हेतु उसकी पत्नी का रूप धारण करती है।[261] और मन्दोदरी ही सीता को जन्म देती है। मन्दोदरी के पत्नी रूप के अतिरिक्त उसके माता-रूप का भी उत्कृष्ट रूप मिलता है।

'अशोक वाटिका' में सीता से अकस्मात् भेंट पर मन्दोदरी के हृदय में सीता के प्रति प्रगाढ़ वात्सल्य एवं अद्वितीय ममता के दर्शन होते हैं। मन्दोदरी सीता-संवादों में उसकी अपार सहिष्णुता, सरलता, निश्छलता एवं विनम्रता का अद्भुत सामंजस्य उसके आदर्श मातृत्व में दृष्टिगत होता है। मन्दोदरी के लिए अपनी पुत्री सीता का दुःख-क्लेश असह्य है। वह बराबर सीता को सान्त्वना देती है। रावण-वध के पश्चात् राम की उपेक्षा से अत्यधिक क्षुब्ध सीता को सान्त्वना देकर राम के पास ले जाती है और उन्हें सीता को पुनः स्वीकार करने की विनम्र प्रार्थना करती हैं।[262]

4.3 निष्कर्ष

आधार ग्रन्थों में निरूपित रामकथा के प्रमुख पुरुष और नारी पात्रों के चरित्र-चित्रण

---

257. मानस 3.5.
258. वही 6.36.
269. वही 6.104.
260. शर्मा० रा०, पृ० 442; अमर रा०, पृ० 206-208.
261. दशरावनुन गोभ बहाने आसस पाने परी जत्थ—प्र० रा०, पृ० 154.
262. प्र० रा०, पृ० 154.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का पूर्ण विकास दोनों कश्मीरी और हिन्दी रामकथा-काव्यों में मिलता है। पात्रों की परम्परागत चारित्रिक विशेषताओं के साथ-साथ दोनों भाषा-रामायणकारों ने उनमें अपने-अपने ढंग से विविध मौलिक एवं नवीन उद्भावनाओं का कुशल पूर्वक समावेश किया है। दोनों रामकथा-काव्यों में पात्रों का चरित्र-चित्रण अलौकिक और लौकिक रूपों में हुआ है।

राम-भक्ति-भावना के उत्तरोत्तर विकास एवं अवतारवाद के प्रसार के फलस्वरूप रामकथा के प्रधान पात्रों के चरित्रों में अलौकिक गुण-तत्वों का निरूपण एवं समावेश दोनों रामकथा काव्यों की प्रधान विशेषता है। अलौकिक रूप में राम निर्गुण सगुण ब्रह्म एवं विष्णु-अवतार हैं और सीता उनकी आधाशक्ति, माया एवं लक्ष्मी की अवतार हैं। कश्मीरी रामायणों में सीता को भूमि-अवतार भी कहा गया है और उनकी वन्दना-अर्चना अन्य देवियों के अतिरिक्त महाकाली के रूप में भी करायी गई है। 'मानस' में भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न को राम का अंशावतार कहा गया है; 'प्र० रा०' में राम विष्णु के पूर्ण अवतार हैं तथा भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न क्रमशः सुदर्शन-चक्र, शेष और शंख के अवतार हैं। 'प्रकाश रामायण' में हनुमान् को शिव का अवतार कहा गया है। राम-भक्ति की उत्कट भावना ही अधिकतर रचनाओं की महती प्रेरणा है, इसीलिए कवियों ने राम-भक्ति के माहात्म्य-निर्देश के लिए ही अन्य सभी पात्रों को राम-भक्त के रूप में चित्रित करने का प्रयत्न किया है।

लौकिक रूप में रामकथा के प्रधान पात्रों के चरित्र-चित्रण में यथार्थ और आदर्श का सामंजस्य स्थापित करते हुए अधिकतर दोनों भाषाओं के कवियों का ध्यान लोकादर्श की प्रबल भावना पर ही केन्द्रित रहा है। कथानायक राम को आदर्श पुत्र, भ्राता, पति और राजा के रूप में चित्रित किया गया है, जिनमें उनके परम्परागत आदर्श गुण-तत्वों का सामंजस्य प्राप्य है। अन्य पात्रों के चरित्रों में भी परम्परागत आदर्श गुण-तत्वों का निरूपण अधिक विशद् एवं विस्तृत रूप में हुआ है, जिनमें यथार्थ और मानवीय गुण-दोषों का भी प्रतिबिम्ब झलकता है। भरत का चरित्र भ्रातृ-भक्ति के लिए ही प्रसिद्ध है और राम-प्रेम के आधिक्य के कारण ही वे मां कैकेयी के प्रति अपशब्द तक कहते हैं, जो उनके चरित्र को किंचित अमर्यादाशील बनाता है। लक्ष्मण के परम्परागत चरित्र का विकास भी दोनों में समदृष्टिकोण से हुआ है — प्रबल भ्रातृ-प्रेम के कारण ही वे कई स्थलों पर अपने उग्र-स्वभाव का परिचय देते हैं। दशरथ के दुःखपर्यवसायी चरित्र का विकास दोनों भाषाओं की रामायणों में अधिक व्यापक रूप में हुआ है। राम के प्रति प्रगाढ़ वात्सल्य ही उनके चरित्र की सर्वोत्तम विशेषता है, वे आदर्श राजा भी हैं, किन्तु उनके 'कैकेयी-प्रेम' के प्राबल्य के समक्ष उनका आदर्श वात्सल्य और नृपत्व भी डगमगाता है। हनुमान् के चरित्र में पर्याप्त विकास हुआ है। उनके अलौकिक एवं अद्भुत बल-पराक्रम तथा शौर्य के अतिरिक्त उनकी मानवीय संवेदनाओं का चित्रण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीरी रामायणों में अधिक मार्मिक है। रावण का चरित्र प्रतिनायकत्व के सभी गुण-तत्वों से युक्त है। उसके चरित्र की प्रधान विशेषता दोनों भाषाओं की रामायणों में उल्लिखित उसकी राम-भक्ति ही है। कश्मीरी रामायणों में शिव-भक्त के रूप में भी उसका चरित्र प्रतिष्ठित हुआ है।

नारी पात्रों में कथा-नायिका सीता के आदर्श नारीत्व एवं समस्त आदर्शोन्मुख गुण-तत्वों का निरूपण दोनों भाषाओं की रामायणों में मिलता है। इसके साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं एवं साधारण नारी-सुलभ भावनाओं का सामंजस्य भी हुआ है। कौशल्या के चरित्र में आदर्श मातृत्व एवं समवात्सल्य का पूर्ण विकास अधिकतर दोनों भाषाओं की रामायणों में उपलब्ध है। परम्परागत गुण-दोषों का निर्वाह कैकेयी के चरित्र में भी यथोचित ढंग से हुआ है कश्मीरी रामायणों एवं हिन्दी के आधुनिक राम-काव्यों में उनके चरित्र को परम्परागत मटमैले चारित्रिक दोषों से मुक्त करने का प्रयत्न किया गया है। दोनों भाषाओं की रामायणों में मन्दोदरी का चरित्र-विकास राम-भक्तिन और पत्नी के रूप में हुआ है। कश्मीरी रामायणों में मन्दोदरी के मातृत्व की भी सुन्दर अभिव्यंजना हुई है, सीता की मां होने के योग्य समस्त गुण उसके चरित्र में विद्यमान हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5.1.1 धर्म का वर्गीकरण

विदेशी दार्शनिकों[9] और भारतीय धर्मज्ञों ने धर्म का विभाजन विभिन्न रूपों में किया है। आध्यात्मिक साधना के अतिरिक्त धर्म की लोकनिष्ठ अर्थगत व्यापकता नित्य-धर्म, नैमित्तिक-धर्म, कुल-धर्म, पुरुष-स्त्री-धर्म, आचार-व्यवहार-धर्म इत्यादि के रूप में इतनी प्रचुर है कि मानव-जगत् का कोई भी कर्म इसी विराट् धर्म के घेरे के अन्तर्गत समाविष्ट होता है। संक्षेप में धर्म के दो मुख्य रूप हैं—पहला व्यावहारिक जीवन के सामान्य कर्म-क्षेत्र या कर्त्तव्य-पालन सम्बंधित रूप, जिसका एकमात्र उद्देश्य मनुष्य के नैतिक उत्थान एवं चरित्र-विकास तक ही सीमित है और जिसकी पूर्णता या उपलब्धि पर मनुष्य अपनी साधना द्वारा पारलौकिक आनंद एवं आत्मोन्नति को प्राप्त करता है, यही धर्म का दूसरा रूप है। इनको हम क्रमशः मानव-धर्म (या नैतिक धर्म) तथा प्राकृत धर्म भी कह सकते हैं।

5.1.2 धर्म और रामकथा

'रामकथा' की मूलचेतना धर्ममयी है, अतः 'रामकाव्य' को 'धर्म-काव्य' कहना अनुचित न होगा। आदि कवि की रामायण में यह लोकोत्तर धार्मिक भावना किसी सम्प्रदाय विशेष से मुक्त होकर पूरे जन-मानस में व्याप्त है। ज्यों-ज्यों विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, विचारों एवं साम्प्रदायिक मतभेदों का आविष्कार एवं विकास समाज में हुआ, राम-कथा में किसी न किसी प्रकार से परिवर्तन होते रहे, क्योंकि रामकथा में ही सामाजिक मूल-चेतना को परिवर्तित करने की अनन्य शक्ति विद्यमान है। इस तरह समस्त पुराणों, रामायणों, आख्यानों, संहिताओं आदि में रामकथा का रुप विभिन्न धार्मिक परिवेशों में प्रकट हुआ। जनमानस में रामकथा के प्रति अत्यधिक लगाव देखकर बौद्धों, जैनों एवं अन्य धर्म-सम्प्रदायों ने अपने धार्मिक मत-सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसारार्थ इसका उपयोग किया। परवर्ती भाषा-रामायणकारों ने रामकथा में लोकधर्म के विकसित रुप 'भक्ति' का सन्निवेश करके इसको पूर्णरुपेण 'भक्ति-काव्य' या 'धर्म-काव्य' बना दिया, कथा नायक राम के चरित्र को आदर्श मानव-पात्र से ऊपर उठाकर ब्रह्मकक्षीय ऊंचाई तक पहुंचाया। इससे रामकथा की धार्मिक भावना में और अधिक विस्तार हुआ।

5.1.3 धार्मिक मत सम्प्रदाय

दोनों भाषा-क्षेत्रों में विभिन्न धार्मिक मत-सम्प्रदाय प्रचलित थे और भाषा-रामायणकारों ने ही सर्वप्रथम विभिन्न उपास्य देवों, उपासना-पद्धतियों और अन्य धार्मिक मतों का पारस्परिक सामंजस्य स्थापित करने का स्तुत्य प्रयत्न किया। तुलसी के सामने युगीन धार्मिक स्थिति अधिक विचित्र थी—'छोटे-मोटे अनेक धर्म सम्प्रदाय उठ खड़े हुए थे। शैव, शाक्त, पुष्टि-मार्गी, रामभक्त, गोरखपंथी (जोगी), सूफी सन्त (निराकारवादी), स्मार्त (पंचदेवों के उपासक) और बिन्दुमाधव, सूर्य

9. इनसाईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, भाग 19, पृ० 103-112.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और अनेक देवी-देवताओं के उपासक धर्म के क्षेत्र को विभिन्न टुकड़ियों में बांटे हुए थे। हिन्दी-प्रदेश में शैव, शाक्त, पुष्टिमार्गी और सन्तों की प्रतिद्वंद्विता थी। तुलसी ने पहले तीनों को अपने स्मार्त वैष्णव-धर्म में मिलाने की चेष्टा की। 'रामचरित-मानस' के द्वारा विभिन्न धार्मिक मतों को एक ही घाट पर लाने का स्तुत्य प्रयत्न किया।'[10] तुलसी ने शास्त्रोक्त धर्म सम्बन्धी सारतत्वों को ग्रहण कर उनमें विभिन्न मत-सम्प्रदायों के विचारों का समावेश करके धर्म को एक व्यापक और भव्य अर्थ प्रदान किया। 'नानापुराण-निगमागम सम्मत' से ओतप्रोत उनकी रामकथा 'बीज सकल व्रत धरम नेम'[11] एवं 'बिस्व भार भर अचल छमा सी'[12] है। विभिन्न धार्मिक भावनाओं से संपुष्ट उनकी रामकथा भीषण रोगों की एक-मात्र दवा 'बिबुध वैद्य भव भीम रोग के'[13] और समस्त सांसारिक माया-जाल का संहार करने वाली 'सुमिरत समन सकल जग जाला'[14] है।

इसी तरह कश्मीर में भी शैव, शाक्त, वैष्णव और सूफी-सन्त अपने-अपने मत-सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार में संलग्न थे। 'धर्म' का अर्थ संकीर्ण होकर विशिष्ट सम्प्रदाय-अग्रणी देवी-देवता की उपासना-पद्धति तक ही सीमित था। पं० प्रकाश राम ने अपनी 'रामायण' में सर्वप्रथम इन सभी मतावलम्बी धार्मिक विचारों को एकाकार करने का प्रयत्न किया, जिनमें प्रमुखता शैव और वैष्णव सम्प्रदायों में सामंजस्य स्थापित करने को ही मिली। आगे चलकर अन्य कश्मीरी---रामायण-कारों ने इस नवीन समन्वयात्मक विचारधारा को अपनाकर इसमें और अधिक व्यापकता प्रदान करने का प्रयास किया।

5.1.4 शैव और वैष्णव

धार्मिक क्षेत्र में कश्मीर में अपेक्षाकृत शैवों का प्राधान्य रहा। शैव मत वाले शिवोपासना या हरि-भक्ति को ही धर्म का सार मानते थे और लोक में शिवजी का पौराणिक आदर्श चरित्र ही मुख्य था। इसीलिए रामभक्त-कवियों ने अपने काव्य में लोकविश्रुत शिव-चरित को भी रामचरित के समान प्रश्रय दे दिया और कभी-कभी उनसे भी बढ़कर बताया। दोनों कश्मीरी और हिन्दी रामायणकारों ने शैव और वैष्णव सम्प्रदायों में पारस्परिक स्पर्धा, प्रतिद्वंद्विता, द्वेष, मनोमालिन्य एवं वैमनस्य को मिटाने के उद्देश्य से धर्म के लोक-व्यापक उच्चतम धरातल पर दोनों सम्प्रदायों का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया। तुलसी ने 'राम-भक्ति' और 'शिव भक्ति' को अन्योन्याश्रय रुप प्रदान किया, उनके अनुसार राम स्वप्न में भी ऐसे भक्त पर कृपा न करेंगे जिसे शिव प्यारा न हो तथा शिव से बढ़कर राम का

---

10. श्री रामरत्न भटनागर—तुलसी साहित्य की भूमिका, पृ० 209.
11. मानस, 1.31.
12. वही, 1.30.
13. वही, 1. 30.
14. मानस, 1.26

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई अन्य प्रिय नहीं है।[15] शिव-द्रोही कभी भी राम-भक्त नहीं हो सकता है[16] और राम स्वयं शिव-परिवार की आराधना करते हैं—'गनपति गौरि गिरीस मनाई'।[17] कश्मीरी रामायणों में राम शिवजी की वन्दना विविध स्थलों पर करते हैं[18] और शिवजी राम नाम एवं कथा-माहात्म्य का बखान करके उनकी वन्दना करते हैं।[19] कश्मीरी रामायणों के अन्तर्गत शिवजी को ही राम के इष्ट-आराध्य रूप में प्रस्तुत किया गया है, राम सदैव उनसे सहायता की याचना करते हैं।

5.1.5 धर्म और भक्ति

दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों के अन्तर्गत 'धर्म' और 'भक्ति' पर्यायवाची हो गए हैं। धर्म के व्यापक रूप में भक्ति स्वतः समाहित होती है। धर्माचरण का लक्ष्य जिस आदर्श व्यक्ति या अलौकिक रूप पर केन्द्रित होता है, तो उसके प्रति अधिकाधिक सामीप्य के कारण श्रद्धापूर्ण अनुराग या भक्ति की उपज स्वाभाविक है और भक्ति में भी उन अपेक्षित समस्त उदात्त वृत्तियों का सामंजस्य पाया जाता है, जिनका पूर्ण विकास पुष्ट मानसिक धरातल पर होता है। रामभक्त कवियों ने 'रामभक्ति' में ही धर्म का विकसित रूप पाया है। धर्म और भक्ति का पारस्परिक अन्योन्याश्रित सम्बन्ध निश्चित करते हुए डा० राजपति दीक्षित लिखते हैं "धर्म और भक्ति का अविच्छिन्न सम्बन्ध है। गोस्वामी जी इन दोनों में से प्रत्येक को दूसरे का पूरक मानते हैं। उनकी दृष्टि में भक्ति और धर्म में अंगांगि-भाव सम्बन्ध है। किसी अंग के रुग्ण होने पर जैसे समस्त शरीर की विकलता कोई रोक नहीं सकता, उसी प्रकार धर्म के किसी आडम्बर या अनाचार से ग्रस्त हो जाने पर भक्ति का विकृत हो जाना भी अनिवार्य है।"[20]

इसीलिए यहां पर दोनों भाषाओं के रामायणकारों द्वारा रामभक्ति प्रतिपादन विषयक संक्षिप्त चर्चा अनावश्यक न होगी। 'मानस' में रामभक्ति का सर्वोत्कृष्ट प्रतिनिधि रूप मिलता है। 'मानस' में ऋषि-मुनि[21], देवता[22], वेद[23] तथा अन्य मानव-पात्र[24] राम से उनकी भक्ति का वरदान मांगते हैं। वाल्मीकि[25] और गुरु

---

15. मानस,, 1.103, 137.
16. वही, 6.1.
17. वही, 2. 80.
18. प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध, पृ० 212-3.
19. प्र० रा०, पृ० 5-6; वि० प्र० रा० 15; शर्मा रा०, पृ० 466-7 आदि।
20. तुलसीदास और उनका युग, पृ० 77.
21. मानस, 1.150. 210; 3.4, 13; 7 49,84.
22. वही, 6.111, 7.14.
23. वही, 7.12.
24. वही, 1.341, 4.2.
25. वही, 2.131.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वशिष्ठ[26] राम-भक्ति का बखान करते हैं। राम स्वयं लक्ष्मण[27], शबरी"[28] और नारद[29] से राम-भक्ति का महिमा-गान करते हैं। 'बिभीषण-रावण', 'मन्दोदरी-रावण' तथा 'कागभुशुंडि-गरुड़' के संवादों में भी राम-भक्ति का माहात्म्य-वर्णन मिलता है। तुलसी ने प्रत्येक काण्ड के मंगलाचरण में राम-भक्ति की चर्चा की है और राम-भक्ति को सर्वोच्च प्रतिपादित करते हुए अन्त पर ग्रन्थ की फल-सिद्धि भी रामभक्ति के वरदान रुप में याचित की है।[30] 'मानस' में तुलसीदास द्वारा निरुपित भक्ति-भावना का रुप हमें परवर्ती रामकथा काव्य में भी दृष्टिगोचर होता है। केशव की 'रामचंद्रिका' में भी आलोचक 'रामानुजसम्प्रदाय की राम-भक्ति-भावना की गहरी छाप'[31] मानते हैं। सीता-अग्नि-परीक्षा प्रसंग में हुताशन-मध्य सीता को केशवदास इस दृष्टि से देखते हैं जैसे उनके हृदय में 'रामभक्ति' बसती हो।[32] फिर भी 'रामचंद्रिका' में भक्ति की कोमल भावना कवि के आचार्यत्व या 'पांडित्य-प्रदर्शन' में दब सी गई है। आधुनिक रामकथा-काव्यों में 'साकेत' में पुनः हमें उस भक्ति-धारा के दर्शन होते हैं, क्योंकि "तात्विक दृष्टि से साकेत-कार उदार वैष्णव-भक्त हैं। तुलसी की भांति उनकी भी रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत में प्रगाढ़ श्रद्धा है।"[33] यह असंदिग्ध तथ्य है कि उदात्त भक्ति-धारा का जो अकृत्रिम स्वच्छन्द प्रवाह 'मानस' में देखने को मिलता है, अन्यत्र कहीं नहीं दिखाई देता है।

कश्मीरी रामकथा-काव्य में भी भक्ति का सुन्दर निरूपण हुआ है। प्रत्येक रामायण के मंगलाचरण में राम-भक्ति के महात्म्य-गान के साथ-साथ राम से भक्ति याचना भी की गई है।[34] "ताराचंद-रामायण' में तो प्रत्येक काण्ड के अन्त पर भी कवि अपनी विनम्रता प्रदर्शित करते हुए श्रीराम से भक्ति का वरदान मांगते हैं। सभी रामायणों में रामकथा के मुख्य पात्रों द्वारा वर्णित वन्दनाओं में विभिन्न भावनाओं से युक्त राम के प्रति प्रगाढ़ भक्ति का स्वरूप स्वतः स्पष्ट हो जाता है।

---

26. मानस, 7.49.
27. वही, 3.10.
28. वही, 3.35.
29. वही, 3.39.
30. मानस, 7.78,
31. डा० विजयपाल सिंह—केशव और उनका साहित्य, पृ० 107-108.
32. रा० चं०, 20.11.
33. डा० नगेन्द्र—साकेत : एक अध्ययन, पृ० 82.
34. शं० रा०, खण्ड 1. अ 1; वि० प्र० रा०, बाल०. अ 5, आ० रा०, पृ० 7; शर्मा रा०, पृ० 3; ता० रा०, पृ० 4.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'प्रकाशरामायण' में गुरु वशिष्ठ[35] और वाल्मीकि[36] राम के अलौकिक रूप की चर्चा करके उनकी भक्ति का उल्लेख करते हैं। मानस' में राम द्वारा जिस तरह अपनी भक्ति का गुण-गान स्वयं कराया गया है, ऐसा कोई उल्लेख कश्मीरी रामायणों में नहीं मिलता है, हां, तुलसी के राम 'शबरी' से नवधाभक्ति[37] का जो वर्णन करते हैं, उन सभी भक्ति-तत्वों का निरूपण विविध स्थलों पर व्यावहारिक ढंग से हमें कश्मीरी रामकथा-काव्य में भी मिलता है। रामकथा-काव्य में नवधा-भक्ति का सुग्राह्य परिष्कृत रूप रामायणकारों की उदात्त धार्मिक भूमि को और भी स्पष्ट करता है।

तुलसी ने भक्ति के विविध रूपों—वात्सल्य, सख्य, सेव्य-सेवक आदि भावना का वर्णन करते हुए भी भक्ति की सेव्य-सेवक पद्धति को सर्वोत्कृष्ट स्थिर करने के अभिप्राय से 'राम तें अधिक राम कर दासा' [38] कहकर दास्य-भक्ति भावना की व्याख्या प्रस्तुत की। कश्मीरी रामायणों में भवत्यु-पासना की सभी उपासना-पद्धतियों को समान रूप से प्रश्रय मिला। 'प्रकाश-रामायण' के अन्तर्गत वात्सल्य भक्ति का सर्वोत्तम रूप कौशल्या[39] और दशरथ[40] द्वारा हनुमान की भक्ति में मिलता है और सेव्य-सेवक भावना का उत्कृष्ट रूप हनुमान [41] द्वारा राम के प्रति वंदना-आराधना में। 'आनंद रामावतारचरित' में राम जन्म और विवाह के अवसरों पर गाई गई स्त्रियों की 'लीलाओं'[42] में वात्सल्य एवं सख्य और युद्ध-प्रसंगों में वानरों की वन्दनाओं[43] में दास्य-भक्ति का अनन्य रूप मिलता है। 'शर्मा रामायण' में विभीषण की वन्दना-स्तुति[44] में दास्य-भक्ति का सुन्दर परिपाक हुआ है।

5.1.6 आर्य सनातन धर्म

प्राचीन आर्य संस्कृति और धर्म की सुरक्षा हमें दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में दृष्टिगोचर होती है, रामभक्त कवि आर्य संस्कृति और धर्म के भी

35. प्र० रा०, पृ० 10.
36. वही, पृ० 210.
37. मानस, 3.43-44.
38. वही, 7.119.
39. प्र० रा०, पृ० 25,163.
40. वही, पृ० 29.
41. प्र० रा०, पृष्ठ 120-132.
42. आ० रा०, पृ० 16-17, 50-57.
43. वही, पृष्ठ 181.
44. शर्मा रामायण, पृ० 227.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परमभक्त हैं । किन्तु सनातन-धर्म के अन्तर्गत वर्णाश्रम-व्यवस्था और आर्य धर्म के पूर्व प्रतिष्ठित बाह्य रूप यज्ञ, पूजा-पाठ, स्नान-ध्यान, व्रत, उपवास, नियम आदि के प्रति भी भक्ति के प्रतिपादन के साथ-साथ रामभक्त कवियों ने पूरी आस्था प्रदर्शित की ।

5.1.7 वर्णाश्रम-व्यवस्था

समाज में पारस्परिक विद्वेष, संघर्ष और वैमनस्य को रोकने के लिए 'मानस' में तुलसीदास ने वर्णाश्रम-धर्म की पुनःस्थापना की । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र-धर्म के विविध पक्षों की विवेचना 'मानस' में विभिन्न सन्दर्भों में प्रस्तुत की गई है । तुलसी ने आदर्श धर्माचरण की प्रतिष्ठा-भावना से प्रेरित होकर प्रत्येक वर्ण-धर्म को किन्हीं नियमों के अन्तर्गत रखा है । तुलसी ने ब्राह्मणों के गुण-कर्मों की सराहना करके[45] उनकी पद-वन्दना[46] की है और साथ ही वेद-च्युत, धर्महीन और विषयी ब्राह्मण की निन्दा भी की है ।[47] युद्ध-कर्म क्षत्रिय का धर्म है । क्षत्रिय को किसी से भी युद्ध करने में संकोच न होना चाहिए बल्कि आह्वान पाकर काल से भी युद्ध करने के लिए तैयार होना चाहिए ।[48] तुलसी ने ऐसे वैश्य की भर्त्सना की जो धनी होकर भी कृपण हो और आतिथ्य-सत्कार एवं शिवोपासना से विमुख हो ।[49] 'मानस' में यश-मान-प्रिय, ज्ञानगर्वित तथा विप्र-अवमानी शूद्र को भी शोचनीय कहा गया है ।'[50] रामराज्य वर्णन प्रसंग के अन्तर्गत 'वैदेही-वनवास' में भी वर्णाश्रम धर्म-पालन का संकेत मिलता है—'कर रहे हैं सब कर्म स्वकीय । समझकर वर्णाश्रम का मर्म ।।[51] कश्मीरी रामायणों में ब्राह्मण और क्षत्रिय-धर्म की विवेचना विविध प्रसंगों के अन्तर्गत मिलती है । ब्राह्मण के शाप से कुल-नाश हो सकता है और उनका कथन सदैव सच्चा होता है ।[52] 'विष्णु-प्रताप रामायण' में ब्राह्मण के समस्त गुण-कर्मों का उल्लेख मिलता है और जिनकी पद प्रतिष्ठा के लिए राम ही वरदान देते हैं ।[53] युद्ध-कर्म ही क्षत्रिय का सच्चा धर्म है और वीर क्षत्रिय ही सम्मान और आदर के योग्य है ।[54] अन्य वर्णों की सेवा शुश्रूषा छोड़

45. मानस 1.165, 283-284.
46. वही 1.2, 14, 308; 2.6; 6.90, 119; 7.12 आदि.
47. मानस 2.172; 7.127.
48. मानस 1.284.
49. वही 2.172.
50. वही 2.172.
51. वै० वन० 2.62.
52. प्र० रा०, पृ० 10.
53. वि० प्र० रा०, राज. अ० 10.
54. वही, पृ० 731.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर शूद्र की 'तपस्या-साधना' को उसका धर्म न समझकर शोचनीय कहा गया है[55] और मूर्ख के ज्ञान-गौरव की भी भर्त्सना की गई है।[56] दोनों भाषाओं के राम-कथा-काव्यों में वर्णाश्रम-धर्म का समर्थन इस व्यापक दृष्टिकोण से हुआ है कि कहीं भी इसमें जाति पांति की कट्टरता, संकीर्णता, छुआ-छूत या ऊंच-नीच की भावना नहीं पनपी है। 'राम-गुह मिलन' प्रसंग इस बात को स्पष्ट करता है। राम और भरत गुह को गले लगाकर उसे अपना सच्चा 'स्वजन' और मित्र समझते हैं। भाषा-रामायणकारों का वर्णाश्रम धर्म उस कट्टर साम्प्रदायिकता से पूर्णतः विनिर्मुक्त है, जिससे लोक-व्यापी उदात्त धार्मिक भावना को किसी भी प्रकार ठेस पहुंच सके।

5.2.8 आर्य धर्म के बाह्य रूप

आर्य धर्म की समस्त सनातन बाह्य उन्नायक पद्धतियों का पालन दोनों भाषाओं के रामभक्त कवियों ने किया है। गोस्वामी तुलसीदास ने धर्म के इन सभी बाह्य रूपों को अपनाया :

जप तप नियम जोग निज धरमा। श्रुति संभव नाना शुभ करमा।
ग्यान, दया दम तीरथ मज्जन। जहं लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन।
आगम, निगम पुरान अनेका। पढ़े सुने का फल प्रभु एका।।
तव पद पंकज प्रीति निरंतर। सब साधन कर यह फल सुन्दर।। (5.48)

श्री जे० एम० मैक्की के विचारानुसार कबीर और दादू की भांति आर्य धर्म के बाह्य रूप पर उन्होंने कोई आघात नहीं किया।[57] आर्य धर्म का प्रतिपादन सुन्दर ढंग से आधुनिक रामकथा काव्य 'साकेत' में मिलता है। साकेतकार के विचारानुसार राम आर्य धर्म की संस्थापना के लिए ही अवतार धारण करते हैं, जिसमें संसार की सुख-शांति और लोक-कल्याण की सभी आदर्शोन्मुखी भावनाएं निहित हैं :

मैं आर्यों का आदर्श बताने आया
... ...

भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया। (पृ० 234)

---

55. शर्मा रा०, पृ० 493.
56. प्र० रा०, पृ० 68-
57. रामायण आफ़ तुलसीदास, पृ० 215.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आर्य धर्म-संस्कृति के सभी अंगों की प्रतिष्ठा 'साकेत में मिलती है :

उच्चरित होती चले वेद की वाणी,
गूंजे गिरी--कानन --सिन्धु पार कल्याणी ।
अम्बर में पावन होम-धूप घहरावे,
वसुधा का हरा दुकूल भरा लहरावे । (पृ० 235)

राम द्वारा खर-दूषण की विजयोपरान्त शत्रुघ्न आर्य धर्म की प्रतिष्ठा का ही वर्णन करते हैं :

आर्य सभ्यता हुई प्रतिष्ठित, आर्य धर्म आश्वस्त हुआ ।
होते हैं, निर्विघ्न यज्ञ अब, जप-समाधि-तप-पूजा पाठ,
यश गाती हैं मुनि कन्यायें, कर व्रत–पर्वोत्सव के ठाठ । (पृ० 415)

कवि के विचारानुसार आर्य-धर्म का प्रचार एवं राक्षसों को आर्य-सम बनाना यही 'रामावतार' का उद्देश्य है । गुरु वशिष्ट राम से कहते हैं :

मुनि रक्षक सम करो विपिन में वास तुम,
मेटो तप के विघ्न और सब त्रास तुम ।
हरो भूमि का भार भाग्य से लभ्य तुम,
करो आर्य सम वन्यचरों को सभ्य तुम । (पृ० 215-216)

'वैदेही-वनवास' में वर्णित 'सीता-परित्याग' प्रसंग में आर्य-जाति की प्रथा-पालन का स्पष्ट उल्लेख मिलता है :

आर्य जाति की यह चिरकालिक है प्रथा । गर्भवती प्रिय पत्नी को प्रायः नृपति ।
कुलपति पावन आश्रम में है भेजते । हो जिससे सब मंगल शिशु को शुद्ध मति ।।
(4.52)

'प्रकाश रामायण' में भी आर्य धर्म के साधना सम्बंधित समस्त बाह्य रूपों का निर्वाह विविध सन्दर्भों में सराहा गया है, यज्ञ, तपस्या, वेदोच्चारण के उदाहरण तो कई स्थलों पर मिलते हैं जिनका महत्व कार्य-सिद्धि और आत्मिक परिष्कार के लिए अत्यावश्यक माना गया है । महर्षि विश्वामित्र सर्वकल्याण के लिए तपस्या करते हैं, यज्ञ रचते हैं और वेद-शास्त्रों का पाठ करते हैं ।[58] राम सीता विवाह प्रसंग में लग्न-मण्डप पर ब्राह्मण समस्त शास्त्रोक्त आर्य-धर्मानुकूल क्रियाएं सम्पन्न करते

58. प्र० रा०, पृ० 9.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुए—वेदों के पाठ स्मरण करते हैं।[59] 'वि० प्र० रा०' में भी हिन्दू सनातन धर्म और आर्य धर्म-संस्कृति का बखान विविध स्थलों पर हुआ है। इसका विशेष रूप से वर्णन, राम-सीता विवाह,[60] दशरथ-मृत्यु और तत्सम्बन्धी क्रिया-संस्कारों[61] में अधिक व्यापक रूप में मिलता है। कवि के विचारानुसार कश्मीर में सनातन हिंदू धर्म की प्रतिष्ठा राम के वरदान के फलस्वरूप ही हुई है, जिसका प्रवाह निरन्तर आगे बढ़ता है।[62]

5.1.9 मानव-धर्म

रामकथा-काव्य के आदर्श पात्रों में हमें मानव-धर्म के सर्वोच्च समस्त गुण-तत्वों का निरूपण एवं सामंजस्य मिलता है। उद्देश्य और विस्तार को दृष्टि में रखकर मानव-धर्म के भी कई वर्ग किए जा सकते हैं, किन्तु यहां हम उन मुख्य गुण-तत्वों का ही उल्लेख करेंगे जो इस धर्म के आधार-स्तम्भ हैं और जो इसे सम्पुष्ट और समृद्ध बनाते हैं। वे इस प्रकार हैं—सत्य, लोक-कल्याण, विनय, क्षमा, शील, संयम आदि। मानसकार' ने राम के शब्दों में प्रस्तुत किए गए इस 'धर्मस्थ' रूपक में प्रायः उन सभी गुणों की ओर संकेत किया है, जो जीवनोन्नति और सफलता के लिए अनिवार्य हैं :

सोरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका ।।
बल विवेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे ।।
ईस भजनु सारथी सुजाना। विरति चरम संतोष कृपाना ।।
दान परसु-बुधि सक्ति प्रचंड़ा। वर बिग्यानु कठिन कोदंडा ।।
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जप नियम सिली मुख नाना ।।
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा। एहि सम विजय उपाय न दूजा ।। (6.79)

सत्य की प्रतिष्ठा दशरथ के चरित्र में ही मुख्य रूप से निरूपित हुई है। 'मानस' में इस धर्मतत्व के सम्बन्ध में विभिन्न उल्लेख मिलते हैं :

रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाहिं बरु बचनु न जाई। (2. 27)

नहिं असत्य सम पातक पुंजा (2. 27)

सत्य मूल सब सुकृत सुहाए। वेद पुराण विदित मनु गाए। (2. 27)

---

59. प्र० रा०, पृ० 17.
60. वि० प्र० रा० पृ० 76.
61. वही, वन०. अ० 11.
62. वही, राज०. अ० 14.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धरमु न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुरान बखाना ।। (2.94)

भूप धरम ब्रतु सत्य सराहा । जेहिं तनु परिहरि प्रेमु निबाहा ।। (2.170)

राखेउ राय सत्य मोहि त्यागी । तनु परिहरेउ पेम पन लागी ।। (2.263)

'साकेत' में भी दशरथ सत्य का बखान इन शब्दों में करते हैं :

सत्य से ही स्थिर है संसार, सत्य ही सब धर्मों का सार,
राज्य ही नहीं प्राण-परिवार सत्य पर सकता हूं सब वार । (पृ० 64)

सत्य और लोकधर्म के विषय में कौशल्या राजा दशरथ को स्मरण दिलाती हैं :

हे नाथ अधीर न हों अब यों, तुम ने निज सत्य धर्म पाला
सुत ने स्वापत्य धर्म पाला, पत्नी पतिसंग बनी देवी
प्रिय अनुज हुआ अनुज सेवी ।··· ··· ··· । (पृ० 167)

'प्रकाश-रामायण' में सत्य को महत्ता प्रदान करते हुए कवि ने प्रारम्भ में ही रामकथा के पात्र-रूपक में कहा है—'सत्य' ही अकेला मनुष्य की सहायता करता है, यदि सत्य 'गैर' भी हो तो उसे गले लगाना चाहिए—'सदाशिव' का वास सत्य के साथ होता है । सत्य की ओर प्रीति बढ़ने पर तथा इसके सर्वोच्च धरातल पर सांसारिक आवागमन की क्रीड़ा यथार्थ रूप में देखी जा सकती है । सदैव बुद्धि और चित्त से सत्य की ओर झुके रहना और दिल को कलुषता से स्वच्छ-बना कर सत्य का नियम-व्रत धारण करना ही धर्म है । इच्छा' सीता है और राम-लक्ष्मण सत्य के ही साक्षात् स्वरूप हैं, साहस हनुमान् हैं और असत्य पापी रावण ।[63] सत्य की व्याख्या अन्य रामायणों में भी विभिन्न प्रकार से हुई है और सत्य की ओर उन्मुक्त होने की सीख दी गई है ।[64] दशरथ सत्य के प्रतीक हैं, सत्य-धर्म को छोड़ने से वे सहर्ष प्राण त्यागना श्रेयस्कर समझते हैं ।[65] राम दशरथ के एकनिष्ठ सत्य-व्रत की प्रशंसा करके उस पर 'बलिहारी' होने तक की कामना करते हैं ।

सत्य के अतिरिक्त परोपकार, क्षमा, दया, विनम्रता, विवेक, संयम, शील आदि कुछ ऐसे मानवीय सद्गुण हैं जो मानव-धर्म के अन्तर्गत आते हैं । कहना न होगा इन सभी गुण-तत्वों का भी समुचित निरूपण रामकथा-काव्य में चित्रित आदर्श

---

63. प्र० रा०, पृ० 3.
64. वि० प्र० रा० पृ० 10.
65. शं० रा०, खण्ड 1.अ 11 (106).

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पात्रों के चरित्र में हुआ है, इन की सराहना मानव-धर्म प्रिय कवियों ने स्वतंत्र रूप से भी विभिन्न सन्दर्भों में की है ।

'मानस' में 'परहित' एवं 'परोपकार' की धर्म-भावना को यथेष्ट प्रश्रय मिला है। मानसकार स्पष्ट कहते हैं—'परहित सरिस धर्म नहिं भाई ।'[66] 'क्षमाशीलता' और 'परोपकार' के विषय में शिवजी कहते हैं :

छमासील जे पर उपकारी । ते द्विज मोहि प्रिय यथा खरारी । (7.108)

विनम्रता, सरलता तथा विवेक का अद्‌भुत सामंजस्य राम द्वारा क्रुद्ध परशुराम को शांत करने के लिए कहे गए इन शब्दों में मिलता है :

नाथ करहु बालक पर छोहू । सूध दूधमुख करिअ न कोहू ।।
जो पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना । तौ कि बराबरि करत भयाना ।।
मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया । परिहरि कोपु करिअ अब दाया ।। (1.276)

शील धर्म का अनिवार्य अंग है और शील के स्नेह को छोड़ा नहीं जा सकता—'सील सनेहु छाड़ि नहिं जाई'।[67] शील के इस प्रभुत्व गुण के बारे में तुलसी कहते हैं :

सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई । जिमि बिनु तेज न रुप गोसाईं ।। (7 89)

इसी प्रख्यात शील तत्व के विषय में पं० रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं—"शील और नियम, आत्मपक्ष और लोकपक्ष के समन्वय द्वारा धर्म की यह सर्वतोमुखी रक्षा रामायण का गूढ़ रहस्य है ।"[68]

आधुनिक रामकथा-काव्यों में 'मानव-धर्म' को और अधिक विस्तार मिला, जिसमें नवीन युगबोध तथा सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में उभरी नव-चेतना का भी सामंजस्य मिलता है । 'साकेत' के अनुसार मानव-धर्म युग-युग प्राचीन सरयू-प्रवाह के समान अनवरत प्रवाहित है :

जिसका वह तीर है भला । जिससे मानव धर्म है चला ।
पहले वह है यहीं पला, सरयू तू मनु कीर्ति मंगला । (पृ० 347)

66. मानस, 7.40.
67. वही 2. 84.
68. गो० तुलसीदास, पृ० 126.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानव-धर्म की आदर्श प्रतिष्ठा के लिए ही राम अवतार लेते हैं :

सन्देश यहां मैं नहीं स्वर्ग का लाया, इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया ।
अथवा आकर्षण पुण्य भूमि का ऐसा, अवतरित हुआ मैं आप उच्च फल जैसा ।।
(पृ० 235)

मानव-धर्म का एक उदात्त रूप कर्त्तव्य-पालन ही है । मां कौशल्या विदा होते हुए राम को यही आशीष देती हैं :

जाओ तब बेटा वन ही , पाओ नित्य धर्म-धन ही ।
जो गौरव लेकर जाओ , लेकर वही लौट आओ । (पृ० 107-108)

राम के कर्त्तव्य या आज्ञा-पालन में मर्यादाशील लोक-कल्याणकारी सत्यनिष्ठा की रक्षा निहित है :

पर रघुकुल में जो वचन दिया जाता है, लौटाकर वह कब कहां लिया जाता है ।
(पृ० 256)

'वैदेही-वनवास' में मानव-धर्म को सम्पुष्ट करने वाले गुण-कर्म पूजनीय बताये गए हैं :

'नहीं पूजित है कोई व्यक्ति । आज है पूजनीय गुण कर्म ।। (3. 31)

लोकहित और परोपकार की दृढ़ भावना को उन्होंने सर्वोत्कृष्ट माना है :

किन्तु कसौटी है विपति मनुसूनु की । स्वयं कष्ट सह भवहित साधन श्रेय है ।।
आपत्काल महत्व-परीक्षा काल है । संकट में धृति धर्म प्राणता ध्येय है ।।
(4. 26)

यही लोकहित की उदात्त भावना राम द्वारा सीता के प्रति कहे गए इन शब्दों में प्रस्फुटित होती है :

क्यों दूसरे पिसें संकट में पड़, बहु दुख भोगते रहें,
क्यों न लोकहित के निमित्त जो सह पाये हम स्वयं सहें । (5. 21)

'सीता-परित्याग' में मर्यादा और लोकाराधन की उदात्त भावना छिपी हुई है :

कुलपति आश्रम पास जनक नंदिनी का । हम दोनों के सद्विचार के मर्म है ।।
वेद विदित बुध वृन्द-समर्पित पूत-तम । भव-हित मंगल वांछित कर्म है ।।
(17. 79)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'साकेत-सन्त' में जनता-जनार्दन की सेवा को ही धर्म-कर्म माना गया है, मानव-धर्म की यह भावना इन शब्दों में व्यक्त हुई है :

जनार्दन को जनता में लखो, यही है सब धर्मों का सार।
इसी के स्पन्दन से भर उठे, मनुष्यों का समग्र संसार ।। (12. 42)

'नारायण को लखा उन्होंने नरों नरों में'[69] कहकर मिश्र जी ने भरत की उत्कृष्ट मानव-धर्म भावना की अभिव्यक्ति की है।

कश्मीरी रामकथा-काव्य में भी 'मानव धर्म' के सभी उदात्त गुण-तत्वों का निरूपण हुआ है किन्तु ऐसे स्थल अत्यल्प उपलब्ध हैं, जहां कवि ने मुख्य वर्ण्य-विषय से हटकर इनकी चर्चा की हो। 'प्रकाश-रामायण' के प्रारम्भ में ही कथा के पात्रात्मक रूपक में कवि ने सत्य, क्षमा, शुभेच्छा, सन्तोष, धर्म, विवेक, साहस आदि की चर्चा की है[70] जिन पर जीवनोन्नत मानव-धर्म अवलम्बित है। उक्त रामायण में परोपकार और लोकहित-भावना की अभिव्यंजना समुचित रूप में हुई है जिसमें व्यक्ति को अपने से भी अधिक दूसरे की चिंता करनी चाहिए यदि किसी को तनिक सी चोट भी आ जाए तो उसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर समझ कर दूसरे के दुख में समभागी होना ही मनुष्य का धर्म है :

पनन्य संदि खोन गंज़रावुन परध पान, बेयिस लगि खोदं पानस प्यठ लदन्य हान।
(पृ० 9)

5.2. नीति और नीतिशास्त्र

मानव-समाज के विकास के साथ ही नीति का भी समारंभ हुआ, यह असंदिग्ध तथ्य है। नीति ही एक ऐसा सूत्र है जिससे व्यक्ति समाज के साथ जुड़ा हुआ है। नीति वह स्थायी तत्व है, जिसका निर्वाह एवं परिपालन मानव-समाज की स्थिरता का अनिवार्य अंग है। सामाजिक अधिनियम ही नीति को संपुष्ट करते हैं, उसकी व्याख्या करते हैं और कभी-कभी दोनों व्यावहारिक अर्थ में पर्यायवाची दिखाई देते हैं। सामाजिक आचरण से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहने के कारण नीति का कर्म-क्षेत्र विकासशील एवं विस्तृत है।

भारत में अनेक नीतिशास्त्र-ग्रन्थों की रचना हुई है। 'महाभारत' में ब्रह्मा द्वारा विरचित लक्ष अध्याय युक्त आदि नीतिशास्त्र का उल्लेख मिलता है, जिसको ग्रहण कर प्रजा-वर्ग की आयु की कमी देखकर क्रमशः महादेव ने दस सहस्र अध्यायों, इन्द्र ने पांच सहस्र अध्यायों, बृहस्पति ने तीन सहस्र अध्यायों एवं अन्त

69. गो० तुलसीदास, पृ 14. 3.
70. प्र० रा०, पृष्ठ 3-4.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में शुक्राचार्य ने एक सहस्र अध्यायों में संक्षिप्त करके वर्णित किया। महादेव, इन्द्र, बृहस्पति, शुक्राचार्य ने नीतिशास्त्र के संक्षिप्त रूपों का नाम क्रमशः वशालाख्य, बाहुदत्त, बार्हस्पत्य एवं शुक्रनीति रखा।[71] अभी जो सब नीतिशास्त्र प्रचलित हैं, उनमें से उशना प्रणीत शुक्रनीति और कामन्दक प्रणीत कामन्दकीय नीतिसार प्रधान और प्राचीन हैं।[72]

अग्निपुराण में राम लक्ष्मण को नीति-विषयक उपदेश इस प्रकार देते हैं — "विनय ही नीति का मूल है। शास्त्र निश्चय के द्वारा विनय की उत्पत्ति होती है। शास्त्र ज्ञान, प्रज्ञा, धृति, दक्षता, प्रागल्भ्य, धारभिष्णुता, उत्साह, वाक्य संयम, औदार्य, आपत्काल में सहिष्णुता, प्रभाव, शुचिता, मैत्र, न्याय, सत्य, कृतज्ञता, कुल शील और दम ये सब गुण सम्पत्ति के हेतु हैं।"[73] इसी से हमें नीति सम्बन्धी उपदेशों के प्रसार का सुन्दर प्राचीन रूप मिलता है।

5.2.1 नीति और धर्म

'धर्म और 'नीति' का पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध है। धर्म के व्यापक अर्थ से नीति को एकदम विच्छिन्न नहीं किया जा सकता है। फिर भी धर्म और नीति-सिद्धांतों के प्रतिपाद्य विषयों का अध्ययन करने पर इनके बीच का विभेद स्पष्ट हो जाता है। नीति में आचरण सम्बन्धी वैयक्तिक स्वहित-भावना मुखर रहती है, जबकि धर्म में उसकी अधिक व्यापक लोकहित-भावना या पारमार्थिक पक्ष प्रबल रहता है। वैयक्तिक आचरण में नीति की सामयिक उपयोगिता है, वह अपने में अपूर्ण है और धर्म सनातन, स्थिर और पूर्ण है। नैतिकता से धर्म को बल मिलता है, आत्मा का परिष्कार होता है और इस संपुष्ट धरातल को प्राप्त कर जीव उस आध्यात्मिक आनन्दप्रद पूर्णता को भी प्राप्त करता है, जिसकी ओर धर्म उसे ले जाता है। नीति और धर्म के पारस्परिक भेद को स्पष्ट करते हुए श्री डी० एस० शर्मा लिखते हैं—"नैतिकता धर्म नहीं है जिस तरह एक मंदिर का द्वार मंदिर नहीं है। इससे शिक्षा मिलती है कि वह मनुष्य जिसने अपने को मनसा वाचा कर्मणा पवित्र विचारों वाला नहीं बनाया वह नहीं जान सकता कि एक आध्यात्मिक संसार भी होता है। नैतिकता में पूर्णता या निश्चिंतता नहीं है। नैतिकता एक क्षितिज के समान है, जहां पहुंचने पर वह लुप्त हो जाती है। वह सदैव हमारी दुर्बलताओं को सूचित करती है और इस तरह हम लोग कुछ भी अभिलाषा करते हैं जो हम लोगों को अपने से बाहर लेजाकर आशा का आश्वासन देती है और उदार, पवित्र और भव्य जीवन के निर्माण का संकेत करती है। यही धर्म है। नैतिकता सदैव सच्चे धर्म की ओर ले जाती है और सच्चा धर्म सदैव

---

71. हिन्दी विश्वकोष, भाग 12, पृष्ठ 132-133.
72. वही, 12, पृ० 136.
73. वही, पृ० 135.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नैतिकता को संतुष्ट करता है।[74] अतः नैतिकता ही वह परिपूर्ण मानसिक आधार-शिला है जिस पर आध्यात्मिक एवं धार्मिक जीवन-यापन का सुख अवलम्बित है।

5.2. 2 नीतियों का वर्गीकरण

रामकथा-काव्य का समाज के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण इस में समाज-मूलक प्रायः समस्त नीतियों का चित्रण या उल्लेख मिलता है जो सामूहिक मानव-कल्याण के लिए श्रेयस्कर और अपरिहार्य है। विषय-विस्तार को दृष्टि में रखकर नीतियों का वर्गीकरण विभिन्न रूपों में किया जा सकता है। यहां हम दोनों आलोच्य भाषाओं की रामायणों में प्राप्य प्रमुख नीति-वचनों को दो ही मुख्य वर्गों में रखेंगे—सामान्य लोकनीति और राजनीति।

5.2 2.1 सामान्य लोक-नीति

'लोकनीति' विषय भी अपने में व्यापक है और इसमें वे समस्त मानवीय गुण-तत्व भी समाहित होते हैं जिनका उल्लेख ऊपर 'मानव-धर्म' के अन्तर्गत हो चुका है। यहां हम मानव के उन सभी अनुदात्त भावों या सामजिक अवगुणों की ओर संकेत करेंगे जिनकी निन्दा कवियों ने की और जिनका बहिष्कार ही मनुष्य को नैतिकता के सर्वोच्च धरातल पर प्रतिष्ठित करता है। दोनों भाषा-रामायणकारों ने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि समस्त कुत्सित मानवीय वृत्तियों की भर्त्सना करके नीति-वचनों द्वारा मनुष्य को सद्‌वृत्तियों की ओर उनमुख होने की सीख दे दी। उदाहरण के लिए यहां कुछ ऐसी ही उक्तियां उद्‌धृत की जा रही हैं :

काम के दुष्प्रभाव का चित्रण 'मानसकार' 'शिव-तपस्या' प्रसंग में इस प्रकार करते हैं :

कोपेउ जबहि बारिचरकेतु। छन महुं मिटे सकल श्रुतिसेतू॥
ब्रह्मचर्य व्रत संजम नाना। धीरज धर्म ज्ञान विज्ञाना॥
सदाचार जप जोग बिरागा। सभय बिवेक कटकु सबु भागा॥ (1. 84)

राम लक्ष्मण से कहते हैं कि जो काम से बचे, वही महापुरुष है :

लछिमन देखत काम अनीका। रहहिं धीर तिन्ह के जग लीका॥ (3. 38)

काम-प्राबल्य के कारण ही तुलसीदास ने नारी की निन्दा की है :

· एहि कें एक परम बल भारी। तेहि तें उभर सुभट सोइ भारी (3. 38)

---

74. ए प्राईमर आफ हिन्दूइज्म, पृ० 70 (डा० राजाराम रस्तोगी—तुलसी : जीवनी और विचारधारा, पृ० 266-267 से उद्धृत)।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि
तिन्ह महं अति दारुन दुखद माया रूपी नारि ।। (3. 43)

काम, क्रोध, लोभ, दम्भ आदि की भर्त्सना तुलसी ने विविध स्थलों पर की है :

तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ ।
मुनि विज्ञान धाम मन करहिं निमिष महुं छोभ ।। (3. 38)

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पन्थ ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि सन्त ।। (5. 38)

तुलसी ने नारी की निन्दा विविध स्थलों पर की है। 'जुवती सास्त्र नृपति बस नाहीं' कहकर नारी की अवशता प्रकट की गई है। कवि के विचारानुसार 'ढोल गवांर सूद्र पशु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी ।।[75] तुलसी ने नारी के आठ अवगुण इस प्रकार वर्णित किए हैं :

नारि सुभाउ सत्य कवि कहहीं । अवगुन आठ सदा उर रहहीं ।।
साहस अनृत चपलता माया । भय अबिवेक असौच अदाया ।। (6. 16)

नारी को तुलसी ने अज्ञेय और सर्व समर्थ बताया है :

निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाइ । जानि न जाइ नारि गति भाई ।।
काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ ।
का न करइ अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ।। (2. 47)

इसी तरह 'अवगुन मूल सूल प्रद प्रमदा सब दुख खानि' कहकर तुलसी ने नारी की कठोर भर्त्सना की है।

केशवदास ने 'मेरे-तेरे' एवं निजी स्वार्थ-लोभ की दुर्भावना की भर्त्सना करके उसे भ्रम मात्र माना है।[76] इसी तरह काम, लोभ, मद और मोह के दुर्गुणों से मनुष्य अपने आपको पूर्णतः भूल जाता है :

लोभ मद मोह बस काम जबतीं भए,
भूलि गए रूप निज बेधि तिनसो गए। (25. 3)

---

75. मानस, 5. 59.
76. रा० चं० 24. 26.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काम, क्रोध, मद को उन्होंने ऐसा सांसारिक माया-जाल माना है जिसमें जीव भटकता है :

काम, क्रोध, मद बढ्यौ अपार, मानौ जीव भ्रमै संसार ।। (29. 9)

बड़ों की आज्ञा-पालन नैतिकता का एक भव्य रूप है । 'रामचंद्रिका' में कहा गया है :

दास होय पुत्र होय शिष्य होय कोई माइ
सासना न मानइं तो कोटि जन्म नर्क जाइ । (9. 9)

इसी तरह पति-सेवा ही स्त्री के लिए अन्य धर्म-कर्म से सर्वोत्तम है–

धर्म कर्म सब निष्फल देवा । तोहिं एक फल के पति सेवा । (9.14)

आधुनिक रामकथा-काव्यों में पूर्व प्रतिष्ठित नैतिकता में अधिक विस्तार हुआ । कवियों ने आध्यात्मिक और दार्शनिक उलझनों की ओर कम ध्यान देकर आदर्श मानव-धर्म में नैतिकता को अधिक प्रश्रय दे दिया । इसीलिए 'साकेत' के विषय में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं—'कवि के आदर्शवाद में औदात्य उतना नहीं है, जितना भावुकता सम्पन्न नैनिकता ।''[77] मानस धर्म की भांति नैतिकता का उच्चतम रूप आदर्श पात्रों में मिलता है और स्वतंत्र रूप से अत्यल्प नीति-वचन उपलब्ध है ।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि की भर्त्सना विविध प्रसंगों में कश्मीरी रामकथा-काव्य में भी प्राप्य है । प्रकाश रामायण' के प्रारम्भ में कवि ने काम, लोभ और अहंकार की तीव्र भर्त्सना की है[78] और आगे सम्पाति द्वारा वर्णित-भजन में भी नैतिकता के बाधक 'काम क्रोध लोभ तथा मोह'[79] के नाश के लिए आराध्य इष्ट से प्रार्थना की गई है । इसी प्रकार 'शंकर रामायण' में भी समस्त कलुषित तामसिक वृत्तियों, लोभ, मोह, क्रोध तथा अहंकार के त्याग करने का कवि निर्देश देते हैं ।[80] रावण को वे 'दम्भ-अहंकार' शूपर्णखा को मिथ्या-बुद्धि का प्रतीक मानते हैं ।[81] 'विष्णु-प्रताप रामायण' में पापों की भर्त्सना करके जीव को

77. हिन्दी साहित्य : बीसवीं-शताब्दी, पृ० 52.
78. प्र० रा०, पृ० 4.
79. प्र० रा०, पृ० 72.
80. शं० रा०, खण्ड 1. अ 1 (28).
81. वही 1. अ 1 (49).

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सन्तोषव्रत धारण करने का उपदेश दिया गया है।[82] गृहस्थ-धर्म के सकुशल निर्वाह के लिए कवि ने 'आचार-विचार' को प्रश्रय दे दिया।[83] रामायणकार ने समस्त तमोगुण मानसिक प्रवृत्तियों में 'विषय-आनंद' को विद्यातक भयंकर विष के समान बताया,[84] जिसके पूर्णतः बहिष्कार होने पर मनुष्य उच्चतम नैतिक धरातल पर स्थिर हो सकता है।

'मानस' की भांति किसी भी कश्मीरी रामायण में नारी-निंदा नहीं की गई है, सभी कवियों ने नारी-धर्म या गृहस्थ के नैतिक धर्म पर पूर्ण रूप से आस्था प्रकट की है। एकनिष्ठ पतिव्रता धर्म[85] और सास-ससुर तथा सुहृद गृह-जन की सेवा-शुश्रूषा[86] ही नारी का धर्म या सर्वोच्च नैतिकता है, जिसका निर्वाह सभी आदर्श नारी-पात्रों में दृष्टिगोचर होता हैं।

पितृ-विहीन बालक की दयनीय दशा का वर्णन करके[87] कवियों ने माता-पिता की सेवा-शुश्रूषा को ही सर्वोत्कृष्ट नैतिक धर्म बताया है।

सामान्य लोक-नीतियों के अन्तर्गत लोक-मानस में प्रचलित कुछ ऐसी परम्परागत एवं संस्कारजन्य लोक-नीतियों को भी गिना जा सकता है जिनका लोक-जीवन के साथ अविच्छिन्न सम्बन्ध है। उनमें से प्रमुख 'भाग्यवाद' और 'कर्मफल' ही है। रामकथा-काव्य के आदर्श पात्रों को भी हम इन सामान्य लोक-नीतियों से विनिर्मुक्त नहीं पाते हैं। दोनों भाषा रामायणकारों ने इन लोक-नीतियों से प्रभावित होकर विविध स्थलों पर अवसर खोज कर दुख-सुख की लोकोत्तर अभिव्यंजना के लिए विधि-विधान, ईश्वरेच्छा, देवी-गति और काल-कर्म आदि की दुहाई दी है।

'मानस' में दशरथ, कौशल्या और राम 'कर्मफल' की नीति से प्रभावित होकर इसका समर्थन समान रूप से करते हैं :

दशरथ :

सुभ अरु असुभ करम अनुहारी। ईसु देर फलु हृदयं बिचारी॥
करइ जो करमु पाव फल सोई। निगम नीति असि कह सबु कोइ॥ (2.77)

कौशल्या :

कौशल्या कह दोसु न काहू। करम बिबस दुखु सुखु छति लाहू॥
कठिन करम गति जान बिधाता। जो सुभ असुभ सकल फल दाता॥ (2.282)

---

82. रटिथ सन्तोष व्रत पथ पाप निशि रोज़। पृ० 7.
83. गृहस्थल मन्ज़ व्यचारिथ वथ रछिथ धव।—वि० प्र० रा०, पृ० 8.
84. विषय आनन्द ज़ानुन ज़हर कातिल, तमोगण प्रकरचन हुन्दइ हलाहला।
—वि० प्र० रा०, वन०, अ० 3.

85. शर्मा रामायण, पृष्ठ 179.
86. ता० रा०, पृष्ठ 117.
87. प्र० रा०, पृ० 33; वि० प्र० रा०, वन०, अ 19; आ० रा० पृष्ठ 84.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम :

काल रूप तिन्ह कहुं मैं भ्राता । सुभ अरु असुभ कर्म फल दाता ।। (7।41)

राम और सीता को भी इन्हीं कर्मों से प्रभावित कहा गया है :

सिय रघुबीर कि कानन जोगू । करमु प्रधान सत्य कह लोगू ।। (2.91)

तुलसी ने सुमित्रा द्वारा 'बिधि गति बड़ि बिपरीत विचित्रा' कहलवा कर 'बिधि गति का उल्लेख किया है और 'ललाट-लिपि' का उल्लेख रावण-अंगद संवाद में मिलता है ।

जरत बिलोकेउं जबहि कपाला । बिधि के लिखे अंक निज भाला ।। (6.29)

भावी या होनी के बारे में कवि स्पष्टतः कहलवाते हैं :—

भूपति भावी मिटै नहिं जदपि न दूषन तोर ।। (1.174)

'रामचंद्रिका' में भी राम-परशुराम संवाद में राम 'कालगति और 'होनहार' के बारे में कहते हैं :

हम पर कीजत रोष कालगति जानि न जाई ।
होनहार ह्वै रहै मिटै मेटी न मिटाई । (7.20)

कौशल्या भी विधि-गति से सचेत हैं—'करैं उलटी विधि क्यों कहि जाई (9.8)

आधुनिक रामकथा विषयक रचनाओं में भी ऐसे कई उल्लेख मिलते हैं । साकेत में "विधि-विधि पर कहीं उपाय नहीं"[88] सरीखे कई अन्य उदाहरण उपलब्ध हैं, जहां विधि-विचार या भावी को सर्वोपरि स्वीकारा गया है । दशरथ 'हे विधे व्यतिक्रम यह तेरा'[89] कहकर अपनी मनः स्थिति अभिव्यक्त करते हैं । कर्म-फल के बारे में उर्मिला कहती है :

भोगे अपने विषम कर्म-फल अधम अभागे । (पृ॰ 475)

---

88. साकेत, सर्ग 6, पृ॰ 170.
89. साकेत, सर्ग 6, पृ॰ 177.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाग्यवाद का पूरा समर्थन 'वैदेही-वनवास' से उद्धृत इन शब्दों में भी मिलता है:

जैसी कि परिस्थिति होगी। वह टलेगी नहीं टाले।
भोगना पड़ेगा उसको। क्या होगा कन्धा डाले।। (6.81)

कश्मीरी रामकथा काव्य में भी भाग्य, कर्मफल, ललाट-लिपि विषयक समस्त लोक प्रचलित नीतियों का विपुल समावेश हुआ है। पूर्वजन्म के कर्म और कर्म-फल पर कवियों की पूरी आस्था है। 'प्रकाश रामायण' के प्रारम्भ में ही कहा गया है जैसा कोई कर्म करता है उसको वैसी ही फल-प्राप्ति भी होगी। कवि ने इसी आशय से युवा-जीवन में सत्कर्मों की ओर उन्मुक्त होने की सीख दी है।[90] कवि के विचारानुसार राजा दशरथ के पूर्व-जन्म के कर्मों का ही परिणाम हैं कि राम ने उनके यहां जन्म ले लिया।[91] भगवान विष्णु स्वयं दशरथ के उन कर्मों की सराहना शरणागत पृथ्वी के समक्ष करते हैं।[92] पूर्व-जन्म के कर्मों के परिणाम के अतिरिक्त प्रस्तुत जीवन के भले बुरे कर्मों का फल अश्वयंभावी भोगना पड़ता है। राजा दशरथ निजी बुरे कृत्य के परिणामस्वरूप अन्ध मुनि के शाप को ही अपने दुख-दाह का उत्तरदायी मानते हैं।[93] उक्त रामायण में पूर्वनिश्चित 'कर्म-लेखा' (या ललाट-लिपि) के अनुसार ही जीवन का क्रम-निर्वाह चलाने का उल्लेख विविध स्थलों पर मिलता है। दो एक स्थलों पर 'ललाट-लिपि' बदलने के हितार्थ भी कामनाएं की गई हैं—जनक सीता की प्राप्ति पर रोती बिलखती सीता को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि वे उनकी अच्छी 'ललाट-लिपि' विधाता से पुनः लिखवायेंगे[94] (यहां पर सीता को पुत्रीवत् समझकर उसके सभी दुखों को समाप्त करने से ही अभिप्राय है)। राम वन में शिव से की गई आराधना में उनसे यही वरदान मांगते हैं कि वे उनकी 'कर्म-लेखा' में संशोधन करे और उसमें नई चार मुख्य बातों का सन्निवेश करे—'भूमि से सारा दुख-क्लेश दूर हो, कोई शत्रु मेरा मुकाबला न कर सके, कोई मित्र मुझसे रुष्ट न हो और तुम्हारा वास सदैव मेरे हृदय में रहे, जिससे मैं वन के समस्त दुख-संकट सहन कर सकूं'।[95] कवि के अनुसार 'ललाट-लिपि' कभी बदलती नहीं। विश्वामित्र विवाह से पूर्व राम को आश्वस्त करते हैं कि पूर्वनिश्चित 'कर्म-लेखा' के अनुसार राम-सीता का विवाह होना सुनिश्चित है।[96]

---

90. प्र० रा०, पृ० 2.
91. प्र० रा०, पृ० 26.
92. कर्म कर्थ राज़ दशरथि छुस न सन्तान। पृ० 6.
93. प्र० रा०, पृ० 21.
94. प्र० रा०, पृ० 12.
95. प्र० रा०, पृ० 36.
96. मनस कथ भाव तस छुइ नाव सीता, बु छुस ज़ानन च़्य सअत्य छस कर्म लीखा।।
—प्र० रा०, पृ० 13.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'अशोक वाटिका' में बन्दी सीता अपने अशुभ और संकटदायी 'ग्रह-चक्र' को समस्त दुख-क्लेश के लिए उत्तरदायी समझती है ।[97]

'विष्णु-प्रताप रामायण' के अनुसार पूर्वजन्म के सत्कर्मों के परिणामस्वरूप ही जीव मनुष्य के रूप में जन्म लेता है ।[98] 'अमर रा०' में कवि अपने इष्ट से पूर्व जन्म के दुष्कर्म-फल से मुक्ति पाकर सत्कर्मों की ओर उन्मुक्त होने के लिए वन्दना भी करते हैं ।[99] इस तरह दोनों भाषा-रामायणकारों ने लोक-प्रचलित भाग्यवाद या कर्म-फल को प्रश्रय दे दिया है जो लोक-जीवन का अभिन्न अंग है ।

5.2.2.2 राजनीति

समाज की अपरिहार्य शासक-शासित की भावनाओं से प्रेरित होकर और दोनों के पारस्परिक मधुर सम्बन्धों की प्रतिष्ठा-प्रतिपादन के लिए दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने समाज के शासक वर्ग से सम्बंधित अपने विचारों को यथावसर स्पष्ट करने का प्रयास किया है । यहां 'राजनीति' सम्बन्धी कथन ठेठ सिद्धांतवादिता से मुक्त होकर व्यावहारिकता और लोकोपयोगिता के ही दृष्टिकोण पर निर्भर है। कवियों ने शासक-वर्ग या राजा के कर्तव्यों तथा सत्कर्मों का निर्देश करके प्रजा-वर्ग के लिए उन्हें आत्यंतिक उपयोगी बताया और कही कहीं पर राजा के कर्तव्य-विमुख दुष्कृत्यों की निंदा भी की ।

मानसकार 'प्राकृत महिपाल' के स्वभाव वर्णन में राजा के कर्त्तव्यों का प्रतिपादन इन शब्दों में करते हैं :

लोकहुं बेद सुसाहिब रीती । विनय सुनत पहिचानत प्रीती ।।
गनी गरीब ग्राम नर नागर । पंडित मूढ़ मलीन उजागर ।।
सुकवि कुकवि निज मत अनुहारी । नृपहि सराहत सब नर नारी ।।
साधु सुजान सुसील नृपाला । ईस अंस भव परम कृपाला ।।
सुनि सनमानहि सबहि सुवानी । मनिन भगति नति गति पहचानी ।। (1.28)

राजा के 'कर्तव्य-धर्म' या नीति के बारे में तुलसी कहते हैं :

मुखिआ मुखु सों चाहिए खान पान कहुं एक ।
पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित बिबेक ।। (2. 315)

---

97. प्र० रा० पृष्ठ 54 .

98. वि० प्र० रा०, पृ० 825.

99. कर्म फल प्रोन सोरइ बोन्य म्य मोकलाव ।
सतत कुन लोलचि म्य पूरें वतें हाव ।। (अमर रा० पृ० 1)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजधरम सरबसु एतनोई । जिमि मन मांह मनोरथ गोई । (2. 316)

तुलसी प्रजा-पालन के कर्त्तव्य विमुख राजा की निंदा करते हैं :

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृपु अवसि नरक अधिकारी ।।
(2.71)

कवि के विचारानुसार यदि सचिव, गुरु और वैद्य भयवश राजा के समक्ष प्रिय वचन कहते हैं तो उस 'राज-धर्म' का शीघ्र नाश हो जाता है :

सचिव वैद गुरु तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन हीनि कर तोइ बेगि हीं नास ।। (5. 37)

केशवदास ने 'राजनीति' सम्बन्धित शास्त्रोक्त वचनों का पुनरुल्लेख न करके तत्कालीन राजाओं के ऐश्वर्य, राजसी ठाठ-बाठ एवं भोग-विलास का विशद् वर्णन 'रामचंद्रिका' में किया है। सामयिक राजदरबार के वातावरण से प्रभावित होकर कवि ने उस ऐश्वर्य-विलास का वर्णन करके कर्त्तव्य-विमुख राज-धर्म की ओर स्पष्ट इंगित किया है । केशव-युगीन राजदरबारों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब राजा दशरथ और राजा जनक के दरबारों में भी देखने को मिलता है ।[100] रावण के शयन-कक्ष का चित्रण देखिए :

पियै एक हाला, गुहै एक माला । बनी एक बाला नचै चित्रसाला ।
कहूं कोकिला कोक की कारिका कौं । पढ़ावै सुवालै सुकी सारिका कौं ।।
(13. 51)

ऐहिक सुख-आनंद-भोग में ही राजा अपने राज-धर्म की इतिश्री समझता था। मद्यपान तथा परस्त्री गमन जैसे निम्न कोटि के दुर्व्यसन उनमें थे :

पानविलास उदित आतुरी, परदारागमने चातुरी । (23.35)

राजा अहं एवं अभिमान से वंचित न थे :

दरसन दीबोई अति दान, हंसि बोलै तौ बड़ सनमान ।
जो काहू सौं अपनौ कहै, सपने कैसी पदवी लहै । (23.37)

100. रा० चं० 2. 1 तथा 3. 16.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजाओं और धनिकों के भोग-विलास के अतिरिक्त अन्य सामाजिक ठेकेदारों के कुत्सित कार्यों का भी कवि ने चित्रण किया है। मंदिरों में पूजा-पाठ करने वाले पुजारियों के भ्रष्टाचार का वर्णन उन्होंने कठोर वाणी में किया।[101] ऐसे ही अनेक चित्रणों द्वारा कवि ने परोक्ष रूप से राज-मद-एश्वर्य एवं शासम-वर्ग के भोग-विलास की भर्त्सना करके अपने राज-कर्म-सम्बन्धित अपने आदर्श विचारों की ही अभिव्यंजना की है।

'साकेतकार' के विचारानुसार नृपति का लक्ष्य विजय और सर्व कल्याणकारी यश प्राप्त करना है, न कि दूसरे का धन लूटना। उर्मिला के शब्दों में कवि पापी धनयश की भर्त्सना कराते हैं:

गरज उठी वह नहीं नहीं पापी का सोना
यहां न लाना, भले सिन्धु में वहीं डुबोना
वीरो धन को आज ध्यान में भी न लाओ
सावधान! यह अवध धान्य सा धन मत छूना
तुम्हें तुम्हारी मातृभूमि ही देगी दूना। (पृ० 475)

'वैदेही-वनवास' के अनुसार लोकाराधन ही 'राजनीति' है:

लोकाराधन राजनीति सर्वस्व है। है परार्थ, परमार्थ पंथ भी अहि गहन ॥
पर यदि ए कर्त्तव्य और सद्धर्म है। सहनशक्ति तो क्यों न करै संकट सहन ॥
(17. 78)

लोकाराधन ही नृप-धर्म है।[102] राम के इस धर्म के बारे में कहा गया है:

आप हैं प्रजावृन्द सर्वस्व। लोकाराधन के अवतार ॥
लोकहित पंथ कंटक के काल। लोकमर्यादा पारावार ॥ (3. 26)

नृप-कर्त्तव्य के बारे में कवि लिखते हैं:

राजपद कर्त्तव्यों का पथ। गहन है, है अशांति आलम ॥
क्रांति उसमें है दिखलाती। भरा होता है उसमें भय ॥ (3. 82)

'राजनीति' विषयक कुछ शास्त्रोक्त नीतियों के बारे में भी कवि ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। उन्होंने सामनीति का ही समर्थन कई स्थलों पर किया है:

इसी से सामनीति ही को। बुधों से प्रथम स्थान मिला।
यही है वह उद्यान जहां। लोकाराधन सुमन खिला। (3. 83)

---

101. रा० चं, 34. 19, 20 तथा 25.
102. वैदेही वनवास 3. 11.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सामनीति का मैं विरोध कैसे करूं । राजनीति को वह करती है गौरवित ।
(4. 48)

तात देखलो सामनीति के ग्रहण से । हुआ प्राणियों का कितना उपकार है ।
प्रजा सुरक्षित रही पिसी जनता नहीं । हुआ लोकहित मचा न हाहाकार है ॥
(9. 71)

कवि ने दण्ड या दमन-नीति की भर्त्सना की है :

दमन या दण्ड नीति मुझको । कभी भी रही नहीं प्यारी ॥
न यद्यपि छोड़ सका उनको । रहे जो इसके अधिकारी ॥ (3.84)

दमन है मुझे कदापि न इष्ट । क्योंकि यह है भय मूलक नीति । (3.93)

अत्याचार को समाप्त करने के लिए ही दण्ड-नीति को उचित माना गया है :

है क्षमा योग्य न अत्याचार । उचित है दण्डनीय का दण्ड ॥
निवारण करना है कर्त्तव्य । किसी पाषण्डी का पाषण्ड ॥ (3. 87)

'साकेत-सन्त में मिश्र जी ने राजा के कर्त्तव्य-नीति को इन शब्दों में व्यक्त किया है :

भूप इससे ही प्रभु के रूप, कि उसके सिर है उतना भार ।
न अपने किन्तु लोक के लिए, सदा उसका जीवन-संचार ॥ (12.41)

कवि नवयुगीन प्रजातंत्रीय विचारधारा से प्रभावित होकर राज्य और न्याय के बारे में कहते हैं :

राज्य व्यक्ति का या कि वर्ग का, राज्य प्रजा का या राजा का ।
चर्चा ही है व्यर्थ, क्योंकि वह, है त्रिभुवन के अधिराजा का ॥
जितना जिसको न्याय मिला है, उचित है कि वह उसे सम्भाले ।
और अन्त में उज्ज्वल सुख से, जिसकी वस्तु उसे दे डाले ॥ (13.45)

कश्मीरी रामायणों में भी राजनीति सम्बन्धी कथन प्रायः राजा या शासक-वर्ग के कर्त्तव्यों का ही प्रतिपादन करते हैं न कि शास्त्रोक्त राजनैतिक मतों पर टीका-टिप्पणी । 'प्रकाश रामायण' में सर्वत्र अपरोक्ष रूप से ही राजाओं के शासकीय कर्त्तव्यों की विवेचना मिलती है । प्रजा वर्ग का पालन, गरीबों का दुख-दर्द

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निवारण और साधु-संन्यासियों का यथेष्ट सम्मान करने वाले राजा दशरथ की इस उदार नीति को सराहा गया है।[103] कवि के विचारानुसार अनाथों का पालन और उनके लिए समस्त आवश्यकताओं—आवास, भोजन तथा वस्त्र सुलभ करना राजा का कर्त्तव्य है।[104] दशरथ के लोक-कल्याणकारी शासन या धर्म-राज का वर्णन करके कवि ने आदर्श राज-धर्म या कर्त्तव्य की सराहना की है।[105] पापी राजा का सर्वनाश सुनिश्चित है, राम लक्ष्मण से रावण के ऐश्वर्य-भोग और शासन का उल्लेख करके उसका संहार करने के भावी कृत्य के बारे में कहते हैं।[106] 'विष्णु-प्रताप-रामायण' में इन सामान्य राज-कर्त्तव्यों के अतिरिक्त समाज में राजा की लोकोत्तर प्रतिष्ठा का भी उल्लेख मिलता है। कवि के विचारानुसार जैसे समाज में व्यक्ति विशेष के लिए माता-पिता का उत्तम स्थान माना जाता है, वैसा ही प्रजा-वर्ग में राजा का होता है, प्रजा के लिए वे ईश्वर सदृश हैं। 'राजनीति' या राज-कर्म का आदर सत्कार और आज्ञापालन ईमानदारी से करना चाहिए। राजा को प्रजा का परम पिता समझ लेना चाहिये जिनकी महारानी ही 'महालक्ष्मी' है।[107] उक्त रामायण के 'राजलीला-काण्ड' के अन्तर्गत राम लव को राजनीति विषयक उपदेश देते हैं, जिसमें प्रजा-पालन में सहायक समस्त उदात्त सत्कर्मों को करने की प्रेरणा दया और लोक-कल्याणकारी सत्य-धर्म के पालन की सीख देते हैं।[108]

'आनन्द-रामायण' में राम द्वारा रावण को प्रेषित पत्र-संदेश में रावण के कुत्सित राजसी कृत्यों की भर्त्सना करके परिणामस्वरूप उसके निकटवर्ती संहार का उल्लेख भी किया गया है, रावण के दुष्कृत्य ही उसके संहार के उत्तरदायी हैं।[109] 'शर्मा रामायण' में भी रावण-दरबार के ऐश्वर्य, भोग-विलास का वर्णन करके उसके कर्त्तव्य-विमुखता की निन्दा की गई है।[110]

5.3 निष्कर्ष

धर्म की व्यापकता को किसी भी सुनिश्चित पारिभाषिक अर्थ में बांधना कठिन है और न इसके वर्गीकरण में ही कोई एकरूपता हो सकती है। रामकथा की निजी व्यापकता में धर्म की अभिव्यंजना और अधिक विस्तारपूर्वक हुई है। दोनों आलोच्य

---

103. प्र० रा०, पृ० 7.
104. अनाथन हुंद रथुन मटि राज्ञ लूकन, तिमन आमच् थवन तिम महर वासन पृष्ठ 9.
105. प्र० रा० पृ० 9.
106. वही, पृष्ठ 22.
107. वि० प्र० रा०, पृ० 10.
108. वही, राज०. अ० 15-16.
109. आ० रा०, पृ० 150.
110. शर्मा रामायण, 298.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषाओं के रामायणकारों ने अपनी रचनाओं में पूर्व प्रचलित विभिन्न धार्मिक मत-सम्प्रदायों का समन्वय किया, जिसमें प्रमुखत: शैवों और वैष्णवों के पारस्परिक अन्योन्याश्रय सम्बन्ध की स्थापना को मिली। धर्म के व्यापक अर्थ में भक्ति स्वत: समाहित होती है और दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने भक्ति-भावना को अधिकाधित विकसित करने का प्रयत्न किया, जिससे 'भक्ति' और 'धर्म' पर्यायवाची लगते हैं। दोनों भाषा-रामायणकारों ने सनातन आर्य- धर्म के अन्तर्गत उपासना से सम्बन्धित पूजा-पाठ, यज्ञ, तप आदि समस्त बाह्य पद्धतियों के प्रति भी आस्था प्रकट की और निर्द्वन्द्व सामाजिक जीवन के उत्थान के लिए वर्णाश्रम-व्यवस्था को प्रश्रय दे दिया। दोनों भाषाओं की रामायणों में यत्र तत्र जीवनोन्नत मानव-धर्म के मूल में सभी अनिवार्य एवं अपरिहार्य गुण-तत्वों, सत्य, परोपकार, विनय, क्षमा, शील, संयम आदि समस्त सद्वृत्तियों की ओर प्रवृत्त होने की सीख दी गई है।

नीति और समाज का अविच्छिन्न सम्बन्ध है। नीति को लेकर विविध नीति-शास्त्र के ग्रन्थों का प्रणायन भारत में हुआ है। नीति और धर्म का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। दोनों भाषाओं की रामायणों में सामान्य लोक-नीति के अन्तर्गत कवियों द्वारा निर्दिष्ट अनुदात्त मानसिक प्रवृत्तियों के बहिष्कार और उदात्त गुण-तत्वों के ग्रहण करने से सम्बन्धित नीति-कथनों की ही विवेचना की गई है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि कुत्सित मानवीय वृत्तियों की भर्त्सना दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने विभिन्न प्रसंगों में सविस्तार की है। तुलसीदास ने इन कुत्सित वृत्तियों के आधिक्य के कारण ही नारी की निन्दा भी की है, किन्तु कश्मीरी कवियों ने कहीं भी ऐसा करने का प्रयत्न नहीं किया। भारतीय लोक-संस्कृति के ऐक्य के कारण दोनों भाषाओं की रामायणों में 'भाग्यवाद' एवं 'कर्मफल' आदि की अभिव्यंजना विविध स्थलों पर हुई हैं। रामकथा के आदर्श पात्र भी इन सुदृढ़ लोक-विश्वासों से मुक्त नहीं है। 'राजनीति' सम्बन्धी विचारों के अन्तर्गत दोनों भाषाओं की रामायणों में अधिकतर नृप-कर्त्तव्यों की ही विवेचना हुई है। आधुनिक हिन्दी राम-काव्यों में युगीन परिस्थितियों से प्रभावित होकर कवियों द्वारा 'राजनीति' से सम्बन्धित अन्य नीतियों की विवेचना भी की है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6 रस-निरूपण

6.0. रस और साहित्य का पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध भारत में साहित्य रचना के प्रारम्भिक काल से ही चलता आ रहा है, किन्तु आलोचकों ने रस-सिद्धांत का प्रतिपादन भरत मुनि के प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' से ही माना है।[1] 'नाट्यशास्त्र' से पूर्ववर्ती प्रामाणिक रचनाओं में रस का समुचित निर्वाह होने पर भी उन में रस की शास्त्रीय विवेचना अभी तक अप्राप्य है।

रामकथा में जातीय या सामाजिक जीवन की विविध स्थितियों का समावेश मिलता है, अतः विभिन्न मानव मनः स्थितियों से सम्बद्ध प्रायः सभी रसों का निरूपण इसमें सहज और स्वाभाविक है। रामकथा के आदि काव्य 'वाल्मीकि रामायण', जो 'नाट्यशास्त्र' से पूर्व की रचना है, में उपलब्ध विस्तृत रस-निरूपण के बारे में डा० नगेन्द्र लिखते हैं—"सम्पूर्ण जीवन का महाकाव्य होने के कारण स्वभावतः उसमें नाना परिस्थितियों का और उनसे उत्पन्न मानव-मनोदशाओं का चित्रण है, अतएव समस्त रस-भावादि की प्रभूत सामग्री वहां सहज ही प्राप्त है।"[2] परवर्ती भाषाओं के रामायणकारों ने रस-शास्त्र से भली-भांति परिचित होकर भी मुख्य प्रतिपाद्य विषय रामकथा-वर्णन से अलग होकर रस-सिद्धांत मात्र का वर्णन नहीं किया है, यद्यपि उनकी रचनाओं में समस्त रसों का निरूपण विस्तार से हुआ है। इतना ही नहीं, भक्त-कवियों की रचनाओं में वात्सल्य, भक्ति और शांत-रस आदि नये रसों के भी दर्शन होते हैं। यह असंदिग्ध तथ्य है कि दोनों भाषाओं के रामायणकार रस-सिद्धांत के प्रतिपादन-परिष्कार के विचारों से प्रभावित रहे हैं। 'रामचरितमानस' में कई स्थलों पर इसके स्पष्ट उदाहरण मिलते हैं :

1. भाव भेद रस भेद अपारा। कवित दोष गुन बिबिध प्रकारा ॥ (1.9)
2. मनहुं करुन रस कटकई उतरी अवध बजाइ ॥ (2.46)
3. आइ गएउ हनुमान जिमी करुना महं वीर रस ॥ (6.61)

---

1. डा० नगेन्द्र : रस-सिद्धांत, पृ० 10.
2. रस-सिद्धांत, पृ० 14.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों कश्मीरी और हिन्दी रामकथा-काव्यों में रस व्यंजना कथानक की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई विविध स्थितियों से सम्बंधित होकर अधिकतर सहज और स्वाभाविक रूप में प्रतिफलित हुई है, इसमें कहीं भी कृत्रिमता का पुट नहीं मिलता। जिससे यह पूर्णतया सिद्ध होता है कि दोनों भाषाओं के कवियों ने रस की अभिव्यंजना पूर्व-मान्य महाकाव्य के लक्षणों का एक अनिवार्य अंग समझकर नहीं की, किन्तु कथा-विषयक विविध प्रसंगों के वर्णन में स्वतः रस की महत्ता प्रकट हुई तथा उसको अधिक विस्तार मिला। यहां पर दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में निरूपित शृंगार, करुण, वीर, रौद्र, अद्भुत, भयानक, वीभत्स, हास्य, वात्सल्य शांत और भक्ति रस के विवेचन के साथ-साथ दोनों भाषाओं की रामायणों में अलग-अलग से प्रतिपादित प्रमुख रसों पर भी विचार किया जायेगा।

6.2 शृंगार रस

आदर्श 'दाम्पत्य-प्रेम' ही रामकथा-काव्य का मुख्य आधार है। शृंगार के स्थायी भाव 'रति' का बोध यहां 'दाम्पति-रति' के ही रूप में होता है और इसीलिए शृंगार के तीनों पक्ष 'पूर्वराग', संयोग' और 'विप्रलम्भ' के चित्रण को भक्त कवियों ने निजी धर्म और मर्यादा की प्रबल भावना से नियंत्रित करने का प्रयत्न किया है। शृंगार रस के अन्तर्गत नायक और नायिका ही प्रसंगानुकूल आश्रय और आलम्बन की भूमिका निभाते हैं, आलम्बन की चेष्टाओं के अतिरिक्त प्राकृतिक प्रतिस्पंदन आदि की उद्दीपन विभाव है और पारस्परिक दर्शन, कटाक्ष रोमांच प्रस्वेद आदि आंगिक चेष्टाएं ही अनुभाव।

6.1.1 पूर्वराग

जनक की पुष्पवाटिका में राम और सीता की प्रथम भेंट के वर्णन में शृंगार के 'पूर्वराग' का सुन्दर परिपाक हुआ है। 'मानस' में चित्रण इस प्रकार हुआ है :

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनी। कहत लखन मन रामु हृदयं गुनि ॥
मानहुं मदन दुदुंभी दीन्ही। मनसा विस्व बिजय कहुं कीन्ही ॥
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ॥
भए विलोचन चारु अचंचल। मनहुं सकुचि निमि तजे दृगंचल ॥
देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयं सराहत बचनु न आवा ॥ (1.230)

यहां राम आश्रय और सीता आलम्बन है। सीता के नूपुरों की मधुर ध्वनि उद्दीपन है और नेत्रों की अचल व अपलक अवस्था ही अनुभाव है। इसी प्रसंग में राम को आलम्बन और सीता को आश्रय के रूप में भी आगे चित्रित किया गया है :

लता ओट तव सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए ॥
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने ॥

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थके नयन रघुपति छवि देखें। पलकन्हिहूं परिहरीं निमेखें ।।
अधिक सनेह देह में मोरी। सरद ससिहि जनु चितव चकोरी ।।
लोचन मग रामहिं उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी ।। (1.232)

'पूर्व राग' का चित्रण यद्यपि कवि सुन्दर रूप से प्रारम्भ करते हैं फिर भी पाठक तुलसी की उत्कट भक्ति-भावना के कारण पूर्ण रस-दशा को प्राप्त नहीं होता है। यहां उत्कृष्ट रस दशा को पहुंचते हुए राम के क्षोभ में 'रघुवंशिता'[3] और सीता के क्षोभ में 'जनक-प्रतिज्ञा'[4] की स्मृति दिलाकर कवि ने उस रस-दशा को संयत बना दिया है।

कश्मीरी 'आनंद रामावतारचरित' और 'शर्मा-रामायण' में वर्णित उपरोक्त प्रसंग में भी पूर्वराग के दर्शन होते हैं। 'आ० रा०' में सीता के अनन्य सौन्दर्य और अद्भुत वेष-भूषा का सुन्दर चित्रण मिलता है, जिनसे आंखें चार होते ही राम चरम रस-दशा को प्राप्त होते हैं—सीता की मदभरी गोल-गोल आंखें कमल सरीखी हैं, उनके सिर पर पहने हुए स्वर्ण-मुकुट की सौन्दर्याभा अनिर्वचनीय है। 'अतलास-मखमल' के सुन्दरतम वस्त्रों में सुशोभित वे एकांत में भव्य पुष्प-लता की छाया में अधलेटी हुई राम की ओर एकटक मन्त्रमुग्ध सी देख रही हैं।[5] 'शर्मा रामायण' में भी 'पूर्वराग' के चित्रण में मर्यादा का विशेष ध्यान रखा गया है और पुष्प-वाटिका के प्राकृतिक लावण्य के माध्यम से ही मर्यादित रस-दशा का प्रतिफलन दोनों ओर से मिलता है।[6]

6.1.2 संयोग श्रृंगार

राम और सीता या आदर्श पात्रों के संयोग श्रृंगार का वर्णन दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में संयत और मर्यादित है। 'मानस' में कोप-भवन में रूठी रानी कैकेयी को मनाते हुए राजा दशरथ के इन शब्दों में इसका यथोचित परिचय मिलता है :

बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिक बचनि।
कारन मोहि सुनाउ गज गामिनि निज कोप कर।। (2.25)

---

3. मानस 1.231.
4. वही 1.234.
5. न्यथर पम्पोश हियव वथा छिस मदौवर। गोनव निश ब्योन सोन सुन्दताज बरसर ।।
वलिथ कम जाम छिस अतलास मखमल। लरे वुछान विहित पोशे थरे तल ।।
पृ० 42.
6. शर्मा रामायण, पृ० 73.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनहित तोर प्रिया केइ कीन्हा । केहि दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा ।।
... ...

प्रिया प्रान सुत सरबस भोरें । परिजन प्रजा सकल बस तोरें ।।
जो कछु कहौं कपटु करि तोहीं । भामिनी राम सपथ सत मोहीं ।।
बिहंसी मांगु मन भावति बाता । भूषन सजहि मनोहर गाता ।। (2.26)

इसी तरह 'राम-सीता' के संवादों[7] में भी संयोग-श्रृंगार की एक मर्यादित छठा मिलती है । बन में राम-सीता के संयोग-सुख का वर्णन इन शब्दों में मिलता है :

राम संग सिय रहति सुखारी । पुर परिजन गृह सुरति बिसारी ।
छिनु छिनु पिय बिधु बदनु निहारी । प्रमुदित मनहुं चकोर कुमारी ।। (2.140)

एक बार चुनि कुसुम सुहाये । निज कर भूषन राम बनाये ।।
सीतहि पहिराए प्रभु सादर । बैठे फटिक सिला पर सुन्दर ।। (3.1)

सीता चितव स्याम मृदु गाता । परम प्रेम लोचन न अघाता ।। (3.21)

सीता के सौन्दर्य-वर्णन और नखशिख का अत्यधिक मर्यादित रूप मिलता है । केशवदास ने 'रसिकप्रिया' में श्रृंगार रस को नव-रसों में सर्वश्रेष्ठ माना है :

नवहु रस के भाव बहुतिनके भिन्न विचार ।
सब को केसवदास हरि नायक है सिंगार ।। (1.16)

'रामचंद्रिका' में श्रृंगार रस की प्रधान है । संयोग श्रृंगार में कवि ने नखशिख रूप-सौन्दर्य वर्णन, वस्त्राभूषण, हाव-भाव, क्रीड़ा विलास आदि का चित्रण समकालीन राजाओं से भोग-विलास की छाया में ही किया है । सिया-दासियों की 'शुभ्र-साधु माधुरी' को देखकर चित्त की गति स्वतः भूल जाती है :

छवान की छुई न जाति, सुभ्र साधु माधुरी ।
विलोकि भूलि भूलि जात, चित चालि चातुरी ।।
विसुद्ध पाद-पद्म चारु अंगुली नखावली ।
अलवतजुक्त मित्र की सुचित-बैठकी भली ।। (31.34)

श्रृंगार-रस के निरूपण के लिए ही केशवदास द्वारा 'रामचंद्रिका' में विविध अनावश्यक श्रृंगारपरक केलि-क्रीड़ाओं का वर्णन किया गया ज्ञात होता है ।[8]

---

7. मानस 2.61-68.
8. रा० चं० 31.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं-कहीं पर रूप वर्णन अश्लील और अमर्यादित भी है। अंगद मन्दोदरी के केश पकड़ कर चित्रशाला के बाहर ले आता है, उसके कंचुकी विहीन उरोजों का वर्णन देखिए :

फटी कंचुकी किंकिनी चारु छूटी। पुरी काम की सी मनो रुद्र लूटी ।।
बिना कंचुकी स्वच्छ वक्षोज राजैं। किधौं सांचहू श्रीफलै सोभ साजैं।
किधौं स्वर्न के कुम्भ लावन्य पूरे। बसीकर्न के चूर्न संपूर्न पूरे ।। (19.30.31)

बहुत कम स्थलों पर वर्णन संयत और मर्यादित है :

कंटक अटकत कटि कटि जात। उड़ि उड़ि बसन जात बस वात।
तऊ न तिनके तन लखि परे। मनिगन अंग-अंग प्रति घरे ।। (31.40)

'साकेत' के प्रारम्भ में ही लक्ष्मण और उर्मिला के पारस्परिक दाम्पत्य-सुख और और विनोद-हास में संयोग-शृंगार का परिपाक हुआ है :

हार जाते पति कभी, पत्नी कभी, किन्तु वे होते अधिक हर्षित तभी।
प्रेमियों का प्रेम गीतातीत है, हार में जिसमें परस्पर जीत है। (पृ० 33)

दोनों के वार्तालाप भी संयत शृंगार रस से परिपूर्ण हैं :—

कर बढ़ाकर जो कमल सा था खिला, मुस्कराई और बोली उर्मिला।
मत्त गज बनकर विवेक न छोड़ना, कर कमल कहकर न मेरा तोड़ना।
बचन सुन सौमित्रि लज्जित हो गए, प्रेम सागर में निमज्जित हो गए।
पकड़कर सहसा प्रिय का कर वही, चूम फिर फिर उसे बोले यही।
(पृ० 37-38)

"वैदेही वनवास" में बुद्धिवाद की प्रधानता के कारण शृंगार रस का पूरा परिपाक न हो सका। 'रति' भाव का प्रतिफलन अल्प संख्या में ही हो पाया है :

फिर तुम हुई प्रफुल्ल हुआ मेरा मन भाया,
प्रिये कहां तुम ने ऐसा कोमल चित्त पाया।

सीता द्वारा 'श्यामघठा की प्रिय छटा' दिखा-दिखा कर अपने पुत्रों को राम के बारे में कहने के भाव में भी 'रति' का मर्यादित रूप निखरा है।[9]

'साकेत सन्त' में नव विवाहित दम्पत्ति के सुख-विलाप का चित्रण भी मर्यादाशील

9. वैदेही वनवास, 14.34.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और संयत है। भरत की छेड़ी गई मलार राग की स्वर लहरी का अद्‌भुत प्रभाव माण्डवी पर द्रष्टव्य है :

बढ़ी स्वर की लहरी उस तीर, उठे रस के बादल सब ठौर।
उसी क्षण क्षणदा सी अभिराम, मांड़वी पहुंची वहां ललाम।
भरत खिल उठे, बढ़ उठे हाथ, कहा, 'लो जीवित बीणा साथ।
मिले फिर से रति और अनंग, सजे फिर घन विद्युत का संग ।। (1. 13-14)

कश्मीरी रामकथा-काव्य में भी शृंगार का संयोग पक्ष अत्यधिक मर्यादित और संयत है। 'प्रकाश रामायण' में दशरथ और कैकेयी के संवादों में इसका सुन्दर परिपाक हुआ है, संवादों के प्रारम्भ में कैकेयी वर-याचना का प्रस्ताव रखती है और दशरथ अनजाने कैकेयी के लिए प्राण तक देने के लिए प्रस्तुत होते हैं, किसी दूसरी वस्तु की तो बात ही क्या ! सप्रसन्न कैकेयी द्वारा रामवनवास का वरदान मांगने पर उनकी दशा विकट हो जाती है और आर्तवाणी में वे कैकेयी से हठ छोड़ने के लिए प्रेमवश क्षमा-याचना तक करते हैं।[10] वनगमन पूर्व राम-सीता से संवादों में भी संयोग शृंगार की अद्‌भुत छटा दिखती है। राम सीता का नखशिख कोमलांग वर्णन प्राकृतिक उपकरणों के माध्यम से करते हुए उन्हें अयोध्या में ही रहने की सलाह देते हैं और सीता प्रत्येक वाक्य का उत्तर देकर संयोग-सुख कामना रत संग चलने के लिए अपूर्व हठ करती हैं। राम संयत शब्दों में कहते हैं—'तुम्हारे नंगे पैर वन में चलने से भूमि कांपेगी······पांव तुम्हारे कमल सरीखे हैं···तुम महलों में ही मोतियों की मालाओं से खेलने योग्य हो···तुम प्रफुल्लित उपवन का ताजा गुलज़ार हो··चमकता चौदहवीं का चांद हो··उपवन की नर्गिस हो··· कैसे वन के कष्ट सहन कर सकती हो ···· आदि।[11] सीता के हठपूर्ण प्रत्युत्तर सुनकर और उनकी अश्रु-भीगी आंखों को देखकर राम विनय करते हैं—'रो मत रोने से तुम्हारा रूप-सौन्दर्य ढह जायेगा, रोने से मन के आईने पर जंग पड़ेगा। अश्रु बहाने से प्राण शिथिल होंगे और आंखों का प्रकाश मंद पड़ेगा।'[12] लंका में विजयोपरांत सीता की अग्नि-परीक्षा के पश्चात् राम-सीता मिलन प्रसंग में संयोग शृंगार का पूर्ण परिपाक सुन्दरतम प्राकृतिक चित्रण के परिवेश में उपलब्ध है।

---

10. प्र० रा०, पृष्ठ, 20-21।
11. प्र० रा०, पृ०, 22-23।
12. म वद वोन्य वदन सअत्यन गोय रंग बेरंग, म वद वोन्य वदने सअत्यन––शीशस पेयिय ज़ंग।
म वद वोन्य वदन सअत्यन प्रान लोरन, म वद वोन्य वदन सअत्यन गाश सोरन। —प्र० रा०, पृ०, 24,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कवि दोनों की मन:स्थिति की चरम रस-परिणति का वर्णन इस प्रकार करते हैं—'दिलों का क्षोभ मिट गया और एक क्षण समस्त दुख सुख-आनंद में परिवर्तित हुए। गुलाब (राम) को पुन: उपवन की नर्गिस (सीता) प्राप्त हुई। हिम पहाड़ों की ओट में छिप गया (अतः मनोमालिन्य और संकट-विपदाओं का अन्त हुआ)। शीत का कोप समाप्त होकर बसन्त के दिन आ गए।[13]

'वि० प्र० रा०' में भी कैकेयी दशरथ संवाद,[14] राम-सीता संवाद[15] के अतिरिक्त रावण-मरण के पश्चात् रास-लीला[16] में श्रृंगार रस का सुन्दर परिपाक हुआ है। अन्य सभी रामायणों के अन्तर्गत प्राप्त संयोग श्रृंगार के प्रतिपादक स्थल भी मर्यादित और संयत हैं। राम और सीता के अलौकिक रूप के प्रति नत कवि अपने आदर्श पात्रों में सस्ती श्रृंगारिकता का वर्णन नहीं कर सके। इसीलिए संयोग श्रृंगार वर्णन के स्थल अत्यल्प और परिसीमित हैं।

6.1.3 विप्रलम्भ श्रृंगार

संयोग की अपेक्षा विप्रलम्भ-श्रृंगार का प्रतिपादन दोनों भाषाओं की रामायणों में अधिक विस्तार से हुआ है। 'मानस' में श्रृंगार के विप्रलम्भ पक्ष का निरूपण सुन्दर ढंग से हुआ है। 'सीता-हरण' के पश्चात् सीता के विरह में राम की दयनीय स्थिति होती है। राम सीता को वन-वन ढूंढते हुए पशु-पक्षियों, द्रुम-लताओं आदि से सीता के बारे में पूछते फिरते हैं :

... ... । पूछते चले लता तरु पाती ।।
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी । तुम देखी सीता मृगनयनी ।
खंजन सुक कपोत मृग मीना । मधुप निकर कोकिला प्रवीना ।।
कुंद कली दाड़िम दामिनी कमल सरद ससि अहि भामिनी ।। (3. 30)

'मानस' में प्रकृति द्वारा विरहोद्दीपन का भी सुन्दर वर्णन हुआ है। कवि ने प्रकृति

---

13. वन्दुक चोल गोस गम सांपुन सोखस तल, गुलाबस मीज्य वेयि बागच यम्बरज़ल।
चलिथ गो शीन च्छ्यफ दिथ रुद बर कोह, जमिस्तान सूर सोंतन्य आयिरति दोह।
—प्र० रा०, पृ०, 158.

14. वि० प्र० रा०, पृ०, 93-94.

15. वही, पृ०, 101.

16. वही, पृ०, 543.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और विभिन्न ऋतुओं बसंत, वर्षा और शरद् की पृष्ठभूमि में राम के विरहोद्दीपन का चित्रण किया है :

देखहु तात बसंत सोहावा। प्रियाहीन मोहि भय उपजावा ।। (3. 37)
घन घमंड नभ गर्जत घोरा। प्रियाहीन डरपत मन मोरा ।। (4. 14)
वर्षा गत निर्मल रितु आई। सुधि व तात सीता के पाई ।। (4. 18)

विरह की स्थिति में सीता की भी ऐसी ही स्थिति है। अशोक वाटिका में वन्दी सीता विरह-वेदना में डूबी हनुमान् से कहती है :

कोमल चित कृपालु रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई ।।
सहज बानि सेवक सुखदायक। कबहुंक सुरति करत रघुनायक ।।
कबहुं नयन मम सीतल ताता। होइहहि निरखि स्याम मृदु गाता ।।
वचनु न आव नयन भरे बारी। अहह नाथ हौं निपट बिसारी ।। (5. 14)

सीता की वियोगजन्य पीड़ा या विरह--व्यथा 'मानस' में यहां पराकाष्ठा पर पहुंची है, जब वे दासी त्रिजटा से इन शब्दों में विनती करती हैं :

तजौं देह करु बेगि उपाई। दुसह विरह अब नहिं सहि जाई।
आनि काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहि लगाई ।।
... ...

कह सीता विधि भा प्रतिकूला। मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला ।।
देखिअत प्रगट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकौ तारा ।।
पावकमय ससि स्रवत न आगी। मानहुं मोहि जानि हतभागी ।।
सुनहि विनय मम विटप असोका। सत्य नाम करु हरु मम सोका ।।
नूतन किसलय अनल समाना। देहि अगिनि तन करहि निदाना ।। (5. 12)

इस तरह 'मानस' में उभय पक्षीय विरह-वेदना का मर्मस्पर्शी चित्रण विप्रलम्भ श्रृंगार को अत्यधिक समृद्ध और स्वाभाविक बना देता है।

'रामचंद्रिका' में भी सीता के वियोग में राम को समस्त प्रकृति ही विरह-विदग्ध और दुखदायिनी प्रतीत होती है :

हिमांसु सूर सौ लगै सो बात वज्र सों बहै।
दिशा लगै कृसानु ज्यौं बिलैप अंग कों दहै।
विसेष कालराति सी कराल राति मानिये।
बियोग सीय को न, काल लोकहार जानिये ।। (12. 42)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'साकेत' का प्रधान रस शृंगार ही है और वह भी विप्रलम्भ शृंगार। "उर्मिला के त्याग और विरह-वेदना की विषमता दिखलाने के लिए तुलना में संयोग का सुख दिखलाना वांछनीय था। यदि लक्ष्मण आरम्भ से ही व्रती और उदासीन होते तो न उनके और न उर्मिला के त्याग का ही इतना महत्व होता।"[17] वास्तव में उर्मिला की विरह-वेदना ही काव्य का सार है। विप्रलम्भ शृंगार 'साकेत' का अंगी-रस है। विरह-वेदना में उर्मिला की दशा कितनी विकट होती है, यहां उनके समस्त मानसिक उद्वेगों का ऐक्य रूप मिलता है :

पिऊं ला, खाऊं ला, सखि, पहनूं ला, सब करूं;
जिऊं मैं जैसे हो, यह अवधि का अर्णव तरूं।
कहे जो, मानूं सो, किस विधि बता, धीरज धरूं;
अरी कैसे भी तो पकड़ प्रिय के वे पद मरूं। (पृ० 272)

विप्रलम्भ की स्थिति में उसका 'हर्षोल्लास' निःश्वासों में बह गया और प्रिय के संयोग से ही वह पुनः जी सकती है :

आई थी सखि, मैं यहां लेकर हर्षोल्लास,
जाऊंगी कैसे भला देकर यह निःश्वास
कहां जायेंगे प्राण ये लेकर इतना ताप ?
प्रिय के फिरने पर इन्हें फिरना होगा आप। (पृ० 273)

लक्ष्मण के वियोग में अनवरत बहते अश्रुओं में उर्मिला संयोग-सुख का आभास पाती है :

नयनों को रोने दे, मन, तू संकीर्ण न बन, प्रिय बैठे हैं,
आंखों से ओझल हों, गये नहीं वे कहीं, यही बैठे हैं।
आंख बता दे तू ही, तू हंसती या यथार्थ रोती है ?
तेरे अधर-दशन ये, या तू भर अश्रुविन्दु ढोती है ? (पृ० 321)

श्री 'हरिऔध' की बौद्धिक विचारधारा में 'वैदेही-वनवास' के विप्रलम्भ-शृंगार का सारा दुख-दाह मिटता है, यहां लोकाराधन या लोकोपकार के आदर्श को लेकर ही विरह-दुख सहा जाता है। सीता कहती है :

आकुलतायें बार-बार आ मुझको बहुत सतायेंगी।
किन्तु धर्मपथ में धृति-धारण का सन्देश सुनायेंगी।।
अन्तस्तल की विविध वृत्तियां बहुधा व्यथित बनायेंगी।
किन्तु बंचता विवुध-वृन्द-वन्दित की बतला जायेंगी।। (5. 31)

---

17. काव्य के रूप—बाबू गुलाबराय, पृ० 97

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम सीता के विरह की भावना से दुःखित हैं, किन्तु वे अपने निजी स्वार्थों या सुख की बलि सप्रसन्न देते हैं :

कहा राम ने प्रिये अब प्रिये कहते कुण्ठित होता हूं ।
अपने सुख-पथ में अपने हाथों में कांटे बोता हूं ।।
मैं दुख भोगूं व्यथा सहूं इसकी मुझको परवाह नहीं ।
पडूं संकटों में कितने निकलेगी मुंह से आह नहीं ।। (5. 33)

विरह में प्राकृतिक संवेदनाओं का रूप 'प्रकाश रामायण' में अत्यधिक मर्मस्पर्शी है । राम अपने साथ समस्त प्रकृति को दुखी तो पाते ही हैं, अपनी स्थिति भूलकर वे जड़ पदार्थों, प्राकृतिक उपकरणों से भी सीता के बारे में पूछते हैं ।[18] 'शर्मा रामायण' में इसका विस्तृत चित्रण मिलता है, राम वन की समस्त द्रुम-लताओं, पुष्पों से एक-एक करके सीता का पता पूछते फिरते हैं, जिसमें विरह-पीड़ा-जन्य. दैन्य, उद्वेग, विषाद एवं उन्माद का कारुण्य दिखाई देता है ।[19] 'प्रकाश रामायण' में लंकादहन के पश्चात् हनुमान् के किष्किधा लौटने पर राम द्वारा उनसे अपनी दुख व्यथा प्रकट करते हुए सीता की कुशलता के बारे में किए गये प्रश्नों में भी विप्रलम्भ शृंगार का रस-निरूपण अद्भुत है—"तुम्हें देखकर उसे मेरी याद तो नहीं आई ? क्या उसे अपने पति की स्मृति कभी आती है ? क्या वह सुखी है ? उसका हास्यमुख मुर्झा तो नहीं गया है ?···अपने माता-पिता (मन्दोदरी-रावण) से कहीं मेरी शिकायत तो नहीं की, उनसे अपनी दुख-विपदा का वर्णन तो नहीं किया · ।"[20] इसी तरह युद्ध-क्षेत्र में रावण द्वारा मायावी सीता को मार डालने पर और वाल्मीकि आश्रम में किए गए राम द्वारा सीता के प्रति आत्मालापों[21] में भी विप्रलम्भ की अद्भुत छटा मिलती है ।

राम की अपेक्षा सीता के विरह-व्यथा चित्रण में विप्रलम्भ शृंगार का रस-परिपाक अधिक प्रखर और सुन्दर है । वियोग की कल्पना तक सीता के लिए असह्य है, वनगमन-पूर्व 'राम-वनवास' की आज्ञा सुनते ही सीता की करुण-स्थिति का चित्रण किया गया है--'रोती-बिलखती वे आंखों से अश्रु बहाती हुई केश खुले छोड़े छाती पीटती हुई राम के पास बेसुध सी दौड़ आई ।'[22] वि० प्र० रा०' के

18. प्र० रा०, पृष्ठ 58-59.
19. शर्मा रामायण, पृ० 190-193.
20. प्र० रा०, पृ० 90.
21. प्र० रा०, पृ० 146-147 तथा पृ० 201-202.
22. तियुय सीता पकन गयि पान मारन वदन वारा स्व नेत्रों रथ छि हारन
वदन सीता गयख फरियाद लायन करिथ केशन परेशान सीन वायन
—प्र० रा०, पृ० 22.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुसार भी उनकी ऐसी ही विकट दशा होती है। लज्जा त्याग कर वे अपने कमलनेत्रों से अश्रु-मोती प्रवाहित करती हुई अपने प्रजापति राम को ढूंढने लगी।[23] सीता-हरण के पश्चात् अशोक वाटिका में और सीता-परित्याग के पश्चात् वाल्मीकी आश्रम में सीता के करुण-प्रलापों में विप्रलम्भ शृंगार का रस-परिपाक व्यापक और अनन्य है। 'प्रकाश रामायण' में 'सीता हरण' प्रसंग में सीता की कारुण्य एवं विकट मनोदशा प्राकृतिक प्रतीकों द्वारा अभिव्यक्त हुई है—'अशोक-वाटिका में गुलाब (राम) को मलिन पड़ी हुई 'मसवल' (कुसुम-सीता) बुला रही थी। जिसके लिए दिन-रात वह बेचैन थी।[24] 'वि० प्र० रा०' के अनुसार सीता कमल-नेत्रों से 'छमाछम' जल-स्रोत की तरह अश्रु बहा रही है, विरह दाह से उनके प्राण होठों पर आये हैं। सीता के रुदन-प्रलाप के साथ-साथ सारा आकाश-पाताल रो रहा है, जैसे त्रिलोकी में भूकम्प आया हो। पशु-पक्षी तक 'राम' 'राम' रट कर रुदन कर रहे थे।[25] 'शर्मा रामायण' में भी सीता की विरह-व्यथा और अधिक करुण रूप में अभिव्यंजित हुई है—'विरह-दाह से सीता के नेत्रों का पानी भी सूख गया। विरह-दग्ध सीता की आवाज़ कांपी और 'विन्दी विहीन शब्दों' में प्रलाप करने लगीं।[26]

'सीता-परित्याग' पश्चात् वाल्मीकी-आश्रम में सीता की विरह-जन्य पीड़ा का भी अद्भुत वर्णन सभी रामायणों में मिलता है। 'प्रकाश-रामायण के अनुसार विरह-व्याकुलता में आत्मालापों में सीता राम को सम्बोधित होकर कहती हैं—'तेरे विरह में कितनी परेशान हूं। रोने से शरीर तक छलनी हुआ है। नेत्रों से दिन-रात रक्त प्रवाहित होता है, कोई पथ-प्रदर्शन नहीं कर रहा है। तुम मुझे कोमल गुलाब कहते थे, आज की स्थिति भी देख लो। मुझे उपवन की नर्गिस कहा करते थे, आज कांटों से मेरा क्या हाल हो गया है। तुम चौदहवीं का चांद कहा करते थे, आज इस एकांत निर्जन में निःसहाय पड़ी हूं। मुझे कोमल जुही कहा करते थे, आज कांटे तक मुझसे भय खाते हैं। तुम मुझे कुल-परिवार का प्रकाश कहते थे, आज किसी की आशा शेष नहीं बची है।···आकांक्षा बस इतनी है कि मेरे अपराध क्षमा करके मुझे भूलना नहीं।[27] 'वि० प्र० रा०' में सीता की व्यथा

---

23. लजा जोविथ प्रज़ापतिसइ छि छारान, कमल नेत्रो निशे ओश मोक्त हास।
—वि० प्र० रा०, वन०. अ 4.

24. गुलानस आस लायान नाद मसवल, यितम रातस दोहस छम तोर कुन कल।
—प्र० रा०, पृ० 80.

25. वि० प्र० रा०, पृ० 167.

26. विरह नार चश्मन होसुस आब आह। सपुन नोखत हर्कन ति नायाब आह।
—शर्मा रामायण, पृ० 184.

27. प्र० रा०, पृ० 175.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन शब्दों में फूट पड़ती है— दुख यातनाओं में डूबा मेरा हृदय सुख-निद्रा से कोसों दूर है। राम के बिना आराम कहां ! विरह के प्रहार से हृदय-वीणा के तार छिन्न-भिन्न हो चुके हैं। दिन-रात विश्राम कैसे मिलेगा, मुझ अनाथ पर चिन्ता-क्षोभ का भारी पर्वत लटका हुआ पड़ा है।[28] 'आ० रा०' के अनुसार 'सीता के नेत्रों से बराबर अश्रु प्रवाहित था जिसको वन के पशु-पक्षी ही देखकर संवेदना प्रकट करते थे। निर्जन पहाड़ों में अकेली घूमती हुई अविरल आंसू बहाने से उनके आंखों की पुतलियां तक सफेद पड़ गईं।[29] 'शर्मा रा०' में सीता इस दुख-विह्वल स्थिति का वर्णन करके राम से प्रार्थना करती हैं—'मेरे समस्त होश-हवास ही उड़ गए है, राम ! अब एक बार दर्शन दे दो। जाने किन बुरे कर्मों का ऐसा विकट फल भोग रही हूं, कौन दूसरा ऐसे दुख झेलता है। विरह की प्रज्ज्वलित अग्नि-शिखा से शरीर मेरा भीतर से ही जल गया है और अश्रुओं से मेरा आंचल भीगा है—इस विरह विक्षुब्ध अचेतनावस्था मे बस केवल आपके सहारे की आवश्यकता है।'[30]

6.2. करुण रस

रस-मीमांसा में 'करुण' में चित्त को द्रवित करने की असीम शक्ति है। करुणा या शोक इस रस का स्थायी भाव है। आलम्बन दीन हीन करुण दशा और व्यक्ति-वस्तु विशेष। संचारी भावों में विषाद, ग्लानि, स्मृति-निर्वेद आते हैं और उद्दीपन विभाव के अन्तर्गत प्रिय व्यक्ति या वस्तु विशेष का गुण-चिंतन एवं स्नेह-स्मृति। रुदन, उच्छ्वास, विलाप, दैव-निंदा एवं भर्त्सना आदि अनुभाव हैं रामकथा-काव्य में दशरथ-मरण, राम-वनगमन, चित्रकूट में भरत-राम भेंट, सीता-हरण लक्ष्मण-मूर्छा, सीता-परित्याग और सीता का पृथ्वी-प्रवेश आदि प्रसंग करुणाजनक हैं। इन प्रसंगों के चित्रण में करुण-रस की अभिव्यंजना सहज, सुन्दर और मार्मिक है।

'रामचरितमानस' में राम-वनगमन, दशरथ-निधन तथा लक्ष्मण-मूर्छा के प्रसंगों में करुण-रस की सुन्दर अभिव्यंजना हुई है। राम के विरह में अयोध्या-निवासियों

---

28. वि० प्र० रा०, लं० अ० 173.
29. वदान आस नेत्रौ ओश तस ओस जारी, वुछान आस्य जंगलवय तिम जीव सोरी।

छटान आस ओश त आस फेरान बालन, सफेदी गयि वदनें सअत्य नेत्र लालन।

— आ० रा०, पृ० 226,

30. शर्मा रामायण, पृ० 500.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और पशु पक्षियों की स्थिति का वर्णन देखिए :

हय गय कोटिन्ह केलिमृगु । पुरपसु चातक मोर ।
पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर ।।
राम बियोग बिकल सब ठाढ़े । जहं तहं मनहुं चित्र लिखि काढ़े ।।
नगरु सफल बनु गहबर भारी । खग मृग बिपुल सकल नर नारी ।।
बिधि कैकेई किरातिनि कीन्ही । जेहिं दव दुसह दसहुं दिसि दीन्ही ।।
सहि न सके रघुबर बिरहागी । चले लोग सब ब्याकुल भागी ।। (2. 83-84)

सुमंत्र से राम-सीता लक्ष्मण के लौट आने की बात सुनकर राजा दशरथ की दशा करुणाजनक होती है :

प्रान कंठगत भएउ भुआलू । मनि बिहीन जनु ब्याकुल ब्यालू ।। (2. 154)

'राम' 'राम' स्मरण करते हुए राजा दशरथ परमधाम को सिधारते हैं । रानियों और अयोध्यावासियों के रुदन में करुण-रस का स्रोत प्रस्फुटित होता है :

सोक बिकल सब रोवहिं रानी । रूपु सीलु बलु तेजु बखानी ।।
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमि तल बारहि बारा ।।
बिलपहिं बिकल दास अरूदासी । घर घर रुदनु करहिं पुरबासी ।।
अंथएउ आजु भानुकुल भानू । धरम अवधि गुन रूप निधानू ।। (2. 156)

'लक्ष्मण-मूर्छा' के प्रसंग में हनुमान् संजीवनी बूटी अर्द्ध रात्रि तक नहीं ला पाते हैं तो राम दुःख-समुद्र में निमग्न होते हैं । राम के दुख में करुण-रस का सुन्दर परिपाक हुआ है । यहां भ्रातृशोक के प्रबल आवेग में मर्यादा के कोई बन्धन नहीं रह पाते हैं :

अर्धराति गइ कपि नहिं आएउ । राम उठाइ अनुज उर लाएउ ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ । बंधु सदा तब मृदुल सुभाऊ ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता । सहेहु बिपिन हिम आतप बाटा ।।
सो अनुरागु कहां अब भाई । उठहु न सुनि मम बच बिकलाई ।।
\+ \+ \+
जथा पंख बिनु खग अति दीना । मनि बिनु फनि करिबर करहीना ।
अस मम जिवन बन्धु बिनु तोही । जौं जड़ दैव जिआवै मोही ।।
\+ \+ \+
निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम प्रान अधारा ।।
सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी । सब बिधि सुखद परम हित जानी ।।
उतरु काह देहौं तिहि जाई । उठि किन मोहि सिखावहु भाई ।। (6. 61)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस प्रकरण में लक्ष्मण आलम्बन हैं और राम आश्रय। लक्ष्मण के प्रति वियोगजन्य शोक ही स्थायी भाव है। लक्ष्मण का शील-गुण ही उद्दीपन और स्मृति, वितर्क विषाद व चिंता संचारी भाव है।

'रामचंद्रिका में कई स्थलों—राम के विश्वामित्र संग वनगमन, दशरथ-मरण, सीता-हरण तथा लक्ष्मण-मूर्च्छा आदि प्रसंगों में करुण-रस का पुट मिलता है। राम-लक्ष्मण का तनिक वियोग राजा दशरथ के लिए असह्य है। विश्वामित्र के संग वन को दोनों भाई चले जाते हैं तो राजा दशरथ कितने व्याकुल होते हैं। करुण-रस का निष्पात इन पंक्तियों में द्रष्टव्य हैं :

राम चलत नृप के जुग लोचन। बारि भरित भए बारिद-रोचन ॥
पाइन परि रिषि के सजि मौनहिं। 'केसब उठि गए भीतर मौनहिं॥ (2. 27)

चित्रकूट में श्री राम माताओं से पूछते हैं—पिताजी सकुशल हैं? सभी माताएं रो पड़ती हैं :

तब पूछियो रघुराइ। सुख है पिता तन मइ।
तब पुत्र को मुख जोइ। क्रम तें उठीं सब रोइ॥
आंसुनि सौं सब पर्वत धोए। जंगम को जड़ जींवनि रोए।
सिद्धबधू सिगरी सुनि आईं। राजबधू सबईं समुझाईं॥ (1. 30-3)

'सीता-हरण' प्रसंग में सीता रावण के चंगुल में बुरी तरह फंसकर राम और लक्ष्मण को कातरता से पुकारती हैं :

हा राम हा रमन हा रघुनाथ धीर। लंकाधिनाथ वस जानहु मोहि बीर॥
हा पुत्र लक्ष्मण छुड़ावहु बेगि मोहि। मार्तंडबंसजस की सब लाज तोहि॥ (12 :1

'लक्ष्मण-मूर्च्छा' प्रसंग में राम के दिल में अनुज लक्ष्मण के प्रति वियोगजन्य शोक का मार्मिक करुणाजनक चित्रण मिलता है :

बारक लक्ष्मन मोहि बिलोकौ। मोकहं प्रान चले तजि, रोकौ।
हौं सुमरों गुन केतिक तेरे। सोदर पुत्र सहायक मेरे॥
लोचन बाहु तुही धनु मेरौ। तू बल विक्रम बारक हेरौ॥
तो बिनु हौं पल प्रान न राखौं। सत्य कहौं कछु झुठ न मासौं॥
मोहि रहीं इतनी मन संका। देत न पाइ विभीषण लंका॥
बोलि उठो प्रभु को प्रन पारौ। नातरु होत है मो मुख कारौ॥ (17. 44-46)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'साकेत' में 'राम वनगमन', दशरथ-मरण तथा उर्मिला-विरह वेदना आदि प्रसंग करुणाजनक हैं। राम का विरह दशरथ के लिए असहनीय है :

पुनः बोले मुंह फेर महीप—"राम, हा राम, वत्स, कुलदीप!"
हो गये गद्-गद् वे इस बार, तिमिरमय जान पड़ा संसार।
गृहागत चन्द्रलोक—विधान जंचा निज भावी शव-परिधान।
सोप बन गया श्मशान-समान, मृत्यु सी पड़ी कैकयी जान।
चिता के अंगारे—से दीप, जलाते थे प्रज्वलित समीप।
"हाय! कल क्या होगा?" वह कांप, रहे वे घुटनों में मुंह ढांप।"
(पृ० 67)

'दशरथ-मरण' प्रसंग में करुण-रस का उद्‌गार प्रकट हुआ है। दसरथ राम-लक्ष्मण और सीता को स्मरण करके प्राण छोड़ते हैं :

बस यहीं दीप-निर्वाण हुआ, सुत विरह वायु का बाण हुआ।
धुंधला पड़ गया चन्द्र ऊपर, कुछ दिखलाई न दिया भू पर।
अति भीषण हाहाकार हुआ, सूना सा सब संसार हुआ।
अर्द्धांग रानियां शोकक्रता, मूर्च्छित हुईं या अर्द्ध-मृता?' (पृ० 178)

दशरथ-मृत्यु पर प्रकृति भी रोई, देव-मानव सब रोये :

नभ भी रोया चुपचाप हहा! हिम-कण-मिस अश्रु समूह बहा।
दानव-भय-हारी देह मिटा, वह राजगुणों का गेह मिटा।
ऊपर सुरांगनाएं रोईं, भू पर पुरांगनाएं रोईं।
× × ×
वह डील अपूर्व मनोहारी, हेमाद्रि—शृंग—समताकारी।
रहता जो मानो सदा खड़ा, था आज निरा निश्चेष्ट पड़ा। (पृ० 180)

सीता के विरह में राम-लक्ष्मण की वेदना का करुणाजनक चित्रण मिलता है, अपने साथ समस्त प्रकृति को सीता के लिए व्याकुल वे पाते हैं :

'प्रिये, प्रिये, उत्तर दो, मैं ही करता नहीं पुकार अभंग,
शून्य कुंज-गिरि-गुहा गर्त भी तुम्हें पुकार रहे हैं संग।' (पृ० 426)

'वैदेही वनवास' में कवि करुण रस को मानस-विभूतियों में अग्रणी स्थान देते हैं :

सर्वस्व है करुण रस ही। है द्रवण-शीलता-सम्बल॥
है मूल भव-सरसता का। है जलद आर्द्र-अन्तस्तल॥ (11. 36)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'वैदेही-वनवास' में राम सीता के सामने 'वनवास' का प्रस्ताव रखते हैं, तो सीता जी की वाणी में भावी विरह की आशंकाओं का करुण रूप मिलता है :

बदन बिलोके बिना बावले युगल-नयन बन जायेंगे ।
तार बांध बहते आंसू का बार-बार घबरायेंगे ।।
मुंह जोहते बीतते बासर रातें सेवा में कटतीं ।
हित-वृत्तियां सजग रह पल-पल कभी न थी पीछे हटतीं ।।
मिले बिना ऐसा अवसर कैसे मैं समय बिताऊंगी ।
आह आपको बिना खिलाये मैं कैसे कुछ खाऊंगी ।।
चित विकल हो गये विकलता को क्यों दूर भगाऊंगी ।
थाम कलेजा बार-बार कैसे मन को समझाऊंगी ।। (5. 23-24)

सीता द्वारा लव और कुश को उनके पिता के रूप, गुण, कीर्ति आकार अनुरक्ति को प्रकृति का अवलम्ब लेकर समझाने के प्रयत्न में भी करुण-रस का रूप मिलता है[31]—नन्हें बच्चों को सान्त्वना इसी से होती है :

दिखा-दिखा कर श्याम घटा की प्रिय-छटा । दोनों सुअनों से यह कहतीं महि-पुना ।
ऐसे ही श्यामावदात कमनीय तन । प्यारे पुत्रो तुम लोगों के हैं पिता ।। (14 34)

'साकेत संत' में भरत के शोक, दशरथ-मरण, चित्रकूट-मिलन प्रसंगों में करुण-रस का प्रतिपादन मिलता है । दशरथ-मरण और राम-वनगमन का समाचार सुनकर भरत की करुणाजनक स्थिति देखिए :

झंझा से कांपे, धधक उठे दावा से, क्षण भर में रुककर अचल हुए ग्रावा से ।
मस्तक पर सौ सौ गिरीं-बिजलियां आकर, गिर पड़े भूमि पर भरत सुचेत-
गंवाकर । (3. 19)

दशरथ की चिता का करुणाजनक दृश्य प्रस्तुत है जिसका समरस परिपाक जन-मानस में उद्वेलित होता है :

लगी आग जल उठी चिता वह, भड़काकर उर उर की आग ।
डूबे शोक-सिन्धु में दिन मणि, लपटें गईं क्षितिज तक भाग ।
प्रेत-क्रिया से पूत जीव का, करने को स्वागत सत्कार ।
ज्वलित किये नक्षत्रों के पिस, अमरवृंद ने दीप अपार ।। (6. 54)

---

31. वैदेही वनवास, 14. 34-39.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीराम से मिलने के लिए भरत के वन-गमन का चित्रण भी ऐसा ही है :

पड़े छाने व्यथा के अश्रु धारे, सहारा दे रहे कांटे बिचारे।
धरा करुणार्द्र थी वे बूंद पाकर, उसासें ले रही उनको छिपाकर ।।

\+ \+ \+

विकल ग्रामीण थे उनको निरख कर, विचल थे राम की प्रतिमूर्ति लखकर।
अदेखे देखकर भी जा रह थे भरत चलते चले ही जा रहे थे ।। (10. 36-38)

कश्मीरी रामकथा-काव्य में भी करुण रस का सुन्दर परिपाक राम-कथा के पूर्वोक्त सभी प्रसंगों मे मिलता है। 'प्रकाश–रामायण' में राम-भरत भेंट चित्रण में करुण रस का सुन्दर परिपाक हुआ है—'भरत अश्रु-लहू बहाते दौड़ते-भागते चित्रकूट राम के पास पहुंचे। देखा निर्मल सूर्य रूप राम जैसे ग्रहण से अन्धकारावृत्त हैं। बाल घुटनों तक बढ़े थे। उन्हें देखते ही भरत अचेत हुए और होश सम्भालते हुए वे आगे बढ़कर राम के चरणों को चूमने लगे।[32] दशरथ-मृत्यु का समाचार पाकर राम के विलापों में करुण-रस का चरम रूप मिलता है—'पिता की याद में कितना दुःख-विह्वल हूं, काश! सपने में ही उनके दर्शन होते, जिससे मेरी व्याकुलता मिटती।[33] 'लक्ष्मण-मूर्च्छा' प्रसंग में भी राम की करुणाजनक स्थिति मे भी इस रस का आस्वादन होता है।[34] सीता-परित्याग' प्रसंग में इस रस का सर्वोत्कृष्ट रूप मिलता है। लक्ष्मण सीता-परित्याग का कठोर आदेश सुनकर बहुत रोते हैं। सीता के संग जाते हुए मुड़-मुड कर वे राम की ओर बार-बार देखते हैं इसी आशा से शायद राम अपने कठोर वचन बदल दें।[35] राम की आज्ञा सुनकर सीता के सारे शरीर में भयावह कंपकंपी सी फैल गई, वे अचेत होकर गिर पड़ीं उनकी आंखों का प्रकाश मंद पड़ा और अचेत होते समय लक्ष्मण से केवल 'पानी' ही मांग सकीं।'[36] 'लक्ष्मण सीता को अचेत पाकर रोये। मुंह के बल बार-बार गिर पड़े अचेत सीता के चरणों पर गिर कर उनसे क्षमा-याचना की—'हे उमा! मेरे पापों का निवारण कर लो! आपकी विकट दशा मुझसे नहीं देखी जा रही हैं। जिनके मुझ जैसा संतान हो, उनकी भी ऐसी दशा! आपकी ओर पुनः देखने का साहस न करके आपके चरणों पर प्राण

32. प्र० रा०, पृ० 32.
33. वननि लोग स्वप्न किनि वुछहन पनुन मोल, यियम ना लोल कास्यम छुम-गोमुत होल। —प्र० रा०, पृ० 34.
34. प्र० रा०, पृ० 108.
35 वही, पृ० 171.
36. वही.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न्योछावर करके ही मैं विदा हो सकता हूं ।[37]

'विष्णु-प्रताप रामायण' में दशरथ-कैकेयी संवाद, दशरथ-मरण, लक्ष्मण-मूर्च्छा तथा मेघनाद-मृत्यु प्रसंगों के चित्रण में करुण-रस का परिपाक मिलता है । कैकेयी द्वारा वर-याचना और एकनिष्ठ हठ दर्शाने पर दशरथ के ये करुणार्द्र भाव देखिए— 'किसने तुम्हें इतनी कठोर कटार चलाकर अपने को कलंकित करने को कहा ! किसने सलाह दे दी अपने पति से ऐसा न्याय करके अपने माथे पर काजल पोत लो ! किसने परामर्श दिया कि राजा के प्राण लेकर उनके नेत्र सी दो, राज्य का नाश करो और पति को विषपान कराके 'इन्द्र' को धराशायी कर लो !'[38] प्रस्तुत रामायण में दशरथ-मरण[39] और राम के विलापों[40] में भी करुण-रस का समुचित प्रतिपादन हुआ है, किन्तु करुण-रस का सर्वोत्कृष्ट रूप लक्ष्मण-मूर्च्छा और 'मेघनाद मृत्यु' पर क्रमशः राम और रावण के विलापों में मिलता है । लक्ष्मण-मूर्च्छा का समाचार पाते ही राम सारा धैर्य खोकर गिर पड़ते हैं, वस्त्र चीर-फाड़ कर वे धूल-मिट्टी में लोट पोट होते हैं । रक्त में लथपथ लक्ष्मण के शरीर को गोद में लिपटा कर वे करुण प्रलाप करते हैं—मेरे जीवन के आधार महावीर महारथी भाई लक्ष्मण ! दर्शन देकर मेरे दुख-क्लेश मिटा दो, अन्यथा मैं भी तेरे बिना प्राण-त्याग दूंगा ।'[41] मेघनाद की मृत्यु पर रावण विलाप करते हैं—'तुझे एक बार जीवित देखने की कितनी प्रबल आकांक्षा है ! तेरे यौवन की स्मृति मेरे दिल में ताज़ी है । मेरा हृदय इस भयानक अग्नि से भस्म हो गया—तेरे नाम पर बलि हो जाऊं ! पशु-पक्षियों से तेरे बारे में पूछता फिरता हूं और किस से अपने दुख दर्द वर्णित करूं ?'[42]

'आनंद-रामावतारचरित' में भी दशरथ-मरण पर राम के विलापों[43] लक्ष्मण-मूर्च्छा,[44] समर भूमि में राम-लक्ष्मण के विरह में बानर-सेना के प्रलापों[45] आदि में करुण-रस का परिपाक हुआ है ।

---

37. वही, पृ० 172.
38. वि० प्र० रा०, पृ० 93-94.
39. वि० प्र० रा०, वन०. अ 8.
40. वही, पृ० 141.
41. वही पृ० 379.
42. वही, पृ० 415.
43. आ० रा०, पृ० 74.
44. आ० रा०, पृ० 156-158.
45 वही, पृ० 180-181.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'शर्मा-रामायण' में राम वनगमन,[46] दशरथ मरण [47] लक्ष्मण मूर्च्छा[48] और रावण-मृत्यु पर मन्दोदरी के विलापों[49] आदि प्रसंगों में करुण-रस का समुचित रसास्वादन होता है। दशरथ-मृत्यु का समाचार पाते ही राम की स्थिति करुणार्द्र होती है—बेसुध होकर उन्होंने अपने वस्त्र चीर फैंके, आंखों से अश्रु-बहाए और धूल-मिट्टी अपने शरीर पर पोत दी। राम सारा धैर्य त्याग कर साधारण व्यक्ति की तरह रुदन-प्रलाप करते हैं। रावण की मृत्यु पर मन्दोदरी करुणार्द्र रुदन-प्रलाप करती है 'चौदह लोकों की महारानी होकर मेरे सिर पर दुख का पर्वत टूट गया। राजरानी होकर अब रसोइया हो गयी—जुही-लता के मेरे रूप-सौन्दर्य पर काजल पुत गया। गुलमुहर सा मेरा लाल चेहरा केसर की भांति पीला पड़ गया। प्राणों के प्राण मेरे पति के चले जाने पर खिले हुए कमल पर मानो हिमपात होकर निःसहाय भूमि पर दबी पड़ी हूं।'

राम-विरोधी या विपक्षी पात्रों की दुखी घटनाओं का चित्रण करके कश्मीरी रामायणकारों ने तनिक उदारता से काम लिया है। इससे कवियों की रामभक्ति को भी किसी प्रकार ठेस नहीं पहुंचती, प्रत्युत महाकाव्योचित समरसात्मकता का परिचय मिलता है। दूसरी बात यह कि करुण-रस के प्रतिपादन में हम रामकथा के आदर्श पात्रों को भी साधारण मानव के धरातल पर देखते हैं। जहां इनकी मानवानुभूतियों में थोड़ा भी अन्तर स्वीकार किया जाता है वहां 'रस' का खंडित हो जाना स्वाभाविक है।

6.3. वीर-रस

साहसिक और कठिन कार्य सम्पन्न करने का उत्साह इस रस का स्थायी भाव है। प्रतिपक्षी, साहसवर्द्धन कार्य, यश, ऐश्वर्य आदि आलम्बन विभाव और प्रतिपक्षी की ललकार, क्रोध, युद्ध-प्रदर्शन आदि उद्दीपन हैं। आवेश, आंखों की रक्तिमाभा रोमांच तथा प्रहार अनुभाव और गर्व उग्रता आदि संचारी भाव होते हैं।

रामकथा के आदि काव्य 'वाल्मीकि-रामायण' में वीर रस की ही प्रधानता मिलती है। आलोचकों के विचारानुसार "वह केवल एक वीर पुरुष के वीर कृत्यों की काव्यमयी गाथा है जिसकी मुख्य घटना है राम-रावण युद्ध। अन्य सभी घटनाएं इसी मुख्य घटना की ओर उन्मुख हैं।"[50] रामभक्ति के प्रसार के साथ-साथ परवर्ती

---

46. शर्मा रामा०, पृ० 136
47. वही, पृ० 158.
48. वही, पृ० 344
49. वही, पृ० 442.
50. डा० रामप्रकाश अग्रवाल—'वाल्मीकि और तुलसी : साहित्यिक मूल्यांकन', पृ० 331.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काव्यों में इस वैयक्तिक वीर-रस भावना अथवा नायक के महत्कार्य में उस अलौकिकता का समावेश हुआ जिससे वीर रस अंगी रस बनकर काव्य का पर्यवसान भक्ति-रस में ही दिखता है। यहां हम दोनों भाषाओं के रामकथा काव्यों में निरूपित 'वीर-रस' सम्बन्धित विभिन्न प्रसंगों के चित्रण देखेंगे।

'मानस' के धनुर्भंग प्रकरण में राजा जनक द्वारा 'वीर विहीन मही मैं जानी'[51] उद्घोषणा के विरोध में लक्ष्मण के शब्दों में इसी रस की प्रतिष्ठा की गई है :

सुनहु भानुकुल पंकज भानू । कहौं सुभाउ न कछु अभिमानू ।
जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं । कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं ।।
काचे घट जिमि डारौं फोरी । सकौं मेरु मूलक जिमि तोरी ।
तव प्रताप महिमा भगवाना । को बापुरो पिनाकु पुराना ।। (2. 53)

राम द्वारा 'ताड़का-वध' में भी अलौकिक वीरता का बिम्ब द्रष्टव्य है :

एकहि बान प्रान हरि लीन्हा । दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ।। (1.209)

परशुराम-विवाद प्रसंग में भी मर्यादित उत्साह का रूप प्रखर है :

देव दनुज भूपति भट नाना । समबल अधिक होउ बलवाना ।।
जो रन हमहि प्रचारै कोऊ । लरहि सुखेन कालु किन होऊ ।। (2. 84)

'मानस' का मुख्य उद्देश्य 'असुर मारि थापहिं सुरन्ह'[52] है और उद्देश्य-पूरक उत्साह का निरूपण राम के चरित्र में स्वाभाविक है। राम खर से स्पष्टतः कहते हैं :

हम छत्री मृगया बन करहीं । तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं ।
रिपु बलवन्त देखि नहिं डरहीं । एक बार कालहु सन लरहीं ।। (3. 19)

राम द्वारा मारीच को सौ योजना दूर फैंकना[53], उनके बाण का जयंत का तीन लोकों में पीछा करना[54] आदि प्रसंग राम की उसी अलौकिक वीरता को दर्शाते हैं। 'मानस' में भक्ति रस के नीचे वीर-रस दब सा गया है। प्रतिपक्षी रावण मोक्ष-प्राप्ति की कामना से ही राम से वैर-व्रत लेता है।[55] राम विपक्षी या राक्षसों को भी

51. मानस 1. 252.
52. वही ।
53. मानस 1.210.
54. वही 3.2.
55. वही 3.23.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'निज धाम' प्रदान करने के ही आशय से मारते हैं, इसीलिए राम का स्वाभाविक युद्ध-उत्साह यहां विखंडित सा प्रतीत होता है और कवि ने पग-पग पर राम के अलौकिक रूप की दुहाई दे दी है। आलोचकों का कहना है "यदि प्रथम और सप्तम सोपान की अवान्तर कथाओं तथा पूरे काव्य में बिखरे हुए स्तोत्रों, उपदेशों और तत्व-विवेचनों को हटा कर देखा जाए तो 'मानस' पूर्णतया वीर रस का महाकाव्य प्रतीत होता है। और राम युद्धवीर, दानवीर, धर्मवीर और कर्मवीर इन चारों रूपों में दिखाई पड़ते हैं।"[56] अतः 'मानस' को तुलसी ने 'वीर-काव्य' नहीं बताया। 'मानस' के नायक राम साक्षात् परब्रह्म हैं। वे काव्य-नायक ही नहीं कवि के आराध्य और इष्ट भी हैं। उनकी विनम्रता और भक्तवत्सलता का पलड़ा उनके वीर-रूप से भारी है। अधिकारिक कथा की दृष्टि से भी तुलसी ने वीर रस को अंगीरस के ही रूप में स्वीकृत किया है, जिसका सकुशल पर्यवसान भक्ति रस में हुआ है।

'रामचंद्रिका' में रस-निरूपण की दृष्टि से शृंगार रस के पश्चात् वीर रस को ही प्रधानता मिली है। 'वीर-रस' का परिपाक यहां प्रतिपक्षी पात्रों के महत्कृत्यों और उत्साहवर्द्धक कथनों में भी प्राप्य है। समर-भूमि में कुम्भकरण राम से उत्साह और गर्व के साथ कहता है :

न हौं ताड़का हौं सुबाहुवै न मानों। न हौं संभुकोदंड सांचों बखानौं।।
इन हौं तालमाली, खर्‌यौ जाहि मारो। न हौं दूषनै सिन्धु सूधो निहारो।।
सुरी आसुरी सुन्दरी भोगकनै। महाकाल को काल हौं कुंभकर्नै।
सुनौं राम संग्राम कौं तोहि बोलौं। बढ्यो गर्व लंकाहि आए सु खोलौं।।
(18.22 23)

कुम्भकरण और इन्द्रजीत की मृत्यु पर निराश रावण को मकराक्ष इन शब्दों में उत्साहित करता है।

कहा कुंभकर्नै कहा इन्द्रजीतै। करै सोइवो वै करै जुद्ध भीतै।
सु जोलों हौं सदा दास तरो। सिया को सकै दे सुनौ मन्त्र मेरो।।
महाराज लंका सदा राज कीजै। करौ जुद्ध मेरी बिदा वेगि दीजै।
हतों राम स्यों बन्धु सुग्रीव मारौं। अजोध्याहि ले राजधानी सुधारौं।।
(19.7-8)

शत्रुघ्न के तीर से मूर्च्छित पड़े लव पर दुःखी सीता को कुश इन वीरोचित शब्दों में आश्वासन देते हैं :

रिपुहि मारि संघारि दल जम तें लेहु छंडाइ।
लवहि मिलें हों देखिहौं माता तेरे पाइ।। (35.26)

---

56. डा० शम्भुनाथ सिंह—हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप और विकास, पृ० 555.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुश लक्ष्मण से इसी वीरोचित उत्साह के साथ कहते हैं :

न हौं मकराक्ष न हौं इन्द्रजीत । बिलोक तुम्हैं रन होहुं न भीत ।
सदा तुम लक्ष्मन उत्तमगाथ । करो जनि आपनि मातु अनाथ ।। (36.17)

'साकेत' में वर्णित राम-रावण युद्ध उत्साहवर्द्धक है । लक्ष्मण-मूर्च्छा के उपरान्त राम के इस उत्साह में वीर-रस का सुन्दर परिपाक द्रष्टव्य है :

जगी उसी क्षण विद्युज्ज्वाला गरज उठे होकर वे क्रुद्ध,
आज काल के भी विरुद्ध है युद्ध-युद्ध बस मेरा युद्ध !
रोऊंगा पीछे, होऊंगा उऋण प्रथम रिपु के ऋण से ।
प्रलयानल से बढ़े महाप्रभू, जलने लगे शत्रू त्रण से । (पृ० 442)

प्रस्तुत युद्ध-दृश्य वीर-रस से ओत-प्रोत है :

क्षुब्ध नक्र जैसे पानी में, पर्वत में जैसे विस्फोट,
अरि समूह में विभु वैसे ही करते थे चोटों पर चोट ।
कर पद रुण्ड-मुण्ड ही रण में उड़ते गिरते पड़ते थे,
कल कल नहीं, किन्तु भल-भल कर रक्तस्रोत उमड़ते थे,
रिपुओं की पुकार भी मानों निष्फल जाती बारंबार,
गूंज उसे भी दबा रही थी उनके धन्वा की टंकार ।—(पृ० 443)

राम की सहायतार्थ साकेत-वासियों की सजा 'रण-सज्जा' में भी वीर रस का निरूपण हुआ है :

यों ही शंख्य असंख्य हो गये, लगी न देरी,
धनन धनन बज उठी गरज तत्क्षण रणभेरी ।
कांप उठा आकाश, चौंककर जगती जागी,
छिपी क्षितिज में कहीं, समय निद्रा उठ भागी । (पृ० 463)

'वैदेही-वनवास' में मां के प्रति कहे गए लव के इन शब्दों में वीरता जन्म उत्साह व्यंजित हुआ हैं :

लव बोले आयेगा मुझको छीनने—'जो मैं मारूंगा उसको दूंगा डरा' । (15.21)

'साकेत सन्त' में भरत ससैन्य चित्रकूट राम से मिलने जाते है, तो केवट गुह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्हें राम-विरोधी समझकर नदी पर ही रोकता है। निषाद तथा नागरिकों का उत्साह इन शब्दों में अभिव्यक्त होता है :

राम का यदि बाल भी बांका हुआ, जान लो कर्तव्य पथ आंका हुआ।
मार कर चाहे न लें बदला कहीं, मर मिटेंगे न्याय पर हम सब यहीं। (8.19)

गुह साथियों को प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं :

सब नाके साधो, लड़ो, अड़ो, बढ़कर सेना पर टूट पड़ो।
वे खा न सकें, वे सो न सकें, वे हंस न सकें, वे रो न सकें ॥ (8.20)

इस प्रसंग में भी वीर-रस का संचार हुआ है :

बालक बुड्ढे भी जोश भरे, बढ़ गये तुरन्त ही रोष भरे।
कुछ ने झट छेड़छाड़ कर दी, सेना ने कुछ बिगाड़ कर दी ॥ (8.25)

कश्मीरी रामायणों में युद्धों का वर्णन अपेक्षाकृत अधिक विस्तार से हुआ है फिर भी 'वीर-रस' को ही प्रधान रस नहीं कहा जा सकता है। विभिन्न स्थलों पर राम के युद्ध-चित्रण में उनकी अलौकिक शक्ति या वीरता के दर्शन होते हैं। 'प्रकाश रामायण' में राम बालक रूप में विश्वामित्र की यज्ञ-रक्षा हेतु वन में जाकर राक्षसों को मारकर रक्त की नदियां बहाते हैं, किसी प्रकार घायल होकर मारीच प्राण बचाकर भाग निकलने में सफल होता है।[57] सुग्रीव के सामने बल-प्रदर्शन करते समय राम एक ही तीर से पर्वत को उठाकर दूर फेंक देते हैं।[58] उक्त रामायण में हनुमान द्वारा अशोक वाटिका में सभी वृक्षों को जड़ से उखाड़ कर अनगिनत राक्षसों को मार डालने के चित्रण में भी वीर-रस का सुन्दर परिपाक हुआ है।[59] हनुमान द्वारा पाताल-लोक में महीरावण से युद्ध-प्रसंग में भी हनुमान के अलौकिक उत्साह-वर्द्धक महत्कृत्य के दर्शन होते हैं. राम उनकी अलौकिक वीरता का बखान करके उनके महत्कृत्य को लोकोत्तर सिद्ध करते है।[60] लव-राम संवाद में भी वीर-रस का निरूपण अद्भुत है। लव राम से कहते हैं—'हमें लंका का रावण समझने की भूल न करना, तुम्हारा वध करने के लिए हम दो भाइयों ने जन्म ले लिया है।

57. प्र० रा०, पृ० 11.
58. कमान तुज्य रामचन्द्रन ज़ोर होवुन, गिलनि सअत्यन सु पर्वत दूरि प्रोवुन।
प्र० रा०, पृ० 63.
59. प्र० रा०, पृ० 84.
60. प्र० रा०, पृ० 135-138.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम रथ की बात कहते हो, मैं अभी सूर्य से रथ मंगाऊंगा यदि सूर्य ने नहीं भेजा तो उसे अपने बाणों से जलाकर आकाश से गिरा दूंगा ।[61]

'विष्णु-प्रताप रामायण' में भी समस्त युद्ध-चित्रणों में वीर-रस का यथोचित परिपाक हुआ है । लव द्वारा अश्वमेध-यज्ञाश्व पकड़ लेने पर शत्रुघ्न की ललकार पर लव के इन शब्दों में वीर-रस का सर्वोत्कृष्ट रूप मिलता है—'तुम अभी देखते रहोगे, कितनी भारी सेना मैं काट डालूंगा । मैं क्षत्रिय हूं, युद्ध से मेरा डरना पाप है, युद्ध-कर्म ही क्षत्रिय-वीर का धर्म है । इतनी बड़ी शत्रुओं की सेना की मुझे तनिक भी चिंता नहीं, प्रत्युत्त भयंकर युद्धों में प्रसन्नता से मेरा हृदय खिल उठता है ।[62]

'आनन्द रामावतारचरित' में हनुमान-अहिरावण युद्ध और लव-कुश राम सेना युद्ध के चित्रण में वीररस का सुन्दर परिपाक हुआ है । प्रथम युद्ध प्रसंग का वर्णन कवि इस प्रकार करते हैं—हनुमान ने भयंकर युद्ध के अन्तर्गत अहिरावण को पकड़ कर निगल लिया, फिर निकालकर उसे अग्नि-कुण्ड को समर्पित किया । सभी अतिथि राजाओं को मार कर पाताल-लोक के राज-द्वार का नाश किया—सारे पाताल लोक में कोहराम मच गया। राम-लक्ष्मण के धनुषों की भयावह आवाज़ से आकाश भी विदीर्ण हुआ, जैसे पाताल-लोक में महाकाल स्वयं युद्ध-रत हों ।[63] कुश का युद्ध-चित्रण कवि इन शब्दों में करते हैं—'कुश ने ललकार कर विपक्षी सेना (राम सेना) का संहार करना प्रारम्भ किया, जैसे सिंह लोमड़ी का नाश करता है—थोड़े ही समय में उसने विपक्षी सेना के नामी शूर-वीरों को काट-काट कर ढेर लगा दिया और एकदम मृत लाशों के कई ढेर पर्वत से खड़े हो गए ।[64]

'शर्मा-रामायण' में राम खर-दूषण युद्ध और लव कुश युद्ध-प्रसंगों में वीर रस का समुचित निरूपण हुआ है । लव-कुश युद्ध का चित्रण कवि इन शब्दों में करते हैं—कुश ने धनुष सम्भालकर तीरों की भयकर वर्षा विपक्षी सेना पर की । किसी का पांव कट गया, किसी का सिर और किसी की टांगें अलग हुईं । किसी का वक्ष विदीर्ण होता था, किसी की जांघ और किसी की भौंह कट जाती थी और लव ने भी आंचल कंधे पर उठाकर तीरों की वर्षा की । जिससे कितने ही शूरवीर पृथ्वी पर ढेर हो गये ।[65]

---

61. प्र० रा०, पृ० 192.
62. वि० प्र० रा०, पृ० 731.
63. आ० रा०, पृ० 185.
64. कोशन फोर शोर ते कोजस तुलुन देह च्यवान यिथ पठ्य छिय पछिलाविस सह।
 दिच़न छठ पहलवानन गयि अम्बार समीरा हिय खती जन सोथि बयव बार।
 (आ० रा०, पृ० 238)
65. शर्मा रामायण, पृ० 522.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6.4 रौद्र-रस

'क्रोध' इस रस का स्थायी भाव है और प्रतिपक्षी या शत्रु आलम्बन। अपमान-जनक वाक्य या अशिष्ट व्यवहार उद्दीपन है और कटु, दृश्य, रक्तभाव नेत्र, प्रहार आदि। व्यवहार अनुभाव। संचारी भावों के अन्तर्गत उग्रता, गर्व, चपलता, मद आदि आते हैं।

'मानस' में भरत-चित्रकूट आगमन के बारे में सुनकर लक्ष्मण के क्रोध युक्त चेष्टाओं में रौद्र-रस का सुन्दर परिपाक हुआ है :

उठि कर जोरि रजायेसु मांगा। मनहुं वीररस सोवत जागा।।
बांधि जटा सिर कसि कटि माथा। साजि सरासनु सायुक हाथा।।
आजु राम सेवक जसु लेऊं। भरतहि समर सिखावन देऊं।। (2.230)

लंका-काण्ड में रौद्र रस के कई उदाहरण मिलते हैं। समर-भूमि में बानरों और भालुओं की शारीरिक चेष्टाओं में रौद्र-रस का आस्वादन अधिक सुन्दर है :

क्रूद्धे कृतांत समान कपि तनु स्रवत सोनित राजहीं।
मर्दहि निसाचर कटुक भट बलवंत धन निमि गाजहीं।
मारहि चपेटन्हि डाटि दातन्ह काटि लातन्ह मीजहीं।
चिक्करहिं मरकट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीजहीं।।
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अंतावरि मेलहीं।
प्रहलादपति जनु बिबिध तन धरि सभर अंगन खेलही।।

'रामचंद्रिका' में राम-परशुराम संवाद के अन्तर्गत परशुराम द्वारा गुरु विश्वामित्र के प्रति कहे गये अपमानजनक शब्दों पर तिलमिला कर राम कहते हैं :

सकल लोक संघरै सेष सिरतैं धर डारै।
सप्त सिन्धु मिलि जाहिं होइ सब ही तम भारै।
अति अमल ज्योति नारायनी कहि केसव बुझि जाइ बरु।
मृगुनन्द संभारु कुठार मैं कियो सराजन जुक्त सरु।। (7.42)

ससैन्य भरत के चित्रकुट-आगमन पर लक्ष्मण के इन शब्दों में भी रौद्र-रस अभि-व्यंजित दुआ है :

मारि डारौं अनुज समेत यहि खेत आजु मेटि डारों दीरघ वचन निज गुर को।

(10.25)

'साकेत' में कैकेयी के क्रोधावेश में रौद्र-रस का आस्वादन व्यवस्थित ढंक से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होता है । कोप का वर्णन देखिए :

मानिनि कैकेयी का कोप बुद्धि का करने लगा विलोप ।
और रह सकी न अब वह शांत, उठी आंधी से होकर भ्रांत ।।
एड़ियां तक आ छूटे केश, हुआ देवी का दुर्गा वेश ।
पड़ा तब जिस पदार्थ पर हस्त, उसे कर डाला अस्त व्यस्त ।
तोड़कर फैंके सब शृंगार, अश्रुमय से थे मुक्ताहार ।
मत्त करिणी सी दलकर फूल, घूमने लगी आप को भूल । (पृ० 53)

कैकेयी के प्रति लक्ष्मण के क्रोधावेश में भी रौद्र-रस का समुचित परिपाक हुआ है :

गई लग आग सी सौमित्रि भड़के, अधर फड़के, प्रलय घन तुल्य तड़के ।
अरे मातृत्व तू अब भी जताती ! ठसक किसको भरत की ही बताती ?
भरत को मार डालूं और तुझको, नरक में भी न रखूं ठौर तुझको ।
....
बुला ले सब सहायक शीघ्र अपने, कि जिनके देखती है व्यर्थ सपने ।
सभी सौमित्रि का बल आज देखें, कुचक्री चक्र का फल आज देखें । (पृ० 76)

भरत के चित्रकूट-आगमन का समाचार पाकर आशंकित होकर लक्ष्मण कहते हैं :

आये होंगे यदि भरत कुमिति वश वन में, तो मैंने यह संकल्प किया है मन में।
उनको इस शर का लक्ष चुनूंगा क्षण में, प्रतिषेध आपका भी न सुनूंगा रण में ।। (पृ० 237)

'वैदेही वनवास' में भी सीता सम्बन्धी लोकापवाद की बात सुनकर लक्ष्मण के क्रोध में भी इसी रस का निरूपण हुआ है :

सम्भलकर वे मुंह को खोले । राज्य में है जिनको बसना ।।
चाहता है यह मेरा जी । रजक की खिचवा लूं रसना ।।
प्रमादी होंगे ही कितने । मसल मैं उनको सकता हूं ।।
क्यों वे बकने वाले समझें । बहक कर क्या मैं बकता हूं ।। (3. 60-61)

कश्मीरी रामकथा-वाक्य में भी विविध प्रसंगों के चित्रण में 'रौद्र-रस' का परिपाक हुआ है । 'प्रकाश रामायण' के अन्तर्गत विश्वामित्र द्वारा राजा दशरथ के प्रति कहे गए क्रोधावेश युक्त इन शब्दों में रौद्र-रस का निरूपण हुआ है— "यदि स्वेच्छा से राम और लक्ष्मण को मेरे साथ यज्ञरक्षार्थ वन नहीं भेज दोगे, तो अपने आप को यहीं समाप्त कर लूंगा और ऐसा शाप दे दूंगा जिससे आपका

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सारा कुल-परिवार नष्ट हो जायेगा ।"[66] राम के वनवास-आज्ञा के बारे में सुनकर राजा दशरथ के प्रति लक्ष्मण के क्रोध में भी इसी रस का अद्भुत रूप मिलता है—"क्रोधावेश में लक्ष्मण जोर से गर्जते (ललकारते) हुए कहने लगे कि वे राजा समेत सारे राज्य का नाश कर देंगे। आकाश भी उनकी गर्जन सुनकर कांप गया ।"[67] 'श्राद्ध' के दिन मृत राजा दशरथ के दर्शन न देने पर धर्मराज के प्रति राम के क्रोधावेश में भी रौद्र-रस का रूप मिलता है।[68] हनुमान्-महीरावण युद्ध प्रसंग में हनुमान की प्रतिपक्षी के प्रति क्रोध-पूर्ण भयानक क्रियाओं में भी रौद्र-रस ही प्रधान है—'हनुमान् की क्रोधयुक्त ललकार से जैसे बादल गरजे, उस भयानक गर्जन को सुनकर कई राक्षस मर गये। गदा के तीव्र प्रहार से उन्होंने अनेकानेक राक्षसों को मार डाला ।'[69]

'विष्णु-प्रताप रामायण' में राम-वनगमन प्रसंग में लक्ष्मण के क्रोध[70] तथा राम-रावण युद्ध-वर्णन के अतिरिक्त रौद्र-रस का सर्वोत्कृष्ट निरूपण सीता द्वारा महाकाली का रूप धारण कर महारावण को ग्रास करने के प्रसंग में मिलता है।[71]

'आनंद-रामावतारचरित' में रौद्र-रस का परिपाक कुम्भकरण-युद्ध और सीता-महारावण युद्ध प्रसग में मिलता है। कुम्भकरण एकक्षण क्रोधित होकर समर भूमि में उतरकर निर्भीकता से बानर-रीछों के पीछे दौड़ता हुआ उनका ग्रास करता रहा जैसे भूखा सिंह लोमड़ी का पीछा करता है। सहस्रों बानर-रीछों को उसने निगल लिया, सिर काट-काट कर ग्रास किया। किन्हीं को पकड़ कर आकाश की ओर फ़ैंका बहुतों का संहार किया ।[72]

6 5. अद्भुत रस

विस्मय और आश्चर्य इस रस का स्थायी भाव है, आश्चर्योत्पादक घटना या वस्तु-विशेष आलम्बन। आकस्मिकता एवं परिस्थिति विशेष की विलक्षणता उद्दीपन और रोमांच, प्रफुल्लता, स्वेद, कंप आदि अनुभाव का रूप धारण करते हैं।

रामकथा में अद्भुत रस विषयक विविध मूलतत्व एवं प्रसंग रामकथा के आदि

---

66. दिहन ने सअथ्य नते येति पान गालै, तिथुय दिम शाफ युथ रुमराठ गालै। (पृ॰ 10)
67. ग्रजुन ह्योत लक्ष्मनन कांप्योव आकाश, दपुन राजस रटिथ राजस करस नाश। (पृ॰ 21)
68. प्र॰ रा॰, पृ॰ 40.
69. प्र॰ रा॰ पृ॰ 139.
70. वि॰ प्र॰ रा॰, वन. अ 3.
71. वि॰ प्र॰ रा॰, लं॰, अ 165.
72. आ॰ रा॰, पृ॰ 164.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काव्य 'वाल्मीकि रामायण' में भी मिलते हैं। परवर्ती रामकाव्य में कथा-विषयक धार्मिक भावना या अवतारवाद के उत्तरोत्तर विकास के साथ-साथ उसमें विविध लोकोत्तर, अलौकिक और दिव्य तत्वों का भी समावेश हुआ, जिससे अद्भुत-रस का प्रसार विविध प्रसंगों में दृष्टिगोचर होता है। दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में राम-जन्म, सीता-जन्म अहिल्या-उद्धार, गंगावतरण, धनुर्भंग, राम-भरत-भेंट, जयन्त-प्रसंग, मारीच-प्रसंग, छाया-सीता राम की शक्ति-परीक्षा, सीता-खोज, समुद्र-लंघन, रावण पराभव, सीता-अग्नि परीक्षा एवं विभिन्न माया-युद्ध प्रसंगों में अद्भुत रस के दर्शन होते हैं। देवी-देवताओं द्वारा स्तुति-वंदना, आकाशवाणी तथा पुष्प-वर्षा के कई उदाहरण सभी भाषाओं की रामायणों में मिलते हैं। दोनों में अद्भुत-रस का परिपाक इन प्रसंगों में मुख्य रूप से मिलता है :

'मानस' में सती द्वारा राम के परब्रह्मत्व की परीक्षा लेने के चित्रण में अद्भुत-रस का सुन्दर परिपाक हुआ है :

जहं चितवहिं तहं प्रभु आसीना। सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रवीना ॥
देखे सिव बिधि बिष्णु अनेका। अमित प्रभाउ एक तें एक ॥
+ + +
पूजहिं प्रभुहिं देव बहु बेषा। राम रूप दूसर नहिं देखा ॥
अवलोके रघुपति बहुतेरे। सीता सहित न बेष घनेरे ॥
सोइ रघुपति सोइ लछिमन सीता। देखि सती अति भई सभीता ॥
हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं। नयन मूंदि बैठी मग माहीं ॥
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी। कछु न दीख तहं दच्छकुमारी ॥
(1. 54-55)

कश्मीरी 'शंकर रामायण' तथा 'ताराचन्द रामायण' में भी वर्णित प्रस्तुत प्रसंग में अद्भुत-रस का आस्वादन होता है।[73]

'मानस' में राम की बाल-क्रीड़ाएं अद्भुत रस से ओत-प्रोत हैं। जन्म लेने पर राम के अलौकिक दिव्य रूप का चित्रण[74] अद्भुत रस से परिपूर्ण है, किन्तु इसका उत्कृष्ट रूप इन शब्दों में मिलता है :

एक बार जननी अन्हवाए। करि सिंगार पलना पौढ़ाए ॥
निज कुल इष्टदेव भगवाना। पूजा हेतु कीन्हा अस्नाना ॥
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा। आपु गई जहं पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहवां चलि आई। भोजन करत देखि सुत जाई ॥

---

73. शं० रा०, खण्ड 1.2; ता० रा०, पृ० 7-9
74. मानस 1.196.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जै जननी सिसु पहिं भयभीता। देखा बाल तहां पुनि सूता।।
बहुरि आई देखा सुत सोई। हृदय कंप मन धीर न होई।।
इहां उहां दुइ बालक देखा। मति भ्रम मोर कि आन बिसेषा।।
देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हंसि दीन्ह मधुर मुसकानी।।
देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मांड।। (1. 201)

'मानस' में अद्भुत रस का निरूपण पार्वती द्वारा सीता को प्रत्यक्ष आशीर्वचन देना,[75] सीता द्वारा अनेक रूप धारण कर सासुओं की सेवा करने के चित्रण[76] तथा लंका-काण्ड में वर्णित माया-युद्धों[77] आदि में भी सुन्दर ढंग से हुआ है।

'रामचंद्रिका' में सीता-स्वयंवर प्रसंग में अभिमानी रावण जब सभा मध्य आते हैं तो उपस्थित जन-गण में अद्भुत रस का आस्वादन स्वाभाविक रूप से होता है।

नर नारि तबै। भयबीत सबै। अचरज्जु यहै। सब देखि कहै।।
है राकस दस सीस कौ देयत बाहु हज़ार।
भयो सबन के चित्त भ्रम भय अद्भुत संचार।।
सम्भु को दंड दै। राजपुत्री कितै। टूक द्वै तीन कै। जाउं लंकाहि लै।।
(4. 2-4)

रावण के परास्त होने में भी इसी अद्भुत रस का आस्वादन होता है :

खंडित मान भयो सबको नृपमंडल हारि रह्यो जगती को।
व्याकुल बाहु निराकुल बुद्धि थक्यो बल विक्रय लंकपती को।
कोटि उपाय किये कहि 'केसव' केहूं न छांड़त भूमि रती को।
भूरि विभूति सुभाव प्रभावहि ज्यों चलै चित जोग-जती को।। (4. 26)

राम के हाथ धनुष-बाण तोड़ने के वर्णन में भी इसी रस का एक व्यापक रूप मिलता है :

प्रथम टंकारि झुकि झारि संसार मद चंड़ कोदंड़ रह्यो मंड़ि नवखंड कौं।
चालि अचला अचल घालि दिगपाल बल पालि रिषिराज के वचन-परचंड कौं।

---

75. मानस 1.236.
76. वही 2.252.
77. वही 6-46-67 तथा 49-52.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोधु दैईस कों बोधु जगदीस कों क्रोधु उपजाइ भृगुनंद बरिबंड़ को।
बांधि वर स्वर्ग कों साधि अपवर्ग धनुर्भंग को सब्द गयो भेदि ब्रह्मांड कों ।।
(5. 43)

राम की बारात और देव-मानवलोक की प्रसन्नता के चित्रण[78] में हमें इस रस का आस्वादन होता है। जनक द्वारा कहे गये इन शब्दों में भी इसी रस का रूप मुखर है :

सिद्ध समाधि सजैं अजहुं न कहूं जग जोगिन देखन पाई।
रुद्र के चित्त समुद्र बसैं नित ब्रह्महु पै बरनी नहिं जाई।
रूप न रंग न रेख विसेष अनादि अनन्त जु बेदन गाई।
'केसव' गाधि के नंद हमें वह ज्योति सो मूरति वंत दिखाई ।। (6 18)

अंगद मंदोदरी की चित्रशाला में 'लंकेसबाला' को देखने के भ्रम में जाता है, उनके भ्रम के निवारण में भी अद्भुत रस का आस्वादन होता है :

भगी दैखिकै संकि लंकेसबाला। दुरी दौरि मंदोदरी चित्रमाला।
तहां दौरि जो बालि को पूत फूल्यो। सबै चित्र की पुत्रिका दैखि-
भूल्यो ।। (19 26)

'साकेत' में अद्भुत रस का आस्वादन कई स्थलों पर पाठक को होना है। सीता की आज्ञा से बूटी लाने के बहाने लक्ष्मण कुठी में जाते हैं तो वहां उर्मिला को देखते हैं :

जा कर परन्तु जो वहां उन्होंने देखा, तो दीख पड़ी कोणस्थ ऊर्म्मिला रेखा।
यह काया है या शेष उसी की छाया, क्षण भर उनकी कुछ नहीं समझ में आया।
(पृ० 265)

'मायावी राक्षस' समझकर भरत का बाण से सजीवनी-बूटी लेकर आते हनुमान को गिराने के प्रसंग में भी अद्भुत रस का परिपाक हुआ है :

मायावी राक्षस-वह देखो ! चौंक वीरवर ने थोड़ा,
दीख न पड़ा चढ़ाकर धन्वा कब शर जोड़ा, कब छोड़ा।

"हा लक्ष्मण ! हा सीते !" दारुण आर्तनाद गूंजा ऊपर
और एक तारक सा तत्क्षण टूट गिरा सम्मुख भु पर।

---

78. रामचंद्रिका 6-12-14.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौंक उठे जब 'हरे हरे' कह—'हा ! मैंने किसको मारा ।'
आहत जन के शांबित पर ही गिरी भरत रोदन धारा । (पृ० 416-417)

आगे के चित्रण में भी अद्‌भुत रस की छटा विद्यमान है :

खींच कर श्वास आसपास से प्रयास बिना
सीधा उठा शूर हुआ तिरछा गगन में,
अग्नि शिखा ऊंची भी नहीं है निराधार कहीं,
वैसा खाइ वेग कब पाया सान्ध्य-घन में ?
भूपर से ऊपर गया यों बानरेन्द्र मानो
एक नया भद्र भौम जाता था लगन में,
प्रगट सजीव चित्र सा था शून्य पट पर,
दण्ड हीन केतन दया के निकेतन में । (पृ० 449)

कश्मीरी-रामायणों में विभिन्न प्रसंगों मे अद्‌भुत रस का उत्कृष्ट परिपाक हुआ है । 'प्रकाश रामायण' में वर्णित कुछ विशिष्ट प्रसंगों में इसका सुन्दर निरूपण हुआ है । मृत राजा दशरथ का प्रति वर्ष अपनी पुण्य-तिथि पर प्रत्यक्ष राम के समक्ष उपस्थित होकर उनसे 'पिण्ड' (भोज) स्वीकार कर लेने के चित्रण में[79] इसका अनूठा परिपाक हुआ है। हनुमान के बाल—रूप हठ के चित्रण में भी यही रस प्रधान है—'अल्प वयस्क शिशु हनुमान आकाश में सूर्य-खिलौने पर आसक्त होकर उड़ान भर कर उसको पकड़ने का प्रयत्न करता है सूर्य घबड़ाकर सुमेरु पर्वत की ओट में छिप जाता है ।'[80] अद्‌भुत रस से ओतप्रोत कुम्भकरण जागरण का प्रसंग देखिए—'जाग कर कुम्भकरण सोलह सौ जीवों का आहार भूख मिटाने के लिए करता है और पानी के बदले सहस्रों घड़े मदिरा के पी डालता है ।'[81]

'शंकर रामायण' और 'वि० प्र० रा०' में वर्णित अधिकांश युद्ध-प्रसंगों में अद्‌भुत-रस की छटा विद्यमान है। 'वि० प्र० रा०' के बैकुण्ठ-लीला-काण्ड के अन्तर्गत लव को चक्रवर्तो राज करने की सूचना आकाशवाणी से प्राप्त होती है ।[82]

---

79. प्रखुट तस राज श्रादुकि दोह भिवान ओस पुरोहित हाथ तमिस आप्या-
दिवान ओस ।
(प्र० रा०, पृ० 40)

80. प्र० रा०, पृ० 74.

81. वही, पृ० 118.

82. वि० प्र० रा०, बैकुण्ठ । अ 16.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'आ० रा०' में जयंत-काग प्रसंग के अतिरिक्त अद्भुत रस का सर्वोत्कृष्ट निरूपण विविध युद्ध प्रसंगों में मिलता है। लक्ष्मणमे-घनाद युद्ध प्रसंग का चित्रण देखिए[83]—'लक्ष्मण के गदे का प्रहार जिस किसी विपक्षी पर पड़ता था, वह पाताल लोक में धंस जाता था और स्वयं सातवें पाताल से पुनः ऊपर उठकर पृथ्वी या समर-भूमि पर आता था।' 'लक्ष्मण पर चलाये गए रावण के शक्ति-बाण को हनुमान पकड़ कर वापिस चलाते हैं, जिससे करोड़ों की विपक्षी राक्षस-सेना मृत्यु-धाम सिधारती है और रावण को आश्चर्य होता है।'[84] कुम्भकरण युद्ध वीरता के चित्रण में भी अद्भुत रस का परिपाक मिलता है—"जिन विपक्षी शूर-वीरों को वह जीवित निगलता है, वे उसके कानों के रास्ते पुनः बाहर निकलते हैं[85] और जब श्रीराम के बाण से कुम्भकरण का सिर उसके धड़ से अलग हो जाता है, तो सिर के बिना ही वह खड़ा होकर तीन करोड़ विपक्षी सेना को मार डालता है।[86] प्रस्तुत रामायण में वर्णित विस्तृत माया-युद्धों में भी इसी रस का निरूपण हुआ है।[87]

'शर्मा रामायण' में अन्य प्रसंगों के अतिरिक्त अद्भुत रस का सुन्दर परिपाक कुम्भकरण-महाकाल युद्ध-वर्णन में मिलता है—महाकाल कुम्भकरण पर काल-दण्ड का कठोर प्रहार करता है और उसका प्रभाव 'पिसू के काटने' के बराबर होता है। कुम्भकरण उस काल-दण्ड को निगल कर छः मास की नींद सो जाता है, जागने पर उल्टी से वह उसे पुनः बाहर निकालता है जिसको छीन कर महाकाल पुनः युद्ध प्रारम्भ करता है।'[88] अतिरिक्त इन विशिष्ट उदाहरणों के प्रायः सभी रामायणों में राम की अलौकिक शक्ति के प्रदर्शन कराये गए हैं, विविध स्थलों पर देवी-देवता उनकी स्तुति-वन्दना करते हैं और देवलोक से पुष्पों की वर्षा होती है।

---

83. वेह्न यस दब सु पातालसइ वसन ओस सतिभि पाताल प्यठ पाने ह्यमोर
खसन ओस।
(आ० रा०, पृ० 153)

84. आ० रा०, पृ० 155.

85. बहादुर कैंह यिम ओसुय नेंगलावन,
कनव किन्य आस्य तिम कीरिथ भितानइ। (आ० रा०, पृ० 164).

86. कल रुस्तुय वधित गो सुय पहलवान करोरन त्रेन कले रुस्तुय छु मारान॥
(आ० रा०, पृ० 166)

87. आ० रा०, पृ० 174 175.

88. शर्मा रा०, पृ० 49-50.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6.6. भयंकर रस

भय इस रस का स्थायी भाव है और भयदायक वस्तुएं या दृश्य आलम्बन। भयानक वस्तुओं का चित्रण या कथन उद्दीपन और रोमांच, स्वेद, कंप आदि अनुभाव होते हैं। इस रस के संचारी भाव चिंता, शंका, त्रास आदि हैं।

रामकथा में विविध प्रसंग ऐसे मिलते हैं जिनके चित्रण में भयानक रस का उद्रेक होता है, दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्य में उन मूल प्रसंगों का चित्रण विविध रूपों में हुआ है।

'मानस' में विभिन्न प्रसंगों में भयानक रस का समुचित निरूपण हुआ है। शिव की बारात का चित्रण देखिए :

तन छार व्याल कपाल भूषण नगर जटिल भयंकरा।
संग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकट मुख रजनीचरा ।। (1. 95)

× + ×

बिकट वेष रुद्रहि जब देखा। अबलन्ह उर भय भएउ बिसेखा ।।
भागि भवन पैठीं अति त्रासा। गए महेसु जहां जन वासा ।। (1. 9)

'धनुर्भंग' प्रसंग में इस रस की उद्भावना मिलती है। राम धनुष तोड़ देते हैं :

भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले ।।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल बिकल बिचारीं।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं ।। (1. 261)

रावण-युद्ध के प्रसंग में भयानक रस का एक साकार रूप मिलता है। यहां आश्रय राम-सेना है और आलम्बन रावण :

जब कीन्ह तेहि पाषंड। भए प्रगट जंतु प्रचंड ।।
बेताल भूत पिसाच। कर धरें धनु नाराच ।।
जोगिनि गहें करबाल। एक हाथ मनुज कपाल ।।
शंकर सब सोनित पान। नाचहिं करहिं बहु गान ।।
धरु मारु बोलहिं घोर। रहि पूरि धुनि चहुं ओर ।।
मुख बाइ धावहिं खान। तब लगे कीस परान ।।
जहं जाहिं मर्कट भागि। तहं बरत देखहिं आगि ।।
भए बिकल बानर भालु। पुनि लाग बरषैं बालु ।।
जहं जहं थकित करि कीस। गर्जेउ बहुरि दससीस ।।
लछिमन कपीस समेत। भए सकल बीर अचेत ।।
हा राम हा रघुनाथ। कहि सुभट मीजहिं हाथ ।। (6. 101)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'रामचंद्रिका' में भी भयानक रस का उद्रेक कई स्थलों पर होता है। 'धनुर्भंग' के उपरांत परशुराम के आगमन के प्रसंग में भयानक रस का परिपाक देखिए :

मत्त दंति अमत्त ह्वै गए देखि देखि न गाजहीं।
ठौर ठौर सुदेस 'केसव' दुन्दभी नहि बाजहीं।
डारि डारि हथ्यार सूरज जीव ले लय भाजहीं।
काटिकै तनत्रान एकनि नारि भेषन साजहीं॥ (7. 2)

'साकेत' में भयानक-रस का आस्वादन राक्षसों और बानरों के पारस्परिक युद्ध के इस चित्रण में होता है :

घनघन, झनझन, सनसन निस्वनहोता है हनहन के साथ।
नीचे स्यार पुकार रहे हैं ऊपर मडराते हैं गिद्ध,
सोने की लंका मिट्टी में मिलती है लोहे से विद्ध!
भेद नहीं पाते हैं रविकर दिया शून्य को रज न पाट।
पर अमोघ प्रभु के शर खर तरजाते हैं अरिकुल को काट।
अपने जिन अगणित वीरों पर गर्वित था वह राक्षस राज।
एक एक कर भीं मर कर हुए नगण्य अहो वे आज।
दांत पीसकर, ओंठ काटकर, करता है वह क्रुद्ध प्रहार,
पर हंस हंसकर ही प्रभु सबका करते हैं पल में प्रतिकार।
(पृ० 440-441)

राम के क्रुद्ध होने पर युद्ध का चित्रण देखिए :

कर-पद रुण्ड-मुण्ड ही गण में, उड़ते, गिरते पड़ते थे,
कल-कल नहीं किन्तु मल मल कर रक्तस्रोत उमड़ते थे।
रिपुओं की पुकार भी मानो निष्फल जाती बारंबार,
गूंज उसे भी दबा रही थी उनके धन्वा की टकार। (पृ० 443)

'वैदेही बनवास' में वर्णित रावण की अशोकवाटिका में सीता के सीता के प्रति विविध कष्टों के चित्रण में भयानक रस की उद्भावना हुई है। वाल्मीकि मुनि सीता को स्मरण दिलाते हुए :

कितनी फैला वदन निगलना चाहतीं। कितनी बन विकराल बराती चिंतिता॥
ज्वालाएं मुख से निकाल आंखें चढ़ा। कितनी करती रहती थीं आतंकिता॥

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कितनी दांतों को निकाल कटकरा कर। ले लिह'न जिह्वा दिखला थीं कूदती ।।
कितनी कर वीभत्स कांड थीं नाचती। आप देख जिसको आंखें भी मूंदती ।।
(8. 47-48)

कश्मीरी 'रामकथा-काव्य' में भी विभिन्न प्रसंगों के चित्रण में भयानक रस का परिपाक हुआ है। 'प्रकाश रामायण' में हनुमान द्वारा लंका-प्रयाण प्रसंग में इसका सर्वोत्कृष्ट रूप मिलता है—'जिस ऊचे पर्वत से हनुमान उड़ान भरते हैं, वह पर्वत उनके भारी बोझ से जीर्ण होकर पाताल लोक तक धंस जाता है। आकाश पृथ्वी दोनों कांप कर चक्कर काटते हैं। वायु के समान तीव्र वेग से उड़कर लंका पहुंच-कर हनुमान किसी भयंकर अजगर के मुंह में गिर जाते हैं।[89]

'विष्णु प्रताप रामायण' में लव-कुश द्वारा भरत-सेना के साथ वर्णित युद्ध प्रसंग में भयानक रस का उद्रेक मिलता है लव-कुश द्वारा तीव्र बाणों की बौछार से विपक्षी सेना में भयावह कंपन उत्पन्न होता है। शास्त्रास्त्रों की भीषण आवाज़ होती है और शूरवीर सिंहों की भांति गरजते है। दो वीर-योद्धा बालक लव और कुश महाप्रलय की अग्नि की भांति खड़े हैं, और उनके सामने विपक्षी सेना की कुछ भी नही चलती थी।[90]

'आनन्द रामावतारचरित' में कुम्भकरण-युद्ध और महारावण-युद्ध प्रसंगों में भयानक रस का निरूपण हुआ है। जागने पर कुम्भकरण मंदराचल पर्वत की तरह समर-भूमि में खडा हो गया, उसके खड़े होने से चारों ओर भूकंप-सा आ गया जैसे एक क्षण भय-विकंपित तार बज उठे हों।[91] महारावण का रूप-वर्णन और अधिक भयानक है— महारावण के हंसने से उसका सिर हिला जिससे चारों ओर के पर्वतों पर उसकी छाया पड़ गयी।। उसका सिर हिलने मात्र से सारी पृथ्वी कांपी जैसे वह भय-विकंपित चक्र काटने लगी हो।[92] उपरिलिखित दोनों उदाहरणों से भी अधिक भयानक रूप सीता द्वारा महाकाली रूप धारण कर महारावण का वध करने के चित्रण में मिलता है —सीता के एक झटके से महारावण की सेना कांप जाती है। उनके भयावह महाकाली रूप को देखकर सभी घबरा जाते हैं।...केशों को पांव तक फैलाया। सिरों की माला गले में पहनीं। महाकाली का मुकुट धारण कर आंखें उनकी रक्त के प्याले सी हो गईं। वस्त्र काले पहने और कानों में पर्वत-कुण्डल डाले। 'चतुर्भुज' हाथों में खाली प्याले और तलवारें धारण कीं। मुंह

---

89 प्र० रा०, पृष्ठ 74-75.
90 वि० प्र० रा०, पृष्ठ 754
91 मुदा यलि गो वथित कोह मंदार, बुन्युल ओसुय गछानय जन वज़न तार।
(आ० रा०, पृष्ठ 163)
92. आ० रा०, पृष्ठ 208.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खोलकर एक होंठ पृथ्वी पर लगा दिया और दूसरा आकाश में। उनके भयानक दांतों को देखकर गुरु वशिष्ठ जी घबरा गए। महारावण का एक-एक सर काट-कर प्यालों में रक्त भर कर पी लेती थीं भीषण हुंकार भर कर वे एक-एक करके सारी सेना को भी निगल गई···रक्त की एक बूंद भी नीचे नहीं गिरने देतीं··· वक्ष चीर कर रक्त चूस लेती थीं।[93]

'शर्मा रामायण' में शिवजी के दूल्हा रूप-वर्णन, कुम्भकरण-जागरण और लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध प्रसंगों में भयानक रस का परिपाक हुआ है। 'रुद्रगण गंधर्व और देवी-देवता शिवजी का श्रृंगार करने लगे। आसन पर बिठाकर उनके जटा-मुकुट पर सांपों को लपेटा···कानों में सांपों के ही कुण्डल पहने···भस्म चेहरे पर मलकर मृगछाला पहनी···माथे पर अर्द्धचन्द्र सुशोभित किया और नागों की मालाएं गले में पहनीं।[94] निद्रामग्न लेटे हुए कुम्भकरण का रूप-वर्णन अधिक भयानक है—हनुमान् को कुम्भकरण का इतना भारी शरीर देखकर आश्चर्य हुआ। उसका मुंह बारह कोस तक फैला था और बाहें साठ कोस तक फैली थीं। उसकी टांगें बासठ कोस तक फैली थीं और नाभ आठ कोस लम्बी, उसकी दाढ़ी चार कोस लम्बी थी ऐसे ही छः मास के लिए वह सोया हुआ था।[95] मेघनाद-लक्ष्मण का युद्ध-चित्रण भयानक रस से ओतप्रोत है···एक ओर से लोहे के भयानक नेज़े चलाते थे जैसे पर्वत से पर्वत टकराता हो। आवाजें इतनी भयावह होती थीं जैसे प्रलयकाल के बादल गरजते हों।[96]

6.7 वीभत्स-रस

'जुगुप्सा' इस रस का स्थायी भाव है और घृण्य या दुर्गंध युक्त वस्तुएं जैसे हाड़-मांस रुधिर आदि आलम्बन। संचारी विभाव 'भय' त्रास' आवेग आदि हैं।

'मानस' में अरण्य काण्ड के अन्तर्गत राम-खरदूषण युद्ध तथा लंका-कांड में बानर-राक्षस युद्ध के प्रसंगों में वीभत्स रस की उद्भावना हुई है। राम-खरदूषण युद्ध का चित्रण देखिए :

छांड़े विपुल नाराच। लगे कटन विकट पिसाच॥
उर सीस भुज कर चरन। जहं तहं लगे महि परन॥
चिक्करत लागत बान। धर परत कुधर समान॥

---

93. आ० रा०, पृष्ठ 210.
94. शर्मा रा०, पृष्ठ 24.
95. शर्मा रामायण, पृष्ठ 242.
96. वही, पृष्ठ 337.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भट कटत तन सत खंड। पुनि उठत करि पाखंड ।।
नभ उत बड़हु भुज मुंड। बिनु मौलि धावत रुंड ।।
खग कंक काक सृगाल। कट कटहिं कठिन कराल ।।

\+ \+ \+

रघुवीर बान प्रचंड खंड़हि भटन्ह कै उर भुज सिरा ।।
जहं तहं परहिं उठि लरहिं घरु घरु घरु करहिं भयकर गिरा ।।
अंतावरी गहि उड़त गीध पिसाच कर गहि धावहीं ।।
संग्राम पुर बासी मनहुं बहु बाल गुड़ी उड़ावहीं ।। (6.20)

'लंका कांड' में इस रस का परिपाक और भी जीवंत ढंग में हुआ है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित पंक्तियां देखिए :

नभ चढ़ि बरषइ बिपुल अंगारा। तहि तें प्रगट होंहि जलधारा ।।
नाना भांति पिसाच पिसाची। मारु काटु धुनि बोलहि नाची ।।
बिष्ठा पूय रुधिर कच हाड़ा। बरषइ कबहुं उपल बहु छाड़ा ।।
बरषि धूरि कीन्हेसि अंधिआरा। सूझ न आपन हाथु पसारा ।।
कपि अकुलाने माया देखें। सब कर मरनु बना येहि लेखें ।।
(6.52)

यहां राक्षान गण आलम्बन तथा बानर-सेना आश्रय के रूप में अंकित किये गए हैं।

'रामचंद्रिका' में वीभत्स रस की उद्भावना क्रोधी रावण के इन शब्दों में भली-भांति हुई है :

कोरि कोरि जातनानि फोरि फोरि मारिय। काटि काटि फारि-बांटि बांटि मांसु डारिये।
खाल खैंचि खैंचि हाड़ भूंजि भूंजि खाहु रे। पौरि टांगि रुण्ड मुण्ड लै उडाइ जाहु रे ।। (14. 2)

'रामचंद्रिका' के उत्तरार्द्ध में वर्णित लव-कुश तथा राम-सेना के युद्ध में भी वीभत्स रस का भावोद्रेक हुआ है :

जामवंत बिलोक्यो रन भीम-भू हनुमंत। स्रोन की सरिता बही सु अनंत रूप दुरंत ।।
जत्र तत्र धुजा पताका दीह देहनि भूप। टूटि टूटि परे मनो बहु बात वृक्ष अनूप ।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुंज कुंजर सुभ्र स्यंदन सोमिजैं सुठि सूर। ठेलि ठेलि चले गिरीसनि पेलि-
सोनित पूर।
ग्राह तुंग तुरंग कच्छप चारु चर्म विसाल। चक्र से रथचक्र पेरत वृक्ष गृद्ध-
मराल॥ (37. 1-2)

'साकेत' में बानर और राक्षस-सेना के पारस्परिक युद्ध-चित्रण में भी वीभत्स रस का परिपाक हुआ है :

घनघन, झनझन सनसन निस्वन होता है हनहन के साथ !
नीचे स्यार पुकार रहे हैं, ऊपर मंड़राते हैं गिद्ध;
सोने की लंका मिट्टी में मिलती है लोहे से विद्ध ! (पृ० 440)

'लक्ष्मण-मूर्च्छा' के उपरांत क्रुद्ध राम के द्वारा किये गए युद्ध में भी वीभत्स रस का परिपाक हुआ है :

कर-पद रुण्ड-मुण्ड ही रण में उड़ते गिरते पड़ते थे,
कल-कल नहीं, किन्तु भल भल कर रक्त स्रोत उमड़ते थे। (पृ० 443)

'साकेत संत' में वर्णित मुनि वशिष्ठ द्वारा शरीर और जीवन की क्षणभंगुरता के बारे में भरत-समाज में किये गए प्रवचन में भी वीभत्स रस का भावोद्रेक मिलता है :

सड़ने लगती देह बिगड़ने लगती आकृति।
कृमि कीटों की भक्ष्य भयावह उसकी संसृति। (5. 8)

दशरथ के दाह-संस्कारोपरांत श्मशान स्थल के वर्णित दृश्य में भी वीभत्स रस का पुनः परिचय मिलता है :

गये उड़ गिद्ध और श्रृंगाल भागे, सड़ी सी लोथ चोथी छोड़ आगे। (6. 30)

कश्मीरी रामकथा-काव्य में वीभत्स रस का परिपाक अपेक्षाकृत कम स्थलों पर देखा जा सकता है। 'प्रकाश रामायण' में राम द्वारा विश्वामित्र संग जाने पर यज्ञरक्षा हेतु युद्ध-दृश्यों में [97] खर-दूषण-वध प्रसंग[98] में इसका संक्षिप्त वर्णन मिलता है। उक्त रामायण में हनुमान् द्वारा अशोक वाटिका में मार कर

97. प्र० रा०, पृ० 11.
98. वही, पृ० 44.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राक्षसों के संहार करने[99] और पाताल लोक में महीरावण समेत उसकी सेना को मार डालकर अनगिनत टुकड़ों में काट लेने तथा रक्त की नदियां बहाने[100] के चित्रण में वीभत्स रस का स्पष्ट बिम्ब मिलता है ।

'आनंद रामावतारचरित' में इस रस का विशद् निरूपण हुआ है । अहीरावण पाताल लोक से रावण की सहायतार्थ समर भूमि में पहुंच कर देखता है—'विस्तृत युद्ध-क्षेत्रों में अनेकानेक चीलें और कौवे मंडरा रहे थे । मुर्दों के कई ऊंचे-ऊंचे ढेर लगे हुए थे और मनों की तादाद में जिनका मांस सिंह और गीदड़ खा रहे थे । अनगिनत शूरवीर मृत पड़े थे जिनका पशु-पक्षी नोच-नोच कर आहार कर रहे थे ।[101]

6.8. हास्य रस

हास्य का सम्बन्ध मानव-जीवन की कालगत विषमता, अनौचित्य, असंगति तथा विकृति से ही है और इसीलिए विकृत आकार वेष-विन्यास, चेष्टा या बोलीः वचन से ही अधिकतः हास्य-रस की अनुभूति होती है ।[102] इस असंगति को भावान्वित करने वाला व्यक्ति या वस्तु-विशेष ही इस रस का आलम्बन है और उद्दीपन विभाव आलम्बनगत चेष्टाओं के प्रस्तुतिकरण पर निर्भर करता है—स्मित, उपहास आदि ही अनुभाव है । रामकथा में ऐसे अनेकों प्रसंग मिलते हैं, जहां हास्य के सभी रूपों में साधारण हास-परिहास से लेकर व्यग-वक्रोक्ति आदि साहित्यिक हास्य के सभी अंगों का निरूपण मिलता है । हास्य-रस के ये चित्रण अधिक्रतः श्रृंगार और अद्भुत रस के ही अधीन है ।

'मानस' में शिव जी के दूल्हा-रूप वर्णन, नारद-मोह प्रसंग और बानरों के अद्-भुत कृत्यों में हास्य-रस का निरूपण अधिक विस्तार से हुआ है । शिव जी के इस दूल्हा-रूप चित्रण में हास्य-रस की नियोजना देखिए :

सिवहि सम्भुगन करहि सिंगारा । जटा मुकुट अहि मौरु संवारा ।।
कुण्डल कंकन पहिरे व्याला । तन विभूति पट केहरि छाला ।।

---

99. प्र० रा० पृ० 84-85.
100. वही पृ० 138-139.
101. पकन आव मन्ज़ मैदानस अन्दर च़ाव वुछिन मैदानसइ मंज़ गाँट ते काव वुछिन सथ खअमं मोदर्न अम्बार ख्यवन सह शाल छिय खरबार खरबार पेमित छिय कम पहलवान निंदरि जन आस्य तमचर जानबर तिमरिह ख्वन आस्य
(आ० रा०, पृ० 178)
102. 'विकृताकारवाग्वेषचेष्टादेः कुहकाद्भवेत् । साहित्य-दर्पण, 3. 214.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ससि ललाट सुन्दर सिर गंगा। नयन तीनि उपबीत भुजंगा ।।
गरल कंठ उर नर सिर माला। असिव बेष सिवधाव कृपाला ।।
कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा। चले बसहं चढ़ि बाजहिं बाजा ।।
देखि सिवहि सुरत्रिय मुसकाहीं। बर लायक दुलहिनि जग नाहीं ।।

\+ \+ \+

सुर समाज सब भांति अनूपा। नहि बरात दूलह अनुरूपा ।।
विष्नु कहा अस बिहंसि तब बोलि सकल दिसिराज।
बिलग बिलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज ।। (1. 92)

बर अनुहारि बरात न भाई। हंसी करैहहु पर पुर जाई।
बिष्नु बचन सुनि सुर मुसुकाने। निज निज सेन सहि बिलगाने ।।
मन हीं मन महेस मुसुकाहीं। हरि के व्यंग्य बचन नहि जाहीं ।। (1. 93)

'मानस' में वर्णित 'नारद-मोह' प्रसंग में आकृति तथा वेश-भूषाजन्य विषमता पर अवलम्बित इस रस की नियोजना देखिए :

तहं बैठे महेस गन दोऊ। बिप्र वेष गति लखै न कोऊ ।।
करहिं कटि नारदहि सुनाई। नीकि दीन्हि हरि सुन्दरताई ।।
रीझिहि राजकुअंरि छबि देखी। इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेखी ।।
मुनिहि मोह मन हाथ पराएं। हंसहिं संभुगन अति सचु पाएं ।।

\+ \+ \+

जेहिं दिसि बैठें नारद फूली। सो दिसि तेहिं न बिलोकी भूली ।।
पुनि पुनि मुनि उक्सहिं अकुलाहीं। देखि दसा हरगन मुसुकाहीं ।।
(1. 134-135)

'मानस' के 'लंकाकाण्ड' में विभीषण द्वारा आकाश से वस्त्राभूषण और मणियों की वर्षा करने के प्रसंग में भी हास्य रस का सुन्दर निरूपण हुआ है :

नभ पर जाइ विभीषण तबहीं। बरषि दिए मुनि अंबर सबहीं ।।
जोइ जोइ मन भावर सोइ लेहीं। मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं ।।
हंसे रामु श्री अनुज समेता। परम कौतुकी कृपानिकेता ।।
(6. 117)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'रामचंद्रिका' में भी हास्य-रस की नियोजना सुन्दर ढंग से हुई है। राम हनुमान की वीरता की प्रशंसा करते हुए कहते हैं -'साधु हनुमंत बलवंत जसवंत तुम, गए एक काज कों अनेक करि आए हों।'[103] हनुमान के प्रत्युत्तर में हास्य रस की मर्यादित उद्भावना देखिए :

गई मुद्रिका लै पार। मनि मोहि लाई वार।
कह कर्‌यो मैं बल रंक। अति मृतक जारी लंक।।
अति हत्‌यो बालक अक्ष। लै गयो बांधि विपक्ष।
जड़ बृक्ष तोरे दीन। मैं कहा बिक्रम कीन।। (14. 33-34)

'साकेत' के 'उर्मिला-लक्ष्मण संवाद' की इस निम्नलिखित अवतारणा में हास्य-रस का एक उदात्त रूप मिलता है :

कर बढ़ाकर जो कमल सा था खिला, मुस्कराई और बोली ऊर्मिला-
'मत्त गज बनकर विवेक न छोड़ना, कर कमल कहकर न मेरा तोड़ना!
बचन सुन सौमित्रि लज्जित हो गए, प्रेमसागर में निमज्जित हो गए।
(पृ० 37-38)

राम-सीता संवाद में सीता के इन शब्दों में भी ऐसे ही हास्य की मधुर झलक मिलती है :

पुरुषों को तो बस राजनीति की बातें! नृप में माली में कांट छांट की घातें।
प्राणेश्वर, उपवन ही किन्तु यह वन है, बढ़ते हैं विटपी निधर चाहता मन है।
(पृ० 230)

'साकेत-सन्त' में भी हास्य रस का निरूपण अलग से न होकर शृंगार के ही अधीन है। भरत-माण्डवी के प्रेमालाप का एक उदाहरण प्रस्तुत है :

तान में हूं, मैं जीवित बीन, अहा उपमाऐं मधुर नवीन।
न शब्दों में हो यह अनुराग, सन्त दिखलाया करते त्याग।। (1. 47)

कश्मीरी रामकथा-काव्य में स्वतंत्र रूप से विभिन्न प्रसंगों में हास्य-रस की उद्भावना हुई है किन्तु अधिकतर यहां हास्य अद्भुत, शृंगार और भक्तिरस से ही

103. रा० चं० 14.32.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नियंत्रित है । 'प्रकाश-रामायण' में हास्य रस की नियोजना वन में शूपर्णखा द्वारा राम-लक्ष्मण से बारी-बारी प्रणय-निवेदन करने के प्रसंग में समुचित ढंग से हुई है—राम और लक्ष्मण के बीच वह बहुत देर तक हास-परिहास और कौतूहल की वस्तु बन जाती है । राम उसे लक्ष्मण के पास भेजते हैं और लक्ष्मण राम के पास ।[104] रावण सभा में हनुमान् के पैर को उठाने में असफल राक्षसों को अपने पांव से ठेलकर दूर फेंक देने और सिर हिलाकर रावण को ऊंचे सिहासन से गिराकर नदी में डालने[105] के चित्रण में भी हास्य-रस का निरूपण हुआ है ।

'शंकर रामायण' [106] और 'शर्मा रामायण'[107] में वर्णित नारद-मोह प्रसंग में, शिवजी के दूल्हा रूप और ससुराल में हास परिहास के चित्रण में भी हास्य-रस का अद्भुत रूप मिलता है । 'शंकर रामायण' में ननिहाल से लौटने पर सक्रोध लक्ष्मण का कुब्जा मंथरा को एक ही लात के प्रहार से उसके टेढ़ेपन को सीधा करने के प्रसंग में भी हास्य रस की छटा विद्यमान है ।[108]

'अंगद-रावण संवाद' के अन्तर्गत अगद द्वारा रावण के प्रति व्यंग्य-वचनों में भी हास्य-रस का उद्रेक मिलता है ।[109]

6.9. वात्सल्य-रस

पुत्र या पुत्री इस रस का आलम्बन है और उनके प्रति वात्सल्य पूर्ण स्नेह स्थायी भाव । उद्दीपन के अन्तर्गत बाल सुलभ क्रीड़ाएं और चपलता आती है । गर्व, हर्ष, आवेग, शंका आदि ही संचारी भाव हैं तथा माता-मिता का पुत्र-पुत्री को पुचकारना, गले लगाना, गोद में उठा लेना और मुस्कराना ही अनुभाव है । वात्सल्य के दो पक्ष होते हैं—संयोग और वियोग । संयोग में जहां उल्लास और हर्षातिरेक मिलता है वहां वियोग-पक्ष करुणा और चिन्ताओं से पूर्ण है । वात्सल्य के वियोग पक्ष में करुणा के आधिक्य के कारण उसमें प्रायः करुण-रस की भी प्रतीति होती दिखती है ।

'मानस' के बालकाण्ड में दशरथ और कौशल्या के चित्त में राम के प्रति वात्सल्य भावपरक रस की सुन्दर चित्रात्मक नियोजना इन शब्दों में मिलती हैं ।

---

104. प्रकाश रामायण, पृ० 43.
105. प्र० रा०, पृ० 86.
106. शं० रा०, खण्ड 1.2.
107. शर्मा रा०, पृ० 30-31.
108. कुबज़ायि लथ दिच् राज़पुत्रन ते कोब गोस स्योद तें कडन लिथान ।
—शं० रा०, खण्ड 1. 13(9).
109. प्र० रा०, पृ० 93-94; आ० रा०, पृ० 150.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भोजन करत बोल जब राजा । नहिं आवत तजि बाल समाजा ॥
कौशल्या जब बोलन जाई । ठुमुक ठुमुक प्रभु चलहिं पराई ॥
+ + +
धूसर धूर भरे तनु आए । भूपति विहंसि गोद बैठाए ॥

भोजन करत चपल चित इत उत अवसर पाई ।
भाजि चले किलकात मुख दधि ओदन लटपाई ॥ (1. 203)

वात्सल्य रस का सुन्दर और सरस परिपाक मां कौशल्या के इस स्नेहसिक्त भावो-च्छ्वास में भी मिलता है :

बार बार मुख चुंबति माता । नयन नेह जल पुलकित गाता ॥
गोद राखि गुनि हृदय लगाए । स्रवत प्रेम रस पयद सुहाए ॥
प्रेम प्रमोदु न कछु कहि जाई । रंक धनद पदवी जनु पाई ॥ (2. 52)

वात्सल्य-वियोग की पृष्ठभूमि पर विश्वामित्र के प्रति कहे गए दशरथ के इन शब्दों में इस रस की प्रतीति होती है :

मांगहु भूमि धेनु धन कोसा । सर्वस देउं आज सह रोसा ॥
देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं । सोउ मुनि देउं निमिष एक माहीं ॥
सब सुत प्रिय प्रान की नाईं । राम देत नहिं बनै गुसाईं ॥
कहं निसिचर अति घोर कठोरा । कहं सुन्दर सुत परम किसोरा ॥ (1.208)

मानस के 'उत्तरकाण्ड' में कौशल्यादि माताओं द्वारा दीर्घकाल के पश्चात् अपने पुत्र से मिलने के चित्रण में वात्सल्य रस का अनूठा परिपाक हुआ है :

कोसल्यादि मातु सब धाईं । निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई ॥
जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन सरबस गईं ।
दिन अंतपुर रुख स्रवत थन हुंकार करि धावत भईं ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेंटीं बचन मृदु बहु विधि कहे ।
गइ बिषम बिपति बियोगभव तिन्ह हरष अगनित लहु ॥ (7. 6)

'रामचंद्रिका' में विश्वामित्र का प्रस्ताव सुनकर दशरथ के इन शब्दों में वात्सल्य रस की नियोजना सुन्दर है :

मैं जु कह्यो रिषि देन सु लीजिय । काज करौ हठ भूलि न कीजिय ॥
प्रान दिये धन जाहिं दिये सब । केसव राम न जाहिं दिये अब ॥ (2.20)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और राम के अनुज सहित विश्वामित्र संग बिदा होने पर :

राम चलत नृप के जुग लोचन । बारि भरित भए बारिद-रोचन ॥
पाइन परि रिषि के सजि भौनहिं । केसव उठि गए भीतर मौनहिं ॥ (2 27)

राम वनगमन प्रसंग में कौशल्या द्वारा कहे गए इन शब्दों में भी वात्सल्य रस का परिपाक द्रष्टव्य है :

रही नृप सुत क्यों बन जाहु । न देखि सबै तिनके उर दाहु ।
लगी अब बाप तुम्हारेहि बाइ । करैं उलटी बिधि क्यों कहि जाइ ॥ (9 0)

\+ \+ \+

मोहि चलौ बन संग लिथैं । पुत्र तुम्हें हम देखि जियैं ।
औधपुरी महं गाज परै । कै अब राज भरथ्थ करै ॥ (9. 10)

'साकेत' में वात्सल्य रस की अभिव्यंजना दशरथ और कौशल्या के चित्त में राम के प्रति परिकल्पित वियोग-क्षोभ से हुई है। कैकेयी से राम वनवास का वचन सुनकर दशरथ क्षोभ-समुद्र में डूबते हैं :

पुनः बोले मुंह फेर महीप —'राम हा राम, वत्स, कुलदीप ।
हो गये गदगद वे इस बार, तिमिरमय जान पड़ा संसार। (पृ० 67)

राम द्वारा पिता से आज्ञा मांगते समय दशरथ की दशा देखिए :

"हुए क्यों पुत्र तुम हे राम ! मेरे ? यही हैं क्या पिता के काम मेरे !
विधाता ! "बस न फिर कुछ कह सके वे, हुए मूच्छित न बाधा सह सके वे।
(पृ० 75)

इसी प्रसंग में कौशल्या के करुण भावोच्छवासों का चित्रण भी इसी रस से ओतप्रोत है :

सच है तब क्या वे बातें ? दैव दैव ऐसी घातें ।
कांप उठी वे मृदु देही, धरती घूमी या वे ही ।

\+ \+ \+

अभी प्रार्थिनी मैं हूंगी, प्रभु से क्षमा मांग लूंगी ।
क्या प्रथमापराध तेरा और विनीत विनय मेरा
क्षमा दिलावेगा न तुझे ? वत्स हुआ क्या बता मुझे। (पृ० 96-99)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्रकूट-सभा में कैकेयी के इन आत्म पश्चात्ताप एवं ग्लानि युक्त शब्दों में भी वात्सल्य-रस की अनुपम छटा विद्यमान है :

थूके मुझपर त्रैलोक्य भले ही थूके, जो कोई जो कह सके, कहे क्यों चूके ?
छीने न मातृपद किन्तु भरत का मुझसे, रे राम दुहाई करूं और क्या तुझ से ।
(पृ० 249)

'साकेत' के अन्त में राम-लक्ष्मण और सीता के तीनों माताओं से पुनः मिलन के प्रसंग में भी वात्सल्य रस का सुन्दर निरूपण हुआ है :

माताओं के भाग आज सोते से जागे, पहुंचे पहुंचे राम राज-तोरण के आगे ।
न कुछ कह सकीं, न वे देख ही सकीं सुत को, रोकर लिपटी उठा उन प्रगति युतों को ।
कांप रही थीं हर्ष-भार से तीनों थर-थर, लुटा रही थीं रत्न आज वे तीनों भर भर ।
लिये आरती वे उतारती थीं तीनों पर, क्या था जिसे न आज वारती थीं तीनों पर ।
(पृ० 493-4)

'वैदेही-वनवास' में सीता का अपने पुत्रों लव-कुश को रिझाने के नाना प्रयत्नों में भी वात्सल्य रस की छटा मिलती है :

कभी रिझाती उन्हें वेणु वीणा बजा । तरह तरह के खेल वह खेलती कभी ।।
कभी खिलौने रखती उनके सामने । स्वयं खिलौना वह थी बन जाती कभी ।।
(13-17)

\+ \+ \+

इस प्रकार जब जनक नंदिनी सुतों को । आनंदित कर पति गुण गण थी गा रही ।।
रीझ रीझ कर उनके बाल विनोद पर । निज वचनों से जब थीं उन्हें रिझा रहीं ।।
(14. 39)

वात्सल्य रस के दोनों संयोग और वियोग पक्ष का चित्रांकन कश्मीरी रामकथा काव्य में भी विविध प्रसंगों में सुन्दर ढंग से हुआ है। 'प्रकाश रामायण' में ननिहाल से लौटने पर भरत-शत्रुघ्न की कौशल्या से भेंट के प्रसंग में वात्सल्य रस की सुन्दर नियोजना हुई है—कौशल्या दोनों पुत्रों के सिरों को गोद में भर कर स्नेह-सिक्त वाणी में सारा वृत्तांत सुनाकर उनके दुख-संतप्त चित्तों को शांति प्रदान करती हैं और उन्हें दीर्घायु का आशीष देकर उन्हें राम से भी अधिक स्नेहाधिकारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बताती हैं।[110] मन्दोदरी-सीता भेंट प्रसंग में वात्सल्य रस का उत्कृष्ट रूप मिलता है—'सीता को देखते ही मन्दोदरी को अपने ही मांस की गन्ध आ जाती है, नदी में फेंकी गई अपनी नन्ही बेटी को अकस्मात् पाकर उन्हें गले लगाकर, गोदी में सुलाती है। मां मन्दोदरी के स्तनों से दूध का स्रोत प्रस्फुटित होता है। 'सीता को अपने वक्ष से चिपटा कर वे अद्भुत वात्सल्य-रस में डूब जाती हैं। करुणा जगी-जैसे जीवित मछली खौलती तेल की कढ़ाई में गिर गई हो।......सीता से उसी वात्सल्य सिक्त अश्रु विगलित वाणी में पूछती है—किसने तुम्हें दूध पिलाकर पालन पोषण किया जब तुम्हें अपनी मां (याने स्वयं उसने) नदी में बहा दिया था।'[111] इसी तरह-हनुमान और मकरध्वज की प्रथम भेंट-परिचय में वात्सल्य रस का सुन्दर परिपाक मिलता है।[112] राम-सीता तथा लक्ष्मण के अयोध्या-आगमन पर मां कौशल्या से भेंट के चित्रण में भी वात्सल्य रस का उत्कृष्ट रूप मिलता है।[113] प्रस्तुत रामायण में राम-वियोग में दशरथ और कौशल्या के विस्तृत विलापों[114] में भी वियोग-वात्सल्य रस का सुन्दर परिपाक हुआ है।

'विष्णु प्रताप रामायण' में शिशु राम के प्रति कैकेयी के अत्यधिक वात्सल्य में इस रस का सुन्दर निरूपण हुआ है— कैकेयी की गोद में चढ़कर राम अत्यधिक प्रसन्नता दिखाते हैं। कैकेयी भी फूली नहीं समाती, राम के चरण कमलों और मुख को वह बार-बार चूमती, उसे दीर्घकाल तक वक्ष से लिपटा कर रखती और सदैव उसकी राहों में आंखें बिछाती रहती है।'[115] मकरध्वज-हनुमान भेंट प्रसंग में वात्सल्य का अद्भुत निरूपण हुआ है वीर पुत्र मकरध्वज का परिचय अकस्मात् पाकर उनके चित्त में स्नेह-धारा प्रस्फुटित होती है, शरीर से स्वेद-बिन्दु टपकते हैं। मकरध्वज को प्राण-रूप समझकर उसे गले लगाकर वे अपनी सुध-बुध ही भूल

---

110. दोनवे क्ल ह्यथ तमि ललनावनि, जिगर मुचरिथ तिमन अहवाल बोवुन।
वदन दोपनख लसिव तोहि आसिनन आय, म्य छम तस रामचन्द्रा न-
निशि तहज़ माय।
(प्र० रा०, पृ० 30-31)

111. प्र० रा०, पृ० 54-55.
112. वही, पृ० 137.
113. वही, पृ० 167.
114. वही, पृ० 25-29.
115. खसान कोछि कीकी श्रीराम हर्शन, वुछान कीकी स्वयंभू राम दर्शन।
कमल पादन कमल मोख्सइ दिवान मीठ्य... ... ...
रटा न छस प्रेम सअत्यन नाल मते न्यथर वथुरान छस स्व वति वते।
(वि० प्र० रा०, पृ० 35)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाते हैं।'[116] उक्त रामायण में वात्सल्य-विप्रलम्भ का अतिशय राम-वियोग में कौशल्या के विलापों और करुण-स्थिति में दृष्टिगत होता है 'वे एकक्षण अचेत होकर गिर पड़ीं जैसे पुत्र-शोक में उसका देहावसान हो गया हो। जैसे पुत्र-वन-गमन के साथ-साथ उनके प्राण-पखेरू ही उड़ गए हों। स्थिति विकट हुई-आंखों की पुतलियां जैसे फूट पड़ीं और महाकाल ने आ घेरा हो।'[117]

'आनन्द रामावतारचरित' में राम-जन्म पर स्त्रियों द्वारा गाये गये शुभकामनाओं के गीतों में वात्सल्य रस की सुन्दर छटा मिलती है।[118] वात्सल्य रस के वियोग पक्ष की सुन्दरतम नियोजना राम-वनगमन पर दशरथ के प्रलापों में हुई है -'हे भास्कर स्वरूप रामचन्द्र ! तेरी स्मृति से मेरे शरीर में भीषण कंपकंपी का आभास मिलता है—आकांक्षाएं थी तेरे रहते पुष्प-उपवनों में घूम फिरने की। तेरे वियोग दर्द से हृदय पूर्णतः दग्ध हुआ है। जब तक तुम लौट आओगे, विरह-व्यथा में डूब कर मर जाऊंगा।'[119]

'शर्मा रामायण' में विश्वामित्र द्वारा राम-लक्ष्मण की याचना पर पूर्वकल्पित वियोग-व्यथा से संत्रस्त दशरथ के करुण शब्दों में वात्सल्य रस का परिपाक सुन्दर है।[120] अयोध्या काण्ड में राम-वनगमन के पश्चात् दशरथ के करुण प्रलापों में भी इसी रस की प्रतीति होती है।[121]

दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्य में वात्सल्य के संयोग-वियोग दोनों पक्षों का चित्रांकन हुआ है, किन्तु कश्मीरी में अपेक्षाकृत वात्सल्य के विप्रलम्भ पक्ष की अभिव्यजना ही अधिक मुखर है।

6.10 शान्त रस

निर्वेद अथवा काम शांत रस का स्थायी भाव है। आलम्बन विभाव संसार की असारता, अस्थिरता और क्षणभंगुरता आदि है। साधु संत-समाज वैराग्य-तीर्थ दर्शन, यज्ञ-मण्डप आदि आलम्बन विभाव हैं। संचारी भाव चितन, हर्ष तथा स्मरणादि है। आत्मग्लानि, रोमांच, अश्रु, पश्चाताप आदि अनुभाव हैं।

दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में प्राकृतिक परिवेश में अयोध्या, चित्रकूट

---

116. हनुमानस प्रेम सअत्यन अर्ख फोट मगरध्वज प्रान ह्य व तम्य नाभति रोट ॥
(वि० प्र० रा०, पृ० 443.)

117. वि० प्र० रा०, पृष्ठ 108.

118. आ० रा० पृ० 17.

119. आ० रा०, पृ० 67.

120. शर्मा रा०, पृ० 65,

121. वही. पृ० 117.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरण्य, किष्किधा, ऋषि-मुनियों के आश्रमों गंगा, मंदाकिनी, समुद्र लंका आदि के चित्रण में शांत रस की छटा विद्यमान है। राम-लक्ष्मण-सीता द्वारा ऋषि-मुनियों से भेंट, आशीर्वचनों एवं ज्ञानोपदेशों में इसी रस की प्रतीति होती है।

हिन्दी रामकथा-काव्यों में 'मानस' में शांत-रस का प्रतिपादन व्यापक और उत्कृष्ट रूप में हुआ है। 'मानस' में 'तीरथराज' के वर्णन[122] और चित्रकूट में पुराण कथाओं के कथन-श्रवण[123] आदि के अतिरिक्त विभिन्न ज्ञानोपदेशों और दार्शनिक चर्चाओं का भी निरूपण मिलता है, जिनको विद्वानों ने 'मानस-गीतायें' कहा है।[124] इनमें से प्रमुख लक्ष्मण-निषाद संवाद,[125] राम-नारद संवाद,[126] दशरथ-मरण के पश्चात वशिष्ठ का उपदेश,[127] राम-लक्ष्मण संवाद[128] और उत्तरकाण्ड की दार्शनिक चर्चाएं हैं। इस तरह 'मानस' में शांत रस का पर्याप्त विस्तार और परिपाक देखने को मिलता है। कुछ विद्वान शांत रस को ही 'मानस' का प्रमुख रस मानते हैं।[129] वास्तव में मानस का यह शांत रस निर्वेद प्रधान या वैराग्य मूलक नहीं है वरन राम के प्रति अनुराग मूलक है,[130] इसीलिए 'मानस' में निरूपित शांत रस का पर्यवसान भी भक्तिरस में ही होता है।

'रामचंद्रिका' में भी अंगद-रावण संवाद' प्रसंग के अन्तर्गत संसार की असारता और जीव के कर्त्तव्य-निर्देश विषयक अंगद के इन शब्दों में शांत रस की नियोजना द्रष्टव्य है :

> हाथी न साथी घोरे न चेरे न गाउं न ठाउं कुठाउं बिलै है।
> तात न मात न पुत्र न मित्र न बित न तीय कहूं संग रैहै।
> केसव काम के राम बिसारत, और निकाम रे काम न ऐहै।
> चेति रे चेति अजौं चित अन्तर अन्तकलोक अकेलोई जैहै ॥ (16. 26)

---

122. मानस 2.105.
123. वही 2 141.
124. श्री कृष्णलाल—मानस-दर्शन, पृ० 32.
125. मानस 2.63.
126 वही 3.46
127. वही 2.172-173.
128. वही 3.15
129. डा० भगीरथ मिश्र —तुलसी-रसायन, पृ० 60.
130. डा० रामप्रकाश अग्रवाल-वाल्मीकि और तुलसी साहित्यिक मूल्यांकन, पृ० 389.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'रामचंद्रिका' में बुढ़ापे के निम्नलिखित चित्रण में भी शांत रस का ही परिपाक हुआ है :

कंपै वर बानि डगै डर डीठि त्वचा तिकुचै सकुचै मति बेली ।
नवै नवग्रीव थकै गति केसव बालक तें संगही संग खेली ।
लियें सब आधिन व्याधिन संग जरा जब आवै ज्वरा की सहेली ।
भगै सब देह-दसा जिय साथ रहै दुरि दौरि दुरासा अकेली ।। (24. 11)

\+ \+ \+

दिन ही दिन बाढ़त जाइ हियें जरि जाइ समूल सो औषधि खैहै ।
किधौं याही के साथ अनाथ ज्यों 'केसव' आवत जात सदा दुख सैहै ।
जग जाकी तूं ज्योति जगै जड़ जीवन वापै तूं तापहूं जान न पैहै ।
सुनि बाल दशा गई ज्वानी गई जरि जैहै जराऊ दुरासा न जैहै ।।
(24. 13)

'वैदेही-वनवास' में तपोभूमि वसिष्ठ और वाल्मीकि के आश्रमों के भव्य चित्रण में भी शांत रस का सुन्दर परिपाक मिलता है :

आश्रम मंदिर कलश अन्य रवि बिम्ब वन । अद्भुत विभा-विभूति से विलस था रहा ।।
दिव्य आयतन में उसके बढ़ कण्ठ से । वेद पाठ स्वर सुधा स्रोत सा था बहा ।।

\+ \+ \+

हवन क्रिया सर्वत्र सविधि थी हो रही । बड़ा शांत बहुमोहक वातावरण था ।।
हुत द्रव्यो से तपोभूमि सौरभित थी । मूर्तिमान बन गया सात्विका चरण था ।।
(8. 10-13)

तपस्विनी आश्रम मे सीता जी के रूप चित्रण में भी शांत रस की छटा विद्यमान है :

ब्रह्मचर्य रत वाल्मीकाश्रम-छात्रगण । तपोभूमि तापस, विद्यालय विवुध जन ।।
मूर्तिमती दवी थे उनको मानते । भक्तिभाव सुमनांजली द्वारा कर यजन ।।
(13. 1-2)

'साकेत-सन्त' में भी विविध स्थलों पर शांत रस का निरूपण मिलता है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शरीर की नश्वरता और जीवन की क्षणभंगुरता के बारे में मुनि वशिष्ठ कहते हैं :

नश्वर तन है क्षणिक पंच तत्वों का मेला, जिसको पाकर जीव एक दो-
पल कुछ खेला ।
जिस क्षण आया काल उसी क्षण मेला टूटा, एक एक परमाणु अपरिचित-
सा हो छूटा ।
सब के सब सम्बंध हवा में उड़ जाते हैं, कुछ भी तो संग्राह्य न हम उसमें-
पाते हैं ।
घिरती घोर विषाद-घनों की दर्दम छाया, उड़ जाती है तुरत विषम-
काया की माया ।।

(5. 6-7)

जीव-जगत के अस्थिर और झूठे सम्बन्धों के बारे में कवि कहते हैं :

घर सबके घर नहीं, घाट हैं काल नदी के, सम्बंधी हैं जहां जुड़े,-
बस दो क्षण ही के ।
आई जिसकी नाव वही तज घाट सिधारा, रहा यहीं का यहीं-
क्षणिक नाता वह सारा ।।

(5. 20)

जीवन-मृत्यु के पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध और जीव की असहायावस्था के बारे में दशरथ के दाह-संस्कार प्रसंग-चित्रण में भी शांत रस की प्रतीति होती है :

विभव की राशियां जिस पर जुड़ी थीं, पताकाएं कई जिसकी उड़ी थीं ।
उसी की धूल उड़ने को यहां है, कहेगा कौन वह क्या था, कहां है ।।
उदधि में एक बुद्‌बुद् था, ढला वह, हवा का एक झौंका था, चला वह ।
रहा कब विश्व पर अधिकार उसका, न अपनी सांस पर अधिकार जिसका ।।

(6. 26-27)

कश्मीरी रामकथा-काव्य में भी विभिन्न प्रसंगों में शांत-रस की नियोजना समुचित ढंग से हुई है। अधिकतर रामकथा के पात्रों के बीच दार्शनिक या आध्यात्मिक परिचर्चाओं और ज्ञानोपदेशों में शांतरस का व्यापक रूप मिलता है। 'प्रकाश रामायण' में वनगमन पूर्व क्रुद्ध लक्ष्मण को दिए गए राम के ज्ञानोपदेश के अन्तर्गत जीवन-मृत्यु एवं द्वैत-सम्बंधित दार्शनिक विवेचना में इस रस का सुन्दर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निरूपण हुआ है।[131] आगे चन्द्र ऋषि द्वारा सम्पाति को जीव-जगत की असारता क्षणभंगुरता, मानवीय सम्बन्धों की झूठी कृत्रिमता तथा गर्भ-शिक्षा सम्बन्धी विषयों पर दिए गए उपदेश में भी शांत रस का समुचित परिपाक हुआ है।[132] इन दो मुख्य प्रसंगों के अतिरिक्त उक्त रामायण में ऋषि विश्वामित्र जनक-संवाद,[133] वशिष्ठ-दशरथ संवाद[134] दशरथ-निधन पर राम द्वारा राजा दशरथ और शिवजी से परिकल्पित सवादों या आत्मालापों[135] तथा लंका-वर्णन[136] में शांत रस की छटा विद्यमान है।

'शंकर रामायण' में वर्णित 'राम-गीता'—जिसमें वनगमन-पूर्व राम लक्ष्मण को आध्यात्मिक और दार्शनिक विषयों का उपदेश देते हैं तथा 'शिव-गीता' —जिसमें शिवजी पार्वती को कथा-माहात्म्य, राम-जन्म रहस्य और रावण के लब्ध प्रतिष्ठित ज्ञान के बारे में समझाते हैं, इन्हीं दो प्रसंगों[137] में शान्त रस की नियोजना हुई है।

'विष्णु प्रताप रामायण' में शांत रस का निरूपण अपेक्षाकृत अधिक स्थलों पर हुआ है। प्रस्तुत रामायण में रस लक्ष्मण को वनगमन-पूर्व, लक्ष्मण का क्षोभ-निवारण करते समय दशरथ मृत्यु की सूचना पाकर, सीता-हरण के पश्चात् तथा लंका मे रावण-वध और विजय-प्राप्ति आदि स्थलों पर विस्तृत ज्ञानोपदेश देते हैं।[138] राम किष्किधा में सुग्रीव और हनुमान को, वालि-वध के पश्चात् तारा को, वाल्मीकि आश्रम में सीता को, अश्वमेध यज्ञोपरांत आमन्त्रित राजा-महाराजाओं को तथा राजलीला काण्ड में विभिन्न स्थानों की तीर्थ-यात्रा करते हुए लोगों को भी ऐसे ही आध्यात्मिक और दार्शनिक ज्ञानवर्द्धित उपदेश देते हैं।[139] इन सभी मुख्य विस्तृत स्थलों पर शांत-रस का समुचित परिपाक देखने को मिलता है। प्रस्तुत रामायण के अन्तर्गत दशरथ मरणोपरांत कवि द्वारा सांसारिक अस्थिरता एव वैराग्य की विवेचना पितृ-शोक मे राम के आत्मालापों, वन में मुनि ऋषियों के सत्सग एवं कथा-श्रवण,

---

131. प्र० रा० पृ० 22.
132. वही, पृ० 68-71.
133. वही, पृ० 13-14.
134. वही, पृ० 26.
135. वही, पृ० 34-37.
136. वही, पृ० 75-79.
137. शं० रा०, खण्ड 1. अ 12.
138. वि० प्र० रा०, वन०. अ 3, 15, 29 तथा लं०. अ 130.
139. वि० प्र० रा०, किष्किंधा. 37.42; अश्व. अ 54; 65, 67, 68; राज. अ 10-14.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मरणासन्न रावण द्वारा लक्ष्मण को ज्ञानोपदेश तथा कवि द्वारा जीव-जगत् की असारता और पुण्य-पथ-प्रदर्शन आदि प्रसंगों के चित्रण में भी शांत रस की सुन्दर छटा मिलती है।[140]

परवर्ती रामाख्यानों में 'शर्मा-रामायण' में वर्णित अरुन्धती कैकेयी संवाद, वाल्मीकि और भरद्वाज के आश्रमों की ज्ञान-चर्चा, शरभंग सुतीक्ष्ण से भेंट तथा राम द्वारा लक्ष्मण को ज्ञानोपदेश आदि प्रसंगों में भी शांत रस की नियोजना स्वाभाविक और पूर्ण है।[141] अन्य रामायणों में भी कई प्रसंगों में शान्त-रस की छटा देखी जा सकती है।

इस तरह दोनों हिन्दी और कश्मीरी रामकथा-काव्यों में शांत रस का निरूपण विस्तृत रूप से हुआ है। कश्मीरी में इसका अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत और व्यापक रूप मिलता है। रामकथा काव्य में शांत-रस निरूपक प्रमुख दार्शनिक तत्वों पर पुराणों का प्रभाव स्पष्ट है, परन्तु राम-भक्त कवियों ने इन तत्वों का सन्तुलित प्रयोग करके मुख्य भक्ति-काव्य को दार्शनिक-काव्य नहीं बनाया। प्रायः दार्शनिक विवेचना में भी उपसंहार हेतु राम-माहात्म्य का स्पष्ट या अस्पष्ट संकेत अवश्य मिलता है और राम-कृपा, नाम-स्मरण या भक्ति-प्रतिपादन को ही सर्वोपरि कह कर भक्ति-रस में ही सहजतया हम इस शांत रस का भी पर्यवसान होते देखते हैं।

6.11 भक्ति-रस

'भगवद् विषयक रति'[142] ही इस रस का स्थायी भाव है। संचारी भावों में आत्मग्लानि, शोक, शंका आदि आते हैं। आराध्य देव के आलम्बन होने के कारण आश्रय (भक्त) की आराधना, याचना, प्रार्थना, अश्रु और उच्छ्वास ही अनुभाव का कार्य करते हैं। रामकथा-काव्य में नायक राम को अलौकिक आराध्य इष्ट मानते हुए विभिन्न पात्रों, देवी-देवताओं तथा स्वयं कवि द्वारा उनकी वन्दना-अर्चना विभिन्न रूपों में किए जाने पर अथवा भक्ति-पद्धति के विभिन्न लोकामयी तत्वों के कारण भक्ति रस के भी कई रूप मिलते हैं, कुछ विद्वानों ने भक्ति रस के पाँच रूप माने है— शांत, दास्य, मधुर, वत्सल और सख्य।[143] इससे भक्ति रस की व्यापकता का निर्देश मिलता है — भक्ति-पद्धतियों के निरूपण में वैभिन्नय भले ही हो किन्तु रस-दशा की चरम स्थिति एक ही है, जहां पहुंचकर साधक (आश्रय)

---

140. वि० प्र० रा०, वन०. अ 10, 19, 20; लं०. 129; अश्व०. अ 58.
141. शर्मा रामायण, पृ० 120, 133-5, 180-4 तथा 185.
142. भक्ति-रस के स्थायी भाव निर्धारण सम्बन्धी विवेचना के लिए देखिए— 'वाल्मीकि और तुलसी : साहित्यिक मूल्यांकन—डा० रा० प्र० अग्रवाल, पृ० 394-397.
143. दि नम्बर आफ रसाज़—श्री० वी० राघवन, पृ० 130.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के मन में उसी की प्रतीति होती है ।

हिन्दी रामकथा-काव्यों में 'मानस' में ही भक्तिरस का व्यापक और विशद निरूपण हुआ है यहां अन्य सभी रसों का पर्यवसान भक्ति-रस में ही होते हुए देखा जा सकता है । 'मानस' में प्रायः सभी मानवी पात्र, देव ऋषि-मुनि, देवी-देवता यहां तक वेद भी राम को आराध्य इष्ट मान कर उनकी वन्दना-अर्चना इसी भक्ति भावना से करते हैं, भक्ति-रस का परिपाक कवि की वाणी में भी सुचारु रूप में निरूपित हुआ है । ग्रन्थ का पर्यवसान भी तुलसी की इसी भक्ति-याचना में ही हुआ है :

मो सम दिन न दीनहित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंसमति हरहु बिषम भवभीर ।।
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम । (7.130)

'मानस' के प्रधान रस के निर्धारण में विद्वानों में मतैक्य नहीं है—"कुछ लोग उसे वीररस प्रधान, कुछ शांत रस प्रधान और अधिकतर विद्वान् भक्ति रस प्रधान काव्य मानते हैं ।"[144] पर्याप्त रस-विवेचना के पश्चात् डा० शम्भुनाथ सिंह लिखते हैं—"समग्र प्रभाव की दृष्टि से मानस का प्रधान रस-वीर तो नहीं है, शांत भी नहीं है । शांत रस में स्थायी भाव या निर्वेद होता है और उसका फल मुक्ति की प्राप्ति होती है । रति या आकर्षण चाहे वह अलौकिक ही क्यों न हो, शांति रस के स्थायी भाव निर्वेद का विरोधी है । वस्तुतः शांत रस अद्वैत वादी दर्शन या अन्य निर्वेदमूलक दर्शनों की वस्तु है । भक्तिमार्ग में, चाहे वह वात्सल्य, सख्य, माधुर्य या दास्य किसी भी भाव की उपासना का मार्ग हो, ब्रह्म के प्रति आकर्षण या रति का होना अनिवार्य है—अतः मानस में जो प्रधान रस है वह अलौकिक शृंगार रस ही है ।"[145] मानस में समग्र रूप से भक्ति रस को ही प्रधान मानते हुए इन्हीं विद्वानों के विचारानुसार "रामचरितमानस की आधिकारिक कथा में वीर रस अंगी रस है पर ग्रन्थ का पर्यवसान वीर रस में नहीं बल्कि भक्ति-रस में हुआ है । प्रथम सोपान के पूर्वार्द्ध में भी भक्तिरस ही प्रधान है और आधिकारिक कथा के मध्य में भी भक्तिरस का स्थान वीररस के बाद ही है । अतः समग्र में भक्तिरस की प्रधानता है ।"[146] संक्षेप में 'मानस' में भक्ति-रस को ही प्रधान माना जा

144. डा० शम्भूनाथ सिंह—हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास पृ० 556.
145. डा० शम्भूनाथ सिंह—हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास, पृ० 556.
146. वही, पृ० 557.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकता है। भक्त कवि तुलसी ने 'मानस' में निरूपित 'नव रसों' का पर्यवसान इसी रस में दिखाकर भक्ति रस को एक सार्थक और व्यापक रूप दे दिया है, जिससे 'महाकाव्य' के अन्य उत्तरोत्तर विकसित कलात्मक नवीनताओं में रसशास्त्रीय दृष्टि से भी एक नई कड़ी जुड़ गई।

'रामचंद्रिका' में भक्ति-रस का निरूपण विभिन्न बन्दना-प्रार्थनाओं में हुआ है। विभीषण यों बन्दना करते हैं :

केसव आपु सदा सह्यो दुख्ख यै दासनि देखि सके न दुखारे।
जाको भयो जेहि भांति जहां दुख त्योंही तहां तेहि भांति संभारे।
मेरियै बार अबार कहा कबहूं नहिं काहू के दोष विचारे।
बूड़त हौं महामोह समुद्र में राखत काहे न राखन हारे।। (15.25)

वशिष्ठ द्वारा राम के प्रति स्तुति-वन्दना में उनकी 'भक्तिरस भगीरथी" के बारे में कहते हैं :

यहि भांति पूजा पूजि जीव जु भक्त परम कहाइ।
भव भक्तिरसभागीरथी महं देइ दुखनि बहाइ।
पुनि महाकर्त्ता महात्यागी महाभोगी होइ।
अति सुद्ध भाव रमै रमापति पूजिहैं सब कोइ।। (25-34)

'रामचंद्रिका' में 'भक्ति-रस' का निरूपण विविध स्थलों पर मिलता है, किन्तु यहां भक्ति-रस, श्रृंगार रस के नीचे दब सा गया है। 'रामचंद्रिका' का प्रधान रस श्रृंगार है, दूसरा रस वीर और उसके पश्चात् ही 'भक्ति रस' का स्थान माना जा सकता है।

'साकेत' में भी श्रृंगार रस' ही प्रधान है यद्यपि भक्ति-रस का निरूपण भी कुशलता से हुआ है। राम के प्रति सुमंत्र के ये वचन देखिए :

नहीं जानत मैं रोऊं, या आनन्द मग्न होऊं,
राम तुम्हारा मंगल हो, प्राप्त हमें आत्मिक बल हो,
तुम भूतल से भिन्न नहीं, हम सबसे विच्छिन्न नहीं,
उर से किन्तु अलौकिक हो, निज पतंक-कुल के पिक हो! (पृ० 113)

गुह-मिलन प्रसंग में गुह के इस भावोच्छवास में भक्ति-रस की ही छटा विद्यमान है :

सहसा ऐसे अतिथि मिलेंगे कब, किसे, क्यों न कहूं मैं अहोभाग्य अपना इसे।
पाकर यह आनंद सम्मिलित लीनता, भूल रही है आज मुझे निज दीनता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त्रुटियों पर पद-धूलि डालिए आइए, घर न देखकर, मुझे निहार निभाइए।
न हो योग्य आतिथ्य, अटल अनुरक्ति है, चाहे मुझमें शक्ति न हो, पर-
भक्त है (पृ० 137-138)

'साकेत सन्त' में शांत रस की प्रधानता रहने पर भी भक्ति-रस का परिपाक भी सुन्दर है। भक्ति-रस के निरूपण सम्बन्धी भरत द्वारा राम के प्रति की गई इस वन्दना-आराधना का उदाहरण पर्याप्त है :

स्वप्न जाल का चंदन संतत
क्षत विक्षत भावों के अक्षत,
अभिलाषा है अपनेपन की पीड़ा का नैवेध चढ़ाऊं ॥
आंसू अर्घ्य, आरती आहें,
हृदयेश्वर की हों जो चाहें।
उर के क्रन्दन की स्तुतियों से, मैं अपना आराध्य रिझाऊं
उन चरणों पर बलि बलि जाऊं ॥ (14.1)

कश्मीरी रामकथा-काव्य में यदि समग्र रूप से कोई रस प्रधान है तो वह भक्ति-रस' ही है। सभी रसों के निरूपण के साथ-साथ भक्ति रस को ही प्रधानता मिली है, प्रायः सभी मुख्य रसों का पर्यवसान भी इसी रस में होता हुआ देखा जा सकता है। प्रत्येक रामायण में कवियों ने पग-पग पर राम की वन्दना अन्य पात्रों द्वारा उसी उत्कट भक्ति-भावना से ही कराई है और राम-भक्ति का प्रतिपादन स्वयं भी मंगलाचरणों और कथा-वर्णन के अन्तर्गत अवसर निकाल कर किया है। 'मानस' की भांति इनमें मानव-पात्रों के अतिरिक्त देवी-देवता —शिव-पार्वती, ब्रह्मा, इन्द्र, वेद आदि भी राम के प्रति उसी भक्ति-भावना से वंदना-अर्चना करते हैं। 'प्रकाश रामायण' में राम के प्रति वशिष्ठ, दशरथ, सम्पाति, वानर सेना, विभीषण, सुलोचना, मन्दोदरी आदि के भक्ति-परक गीतों[117] में भक्ति-रस का उत्कृष्ट निरूपण हुआ है : राम के प्रति भक्तिपरक गीतों के अतिरिक्त 'प्रकाश रामायण' में राम द्वारा 'शिवजी की वन्दना[118] और सीता द्वारा 'पार्वती की वन्दना-प्रार्थना'[119] में भी

147. प्र० रा०, पृ० 10, 28-29, 71-72, 127, 129-131, 147, 116-117, 153-154.
148. प्र० रा०, पृ० 35-37.
149, वही, पृ० 202-205.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भक्तिरस का परिपाक हुआ है। भक्ति की विभिन्न पद्धतियों की विवेचना के साथ साथ भक्तिरस से उन सभी रूपों पर्यवसान इसमें मिलता है।

अन्य सभी रामायणों में विभिन्न स्थलों पर राम और शिवजी की वन्दना-स्तुति में भक्ति-रस का परिपाक हुआ है। भक्ति रस का सुन्दर निरूपण 'विष्णु प्रताप रामायण' में अहल्या, कवि, सुग्रीव, हनुमान, नल-नील, तारा, सुलोचना बानर और भरत आदि द्वारा राम की अर्चना-वन्दनाओं[150] में मिलता है। इसी तरह 'आनंद रामावतारचरित' में देव-गंधर्वों, अहल्या, परशुराम, देवताओं, हनुमान्, बालि, तारा, विभीषण, बानर-सेना तथा रावण वध पर ब्रह्म इन्द्रादि देवी देवताओं तथा मन्दोदरी की वन्दनाएं[151] भी भक्ति रस से ओतप्रोत हैं। 'शर्मा रामायण' में भक्ति रस से परिपूर्ण हनुमान, सुग्रीव, विभीषण, सुलोचना अयोध्यावासियों और शिवजी द्वारा वर्णित वन्दनाएं[152] ही उदाहरणस्वरूप देखी जा सकती है। 'ताराचंद रामायण' में बिन्दुमती, ब्रह्म, इन्द्र, शिव आदि देवता, वेद तथा सनकादिक ऋषि-मुनियों की विभिन्न वन्दनाओं[153] में भक्ति-रस की छटा विद्यमान है।

6.12 निष्कर्ष :

रामकथा में प्राप्य रस से सम्बंधित मूल तत्वों के वैविध्य एवं उत्तरोत्तर विकसित जीवन की विविध स्थितियों तथा घटनाओं के चित्रण के अनुरूप ही दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में अधिकांश रसों का निरूपण सहज और स्वाभाविक रूप में प्रतिफलित हुआ है। रस-सिद्धांत से पूर्णतया परिचित होने पर और किन्हीं विशिष्ट रसों के प्रति विशेष अभिरुचि दर्शा कर भी कवियों ने कहीं भी कृत्रिमता से अपनी रचनाओं में रसों का निरूपण नहीं किया। शास्त्रोक्त परम्परागत रसों के निरूपण के साथ-साथ दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्य में वात्सल्य और भक्ति रस का परिपाक भी समुचित और व्यापक रूप में हुआ है।

उत्कट भक्ति-भावना से प्रभावित होकर दोनों भाषाओं के अधिकतर कवियों ने पूर्व-वर्ती संस्कृत काव्यों के प्रधान श्रृंगार रस को किंचित् मर्यादित और संयत बनाया है। श्रृंगार के संयोग-पक्ष की अपेक्षा वियोग-पक्ष की अभिव्यंजना ही अधिक व्यापक रूप में हुई है। मूलतः रामकथा में आद्यन्त करुणाजनक घटनाओं का ही प्राधान्य

150. वि० प्र० रा०, क्रमशः पृ० 153; वन. 24, किष्किधा. अ 38-41, पृ० 423. 438, 474 तथा पृ० 475.

151. आ० रा०, क्रमसः पृ० 16, 35, 46, 79, 103, 111, 113, 145, 180-181, 189-193 तथा पृ० 198.

152. शर्मा रा०, क्रमशः पृ० 213, 227, 276, 269, 456 तथा 466-467.

153. ता० रा०, क्रमशः पृ० 254, 266-268 तथा 273.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिलता है, इसलिए करुणरस का निरूपण स्वाभाविक रूप में हुआ है। युद्ध-वर्णनों पात्रों के शौर्य-प्रदर्शन और रामकथा में अलौकिक तत्वों के अधिकाधिक समावेश के परिणामस्वरूप विविध स्थलों पर वीर, रौद्र, अद्‌भुत, भयानक और वीभत्स रसों का परिपाक हुआ है। 'हास्य' के निम्न श्रेणी से लेकर व्यंग-वक्रोक्ति तक के सभी रूपों का वर्णन दोनों में उपलब्ध है। वात्सल्य के संयोग-वियोग दोनों पक्षों का निरूपण होने पर भी वात्सल्य के विप्रलम्भ पक्ष की अभिव्यंजना कश्मीरी रामायणों में अपेक्षाकृत अधिक व्यापक ढंग से हुई है। रामकथा की मूलभूत व्यापक धार्मिक भावना के उत्तरोत्तर विकास एवं दोनों भाषा-रामायणकारों की प्रबल भक्ति-भावना के परिणामस्वरूप दोनों कश्मीरी और हिन्दी रामकथा-काव्यों में शांत-रस और भक्ति-रस का निरूपण अधिक व्यापक एवं विस्तृत रूप में हुआ है। रामभक्ति की प्रबल महती प्रेरणा के कारण 'मानस' और अधिकतर कश्मीरी रामायणों में भक्तिरस ही प्रधान है. अन्य सभी रसों का पर्यवसान भी अन्ततः इसी रस में होता हुआ दिखलाई पड़ता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7 काव्य-शैली

7.0 काव्य के बाह्य तथा आभ्यन्तर दो अन्योन्याश्रित पक्ष होते हैं—अनुभूति और अभिव्यक्ति। अनुभूति काव्य की मूलभूत वस्तु या कथ्य है और अभिव्यक्ति उसकी शैली। यहां कथा-काव्य का बाह्य अथवा अभिव्यक्ति पक्ष ही हमारे अध्ययन का विषय है। काव्य-शैली के अन्तर्गत मुख्य रूप से कश्मीरी और हिन्दी रामकथा-काव्यों के आधार पर भाषा, छन्द, अलंकार, संवाद और प्रकृति-चित्रण पर विचार किया जायेगा।

7.1 भाषा

काव्योपकरणों में भाषा का स्थान निःसन्देह छन्द-अलंकारादि उपकरणों से वरिष्ठ है। भाषा का मुख्य उद्देश्य भाव-प्रेषणीयता ही है और अन्य सहायक उपकरण भावों के वाहन को अधिक समृद्ध और प्रभावशाली बनाते हैं। काव्य के अनिवार्य और अविभाज्य अंग भाषा के बारे में डा० भगीरथ मिश्र लिखते हैं—"भाषा कविता का शरीर है। बिना भाषा के भाव निराकार हैं और उनका व्यापक प्रभाव नहीं है।...कविता का प्राण भाव है अवश्य, पर कला की देह भाषा ही है। यह उसका प्रमुख उपकरण है और अंग भी है।"[1] काव्य-भाषा के दो मुख्य रूप माने जाते हैं—जनभाषा और साहित्यिक भाषा। जन-भाषा से तात्पर्य ऐसी भाषा से है जो जनसाधारण की भाषा के निकटवर्ती हो, सर्वसाधारण के लिए बोधगम्य हो और जिसमें भाषा-क्षेत्र से सम्बंधित विशिष्ट लोकतत्वों, मुहावरों और लोकोक्तियों का समावेश किया गया हो। विशिष्ट साहित्य-शास्त्रीय तत्वों, व्याकरण आदि की दृष्टि से समृद्ध और सम्पुष्ट भाषा साहित्यिक भाषा कहलाती है। दोनों कश्मीरी और हिन्दी राम कथा-काव्यों में भाषा के दोनों तत्वों का सुन्दर सामंजस्य मिलता है।

7.1.1 कश्मीरी

भक्त कवियों ने लोकमानस में रामचरित एवं रामभक्ति की प्रतिष्ठा के प्रति-

---

1. हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास, सं० 2015, पृष्ठ 393.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पादन एवं प्रसार हेतु प्राय: लोकभाषा को ही अपनाया किन्तु उस भाषा-प्रवाह के साथ-साथ भाषा की साहित्यिक प्रतिष्ठा का भी निरूपण किया गया । भाषा का यह अद्भुत सामंजस्य किसी भी प्रकार के चमत्कार-प्रदर्शन से मुक्त होकर सर्वथा जन-सुलभ, बोधगम्य और मधुर है । कश्मीरी रामायण कश्मीरी हिन्दुवी भाषा की प्रतिनिधि रचनाएं हैं, जिनमें संस्कृत शब्दों के तत्सम-तद्भव दोनों रूपों का बाहुल्य मिलता है । इनके साथ-साथ फ़ारसी-अरबी के भी शब्द मिलते हैं ।

7.1.1.2 शब्द-समूह

शिष्ट हिन्दुवी कश्मीरी में संस्कृत के तत्सम-तद्भव और फ़ारसी-अरबी के शब्दों का व्यापक समूह मिलता है, जिन का प्रयोग कश्मीरी रामायणों में हुआ है ।

7.1.2.1.1 तत्सम-शब्द

कश्मीरी रामायणों में प्रयुक्त संस्कृत के तत्सम विराट् शब्द-समूह में इन शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग हुआ है—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, अद्वैत, मोह, दम्भ, अहंकार, कर्म, ज्ञान, दर्शन, मुक्ति, संसार, संहार, यज्ञ, सुर-असुर, देवता, राक्षस, निर्मल, निःष्काम, निःश्चल, आकार, मिथ्या, महिमा, भवसागर, निर्गुण-सगुण, आकाश, पाताल, पृथ्वी, भूमि, सर्वव्यापक, आदिदेव, भक्तवत्सल, सर्वमंगल, मंगलाकार, परिपूर्ण, स्वयंभू, अनाश्रित, अगम, अपार सर्वज्ञ, आदि शक्ति, विघ्नहर्ता, चिदानंद, निर्द्वन्द्व, दुःख-भंजन, सन्तोष आदि के अतिरिक्त वर्ण्य-विषय से सम्बंधित देवी-देवताओं, वानर-राक्षसों एवं अन्य पात्र-स्थानों के विशिष्ट नाम-रूप । ये सभी शब्द-शिष्ट हिन्दुवी कश्मीरी में मूल रूप में प्रचलित हैं ।

कश्मीरी भाषा में उपरिलिखित तत्सम शब्दों के प्रयोग के अतिरिक्त इनमें कहीं-कहीं पर सम्पूर्ण वाक्य या वाक्यांशो की रचना देव-वाणी संस्कृत में हुई है । 'विष्णु-प्रताप रामायण' में ऐसे स्थल अधिक हैं । जैसे —

नमाए आदि देवं च नमाए भक्तवत्सल ।
नमाए सर्वभूमं च नमाए सर्वमंगलं ।। (1.1)
नमाए सतगुरुं परम पुरुषोत्तम परिपूर्णम् ।।
परमात्म परमेश्वरं नारायणं श्री सतगुरुं ।। (1.2)

'मंगलाचरण ' स्वरूप गए थे भजनों में ही अधिकतर संस्कृत का प्रयोग किया गया है ।

7 1.2.1 2 तद्भव-शब्द

हिन्दी-सस्कृत के कई शब्दों का प्रयोग एवं उच्चारण हिन्दुवी कश्मीरी की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दैनिक बोलचाल में भिन्नता के साथ होता है, उन शब्दों का प्रयोग भी कश्मीरी रामायणों में उसी रूप में मिलता है। उदाहरण के लिए प्रायः हिन्दी व्यंजन 'ज' 'च' 'प' तथा 'त' उच्चारण-प्रयोग की दृष्टि से कश्मीरी में क्रमशः 'ज़', 'च़', 'फ' तथा 'थ' में परिवर्तित होते हैं; जैसे—ज़गत (जगत), ज़ीव (जीव), च़ंचल (चंचल), च़क्र (चक्र), रूफ (रूप), तफ (तप), आरथी (आरती), उथ्पति (उत्पत्ति) आदि। इसी तरह शब्दोच्चारण की दृष्टि से 'न' 'क्ष' 'ष', 'वि' क्रमशः 'न्य' 'ख्य', 'ख', 'व्य' में परिवर्तित होते हैं, जैसे—न्यराकार (निराकार), न्यर्मल (निर्मल), न्यथर (नेत्र) राखयस (राक्षस), ख्यन (क्षण), रख्या (रक्षा), व्यचार (विचार), व्यस्मृत (विस्मृत) आदि। अतिरिक्त इन शब्दों के तद्भव शब्दों के अन्तर्गत ये शब्द गिनाये जा सकते हैं - दीफ (दीप), यछ़ा (इच्छा), यगन्य (यज्ञ), सिरियि (सूर्य), शथुर (शत्रु), सथ-असथ (सत्य-असत्य), प्रखट (प्रकट), आश्च़र (आश्चर्य), मूख्य (मोक्ष), जनार्दन (जनार्दन), त्रिज़गत (त्रिजगत), थावर (स्थावर), वअनी (वाणी), सांगोवान (सांगोपांग), रख्यक (रक्षक), व्याद (व्याधि), दूह (द्वि) आदि।

7.1.2.1 3 विदेशी भाषाओं के शब्द एवं वाक्य

कश्मीर रामायणों के शब्द भण्डार में विदेशी भाषाओं में अधिकतः फ़ारसी-अरबी के शब्द मिलते हैं, कुछ रामायणों में थोड़े अंग्रेजी के भी शब्द प्रयुक्त हुए हैं। कश्मीरी 'प्रकाश रामायण' में अधिकाधिक फ़ारसी-अरबी शब्दों का भण्डार मिलता है। कवि ने फ़ारसी-अरबी के कुछ सरल-सीधे और बोधगम्य शब्दों का यथोचित प्रयोग किया है, जैसे—बेजा, बेगाना, बेगम, रफाकत, शमाशम, अगाफिल, मुहताज, कुमेदान, दिलरुबा, आजिज़, आलम, दिलगीर, प्वय, लश्कर, फौज, हुक्म, पैगाम, अरावस, इताअत आदि। इन शब्दों के यत्र-तत्र कश्मीरी-मिश्रित प्रयोग के अतिरिक्त आलोच्य रामायण में कई स्थलों पर फ़ारसी शब्दों के अधिकाधिक प्रयोग के कारण वाक्य या वाक्यांशों में साधारण पाठक भाषा की विलशिष्टता एवं दुरूहता का अनुभव करता है। जैसे—

हकीमा बे दवा करि ज़िन्द मोर्दन।
कलम ज़न बरहवा तस्वीर लेखन॥
इमारत ग़र छ बर आब रवानै।
करान तामीर बनावन संगीन खानै॥
मुंजम त्युथ खबर अज़ आगाज़ व अंजाम।
दिलस लीखित ज़ गर्दिश हाय अयाम॥ (पृ० 13-14)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'शंकर रामायण' में दैनिक बोलचाल में प्रयुक्त होने वाले फ़ारसी शब्दों का ही प्रयोग किया गया है। 'वि० प्र० रा०' में बहुसंख्यक फ़ारसी-अरबी शब्द मिलते हैं, जिनमें से 'शाद, गुलशन, गुलिस्तान, जबिस्तान, रंज, आलम, बर ज़मीन, सबरो-आराम, ताबदामन, पिदर, गुबारा आदि शब्दों का सुन्दर और सहज रूप में प्रयोग कश्मीरी वाक्यों में हुआ है। प्रस्तुत रामायण में कुछ अंग्रेज़ी शब्दों—मदर, फादर, फिटन, साइकिल, मोटर, पलाटून आदि का भी प्रयोग हुआ है। जैसे—

'फिटन बग्य या साइकल मोटर गुबारा, अरब गुरि त हस्त्य कोहसार'

(पृ० 750)

'आनंद रामावतार चरित' में भी फ़ारसी-अरबी के सरल और बोधगम्य शब्दों का ही प्रयोग किया गया है। कवि फ़ारसी के प्रसिद्ध विद्वान् थे, स्वतंत्र रूप से उन्होंने फ़ारसी की कई रचनाएं लिखीं। प्रस्तुत रामायण के अन्त पर भी एक लम्बा फ़ारसी भाषा में विरयित भजन मिलता है जिसमें कवि भगवान राम के प्रति आभार प्रदर्शन करते हैं, जिनकी अनुकम्पा से ही कवि 'रामावतार-चरित' लिखने में समर्थ हो सके।[2] 'शर्मा रामायण' में अन्य सरल शब्दों के अतिरिक्त 'खम, फिराक, बयकदम, नीलोफर, अबतरा, पयाम, हमदिगर आदि शब्दों का प्रयोग सुन्दर है। प्रस्तुत रामायण में शुद्ध फारसी के वाक्य या वाक्यांश भी देखने को मिलते हैं :

1. चरागे ज़हान राम खुरशीद चहर।
   ज़ि चहरिश फरोग चराग सिपहर ॥ (पृ० 72)
2. व बोये पयामे रमा च़ शताब। (पृ० 190)
3. ज़ूद बामन बिगो। (पृ० 190)
4. मोइ आन सीम काम। (पृ० 191)

'ताराचन्द रामायण' में फ़ारसी-अरबी शब्दों का प्रयोग सन्तुलित और अत्यल्प है। हामिल, शाद, तखुम तथा वाक्यांश 'बमै अहल व अयाल' आदि का प्रयोग खटकता नहीं है। उक्त रामायण में अंग्रेज़ी शब्द 'कमांडर-इन-चीफ'[3] का भी प्रयोग हुआ है।

71.12. मिश्रित भाषा

कश्मीरी 'विष्णु प्रताप रामायण', 'आनन्द-रामावतारचरित' और 'शर्मा रामायण'

---

2. आ० रा०, पृष्ठ 248-249.
3. ता० रा०, पृष्ठ 109.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में कश्मीरी के अतिरिक्त बीच-बीच में विभिन्न कथा-प्रसंगों के वर्णन और अधिकतर वन्दनाओं में उर्दू-हिन्दी की मिश्रित भाषा का स्वतंत्र रूप से प्रयोग हुआ है। 'वि० प्र० रा०' में इसका प्रयोग अधिक स्थलों पर हुआ है—भरत द्वारा राम के प्रति वन्दना, दण्डक-वन चित्रण, सीता-मंदोदरी मिलन, राम-लक्ष्मण द्वारा गनेश की वन्दना, नारायण-आराधना, सुग्रीव द्वारा राम के समक्ष अपना हाल वर्णन करना, बानरों द्वारा राम की वन्दना, गनेश-स्तुति, राम द्वारा सेना को उपदेश, लक्ष्मण-मूर्च्छा पर राम के विलाप सुलोचना द्वारा राम की वन्दना, कुम्भकरण की मृत्यु पर सनकादिक ऋषियों द्वारा शिव के प्रति स्तुति-अर्चना, रावण-मृत्यु, राम द्वारा सीता को सन्देश, राम-वन्दना, सीता द्वारा वाल्मीकि की वन्दना, लव-कुश-रूप वर्णन नारद-लीला, हनुमान की सीता के प्रति आराधना, सीता द्वारा राम-वन्दना, वाल्मीकि द्वारा शिव की वन्दना आदि प्रसंगों में कवि ने अधिकांश रूप में इसी उर्दू-हिन्दी की मिश्रित भाषा का आश्रय लिया है।[4] इन्हीं प्रसंगों में से उर्दू-हिन्दी मिश्रित भाषा की कुछ पंक्तियां उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत हैं :

1. दण्डक बन खासकर बैकुण्ठ का धाम, परमानंद मय लक्ष्मण सियाराम।
कभी गुलशन गुलिस्तान में उछलते, कभी बाग और नबिस्तान में टहलते।
कभी रघुबीर अकेले सैर करते, कभी लक्ष्मण खुशी से पैर धरते।
कभी सन्ध्या कभी सत्संग होता, कभी राक्षस-बच्चों से जंग होता॥
(3. 20)

2. सीता को देखती मन्दोदरी मां, हुई रंज ओ, आलम में आप तिग्यिां।
यकीन करके वह कहती है यही बात यह कैसे आई लड़की बाप के साथ।
(3. 25)

3. मरेगी जानकी इस दुख में आखर, बचेगी कैद में कब तक वहां फिर।
....
विश्वम्भर राम जी दर नाला-गम, कमल-नैनों में आंसू हैं छमाछम।
(पृ० 380)

4. शरण आए त्रिगुण-त्रिभवन, परमात्मा हरे शम्भू।
तेरी माया अनिर्वचनीय तेरी लीला अनूप है।
उत्तम सबसे तेरी स्मरण परमात्मा हरे शम्भु। (6. 101)

---

4. वि०प्रा०रा०. क्रमशः पृ० 225; वन अ 20, 25, 29, 33, किष्किंधा. अ० 40, 44, पृ० 324; लं०. 70, पृ० 380,423; लं०. अ० 101, 119, 157, 158, 175, 189, 191; अश्व. अ 25; पृ० 778; अश्व. अ 33 तथा 35.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'आनंद रामायण' में भी एकाध स्थल पर ऐसी भाषा का प्रयोग हुआ है। पाताल लोक में हनुमान को देखने पर महारावण के इन प्रश्नों में मिश्रित भाषा की शिथिलता देखी जा सकती है :

कहां से बन्दर ओ ! आए यहां तुम, तड़पकर गिर गया किससे यहां तुम।
हमारे रौब से डरता है अजगर तुम कैसे यहां पहुंचे तड़पकर ।।
(पृ० 207)

'शर्मा रामायण' में ऐसी भाषा पर अधिकतर संस्कृत और फ़ारसी का प्रभाव पड़ा है। उदाहरणस्वरूप कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं।

महादेव राम की वन्दना इन शब्दों में करते हैं :

जय रघुनंदन जय रघुनंदन, जय-जय त्रिभवन-सार !
निर्द्वन्द्व, निष्क्रिय, निर्मल, निर्गुण अप्रेक्षण है तू,
सतचिदानंद सामान्य-विशेष, जड़-चेतन है तू।
है तू निर्विकार—
तुम्ही उत्पत्ति, तुम्ही पालन तुम्ही संहार।
तुम्ही ब्रह्मा तुम्ही विष्णु तुम्ही गंगाधार ।।
तुम ही सर्वाधार— (पृ० 467)

बिन्दुवती राम की वन्दना इन शब्दों में करती हैं :

विनती मेरी सुनो श्याम जी। श्रीराम जी, श्रीराम जी ।।
भूपों के तुम्हीं भूप हैं, सबसे तुम सतचित रूप हैं। अब क्यों यह मुझ पर कूप है।
है नाम तेरा कष्टहर, यह कष्ट मुझको दूर कर। विनती मेरी मंजूर कर—
होकर दयासागर यह क्यों, हमेशा खफा रखा है यों। तन-मन तुम्हें अर्पण करूं—(पृ० 417)

लव-कुश के हाथों राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के मरणोपरांत सीता के दुःख-विह्वल करुण प्रलापों में भी फ़ारसी निष्ठ इसी भाषा का प्रयोग हुआ है :

ऐ अयल इन्साफ तुम को इक जरा भी है नहीं,
कैसा संगदिल है तू तुझमें कुछ दया भी है नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐ कलक मक्कार है तू आह तुझे धिकार है, तू जफा पेशा और तू
कैसा बद किरदार है ।
शरबते शीरीं पिलाता है तू गाहे गाह सम………
क्या विधाता ने लिखा मेरी जबीन पर हाय हाय ! आंखों से आंसू-
बहाना और करना 'वाय वाय ।'
ऐ बिधाता क्यों उठायी ऐसे हर्फों पर कलम…… । (पृ० 527)

7.1.2 हिन्दी :

यह निर्विवाद तथ्य है कि तुलसी ने 'मानस' की भाषा में अवधी को ही प्राथमिकता दी। उक्त भाषा से सम्बंधित पूर्वी और पश्चिमी, प्राचीन और नवीन के विवाद-विवेचन से दूर रहकर भाषा-स्वरूप ही दृष्टि से 'मानस' की भाषा को बैसवाड़ी अवधी' मानना अधिक उपयुक्त है, जिसका समर्थन भाषावैज्ञानिक विश्लेषण और परम्परा दोनों करते हैं ।[5]

तुलसी ने 'मानस' में लोक-भाषा को ही प्रश्रय दिया। उन्होंने भाषा के 'अति-मंजुल' और 'सर्वज्ञ' रूप पर विश्वास प्रकट करते हुए 'मानस' के प्रारम्भ में ही 'भाषानिबंधमतिमंजुल',[6] 'भाषा-भनिति'[7] और 'गिरा ग्राम्य'[8] कहकर भाषा के सम्बन्ध में निजी दृष्टिकोण स्पष्ट किया। भाषा को उन्होंने विविध स्थलों पर सरल और 'सर्वज्ञ' नाम से अभिहित किया है ।[9] तुलसी ने अद्भुत कला-कौशल से भाषा के लौकिक और शास्त्रीय दोनों पक्षों का समन्वय करके भाषा का एक उत्कृष्ट, सरल एवं साहित्यिक रूप 'मानस' में निर्मित किया। डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी इसके विषय में लिखते हैं --"तुलसीदास की भाषा जितनी ही लौकिक है" उतनी ही शास्त्रीय। उसमें संस्कृत का मिश्रण बड़ी चतुरता के साथ किया गया है। जहां जैसा विषय होता है, भाषा अपने आप उसके अनुकूल हो जाती है। ·· जहां भाषा साधारण और लौकिक होती है, वहां तुलसीदास की उक्तियां तीर की तरह चुभ जाती हैं और जहां शास्त्रीय और गम्भीर होती हैं वहां पाठक का मन चील की तरह मंडरा कर प्रतिपाद्य सिद्धांत को ग्रहण करके उड़ जाता है।"[10] मानस की मूल भाषा अवधी है, किन्तु इसके समस्त भाषा-गठन में संस्कृत-शब्दावली

---

5. डा० देवकीनंदन श्रीवास्तव—तुलसी की भाषा, पृ० 361.
6. मानस 1.i श्लोक 7.
7. मानस 1.9.
8. वही 10.
9. वही 1. 14-15, 31, 7. 130 श्लो० 1.
10. हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ० 106.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की प्रचुरता दृष्टिगोचर होती है। प्रत्येक काण्ड के आदि श्लोकों या मंगलाचरण स्वरूप वंदनाओं में तो संस्कृत का एकाधिकार ही है। डा० देवकीनंदन श्रीवास्तव के विचारानुसार 'जनोपयोगिता के विचार से तो तुलसी प्रचलित जन-भाषा के पक्षपाती थे, किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से वे संस्कृत के प्रति श्रद्धा-भाव रखने वाले थे।···जनभाषा के प्रति अपनी आत्मीयता और संस्कृत के प्रति श्रद्धा-भाव का साथ-साथ पूर्ण निर्वाह करना, तुलसी जैसे लोकनायक का ही काम था।'[11]

7 1.2.1 शब्द-समूह

7.1.2.1.1. रामचरितमानस की भाषा

भाषायी महाकाव्य-परम्परा में तुलसीदास के समक्ष ठेठ अवधी का 'पद्मावत' था। तुलसीदास ने उस 'ठेठ 'अवधी' को व्यापक लोक-भाषा बनाने के उद्देश्य से उदारतापूर्वक उसमें संस्कृत-प्राकृत के अतिरिक्त अन्य प्रांतीय भाषाओं तथा बोलियों—राजस्थानी, ब्रज, गुजराती, बुन्देली आदि एवं अरबी-फारसी के बहु-संख्यक शब्दों का प्रयोग किया। भाषा की इस समन्वयात्मक प्रवृत्ति से ही 'ठेठ अवधी' को साहित्योत्कर्ष मिला और वह श्रेष्ठ साहित्यिक भाषाओं में सुशोभित हुई। विभिन्न ग्रन्थों के आधार पर संस्कृत के तत्सम और तद्भव दोनों प्रकार का विराट् शब्द-भण्डार 'मानस' में मिलता है। डा० सर सीताराम के शब्दों में 'उन्होंने (तुलसी ने) रामचरितमानस में संस्कृत के सभी श्रेष्ठ ग्रन्थों में से मधु इकट्ठा करके भर दिया है। यह देखकर महान् आश्चर्य होता है कि कितने अधिक और कितने बड़े-बड़े संस्कृत ग्रन्थों में से 'मानस' की सजावट के लिए सामान एकत्रित किया गया है।'[12] एक अन्य विद्वान् लिखते हैं—'तुलसीदास जी की कविता की बदौलत लगभग नब्बे हज़ार संस्कृत शब्द देहात के अपढ़ आदमियों के घरों में भी जा बैठे हैं···ये शब्द हिन्दू संस्कृति के मूल स्वरूप हैं, जो बौद्धमत और पालि प्राकृति और अपभ्रंश भाषाओं के अंधड़ में उखड़ गये थे, तुलसीदास ने उन्हें फिर जमा दिया।'[13] संस्कृत एवं देशी प्रांतीय बोलियों के शब्दों के अतिरिक्त 'मानस' में फ़ारसी-अरबी विदेशी शब्दों—'जहान, कागज, गरीबनेवाज़, बखशीश, रुख, गरदन, ख्वार, शोर, गुमान, हवाले आदि'[14] का प्रयोग किया गया है। विदेशी शब्दों को तुलसीदास ने उच्चारण की सुविधा के लिए तद्भव रूप में ही स्वीकार किया है—

---

11. तुलसी की भाषा, पृ० 9.
12. कल्याण वर्ष 13. अंक 3. निबंध रामचरितमानस की कुछ विशेषताएं।
13. श्री रामनरेश त्रिपाठी—तुलसी और उनका काव्य, पृ० 277.
14. डा० देवकीनंदन श्रीवास्तव—तुलसीदास की भाषा, पृ० 207.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्होंने कागज़ के लिए कागद, शोर के लिए सोर, बख़शीश के लिए बखसीस आदि शब्दों का ही प्रयोग किया है ।

"रामचरितमानस' में महाकाव्योचित भाषा-शैली के प्रायः समस्त गुण विद्यमान हैं । तुलसीदास की भाषा के विषय में डा० देवकीनंदन श्रीवास्तव लिखते हैं — "उनकी भाषा में वाल्मीकि की स्वाभाविकता, व्यास की समास-शक्ति, भारवी का अर्थ-गौरव, बाण का लालित्य, कालिदास की प्रासादिकता चंद की अनेक रूपता, कबीर की ओजस्विता, जायसी की ठेठरूपता और सूर की माधुरी मर्यादित एवं समन्वित रूप में विद्यमान है।"[15] भाषा-शैली के इस अद्भुत समन्वय का प्रतिनिधि रूप 'रामचरितमानस' में मिलता है । डा० माताप्रसाद गुप्त के शब्दों में 'तुलसीदास की अनुपम शैली का सौन्दर्य उसकी ऋजुता, उसकी सुबोधता, उसकी सरलता गुण उसकी चारुता, उसकी रमणीयता, उसके लालित्य और उसके प्रवाह में है, और ये रामचरितमानस में चरम उत्कर्ष को प्राप्त होते हैं । रामचरितमानस की शैली सरल और आडम्बर-विहीन है : 'कवि उसे किसी ऐसी वस्तु से सजाने का प्रयास नहीं करता जो पाठक के ध्यान को काव्य की वस्तु से हटा सके । वह स्वाभाविक तथा स्वतः प्रवर्तित है ।'[16]

7.1.2.1.2 रामचंद्रिका की भाषा

'रामचंद्रिका' की रचना 'ब्रज' भाषा में हुई है । अवधी की अपेक्षा ब्रजभाषा अधिक व्यापक थी, फिर केशव बुन्देलखण्ड के निवासी थे और बुन्देलखण्डी भाषा ब्रज के समीप की भाषा थी । केशवदास संस्कृत के पंडित थे और विद्वान् तथा समाज के प्रतिष्ठित लोग 'भाषा' को हेय समझते थे । केशवदास लिखते हैं :

भाषा बोलि न जानहीं जिनके कुल के दास ।
भाषा कवि को मन्द मति तेहि कुल केशवदास ।।

फिर भी भाषाधिकार के कारण इसी लोक-भाषा को उन्होंने विद्वत् समाज के समक्ष एक साहित्यिक भाषा के रूप में खड़ा किया, जिनका प्रयत्न स्तुत्य है । प्रथम बार ब्रज-भाषा महाकाव्योचित भाषा सिद्ध हुई । जिसमें कवि के निजी पांडित्य का सकुशल समावेश मिलता है । केशवदास संस्कृत के प्रकांड पंडित थे, उनकी 'रामचंद्रिका' पर संस्कृत भाषा-प्रवाह का समुचित प्रभाव पड़ा है, जिसके साथ-साथ बुन्देलखण्डी और अरबी-फारसी शब्दों की प्रचुरता देखने को मिलती है । इस तरह

---

15. डा० देवकी नन्दन श्री वास्तव—तुलसीदास की भाषा, प० 345.
16. तुलसीदास, पृ० 361.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

केशवदास का शब्द-भण्डार काफी समृद्ध है। डा० धीरेन्द्र वर्मा के शब्दों में "शब्दों पर उनका असाधारण अधिकार था और उनका शब्द-भण्डार भी बहुत ही विस्तृत था।'[17]

आलोचकों द्वारा केशवदास की भाषा-शैली पर पांडित्य एवं चमत्कार-प्रदर्शन का आरोप करके उनकी भाषा को दोषयुक्त ठहराने का प्रयत्न किया गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं —"वे संस्कृत साहित्य से सामग्री लेकर अपने पांडित्य और रचना-कौशल की धाक जमाना चाहते थे। पर इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए भाषा पर जैसा अधिकार चाहिए, वैसा उन्हें प्राप्त न था। अपनी रचनाओं में उन्होंने अनेक संस्कृत काव्यों की उक्तियां भरी हैं। पर उन उक्तियों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में उनकी भाषा बहुत कम समर्थ हुई है। पदों और काव्यों की न्यूनता अशक्त फालतू शब्दों के प्रयोग और सम्बन्ध के प्रभाव आदि के कारण भाषा भी अप्रांजल और ऊबड़-खाबड़ हो गई है और तात्पर्य भी स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं हो सका है।"[18] 'रामचंद्रिका' के आधार पर केशवदास की भाषा का विवेचन करते हुए इसमें सहजतया अश्लीलत्व, अक्रमत्व, अधिक पदत्व तथा पुनरुक्ति आदि विभिन्न दोष दृष्टिगत होते हैं। डा० विजयपालसिंह ऐसे कई दोषों की ओर इंगित करते हुए कहते हैं—'उनके दोष प्रायः रसानुभूति तथा मुख्यार्थ प्रतीति में बाधा नहीं देते। अतः अनेक स्थलों पर तो उन्हें दोष कहा ही नहीं जा सकता।'[19] फिर भी शब्दों के तोड़-मरोड़ के कारण जनेकानेक स्थलों पर भाव-दुरूहता व्यंजित हुई है जिसका उत्तरदायी उनकी पांडित्य-प्रदर्शन वृत्ति ही है। 'पांडित्य-प्रदर्शन की प्रेरणा से जो छन्द नहीं लिये गये हैं, उनमें कभी-कभी विषय, भाव और रस के अनुकूल शब्दों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।'[20] काव्य में माधुर्य, ओज और प्रसाद तीनों गुणों से इनकार नहीं किया जा सकता है। शब्द-शक्तियों का समुचित प्रयोग 'रामचंद्रिका' में किया गया है। आलोचकों के विचारानुसार 'भाषा में ओज, माधुर्य और प्रसाद तीनों गुणों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। शब्द शक्तियों का स्वाभाविक प्रयोग है—विशेषकर व्यंजना के कारण उनके संवाद हिन्दी-साहित्य में निर्विवाद सर्वोच्च हैं।'[21]

7.1.2.1.3 साकेत की भाषा

'साकेत' की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है। साकेत में सर्वप्रथम खड़ी बोली को

---

17. हिन्दी साहित्य-द्वितीय खण्ड। सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा० ब्रजेश्वर वर्मा पृ० 431.
18. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 209.
19 केशव और उनका साहित्य, पृ० 336.
20. आचार्यकेशवदास—डा० हीरालाल दीक्षित, पृ० 196.
21. केशव और उनका साहित्य—डा० वि० पा० सिंह, पृ० 336.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काव्योचित, शिष्ठ और प्रौढ़ रूप मिला है। डा० नगेन्द्र के विचारानुसार गुप्त जी की भाषा का एक प्रमुख गुण यह है कि उसमें खड़ी बोली अपनी विशेषता पूर्णतया सुरक्षित रखती है।[22] खड़ी बोली के स्वरूप-निर्धारण और विकास में मैथिलीशरण गुप्त का अन्यतम योगदान है। खड़ी बोली को सर्वप्रथम काव्योपयुक्त सिद्ध करने के लिए उनका परिश्रमसाध्य प्रयत्न स्तुत्य है। ब्रजभाषा के प्रति कवियों का अत्यधिक मोह छूट नहीं पाया था कि अपनी कृतियों द्वारा गुप्त जी ने समस्त विचारधारा ही बदल दी। डा० सत्येन्द्र भाषा-मूल्यांकन करते हुए लिखते हैं—"खड़ी बोली की कोई भी रचना ब्रजभाषा के चढ़े हुए नशे को अभी तक (गुप्त जी से पहले) उतार नहीं पाई थी···यह काम गुप्तजी ने किया।"[23] आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के शब्दों में "हिन्दी संसार तो गुप्त जी के प्रति अपनी कृतज्ञता ही प्रकट कर सकता है, कि उन्होंने साहित्यिक और काव्योचित भाषा के निर्माण का प्राथमिक कार्य किया और उसे प्रशंसनीय सीमा तक आगे बढ़ाया।"[24] 'साकेत' में गुप्त जी ने खड़ी बोली के साथ-साथ संस्कृत, ब्रज, अवधी आदि अन्य प्रान्तीय भाषाओं और अरबी-फ़ारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है। गुप्त जी ने कुछ नये शब्द भी गढ़ लिए हैं जिनका प्रयोग उन्होंने सर्वप्रथम किया है, जैसे—लाक्ष्मण्य, परिवर्तमान, प्रत्यय-दृढ़, विरुद-भ्रष्ट औदास्य आदि। अतिरिक्त इन शब्दों के विभिन्न क्रियाओं का भी विचित्र प्रयोग हुआ है—अनुकूलता, स्वीकारना, सन्धानना, व्यापना, उच्चारना तथा जन्मना आदि। 'साकेत' में उनके संस्कृत-ज्ञान की प्रौढ़ता का पुट अवश्य अधिक है, इसलिए भी कहीं-कहीं पर 'तुकबन्दी' के बन्दी होकर अपनी कृति में लम्बे-लम्बे समासों की भरमार की है।

संक्षेप में गुप्त जी के 'साकेत' की भाषा का रूप जिन भाषायी परिस्थितियों में निर्मित हुआ है, वह स्तुत्य है। 'साकेत' में ही खड़ी बोली को सर्वप्रथम काव्योचित रूप मिला। आचार्य वाजपेयी के शब्दों में 'गुप्त जी ने 'साकेत' में शब्दों के प्रति विशेष आत्मीयता दिखाई है।"[25] गुप्त जी के समस्त भाषायी प्रयत्न प्रशंसनीय हैं और आधुनिक हिन्दी काव्य के विकास में गुप्त जी के 'साकेत' ने जो योग प्रदान किया है, सहजतया उसे हिन्दी-संसार भूल नहीं सकता है।

7.1.2.1.4. वैदेही-वनवास की भाषा

'वैदेही-वनवास' की भाषा में संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का विकसित एवं परिमार्जित रूप मिलता है। कई स्थलों पर संस्कृत गर्भित पदों का ही अधिकतर प्रयोग

---

22. 'साकेत'—एक अध्ययन, पृ० 159.
23. गुप्त जी की कला, सं० तृतीय, पृ० 7.
24. आधुनिक साहित्य, पृ० 108.
25. हिन्दी साहित्य—बीसवीं शताब्दी, पृ० 51.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुआ है,[26] किन्तु भावात्मक दुरुहता कहीं भी दिखाई नहीं देती है। उपाध्याय जी भाषा पर पूर्ण अधिकार एवं प्रभुत्व रखते हैं, और भाषा उनके भावों का अकृत्रिम और स्वाभाविक रूप में वाहन करती है। भाषा की सरलता देखने के लिए एक उदाहरण यथेष्ठ है :

सुधा है वहां बरसती आज, जहां था बरस रहा अंगार।
वहां है श्रुत स्वर्गीय निनाद, जहां था रोदन हाहाकार ।।

कवि का प्रभुत्व-पूर्ण शब्द-चित्रण इन निम्नलिखित पंक्तियों में देखा जा सकता है :

थे द्वितीय नयनाभिराम विकसित वदन ।
कनक कांति माधुर्य-मूर्ति मन्मथ मथन ।
विविध वर वसन लसित किरीटी कुण्डली ।
कर्म-परायण परम तीव्र साहस सदन ।।

'वैदेही-वनवास' की भाषा का प्रवाह प्रसाद-गुणमयी, परिमार्जित एवं सुव्यवस्थित है। शब्द-चयन और पद-विन्यास सर्वत्र प्रसंग तथा भावों के अनुकूल है। कवि ने सुचारु रूप में लोक-प्रचलित मुहावरों एवं लोकोक्तियों का ही प्रयोग किया है।

7.1.2.1.5 साकेत-संत की भाषा

'साकेत-संत' की भाषा प्रौढ़ और मजी हुई खड़ी बोली ही है जिसमें अधिकतर संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है। अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग संस्कृत की तत्सम शब्दावली के साथ कई स्थलों पर खटकता अवश्य है। कहीं-कहीं पर आखिर, नक्शा, ताज जैसे सरल उर्दू शब्दों का प्रयोग भी उचित नहीं जान पड़ता है। जैसे :

1. **आखिर** तुम हो भरत राम ही के लघु भाई।

2. वस्तुस्थिति का **नक्शा** बदला।

3. तीर्थ के जल और पावन **ताज** लो।

कई स्थलों पर रेखांकित शब्दों एवं वाक्यांशों का प्रयोग भी अशुद्ध प्रतीत होता है :

1. आर्या सीता जो सदा सुखों में **पाली**।

---

26. वैदेही वनवास, सर्ग 1.15,4.38, 12.39-40 आदि.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. सभी का कारण में हूं एक, यही कहता मन का उद्रेक।

3. इसकी उजटों युक्त मही, फूहड़ सी खीलें काढ़ रही।

4. अहह ! माण्डवी को तो आहों का भरना वर्जिततर था। आदि

'साकेत सन्त' में निम्नलिखित लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग सुन्दर रूप में हुआ है—'भले निज हाथ', उर पर लौटेंगे सांप, हो गया हवा, जिसके हाथों है लाठी, वह भैंस हांक ही लेगा, पैरों पर तूने आप कुल्हाड़ी मारी, बाल भी बांका हुआ, अंधों में काना राजा, बेड़ा पार करो, आंखों के तारे, नाक कटाई आदि।[27]

संस्कृत के तत्सम शब्दों से युक्त 'साकेत-सन्त' की भाषा में खड़ी बोली का सुन्दर और सरस प्रवाह मिलता है। माधुर्य, ओज और प्रसाद में माधुर्य और प्रसाद के भाषायी गुणों की प्रधानता है। शब्द-शक्तियों में अभिधा, लक्षणा और व्यंजना तीनों का प्रयोग मिलता है। 'साकेत संत' में प्रसाद गुण से युक्त भावानुकूल भाषा का प्रयोग देखिए :

1. सभी को एक गोदी में खिलाती, सभी को पाठ समता का पढ़ाती।
   विषम उस भूमि में समठौर लख कर, चिता विरची गई शव-हेतु सत्वर॥
   (6. 26)

2. हवा सी तप्त धरती तप रही थी, हवा जल-जल व्यथा में कंप रही थी।
   लता द्रुम पुंज झुलसे से खड़े थे, सरोवर तक पिपासाकुल पड़े थे॥
   (10. 17)

7.2. छन्द

पद्य-काव्य का एक मुख्य अंग छन्द ही है, लय तुक और काव्य-संगीत के साथ इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। दोनों भाषा-रामायणकारों ने अपनी रचनाओं में निजी भाषिक विशेषताओं के अनुकूल विभिन्न छन्दों का प्रयोग किया है। दोनों भाषाओं की प्रमुख छन्द-शैलियों के सन्दर्भ में ही यहां पर अलग-अलग से विचार किया जा सकता है।

7.2 1. हिन्दी

हिन्दी की छन्द-योजना पर अधिकतर संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के ही छन्दों का प्रभाव पड़ा है। परम्परागत छन्दों के अनुकरण के साथ-साथ नये छन्दों का

---

27. साकेत सन्त, सर्ग 1.39,33; 2.12,33; 3.37; 7.19; 8.8; 24, 36, तथा 14.ई.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विकास भी समुचित रूप से हिन्दी छन्द-शास्त्र में दृष्टिगोचर होता है। तुलसीदास ने 'मानस' की रचना अपभ्रंश की कड़वकबद्ध शैली में ही की है, जिसमें कथा-वर्णन के लिए मुख्यतया दोहा-चौपाई का ही प्रयोग किया है। विद्वानों के विचारानुसार तुलसी का दृढ़ विश्वास था कि दोहा-चौपाई के लिए अवधी से बढ़कर ढली भाषा और प्रबन्ध-कथा प्रवाहित करने के लिए दोहा-चौपाई से बढ़कर दूसरा छन्द न होगा।[28] आठ या अतिरिक्त चौपाईयों के पश्चात् दोहा या सोरठा का प्रयोग करके कवि ने कड़वकों की रचना की है। दोहा सोरठा के अतिरिक्त कई अन्य छन्दों का प्रयोग भी 'मानस' में हुआ है। डा० शम्भुनाथ सिंह ने 'मानस' में प्राप्त निम्नलिखित कुल आठ प्रकार के मात्रिक छन्दों और ग्यारह प्रकार के वर्णवृत्तों का उल्लेख किया है[29] :

मात्रिक छन्द—चौपाई, दोहा, सोरठा, हरिगीतिका, तोमर, त्रिभंगी और चौपैया।

वार्णिक छन्द—अनुष्टुप, इन्द्रवज्रा, त्रोटक, भुजंगप्रयात, मालिनी, रथोद्धता, बसंततिलका, वंशस्थ, शार्दूल विक्रीड़ित, स्रगधरा और नगरस्वरूपिणी। उक्त आलोचक के विचारानुसार इन में वर्णवृत्तों का प्रयोग तो पिंगलशास्त्रीय नियमों के अनुसार हुआ है, किन्तु मात्रिक छन्दों के प्रयोग में नियमों का कड़ाई से पालन नहीं किया गया है।[30] कड़वकों के बीच 'मानस' की विषम संख्यक अर्द्धालियों को देखते हुए यह स्वीकार करना समीचीन है कि कवि ने अर्द्धाली को ही पूरा छन्द माना है। अपभ्रंश में भी दो ही चरणों (या अर्द्धालियों) को चौपाई माना जाता था।[31] 'मानस' के पूर्ववर्ती जायसी के पद्मावत के उदाहरण भी इस अनुकरण को पुष्ट करते हैं। इसी तरह कवि ने पिंगलशास्त्र के नियमों से स्वतंत्र होकर भी छन्द-योजना की है। तुलसीदास ने 'मानस' में पिंगलशास्त्र के अनुसार अधिकतः 16 मात्राओं की ही चौपाइयों की रचना की किन्तु कहीं-कहीं पर 15 या 17 मात्राओं का भी प्रयोग किया है। 15 और 17 मात्राओं के क्रमशः दो उदाहरण प्रस्तुत हैं :

1. भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला ।। (7. 22)

2. बाजहिं बाजने विविध बिधाना। पुर प्रमोदु नहिं जाइ बखाना ।। (2.11)

---

28. डा० राजपति दीक्षित—तुलसी और उनका युग, पृ० 371.
29. डा० शम्भुनाथ सिंह—हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास, पृ० 549.
30. वही.
31. डा० शम्भुनाथसिंह—हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास (पाद टिप्पणी), पृ० 550.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मानस' का मुख्य छन्द चौपाई ही है। आलोचकों के विचारानुसार तुलसी ने चौपाई से मिलते जुलते डिल्ला[32] और अनुकूला, विघुन्माला, नवमालिनी, चम्पकमाला आदि अनेक छन्दों[33] को इसी के अन्तर्गत मिला लिया है।

'मानस' के कई अन्य छन्दों के प्रयोग में पिंगशास्त्रीय नियमों का पूरा निर्वाह नहीं हुआ है। कवि छन्द-योजना से सम्बन्धित प्रयोग-बन्धनों से कई गुनी अधिक सुगम भाव-प्रेषणीयता की चिंता करते हैं, कहीं भी छन्द-योजना में शाब्दिक कृत्रिमता खटकती नहीं है। वास्तव में 'मानस' की छन्द योजना भी कवि की सहज भाव-प्रवणता के आधीन ही है। आलोचक डा० शम्भुनाथ सिंह के शब्दों में कहना उचित एवं समीचीन है—"सच बात तो यह है कि तुलसी ने शब्द, संगीत, लय और भावाभिव्यंजना को ही अधिक महत्व दिया है, पिंगल शास्त्र के नियमों की अवहेलना की, यदि वह लोक विहित हो, उन्होंने अधिक चिंता नहीं की है। यह कवि की स्वतंत्र प्रवृत्ति का फल है कि उसकी छन्द-शैली में सहज और सरल प्रवाह दिखाई पड़ता है।"[34]

'रामचंद्रिका' में मात्रिक और वार्णिक दोनों प्रकार के अधिकाधिक छन्दों का प्रयोग हुआ है। 'छन्दों' का वैविध्य तो 'रामचंद्रिका' में इतना अधिक दिखाई पड़ता है कि वह पिंगल-शास्त्र का उदाहरण ग्रन्थ प्रतीत होती है।[35] 'रामचंद्रिका' को छन्दोबद्ध काव्य बनाना ही केशवदास का उद्देश्य था, जिसकी ओर उन्होंने प्रारम्भ में ही संकेत किया है—'रामचंद्र की चंद्रिका बरनह हों बहु छन्द'[36] कवि ने महाकाव्यानुरूप विषय-प्रवाह की ओर ध्यान न देकर छन्दों के निर्माण में अपने अप्रतिभ कला-कौशल, चमत्कार एवं पांडित्य का परिचय दे दिया है। 'रामचंद्रिका' में संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के परम्परागत अधिकांश छन्दों का प्रयोग किया गया है।[37] केशव ने अपने प्रबुद्ध छन्द-ज्ञान एवं कौशल का परिचय देने के लिए ही 'रामचंद्रिका' में अधिकाधिक छन्दों के प्रयोग के आशय से ही पल-पल छन्द-परिवर्तन किये हैं। अत्यधिक छन्द परिवर्तनके कारण ही 'रामचंद्रिका' में कथा-श्रृंखला टूटती सी प्रतीत होती है। साहित्यशास्त्रियों ने इसीलिए महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग

---

32. डा० शम्भुनाथसिंह—हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास (पाद-टिप्पणी), पृ० 550.
33. श्री रामचंद्र द्विवेदी—तुलसी साहित्य रत्नाकर, पृ० 393.
34. हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप—विकास, पृ० 551.
35. डा० शम्भुनाथसिंह—हिंदी महाकव्य का स्वरूप-विकास, पृ० 680.
36. रा० चं० 1.21.
37. श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र द्वारा सम्पादित केशवग्रन्थाली, खण्ड (2) में रामचंद्रिका में प्रयुक्त सभी छंदों का साथ-साथ नामांकन किया गया है। जिनको यहां गिनना अनावश्यक है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

योजना को अनिवार्य बताया है । उक्त सिद्धान्त का उल्लंघन ही 'रामचंद्रिका' को महाकाव्य कहलाने में प्रमुख बाधक सिद्ध होता है । जहां तक छन्दों के प्रयोग का प्रश्न है, केशवदास को छन्द योजना में अद्वितीय सफलता मिली है और हिन्दी रामकथा काव्य में ही क्या अन्य हिन्दी काव्यों में भी अद्भुत छन्द-योजना के कारण ही 'रामचंद्रिका' को विशिष्ट स्थान प्राप्त है ।

आधुनिक रामकथा-काव्यों में छंद-योजना के वैविध्य एवं वैशिष्ट्य दोनों की दृष्टि से 'साकेत' महत्वपूर्ण है । 'साकेत' में मात्रिक और वार्णिक दोनों प्रकार के छन्दों की योजना हुई है जिनमें अपेक्षाकृत मात्रिक छंदों का प्राधान्य सर्वत्र दृष्टि-गोचर होता है । साकेतकार ने प्रसंग्रानुकूल छन्दों की योजना की है, जिसमें कवि को सफलता मिली है । डा० नगेद्र के विचारानुसार 'साकेत' में कवि ने हिन्दी के प्राय: सभी छन्दों को अपनाया है—आर्यागीति शार्दूल-बिक्रीड़ित, शिखरिणी, मालिनी, द्रुतविलम्बित आदि सुन्दर संस्कृत वृत और दोहा, सोरठा घनाक्षरी सवैया जैसे प्राचीन हिन्दी छन्द भी नवम सर्ग अथवा अन्य सर्गों के अन्त में प्रयुक्त हुए हैं । विरह की कोमल भावनाओं के लिए गीतों का प्रयोग किया है । इतने प्रकार के छन्दों का प्रयोग करना तो कठिन नहीं है परन्तु सर्वत्र प्रसंग का ध्यान रखना और प्रत्येक छन्द को पूर्ण सफलता से प्रयुक्त करना कौशल का परि-चायक है ।[38]

तुलसीदास ने 'मानस' में 15 और 17 मात्राओं के छन्दों का संयत रूप में प्रयोग किया । दोनों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग 'साकेय' में किया गया है । 'मानस' में 17 मात्राओं के छन्दों के इने गिने उदाहरण ही प्राप्य हैं और 'साकेत' के सप्तम सर्ग में इस का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है । अतिरिक्त इन दो छन्दों के साकेत-कार ने 14 मात्राओं के छन्दों की भी सुन्दर सृष्टि की है :

कभी आरती धूप कभी, सजती थीं सामान सभी । (पृ०94)

15 वर्णों के छन्द और 'हरिगीतिका' छन्द के नवीन कलात्मक प्रयोग के बारे में आलोचक डा० उमाकान्त के विचार द्रष्टव्य हैं—'तुलसी ने इसे (15 वर्ण के छन्द को) तुकांत रखा था हमारे कवि ने अतुकांत । वास्तव में उन्होंने इसे छन्दत्व प्रदान किया है । दूसरा छन्द जिस पर कि कवि ने अपनी छाप लगा दी 'हरिगी-तिका' है ।······सचमुच इन छन्दों में जितनी गति और क्षमता आलोच्य कवि को प्राप्त है उतनी किसी भी प्राचीन-अर्वाचीन कवि को नहीं ।'[39]

---

38. साकेत—एक अध्ययन, पृ० 17.
39. मैथिलीशरण गुप्त—कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता, पृ० 334.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'साकेत' में महाकाव्योचित छन्द-परिवर्तन के नियम के पालन के लिए छन्द-परिवर्तन नहीं किया गया है, बल्कि विभिन्न छन्दों का एक साथ प्रयोग भी सर्गों में हुआ है। अकेले नवम सर्ग में विविध छन्दों का प्रयोग हुआ है। विद्वानों के विचारानुसार—'विभिन्न छन्दों के सफल प्रयुक्त होने पर भी गुप्तजी 'टेक्नीशियन' नहीं हैं। उन्होंने छन्दों की एकस्वरता (monotory) तोड़ने के लिए एक दूसरे छन्द का ही प्रयोग किया है छन्द में परिवर्तन नहीं किया।[40]

यह निर्विवाद तथ्य है कि सर्वप्रथम 'साकेत' में खड़ी बोली के अन्तर्गत छन्दों के विविध प्रयोग हुए हैं। समग्र रूप से 'साकेत' की छन्द-नियोजना सराहते हुए आलोचक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं—'साकेत के छन्द हिन्दी खड़ी बोली की शक्ति प्रकट कर देते हैं। मैथिलीशरण जी की विशिष्ट कला छोटे छन्दों में खूब प्रकट हुई है। यह कहना शायद पूर्णरूप से पर्याप्त नहीं कि खड़ी बोली के किसी भी प्रबन्ध-काव्य में अब तक छन्दों की ऐसी सुघटित प्रतिभा नहीं देख पड़ी जैसी साकेत में। 'साकेत' के कवि ने छंद का मर्म समझ लिया है·· ···गोसाईं जी की तरह गुप्त जी भी छन्द का मर्म ही नहीं समझते, उसके आवर्त विवर्त से अभीसिप्त भाव-प्रतिभाएं भी खड़ी करते हैं।"[41] यद्यपि 'साकेत' को कलात्मक छन्द-योजना की दृष्टि से आधुनिक हिन्दी काव्य की सर्वोत्कृष्ट रचना न भी मान लिया जाय किन्तु तत्कालीन खड़ी बोली के अपरिपक्व रूप में छन्द योजना के वैविध्य निरूपण की दृष्टि से सचमुच यह एक महत्वपूर्म ग्रन्थ है, जिसने परवर्ती काव्य की छन्द-योजना को प्रभावित किया।

'वैदेही-वनवास' छन्द-योजना की दृष्टि से सुगठित और समृद्ध रचना है। इस में मात्रिक छन्दों की ही अधिकता पाई जाती है। 'छन्दों' में रोला, चतुष्पद, चौपदे तिलोकी, ताटंक, पादाकुलक, दोहा सखी और मतसमक हैं। तिलोकी का प्रयोग अधिकांश सर्गों में हुआ है।"[42] प्रत्येक सर्ग के अन्त पर दोहे के प्रयोग से महा-काव्योचित छन्द-परिवर्तन ही आलोच्य कृति की प्रमुख विशेषता है।

7.2.2 कश्मीरी :

कश्मीरी रामायणों में प्रयुक्त अभिव्यक्ति प्रणाली के दो ही मुख्य रूप मिलते हैं—इतिवृत्तात्मक तथा गीति-शैली। कश्मीरी चरित-काव्यों में इतिवृत्तात्मक शैली का विशिष्ट स्थान है जो 'फारसी मसनवियों' की शैली से पूर्णतः प्रभावित है। फारसी की प्रमुख 'बहरों' का ही अनुकरण कश्मीरी चरित और प्रेमाख्यान काव्यों में हुआ है। अब्दुल अहाद 'आज़ाद' के विचारानुसार फारसी

---

40. डा० नगेन्द्र—साकेत : एक अध्ययन, पृ० 170.
41. हिन्दी साहित्य—बीसवीं शताब्दी, पृ० 47.
42. डा० प्रतिपालसिंह—बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य, पृ० 218

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मसनवियां प्रायः बहर हज़ज़, बहर रमल, बहर खफ़ीफ और तक़ारब इन्हीं चार बहरों में लिखी गई हैं, स्वामी परमानंद को छोड़कर अन्य कश्मीरी कवियों ने भी 'मसनवियां' इन्ही बहरों में लिखी हैं।[43] उक्त आलोचक के मंतव्यानुसार 'प्रकाश-रामायण' की रचना 'बहर हज़ज' में हुई है।[44] अन्य परवर्ती रामयणों में भी फारसी के इन्ही प्रमुख लयखण्डों को ग्रहण किया गया है। सर्वत्र गेयता या लयात्मकता प्रधान है और गुरू-लघु मात्राओं का निर्धारण भी उच्चारण से सम्बद्ध है। फिर भी कहा जा सकता है कि कवियों ने फारसी बहरों के कड़े नियमों का पूर्णतः पालन नहीं किया है। पूर्व प्रचलित फारसी की प्रसिद्ध बहरों का निर्वाह अन्य कश्मीरी प्रेमाख्यान काव्यों की भांति यथोचित है। जिसमें उच्चारण और लयात्मक वैशिष्ट्य के कारण अत्यल्प परिवर्तन भी स्वाभाविक है। जैसे उर्दू की बहरें हिन्दी के मात्रिक छन्दों के अन्तर्गत मानी जाती है,[45] ऐसा कोई नियम कश्मीरी और हिन्दी के बीच पूर्णतः लागू नहीं हो सकता। कश्मीरी बहरों की तुलना मात्रिक या वर्णवृत्तों की दृष्टि से यद्यपि हिन्दी से की जाय तो उनमें साम्य की अपेक्षा वैषम्य अधिक दृष्टिगोचर होगा। मात्रिक चौपाई छन्दों को उदाहरणार्थ देखा जा सकता है। हिन्दी में चौपाई के अन्तर्गत अधिकतर 16 मात्राओं का साम्य मिलता है और कश्मीरी में प्रायः 14 से लेकर 22 मात्राओं का और उनमें भी अर्द्धालियों के बीच कहीं-कहीं साम्य नहीं है—एक ही नियम का पालन कहीं नहीं है। वर्णवृत्तों की दृष्टि से भी दोनों प्रकार के छंदों में साम्य नहीं है।

फारसी बहरों के कश्मीरी में प्रयोग की विवेचना अनावश्यक समझते हुए यहां आलोच्य रामायणों के आधार पर इतिवृत्तात्मक वर्णन-शैली की मुख्य विशेषताओं और काव्य-निर्वाह को ही देखने का प्रयत्न किया जायेगा।

इतिवृत्तात्मक वर्णन-शैली में लय-खण्डों के साथ-साथ अन्त्यानुप्रास का ही अधिक ध्यान रखा जाता है। साधारणतः भावाभिव्यक्ति की दुरूहता का मूल कारण 'तुक मिलान प्रयत्न' ही बन जाता है, जहां कवि शब्दों की तोड़-मरोड़ के लिए विवश होते हैं। ऐसी परिस्थितियों में प्रायः सभी कवियों ने भावाभिव्यक्ति को दुरूहता से बचाने के अभिप्राय से तनिक उदारता से काम लेकर निःसंकोच अन्य भाषाओं के सरल सुबोध शब्द या वाक्यांश जोड़े हैं। प्रकाशराम को इस प्रयत्न में अधिक सफलता मिली है। उदाहरण प्रस्तुत है :

1. गर्म बाजार सापुन धर्म का राज, मनश्य गयि खोश त कांह छुने कंअसि मोहताज (पृ० 9)

43. कश्मीरी ज़बान और शायरी, भाग 1, पृ० 183.
44. वही
45. डा० पुत्तूलाल शुक्ल—आधुनिक हिन्दी काव्य में छंद-योजना, पृ० 105

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2 समय ड्यींशिथ म सपुन शाद व गमगीन, गम व शादी वुछ आईन बाईन ।
(पृ० 3)

3. करि दूर फिकर मन बेयि राय तद्वीर, समिथ नीखि जंगस वोन्य केह न – ताखीर ।

सपुन आखरस लश्कर प्यठ थि इरशाद, अन्यूख ग्वड़नी रटिथ यिम आदमी – ज़ाद । (पृ० 111)

—यहां धर्म का राज', शाद व गमगीन. 'तदवीर' और 'इरशाद' का तुक क्रमशः 'मोहताज', 'आईन बाईन', 'ताखीर' और 'आदमज़ाद' से मिलाया गया है । अन्य रामायणों से भी निम्नलिखित उदाहरणों में रेखांकित का आयोजन भी इ ी दृष्टिकोण से हुआ हैं । तुक-मिलान सुन्दर है :

आनंद रामावतारचरित—

1. न्यथर पम्पोश हिय क्या छिस **मदौवर**, ग्वनौ निशि व्योन स्वने सुन्दताज **बरबस**। (पृ० 42)

2. गमच् ज़रदी तमिस बोज़लिस **गुलाबस**, गुहुन लोगमुत छु सोंदर **आफताबस** ।
(पृ० 122)

3. वुछुन व्योभुत पथरि प्यठ पानै **लक्ष्मण** दितुन तम्य चाख जामन **ताब दामन** ।
(पृ० 156)

विष्णु प्रताप रामायण—

1. स्यठा नदियन त नहरन हंज़ **नज़ाकत**, लिए पोशन त अछि पोशन **तराकत** ।
(पृ० 68)

2. वदान सीता वदान **आकाश पाताल**, नहै त्रिलूकिए आभुत छुं **भूंचाल** ।

3. सियावर राम जू डूयूंठुन गोमुत **तंग** सलाह त्राविथ दिवान छुय नाल **दरजंग** ।
(पृ० 392)

4. दवान लव छुख वुछित्र तोह्य **इस्तादे**, बु त्रावन कअच् लश्कर **सरकतादे** ।
(पृ० 731)

5. बाहरसो हर तरफ लश्वर करान **जोश**, ग्रज़ान संह ज़त बहादुर मस्त ते **मवहोश** ।
(पृ० 754)

शर्मा रामायण—

1. येमिस आसि न शिव सुन्द **प्रेम**, तमिस राम नाराज़ छुय **दम ब दम**। (पृ० 29)

2. तमिस कुम्भकरनस स्व लज्य **विश टोफा**, छनुन काल दण्ड नेगलिथ **यकदफा** ।
(पृ० 47)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. मध्यम व्रिय यिवान परपुरशन दर नजर, पनुन मोल या बोय ते या पिसर।
(पृ० 179)

4. वदान तस बहारस जमिस्तान गो, यले आव शबदर शबिस्तान गो। (पृ० 324)

ताराचंद रामायण—

1. छि ड्चेंशान प्रथ शिवस सअश्य रामावतार, कुने शक्ले लक्ष्मन बेयि सु गमख्वार।
(पृ० 8)

2. छि तम्य पत मअन्त संज आग्या म्य बेहतर, स्यष्ठा लायक म्य चअन्य आग्या छि बरसर। (पृ० 113)

3. करन थक च़रनन रामस छु अधीर, छुने ह्यकन वनिथ केहं यच़ ते दिलगीर।
(पृ० 119)

इतिवृत्तात्मक वर्णन-शैली में अधिक लालित्य एवं निखार लाने के लिए कवियों ने कुछ विशिष्ट वर्णनात्मक तत्वों को भी अपनाया, जिसमें से प्रमुख है—क्रम-परिगणना पद्धति। क्रम-परिगणना से तात्पर्य किसी विशिष्ट प्रसंग में क्रमांकन द्वारा वस्तु, दृश्य या संवाद-वर्णन से है। 'प्रकाश रामायण' में ही मुख्य रूप से इसे अपनाया गया है। शिव के प्रति राम की वन्दना एवं सीता-लक्ष्मण संवाद में इसके सुन्दर उदाहरण मिलते हैं। पहले में राम शिव जी से चार वरदान मांगते हैं—'पहला भूमि से दुःख-व्याधि समाप्त हो, दूसरा कोई शत्रु उनका मुकाबला न कर सके, तीसरा कोई मित्र उनसे रुष्ट न हो और चौथा हृदय में उनका वास सदैव रहे।[46] 'सीता-लक्ष्मण संवाद' में सीता कहती है—'पहले किस मैके में जन्म ले लिया…दूसरा विवाहोपरांत कहां पहुंची…तीसरा पति स्वयं नारायण हैं…आदि।[47] इतिवृत्तात्मक शैली के अन्तर्गत कुछ अन्य शैलीतात्विक विशेषताएं मिलती हैं, 'संवाद-नियोजना' में जिनकी ओर संकेत किया जायेगा।

इतिवृत्तात्मक वर्णन-शैली के अतिरिक्त रामायणों में गीति-शैली को भी अपनाया गया है। इस शैली का प्रयोग अधिकतर कथा-वर्णन से सम्बंधित वन्दना-स्तुतियों और अन्य भजनों में होता है। कश्मीरी में इन्हें 'लीलाएं' कहा जाता है और 'लीलाओं' का प्रारम्भिक रूप साहिब कौल के 'कृष्णावतारचरित' (17वीं शताब्दी) में ही माना जाता है। भक्तिपरक या आध्यात्मिक विषय-प्रतिपादन गीतों को ही 'लीलाएं' कहा जाता है। गीति-शैली का प्रयोग प्रेमाख्यानों में भी मिलता हैं, किन्तु

---

46. प्र० रा०, पृ० 36.

47. वही, पृ० 49,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वहां वे 'लीलाएं' नहीं की जा सकती है। उक्त गीति-शैली के भी कई रूप मिलते हैं। प्रायः गीतों के टेक की दूसरी सम्बन्न पंक्ति प्रत्येक तीसरी पंक्ति के बाद गाने में दोहरायी जाती है। उदाहरण के लिए—

वन्दयो भन बु पादन छांड़थो रामरादन
विचारनागे वति नारै नुनरकि तारे प्रारै
ब्रह्मसर किन्य दिमै वन्य 'छांड़थो रामरादन'।।

उक्त पंक्तियों में टेक की दूसरी पंक्ति 'छांड़थो रामरादन' हर तीसरी पंक्ति के पश्चात दोहरायी जाती है।

गीति-शैली के प्रयोग के प्रयोजन विविध हैं। कथा-वर्णन में इतिवृत्तात्मक शैली की एकरूपता या एकरसता की ऊंब बीच-बीच में 'गीतों से ही दूर होती है ये ऐसे विश्राम-स्थल हैं, जहां कथा-सम्बन्धी पूर्व-वर्णित घटनाओं की स्मृति हरी होती है, भावी या आगामी कथात्मक मोड़ों की कल्पना जागरूक चिंतन-मनन में पलती है और औत्सुक्य की भावना पुनः तीव्र होती है। पाठक या श्रोता को थोड़ी देर के लिए विशिष्ट कथा-प्रसंग के अन्तस में उतरने का अवसर सुलभ होता है। पात्रों की वन्दना-स्तुतियों में ही कवि मुख्य-कथा-प्रसंग से तनिक हटकर स्वतंत्रता से आध्यात्मिक, दार्शनिक और नैतिक विषयों पर भी अपने विचारों के स्पष्टीकरण करने का पर्याप्त अवसर पाता है। कभी-कभी मुख्य कथा-वर्णन या प्रसंग-विशेष के चित्रण में भी उक्त शैली का प्रयोग अधिक उत्कृष्ट रूप में होता है। यहां पर सभी रामायणों में उक्त शैली के प्रयोग के बारे में संक्षेप में चर्चा अनपेक्षित न होगी—

'प्रकाश-रामायण' में चरणों के स्वरूप—आकार की दृष्टि से दो ही मुख्य रूप मिलते हैं—तीन स्वराघात (Accents) और चार स्वराघात वाली पंक्तियां दोनों के उदाहरण क्रमशः इस प्रकार है :

अ—कौशल्यायि हंदि गोवरो करयो गूरे गूरो
कोत गोहम चे त्राविथ कसह्यके हाल बाविथ
अनी कुस मनना विथ करयो गूरे गूरो··· (पृ० 25)

आ—हारिये बोज़ पोशि नूलन्य बोल बाशी
गाश रअस्त्यन गाश है आव।··· (पृ० 164)

वर्ण्य-विषय की दृष्टि से गीतों के कई भेद-उपभेद किये जा सकते हैं—वन्दना-वर्ण्य स्तुति वैयक्तिक भावोन्मेष, प्रासंगिक गीत आदि। संगीत और गेयता की दृष्टि से भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विविध प्रणालियों के गीत पाये जा सकते हैं। सीता-विवाह पर गाया गया-समूह-गान का उदाहरण देखिए :

खवनि खवनि पम्पोश लागै लतिए, सतिए बोतुय व्यवाह्-काल। —(पृ० 17)

'प्रकाश रामायण' में ऐसे गीत भी मिलते है जिनमें पूर्व-कथा या कथांश स्मरण का संक्षिप्त वर्णन मिलता है। सीता द्वारा वर्णित पार्वती की स्तुति-वन्दना के इस गीत में उनके बीते जीवन का संक्षिप्त वर्णन मिलता है :

मारे करनस अम्य मारमती पार्वती कर भ्योन चारे।—(पृ० 212-215)

कवि ने कथा-प्रसंग को आगे बढ़ाने के लिए भी गीति-शैली का प्रयोग किया है। भरत समेत अयोध्यावासियों के चित्रकूट-गमन के सम्पूर्ण वृत्त का वर्णन उन्होंने इस टेक के अन्तर्गत गीत में किया है :

अछव लग्य रथ हरने राम राम लग्य परने—(पृ० 31)

राम-लक्ष्मण के विरह में दुःख विह्वल हनुमान् सहित वानर सेना की करुणाद्र स्थिति का चित्रण कवि ने इस गीत में किया है :

हरनि लोग वाव पोह पन कोत गो राम-लक्ष्मन। (पृ० 127)

'प्रकाश रामायण' की भांति अन्य रामायणों में भी विविध प्रयोजनों के लिए गीति-शैली को अपनाया गया है।

'शंकर रामायण' ही एक ऐसी रामायण है जिसकी सम्पूर्ण रचना गीति-शैली के अन्तर्गत हुई है। गीति-शैली में कथा-निर्वाह अपेक्षाकृत दुरुह होता है और प्रस्तुत रामायण में कथा शैथिल्य का मूल कारण आद्यन्त गीति-शैली का प्रयोग ही है। कवि ने कथा-निर्वाह में सावधानी से काम ले लिया है। विशिष्ट 'गीति-टेक' के अन्तर्गत उन्होंने एक ही क्रम में व्यापक रूप से विषयगत प्रसंगों का ही चित्रण करने का प्रयत्न किया है, जिसमें उन्हें अधिक सफलता मिली है। जैसे 'राम-नाम' स्वभाव माहात्म्य' विषयक टेक—'कुस ज़ानि राम नावुक स्वभाव'[48] के अन्तर्गत उन्होंने सती द्वारा राम की परीक्षा, पौराणिक कथा-संवाद, राम-जन्म, सीता-जन्म, गंगावतरण और स्वयंवर आदि प्रसंगों का चित्रण इस प्रकार किया है कि सब प्रसंग राम के अलौकिक रूप एवं नाम-माहात्म्य से संम्बद्ध हैं। विषयगत कथा-निर्वाह को

48. शंकर रामायण, खण्ड 1. अ 2.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सफल बनाने के लिए उन्हें विवशयः कई प्रसंग आगे-पीछे टेकानुसार चित्रित करने पड़े जिससे काव्य में कथात्मक सम्बद्धता शिथिल पड़ जाती है।

कवि ने कश्मीरी में प्रचलित प्रायः सभी गीति-शैलियों का प्रयोग किया है जिसमें उनकी कला अद्भुत परिचय मिलता है। अधिकतर तीन और चार स्वराघात वाली पंक्तियों के गीतों का प्रयोग हुआ है :

अ—राज़ ओसपानस यच् तोशानइ भगवत मायायि नमस्कार। (1.11)

आ—ब्राह्मण सारी वेद लाय परनि सम्बुलपोश यम्बरज़लि वरने आव (1.8)

लोक गीति-शैली के विविध रूपों का प्रयोग ही 'आनंद रामावतारचरित' की प्रमुख विशेषता है। कवि ने क्षेत्रीय विविध गीति-शैलियों का सामंजस्य किया है। राम-जन्म और सीता-विवाह के प्रसंगों में वर्णित स्त्रियों के इन गीतों में लोक गीति-शैली का सुन्दरतम रूप मिलता है :

अ—ज्यने चानि गाश आव कोहनते बालन, लालन करयो माले लो लो।
(पृ० 17)

आ—कन छस दिवान मन गोम तारे, होथ गो सानि बनहारे ह्यथ। (पृ० 57)

आनंदराम ने दशरथ के प्रलाप अंधमुनि-बालक की मृत्यु शाप और दसरथ-मरण जैसे गम्भीर-प्रसंगों का वर्णन सरलतम और मार्मिक गीति-शैली में ही किया है :

दम दम छम थर थर लोलो रामचंद्र श्री भास्कर लो लो
ने रहा हे फेरहा पोशिबागन वअलिज ज़अजिम चअन्य रागन
वअल्य यिख तोतताम मर लो लो रामचन्द्र··· ··· (पृ० 67)

'लो लो' का सम्बन्ध कश्मीर की रामायण की प्रसिद्ध लोक-गीत रचना-पद्धति से है। इस लोक-प्रचलित सरलतम गीति-शैली में रामकथा के गम्भीर और संवेदनात्मक प्रसंगों का चित्रण कवि के अद्भुत कला-कौशल का प्रमाण है। 'आनंद रामावतार चरित' में कुल मिलाकर छोटी-बड़ी लगभग 45 'लीलाएं' वर्णित हैं जिनमें वर्ण्य-विषय सम्बंधित यथोचित कलात्मक वैविध्य दृष्टिगोचर होता है।

'शर्मा रामायण' में वंदना-स्तुतियों के लिए ही गीति-शैली का प्रयोग किया गया है। इसमें भी तीन और चार स्वराघात वाली पंक्तियों में गीत-रचना हुई है। जैसे :

अ—श्याम रूप रामावतारी भगवान आव अवतारी (पृ० 59)

आ—स्वमन सअरी कुनुभ छि वनान जानकी नाथ बेयि जानकी सान। (पृ० 98)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'तारा‌चंद रामायण' में विभिन्न पात्रों एवं देवी-देवताओं द्वारा वन्दना-स्तुतियों[49] के अतिरिक्त गीति-शैली का प्रयोग विरह-वेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए भी किया गया है। उक्त रामायण में राम के विरह में अयोध्यावासियों की करुणाजनक स्थिति तथा पति की मृत्यु पर बिन्दुमती द्वारा राम और सदाशिव की वन्दना स्तुति में गीति-शैली का सुन्दरतम रूप मिलता है। दोनों के टेक क्रमशः इस प्रकार हैं :

अ— सअरी आस्य वदान राम राम ज़ोर परान
कौशल्यायि रूद मुत स्वख मोरदे राज़े संमुख
मछि़ दोख नाल दिवान राम राम ज़ोर परान। (पृ० 137)

आ छुख हरी कास वोन्य थर परमेश्वर छुख च्थ दम
छुख अजर अमर निरंजन निर्बिकार ज्ञानुक च्थ छुख मोय। (पृ० 255)

'अमर-रामायण' में वन्दना-स्तुतियों के अतिरिक्त वात्सल्य और विरह-वेदना युक्त गीतों की विरचना अधिक हुई है। गीतों में शब्द-चयन कहीं-कहीं पर अनुपयुक्त और बोझिल सा है। जैसे, बाली की मृत्यु पर तारा की करुण व्यथा को अभिव्यक्त करने वाली इन पंक्तियों में —

क्या कर वोंदि छुम फिराकुक जोश, शहलाव नार श्योन जल्द म रोज़ खामोश।
(पृ० 133)

कुछ गीतों में सुन्दर लयात्मकता मिलती है :

माता कौशल्यायि हंदि राम चन्द्रै वन्दहाय लोल सान चरनन बु प्रान (पृ० 64)

राम के प्रति अहल्या के वन्दना-गान में अहल्या की शाप कथा का विवरण मिलता है। रामायण के अन्त पर 233 चरणों वाले एक लम्बे गीत में कवि द्वारा राम की वन्दना-स्तुति वर्णित है। गीत की टेक इस प्रकार है :

निरंतर कर च् राम तभी मेलिय परमधाम
सत यियि निष्काम ज़पु राम निष्कामै।—(पृ० 282-288)

7.3 अलंकार

अलंकार काव्य-सौंदर्य का अभिन्न अंग एवं अनिवार्य काव्योपकरण है। मानवीय विग्रह के सौन्दर्य की अभिवृद्धि जिस प्रकार आभूषण सहजतया करते हैं, कविता-कामिनी के सौन्दर्योत्कर्ष मे अलंकार ही सहायक होते हैं। अलंकारों की परिभाषा

49 ता० रा०, पृ० 1, 25, 62, 266-268.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यापक अर्थ में साहित्य-शास्त्रियों ने की है। आचार्य पंडित सीता-राम के विचारानुसार "अलंकार वह निश्चल योजना है जिसके अन्तर्गत वाक्य का स्वरूप, उसके विविध अंग, अंगों के प्रकरण, प्रकरणों के अन्तर्गत कथा-वर्णन, संवाद और उन सबमें व्याप्त एक विशेष उद्देश्य की अभिव्यक्ति सब आ जाते हैं। और यही सब पूरी योजना जिन अनेक भाषा के विधानों में पूरीं होती है, उन सबकी समष्टि ही अलंकार है।"[50] अलंकारों का मुख्य उद्देश्य सौन्दर्याभिभूत भाव-सम्प्रेषणीयता और काव्य में कलात्मक भाषा-तत्वों का सामंजस्य स्थापित करना ही है जो काव्य-रसिकों का ध्यान अपनी ओर आर्कषित करके उन्हें अधिकाधिक आनंद प्रदान कर सके। "वास्तव में गद्यात्मक अथवा पद्यात्मक रचना में जो आनंददायक बुद्धिवर्द्धक, किंवा ललित शब्द, वाक्य या भाव हैं, जो काव्य के रस को विशेष रुचिकर बना देते हैं वे ही साहित्यशास्त्र में अलंकार कहलाते हैं।"[51] इस तरह अलंकार काव्य-सौन्दर्य को उत्कर्ष प्रदान करते हैं और ये काव्य के सर्वस्व नहीं हैं। अलंकारों के मुख्यतया दो भेद माने जाते हैं—शब्दालंकार तथा अर्थालंकार। जहां दोनों ही हों, उभयालंकार कहे जाते हैं। दोनों कश्मीरी और हिन्दी रामकथा काव्यों में शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का यथोचित प्रयोग हुआ है। हिन्दी की अपेक्षा कश्मीरी काव्य में शब्दालंकार कम और अर्थालंकार अधिक पाये जाते हैं। इसका मुख्य कारण समग्र कश्मीरी काव्य की सहज भाव-प्रवणता ही है, जो शब्दालंकारों के चमत्कार-प्रदर्शन से सर्वथा मुक्त है। यहां पर दोनों प्रकार के मुख्यालंकारों के ही उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं। शब्दालंकारों के अन्तर्गत मुख्य अलंकार श्लेष, अनुप्रास, यमक, वक्रोक्ति आदि आते हैं और अर्थालंकारों के सादृश्य-मूलक वर्ग में गिने गए 'उपमा' तथा 'रूपक' ही मुख्य अर्थालंकार माने जा सकते हैं।

7.3.1. शब्दालंकार

कश्मीरी रामकथा-काव्यों में कवियों ने शब्दालंकारों की ओर बहुत कम ध्यान दे दिया है, भाव-प्रेषणीयता में लय या शब्द-संगीत की स्थापना के लिए अवश्य कहीं-कहीं पर शब्दानुप्रास, यमक आदि की छटा मिलती है जो सर्वथा कृत्रिमता से दूर है। उदाहरण-रूपेण रेखांकित शब्दों को देखिए—

1. दोहस रातस छु कम कम ज़ाल वोनन, **सुवन कपटुन कतुन वोनन त दोनन।** (प्र० रा०, पृ० 38)

2. **दिलारो दिलवरो दिलदार** बायो। (वि० प्र० रा०, पृ० 379)

---

50. समीक्षा-शास्त्र, संवत 2010, पृ० 1025.

51. श्री रामचन्द्र द्विवेदी—तुलसी साहित्य रत्नाकर, पृ० 447.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. दम दम झम थर थर लो लो। रामचन्द्र श्रीभास्कर लो लो।
(आ० रा० पृष्ठ 67)

4 मन प्रान चालि ध्यान छुय करिथ सट वट। (आ० रा०, पृ० 39)

5. वलो राम हा श्यामलालो वलो। (शर्मा रा०, पृ० 117)

6. शनाबक्य नट्य चेयन गृठ गृठकरान।
सु मामस प्यठ छ्यत्रान कुठ कुठ करान। (शर्मा रा०, पृ० 348)

7. अड्चन स्वर च.छयनान सर च.छयनान ज़ंग च.छयानन।
अड्चन वछ च.चयनान लग च्छयनान मेंग च्छेयनान। (शर्मा रा०, पृ० 522)

8. कअज्य कअन्य त क्वब क्वज़ात छि नन्थ।
स्यण कुटिल त बदज़ात तिम छि आसन ।। (ता० रा०, पृ० 109)

9 शर्मा-रा० में 'यमक' का प्रयोग देखिए—
नते ही धरि ज़न प्येयन हाय हाय। (पृ० 442)

10. शर्मा रामायण में शब्दानुप्रास के साथ-साथ ध्वनि-संगीत का एक सुन्दर उदाहरण युद्ध-वर्णन के इस दृश्य-चित्रण में मिलता है :

यिवान गोरज़सइ गोरज़े, तेगा ब तेग। शजर बर शजर कोह ब कोह वेदेरग।
सदा यिय गछ़ान ओस कर च् विश्वास। ठकोठक छन्योछन्य तटासो पटास ।।
(पृ० 514)

शब्दालंकारों का अधिक प्रयोग कश्मीरी 'शर्मा रामायण' मे ही मिलता है, उसके पश्चात 'ताराचन्द रामायण' का नाम लिया जा सकता है।

'मानस' में तुलसी की अलंकार-योजना भाव, गुण और रूप की उत्कर्ष व्यंजना के अनुरूप है। वही कारण है कि 'मानस' का सादृश्य विधान' उक्ति वैचित्र्य एवं रूप-गुण वर्णन कृत्रिमता से दूर है। अलंकारों की प्रसंगानुकूलता, उपयुक्तता, सोद्देश्यता तथा मर्यादा का सकुशल निर्वाह 'मानस' में हुआ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के विचारानुसार 'अलंकारों की योजना उन्होंने ऐसे मार्मिक ढंग से की है कि वे सर्वथा भावो या तथ्यों की व्यंजना को प्रस्फुटित करते हुए पाये जाते हैं, अपनी अलग चमक दमक दिखलाते हुए नहीं'[52] अतः कवि ने प्रसंगानुकूलता को ध्यान में रखते हुए ही अलंकारों की योजना की है। 'मानस' में काव्य-सौन्दर्य को बढ़ावा देने वाले प्रायः सभी शब्दालंकारों का प्रयोग हुआ है। अनुप्रास एवं शब्द-संगीत के

52 हिन्दी साहित्य का इतिहास, स० पंचम, पृ० 145.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनेकानेक उदाहरण इसमें मिलते हैं। जैसे—

1. कठिन कुसंग कुपंथ कराला। (1.38)
2. चितवत चकित चहूं दिसि सीता। (1.222)
3. कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि। (1.230)
4. निपट निरंकुस निठुर निसंकू। (2.119)
5. चक्क चक्कि जिमि पुरनर नारी। (2.187)
6. सील सनेह सरल रस सानी आदि। (2.176)

'लंकाकाण्ड' में वर्णित राक्षसों का प्रतिरोध करते हुए मर्कट और भालुओं का दृश्य-चित्रण ध्वन्यात्मक शब्द-संगीत के उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत है :

धरि कुधर खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं।
झपटहिं चरन गहि पटकि महि भजि चलत बहुरि पचारहीं॥
अति तरल तरुन प्रताप तरपहि तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गए।
कपि भालु चढ़ि मंदिरन्हि जहं तहं राम जसु गावत भए॥ (6.41)

'रामचंद्रिका' में उक्ति-वैचित्र्य और चमत्कार-प्रदर्शन ही प्रमुख है। केशव ने 'शब्दालंकारों के प्रति विशेष रुचि दर्शायी है। 'रामचंद्रिका' का स्वाभाविक काव्य-सौन्दर्य चमत्कारिक अलंकार प्रयोग से ही कहीं-कहीं पर दब सा गया है। यहां शब्दानुप्रास तथा ध्वनि संगीत से सम्बंधित कुछ पंक्तियां उदाहरणस्वरूप देखी जा सकती हैं :

1. तरु तालीस तमाल ताल हिंताल मनोहर। (3.1)

2. घर घर घंटनि के रव बाजैं। बिचबिच संख जु झालरि साजैं।
पटह पखाउज आउझ सोहैं। मिलि सहनाइन सौं मन मोहैं॥ (8.7)

3. भोग भार मागभार 'केसव' विभूतिभार भूमिभार भूरि अभिषेकन के जल से।
दानभार मानभार सकल सयानभार धनभार धर्मभार अक्षत अमल से॥ (27.8)

आधुनिक हिन्दी रामकथा-काव्यों में भी अनुप्रास, श्लेषादि शब्दालंकारों का प्रयोग हुआ है। 'वैदेही-वनवास' से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :

1. लता लहलही लाल लाल दल से लसी।
भरती थी दृग में अनुराग ललामता॥ (4.7)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. भले भले भावों से भर-भर, जो भूतल को भाते हैं। (10.55)

3. जिनकी लोकोत्तर लीलाएं, लोक ललक की थाती हैं।
ललित लालसाओं के विलसे, जो उल्लसित बनाती हैं।। (10.56)

4. जीते जगती रह, है मरे न भूलती।
पूत सलिल सी पूत चित्त की पूतता। (15.31)

'साकेत-सन्त' में विविध स्थलों पर शब्दानुप्रास एवं ध्वनि-संगीत का प्रयोग हुआ है :

1. झर झर झर झर के स्वर में, झर झर झरती छवि धारा।

वर्षा का एक अन्य चित्रण देखिए :

2. अरर का घोर रोर वह, सभी ओर था जोर दिखाता।
धड़धड़ धड़ गिरती धाराओं की, गति को गतिशील बनाता।।

7.3.2 अर्थालंकार

तुलनात्मक विवेचना के लिए यहां दोनों कश्मीरी और हिन्दी के प्रमुख अर्थालंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक को ही चुना जा सकता है। उपमा का महत्व भाव-प्रेषणीयता के सहज अलंकरणों में प्रमुख है, प्रायः कवि किसी पात्र या वस्तु विशेष की तुलना किसी ऐसी वस्तु या उपमान से करते हैं, जिससे कवि की भावाभिव्यक्ति अधिक सहज और सुन्दर होती है। व्यापक प्राकृतिक उपमानों का प्रयोग दोनो भाषाओं के रामकथा-काव्यों में मिलता है, उपमानों के प्रयोग में अधिकतर साम्य ही मिलता है।

कश्मीरी में पात्रों के सौन्दर्य की उपमा 'चन्द्रमा', 'कमल' के अतिरिक्त विविध प्राकृतिक द्रुम-लताओं एवं क्षेत्रीय पुष्पों से दी गई है। 'प्रकाश रामायण' में सीता के रूप-सौन्दर्य की उपमा सूर्य, चन्द्रमा, कमल, जुही, ताजा गुलज़ार, नर्गिस, कुसुम आदि से दी गई है।[53] और राम के सौन्दर्य के लिए भी कवि ने अधिकतः चन्द्रमा, सूर्य और गुलाब का प्रयोग किया है। 'मानस' में तुलसीदास ने अधिकतर 'कमल' का ही उपमान चुना है।[54] कश्मीरी रामकथा-काव्य में प्रयुक्त उपमा-

53. प्र० रा० 22-23, पृ० 45-46.

54. डा० हज़ारीप्रसाद द्विवेदी—हिन्दी साहित्य, सं० 2009, पृ० 240.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्प्रेक्षाओं के कुछ विशिष्ट उदाहरण इस प्रकार है :

(1) 'तिथै पअठ्पन रछॆन युथ अछ अन्दर लाल ।'[55]—जनक ने सीता का पालन-पोषण पलकों के भीतर नेत्र गोलक की भांति किया ।

(2) कीकी शीन छ्ठ मंजहोर गयि तेज़ ।[56]—कैकेयी अगहन की बर्फीली वायु की तरह क्रोधित हुई ।

(3) वदुन त्युथ युथ आबक्य फंवार द्रायस ।[57]—ऐसे रोयी कि आंखों से पानी के फव्वारे फूट पड़े ।

(4) तमिस ड्यींशिथ स्व सपन्य तीच् बेताब, तिथुय युथ सांपनन अज़ जर छु सीमाब ।।[58]—उसे (स्वर्ण मृग का) देखकर वह (सीता) इतनी चंचल हुई, जैसे अग्नि से पारा होता है ।

(5) गोबुर ओसुस न चंचल ओस तस मन । तिथुय युथ सिरियि पअन्यिस प्यठ छु कआंपन ।।[59]—उनके (दशरथ के) कोई पुत्र न था । मन इतना चंचल था जैसे पानी पर सूर्य की किरणें कांप रही हों ।

(6) च् कहि् करख मान सअत्य सिरियस ह्वॆ । च् छुख आसुवुन ज़िह्विनि वयोम ज़न ।।[60]—सीता रावण से—तुम सूर्य (राम) की क्या बराबरी कर सकते हो, उनके सामने तुम चमकते हुए कीड़े (जुगनू) के समान हो ।

(7) रामचन्द्र सिरियि प्रकाश छुख मंज़ गटि ।[61]—राम ! अंधेरे में तुम सूर्य के प्रकाश के समान हो ।

(8) गटि अन्दर चन्द्रम ।[62]—अन्धेरे में चांद के बराबर ।

(9) तसुन्द प्वख ज़रद गो ज़न हरदुकुय पोश ।[63]—उसका (राम का) मुखड़ा शरद्कालीन फूल की तरह पीला पड़ गया ।

(10) ज़ल रुस्त सर, चांगि रुस्त घर छु युथ त्युथ बु संतान रुस्त क्या कर ।[64]

---

55. प्र० रा०, पृ० 12.
56. वही, पृ० 24.
57. वही, पृ० 39.
58. वही, पृ० 47.
59. वही, पृ० 7.
60. शं० रा०, खंड 2. अ 2. (412).
61. आ० रा०, पृ० 64,
62. वही, पृ० 79.
63. वही, पृ० 243.
64. शर्मा रामायण, पृ० 124.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—पुत्र के बिना मेरी दशा जल के बिना सरोवर और दीप के बिना घर की सी है ।

(11) च़ य रुस्त स्वर्ग छुम म्य नरकस समान···च़ य रुस्त बु छुस गाड़ बे आब आह ।[65] —तुम्हारे बिना स्वर्ग नरक के बराबर है···तुम्हारे बिना में जलविहीन मछली के समान हूं ।

(12) ज़िन्दे ज़न गाड़ गयि तचि़ क्रायि मांज़ ब्राग ।[66] —जैसे जीवित मछली उफनती तेल की कढ़ाई में जा गिरी हो ।

अलंकारों में उपमा को प्रमुख समझकर तुलसीदास ने 'मानस रूपक' में ही 'उपमा'[67] का उल्लेख किया है । 'मानस' में भी प्राकृतिक उपमानों के कई सुन्दर उदाहरण मिलते हैं । जैसे—

लता भवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ ।। (1 232)

सोभा सींव सुभग दोउ बीरा । नील पीत जलज़ात सरीरा ।।
मोरपंख सिर सोहत नीकें । गुच्छ बीच बिच कुसुमकली कें ।। (1.233)

राका ससि रघुमति पुर सिंधु देखि हरषान ।
बढेउ कोलाहल करह जनु नारि तरंग समान ।। (7.3)

तुलसीदास ने प्राकृतिक उपमानों को लेकर नीति, भक्ति और दर्शन की भी विवेचना की है ।[68] ऐसे उपमानों में प्राकृतिक सहजता के सौन्दर्य का अभाव है, क्योंकि कवि का मुख्य उददेश्य 'मानस' में नीति तथा दर्शन से सम्पुष्ट भक्ति का ही प्रतिपादन है और इसी उद्देश्य की पूर्ति में प्राकृतिक उपमानों का प्रयोग किया गया है । मानसकार ने इसीलिए नीति पुराण और दर्शनशास्त्र से भी कुछ उपमान ढूंढ़े हैं, जिनमें भाव-प्रेषणीयता अधिक दुरूह हुई है । जैसे :

उभय बीच सिय सोहति कैसें । ब्रह्म जीव बिच माया जैसें ।। (2.123)

डगै न सम्भु सरासनु कैसें । कामी बचनु सही मनु जैसें ।।
सब नृप भए जोगु उपहासी । जैसें बिनु बिराग संन्यासी ।। (1. 251)

65. शर्मा रा० पृ० 58.
66. प्र० रा०, पृ० 87.
67. उपमा बीचि बिलास मनोरम (1.37).
68. वही 4.14-15.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसी । छबि गन मध्य महाछबि जैसी ।। (1. 264)

बहुरि कहों छबि जसि मन बसई । जनु मधु मदन मध्य रति लसई ।।
उपमा बहुरि कहौं जिअं जोही । जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही ।। (2.123)

अलंकार-शास्त्री केशवदास ने 'रामचंद्रिका' में प्रायः सभी अर्थालंकारों का प्रयोग भी चमत्कार-प्रदर्शन की भावना से ही किया है । कुछ उपमा उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग फिर भी सुन्दर है । उदाहरण के लिए :

राजराज दसरथ्थ-तने जू । रामचंद भुवचंद बने जू ।
त्यों विदेह तुम हू अरु सीता । ज्यों चकोरतनया सुभगीता ।। (5.33)

जनु सागर कों सरित पगुधारी । तिनके मिलि वे कहं बाहं पसारी ।। (6.4)
धरैं एक बेनी मिली मैल सारी । मृनाली मनो नंतैं काढ़ि डारी ।। (13.53)

ग्रसी बुद्धि सी चित्तचिंतानि मानौ । किधौं जीभ दंतावली में बखानौ ।
किधौं घेरिकै राहु नारीन लीनो । कला चंद्र की चारु पीयूष-भीनी ।। (13.54)

'रामचंद्रिका' के अलंकारों में कवि के पांडित्य और चमत्कार-प्रियता की गहरी छाप है । अलंकार-विधान उक्ति-वैचित्र्य के भार से दब सा गया है ।

आधुनिक काव्यों में उपमा उत्प्रेक्षा-अलंकार का प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक सहज रूप में हुआ है जो भाव-प्रेषणीयता में सहायक होते हैं। 'वैदेही-वनवास' में सीता के लिए प्रयुक्त उपमा देखिए—

कमलिनी सी जो है सुकुमार । कुसुम कोमल है जिसका गात ।। (2.31)

हमारे सुख का मुख अवलोक । बना किसको बन सुन उद्यान ।।
कुसुम कंटक, चन्दन तप-ताप । प्रभंजन मलत-समीर मसान ।। (2.35)

'साकेत' में सुन्दर प्राकृतिक उपमानों की योजना सुन्दर है—

उषा सी आई थी जग में, संध्या सी क्या जाऊं ।
श्रांत पवन से वे आवें, में सुरभि समान समाऊं ।। (पृ० 324)

पड़ी थी बिजली सी विकराल, लपटे थे घन जैसे बाल । (पृ० 61)

आकाश जाल सब ओर तना, रवि तन्तुवाय है आज बना
करता है पद प्रहार वही, मक्खी सी भिन्न रही मही । (पृ० 287)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अप्रस्तुत रूप में प्राकृतिक उपमान का एक और चित्रण देखिए :

एक तरू के विविध सुमनों से खिले, पोरजन रहते परस्पर मिले। (पृ०22)

अर्थालंकारों में उपमा के पश्चात् रूपक का ही प्रमुख स्थान है। जब उपमेय को उपमान के रूप में दिखाया जाता है तब रूपक अलंकार होता है। इस अलंकार के तीन भेद माने जाते हैं—सांग, निरंग और परम्परित। सांग या सावयव रूपक में उपमेय में उपमान का आरोप तो होता ही है, साथ ही उसके अन्य अंगों पर भी उपमान के अनेक अंगों का आरोप किया जाता है। निरंग में उपमान के अंगों का आरोप नहीं होता है और परम्परित (या श्रृंखलाबद्ध) रूपक में एक आरोप दूसरे से सम्बधित या उस पर आश्रित होता है। यहां संक्षेप में दोनों भाषाओं के कवियों द्वारा प्रयुक्त रूपक अलंकारों के उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं।

सांगरूपक दोनों भाषाओं के रामायणों में दृष्टिगोचर होते हैं। कश्मीरी में इसका प्रयोग अधिक सहज और अकृत्रिम रूप में हुआ है। 'प्रकाश रामायण' के प्रारम्भ में भव्य रामकथा को सरल पात्रबद्ध रूपक-पाश में बांधने का प्रयत्न किया गया है। कवि के विचारानुसार—"सीता सुभेच्छा है, राम-लक्ष्मण सत्य का साक्षात् स्वरूप। हनुमान साहस है और दुर्जन रावण ही असत्य है। रावण एक ऐसी कुत्सित वृत्ति है, जिससे आत्मिक पहचान मिटकर भगवद्-ध्यान भूल जाता है। क्षमा-खंजर के साथ लंका (शरीर) में ढूंढ़कर वैराग्य-कटार और शुभवासना रूपी बाण से उसे मार डालना ही उचित है।···अंगद, सुग्रीव, जामूदन (जामवंत) और विभीषण ज्ञान के वस्त्र है। प्रकुति-कैकेई, जन्म-सुमित्रा, कर्मलेखा-कौशल्या और धर्म राजा दशरथ हैं। सन्तोष युद्ध-वस्त्र या कवच हैं, और वनवास उपदेश। इन सबके सहयोग से ही राम (अत: व्यक्ति) पापों के भण्डार का संहार कर पाता है।"[69] 'शंकर रामायण' में भी कथा-रूपक मा एक भिन्न रूप मिलता है—"आराध्यदेव राम देह-मंदिर है। चौदह भवनों और नव खण्ड के सार हैं, जिसमें जड़-स्थूल समस्त प्रकृति समाहित है······दश शिर (रावण) अहंकार है। राक्षस मोह-समुद्र। शूपर्णखा मिथ्या है, जो भ्रमित करती है।···लंका ऐसी ममता है जिसमें संकल्प विकल्प रूपी राक्षस-वृत्तियां विचरण करती है।"[70] आदि। कश्मीरी रामायणों में ऐसे रूपक अधिक नहीं हैं, जिनमें इस प्रकार दार्शनिक पहलुओं की विवेचना मिलती हो। प्रकाशराम ने विविध स्थलों पर भावाभिव्क्ति के लिए सरल रूपकों का प्रयोग

---

69. प्र० रा०, पृ० 3-4.

70. शं० रा०, खण्ड 1. अ 3 (42-50).

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया है। कृति के प्रारम्भ में ही वे आत्म-चिंतन एवं स्वहित-मनन की विवेचना इन शब्दों में करते हैं—"मन जल बिन्दु के सदृश है, जिसका नाम आईना है। उसके जंग (वैर, द्वेष आदि अनुदान भावनाओं की मलिनता) को साफ करने पर यह एक दरिया में परिवर्तित होगा, जिसकी लहरें कहीं भी मनोनीत स्थान पर पहुंचा सकती है—गुप्त पाताल से लेकर आकाश तक समस्त रूप उसी में देखा जा सकता है।"[71] विपक्षी रावण की युद्ध-तैयारी के प्रसंग में भी उसकी कुत्सित वृत्तियों का चित्रण सुन्दर रूपक में प्रस्तुत किया गया है—'रावण ने क्रोध की कमान (धनुष) एवं काम की कमंद सम्भाली······लोभ के रथ पर बैठकर अहंकार के कवच पहने'[72] और राम ने कर्म की कमान से रावण के पाप का निशाना बनाया।[73]

कश्मीरी रामकथा-काव्यों में रूपक का प्रयोग अधिकतर प्राकृतिक परिवेश में हुआ है। पात्रों का रूप-गुण एवं अनुभूति-चित्रण प्राकृतिक उपकरणों के रूपक के माध्यम से अधिक सहज और सुन्दर ढंग से निम्नलिखित उदाहरणों में देखा जा सकता है :

1. गुलाबस सोंसंनुक ह्युव रंग तस गो[74]—गुलाब (सीता) का रंग सोसन सरीखा मंद पड़ गया।

2. चोदश चन्द्रम कोर कीतन आवार[75]—चौदहवीं के चांद (सीता) को केतु (रावण) ने परेशान किया।

3. यम्बरज़लि चश्म वुछ बादाम[76]—नर्गिस (सीता) की बादामी आंखें तो देखो ?

4. गुलाबस मीज्य बेयि बागच य बरज़ल[77]—गुलाब (राम) को पुनः उपवन की नर्गिस (सीता) प्राप्त हुई।

---

71. थि मन छुय पां फ्योरा आईम छुस नाव, तुलस ज़ंगार लारान यियि दरियाव।
गछ़न आसी च़य योत तोत वातन्नावी, गोप्त पाताल प्यठ आकाश हावी।
(प्र० रा०, पृ० 3)

72. कमान क्रूदच कमन्द अज़ काम लाजिन।
रथा लूबुक लदुन जरवुंक अहंकार ।। (प्र० रा० पृ० 148)

73. कमान कर्मच कड़ॅन तस रावनस कुन। निशानस पाय किस प्यठ तीर त्रोवुन।
(प्र० रा०, पृ० 150)

74. प्र० रा०, पृ० 52.

75. वही.

76. प्र० रा०, पृ० 153.

77. वही, पृ० 158.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. बुल्बुलो गुल छै नालान[78]—बुल्बुल (राम) ! गुल (सीता) तुम्हें बुला रही है ।

6. सोम्बुल पोश यम्बरज़लि वरने आव[79]—'सोम्बुल' (पुष्प-विशेष अतः राम) नर्गिस (सीता) को ब्याहने आया ।

7. तोते गो सानि वनहारे ह्‌यथ[80]—तोता (दूल्हा राम) हमारी मैना (दुल्हन सीता) को (ब्याह करके) साथ ले गया ।

8. गुहुन लोगमुत छु सोंदर आफताबस[81]—ग्रहण (विरप-व्यथा) ने सूर्य (सीता) को ग्रस्त किया है ।

9. छु लोगमुत तोत काबनिस चोंगलस मंज़[82]—तोता (सीता) कौवे (रावण) के चंगुल में फंस गया है ।

10. सु बुल्बुल सु गुलरो छ़ारान ओस[83]—बुल्बुल (राम) गुलाब (सीता) को ढूंड़ रहा था ।

11. बु पम्पोश आसस ते प्यठ प्योम शीन[84]—मैं (मन्दोदरी) कमल थी और बर्फ (विपति) के नीचे दब गई ।

हिन्दी रामकथा-काव्यों में 'मानस' में रूपक-योजना के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण मिलते हैं । उक्त अलंकार के अधिक प्रयोग के कारण तुलसीदास को इस अलंकार का 'बादशाह'[85] कहा गया है । 'मानस' में तीनों प्रकार के रूपक मिलते हैं, किन्तु 'मानस' के सांगरूपक अधिक सुन्दर और कलात्मक हैं जिनमें कई अन्य अलंकार समाविष्ट हुए हैं । 'मानस' के कुछ विशिष्ट सांगरूपक इस प्रकार हैं :

1. कौसल्या-प्राची, 2. रामचरित और मानसरोवर, 3. स्वयंवर के मंच पर विराजित रघुवर-बाल पतंगा, 4 संकर चापु—जहाजु, 5. रोष तरंगिनी कैकेयी, 6. जनक भूप मन-प्रयाग, 7. भरत मति-छोनी, 8. आश्रम-सागर, 9. भरतहिय

---

78. प्र० रा० पृ० 186.
79. शंकर रामायण, खण्ड 1. अ 8 (1).
80. आ० रा०, पृ० 57.
81. वही पृ० 122.
82. वही
83. शर्मा रामायण, पृ० 190.
84. वही, पृ० 442.
85. कवितावली—लाला भगवानदीन कृत टीका, प्रस्तावना, पृ० 31 (द्वितीय सं०)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विमल आकाश, 10. भगतउर— व्योम, 11. काम-कटक, 12. शशि केशरी, 13. विश्वरूप रघुवंश, 14. धर्मरथ, 15. रुधिरसरिता, 16. पुर-सिन्धु, 17 ज्ञान-दीप, और 18. भगति-चिन्तामनि।[86] कश्मीरी काव्यों में रूपक की इतनी विविधता नहीं मिलती है, जितनी अकेले 'मानस' में। यहां पर भी निस्संकोच कहा जा सकता है कि 'मानस के रूपक-विधान अकृत्रिम नहीं हैं, उनमें चमत्कार और विलष्टिता अधिक है। आलोचकों ने भी 'मानस' के रूपकों में जटिलता डराम्बर और प्रस्तुत—अप्रस्तुत असामंजस्य आदि दोष स्वीकार किए हैं।[87] कश्मीरी में कहीं भी रूपक-नियोजना में विलष्टिता या दुरूहता का आभास नहीं मिलता है, उनमें काव्य-सौन्दर्य एवं भाव वहनता में ही वे सहायक होते हैं। परवर्ती हिन्दी राम काव्य के अन्तर्गत भी सामान्यतः रूपकालंकारों का प्रयोग हुआ है, किन्तु 'मानस' जैसी परिपक्वता या औचित्य कहीं भी प्राप्त नहीं होती है। कवियों ने रूपक द्वारा जहां कहीं भी चमत्कार दिखाना चाहा है, कल्पना खंडित सी हुई लगती है। उदाहरणस्वरूप 'साकेत' का यह श्लेष से पुष्ट रूपक देखा जा सकता है :

> उस रुदन्ती विरहिणी के विरह रस के लेप से
> और पाकर ताप उसके प्रिय— विरह विक्षेप से
> वर्ण-वर्ण सदैव जिनके हों विभूषण कर्ण के
> क्यों न बनते कविजनों के ताम्रपत्र स्वर्ण के।। (पृ० 269)

कश्मीरी रामकथा-काव्यों में प्रायः सभी प्रकार के अलंकारों का प्रयोग हुआ है जिनमें से प्रमुख अलंकारों उपमा-उत्प्रेक्षा और रूपक के प्रयोग के बारे में ऊपर कहा गया है। अन्य प्रयुक्त अलंकारों में अतिशयोक्ति और अन्योक्ति ही कई विशिष्टताओं के कारण अपनी ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। अतिशयोक्ति अलंकार की निजी सीमाएं हैं—एक तो अद्भुत रस' प्रतिपादक स्थलों पर इन की नियोजना अत्याज्य प्रतीत होती है, जिसमे राम, वानर एवं राक्षसों के समस्त अलौकिक तथा अद्भुत कृत्यों का वर्णन मिलता है। भावगत अतिशयोक्ति का उल्लेख किन्हीं ऐसे स्थलों पर भी उपलब्ध होना है, जिसमें कवि भाव-गहनता को अधिक तीव्र बनाने का प्रयत्न करता है। कश्मीरी में दूसरे प्रकार के प्रयोग अधिक हैं। उदाहरण के लिए :

(1) तिथुय रथ पोक कोलन अवमान सांपुन[88] —राक्षसों का संहार करते हुए

---

86. डा० रा० प्र० अग्रवाल—वाल्मीकि और तुलसी : साहित्यक मूल्यांकन, पृ० 471.
87. वही, पृ० 488-489.
88. प्र० रा, पृ० 11.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम के बाणों से—लहू की ऐसी तेज़ धाराएं प्रवाहित हुईं, जिनके सामने नदियां लज्जाई ।

(2) कमान तुन्य रामचद्रन जोर होवुन, गिलनि सअत्थन सु पर्वत दूर त्रोवुन[89] राम ने धनुष से बाण चलाया और एक झटके में पर्वत को उठाकर दूर फेंक दिया।

(3) वदनि लज्य युथ सपुन सैलाब सोरइ ।[90]—सीता इतना रोई कि उनके आंसुओं से बाढ़ आ गयी । अश्रुओं के बदले आंखों से लहू बहाने का चित्रण तो प्रायः सभी रामायणों में विविध स्थलों पर मिलता है—कश्मीरी काव्य में इसका उल्लेख सर्वत्र मिलता है और इसलिए रामकाव्य में ऐसे चित्रण बिल्कुल सामान्य हैं :

(4) अमर सीता कमल नेत्रों हरान खून[91]—अमर सीता कमल नेत्रों से निरंतर लहू बहा रही है ।

(5) अछव किनि त्रावनि लज्य खून जारी[92]—आंखों से अविरल लहू बहाने लगी ।

(6) नेत्रों अन्दर रथ गोख जारी[93]—आंखों से लहू प्रवाहित हुआ ।

(7) अछव किनि खून बारां ओशधि हारान[94]—नेत्रों से (कौशल्या) खून की वर्षा कर रही है । आदि ।

भावाभिव्यंजना में सहायक अन्योक्ति अलंकारो की छटा सर्वत्र विद्यमान है । कुछ अन्योक्तियों का प्रयोग काव्य-सौन्दर्य एवं भाव-प्रवणता की दृष्ठि से निस्सन्देह सुन्दर हैं-पिता विहीन बालक की स्थिति का वर्णन इस अन्योक्ति द्वारा किया गया है—'मोखत फोल आसिथ मोल छुस ने फोते । काव छुस सपनान आसिथ तोते ।[95] मोती होकर भी उसका मूल्य 'फोते' (नकली मोती) के बराबर भी नहीं है. तोता होकर भी वह कौआ बन जाता है। मूर्च्छित लक्ष्मण का चित्रण कवि ने मेघाच्छादित सूर्य की अन्योक्ति द्वारा प्रस्तुत किया है।[96] इसी तरह मन्दोदरी रावण को समझाती

89. ,प्र० रा० पृ० 63.
90. वही, पृ० 87,
91. वि० प्र० रा०, पृ० 167.
92. आ० रा०, पृ० 138.
93. वही, पृ० 181.
94. ता० रा०, पृ० 159.
95. आ० रा०, पृ० 84.
96. वुछुन येलि सिरियि गोमुत मेगस तल ।—आ० रा०, पृ० 175.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुई कहती हैं अपने कुल-परिवार को कमल-वाटिका समझ लो और सीता को इस वाटिका का हिम :

पनुन कोम पम्पोश वाग च़ जान, यि सीता च़ अथ बागस शीन जान ।
(शर्मा रा०, पृ० 169)

हिन्दी रामकथा-काव्य में भी उपर्युल्लिखित दोनों अलंकारों का प्रयोग हुआ है, किन्तु कश्मीरी में इन अलंकारों में अधिक स्वाभाविकता एवं सहजता पाई जाती है। कुल पर हिन्दी रामकथा-काव्यों में विशेषतया 'मानस' और 'रामचंद्रिका' में अलंकारों का अधिक प्रयोग हुआ है किन्तु 'रामचंद्रिका' में अलंकार-विधान चमत्कार-प्रदर्शन के नीचे दब सा गया है और 'मानस' में अपेक्षाकृत अधिक सहजता और स्वाभाविकता है। किसी भी कश्मीरी रामायण में अलंकारों का बलात या चमत्कार-युक्त प्रयोग नहीं हुआ है, अलंकारों का प्रयोग कम होने पर भी उनमें अधिक सहजता और सारल्य है जो सदैव भाव-प्रेषणीयता में ही सहायक होते हैं।

7. 4. संवाद-नियोजना

रामकथा-काव्य में मुख्य रूप से दो प्रकार के संवाद माने जा सकते हैं -पौराणिक शैली के संवाद तथा पात्रों के पारस्परिक संवाद। पौराणिक शैली के संवादों के दो प्रकार हैं - पौराणिक शृंखलाबद्ध कथा संवाद तथा उपदेशात्मक संवाद।

7.4.1 पौराणिक शैली के सवाद

पौराणिक शैली के संवाद से तात्पर्य उस पौराणिक कथा-वर्णन प्रणाली से ही है, जिसमें वक्ता-श्रोता के शृखलाबद्ध प्रश्नोत्तर रूप में ही कथा का वर्णन किया जाता है तथा अवसर निकालकर कथा-काव्य मे नीति, धर्म, भक्ति, दर्शन आद विषयक उपदेशों का निरूपण भी बीच-बीच में कवि या पात्रों द्वारा किया जाता है। पहले हम शृखलाबद्ध कथा-संवादों के बारे मे दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में विचार करेंगे। अध्यात्मरामायण' के आधार पर कश्मीरी 'प्रकाश-रामायण' तथा 'अमर रामायण' की सम्पूर्ण रचना शिव-पार्वती संवाद में ही हुई है। अन्य रामायणों में भी यही संवाद प्रधान है। 'शंकर-रामायण' में कथा-वर्णन से सम्बंधित चार संवादों का परिचय मिलता है—ब्रह्म ऋषियों को, शिवजी पार्वती को अगस्त्य मुनि याज्ञवल्क्य को तथा कागभुशंडि गरुड़ को राम कथा सुनाते हैं।[97] उक्त रामायण में भी शिव-पार्वती संवाद ही प्रमुख है। 'वि० प्र० रा०' में कथा-वर्णन के संवादों

97. ब्रह्मान रामायन वोन रिशेश्वस, शिवजियन अद पार्वती वन्याव ।
अगस्त्य वोन याज्ञवल्क्य सुन्दरस काक भुशुंड़स गरुड़स वन्याव ।
—खंड 1. अ 2 (123-124)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का दो स्थलों पर मिलता है—एक स्थल पर शिव-पार्वती संवाद, भुशुंडि गरुड़ संवाद तथा वाल्मीकि-भरद्वाज संवाद के बारे में[98] और दूसरे स्थल पर ब्रह्म-ऋषियों तथा वशिष्ठ अरुन्धती के दो अन्य संवादों के विषय में भी।[99] 'शर्मा रामायण' के प्रारम्भ में ही 'याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संवाद' तथा 'शिव-पावती संवाद' का उल्लेख मिलता है।[100] सभी रामायणों में शिव-पार्वती संवाद ही प्रमुख है—कवियों ने अन्य संवादों का परिचय मात्र देकर या यत्र-तत्र उल्लेख करके मुख्य कथा-सूत्र शिवजी के ही हाथ सौंपा है। 'आनंद रामावतारचरित' में किसी भी उपरोक्त संवाद का उल्लेख नहीं मिलता है। कवि प्रारम्भ में इतना निर्देश करते हैं कि जिस रामकथा का वर्णन वेदों में हुआ है, उसी को वे सविस्तार शब्दों का रूप दे रहे हैं।[101]

'मानस' में तीन वक्ता-श्रोताओं शिव-पार्वती, याज्ञवल्क्य-भरद्वाज और कागभुशुण्डि-गरुड़ का अपेक्षाकृत विस्तारपूर्वक चरित भी चरित भी मिलता है। किन्तु इसमें भी आद्यंत शिव-पार्वती संवाद ही प्रमुख है और अन्य संवादों में असमानताएं दृष्टिगोचर होती हैं—याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संवाद का परिचय केवल बालकाण्ड में ही मिलता है और उत्तरकाण्ड में कागभुशुण्डि-गरुड़ संवाद और चरित सविस्तार उपलब्ध है। कवि और पाठक को चौथे वक्ता-श्रोता मानकर मानस में 'संवाद-चतुष्टय' का निर्माण अत्यधिक सुन्दर ढंग से निरूपित हुआ है। तुलसीदास ने 'संवाद-चतुष्ट्य' का निरूपण करके 'मानस-रूपक' के अन्तर्गत भी रामचरित रूपी

---

98. वनान दीवी कुन शम्भु जटाधर महाअमृत कथा अमृत बराबर
रेशन शोतक वनान छुय रामलीला छु रामायण महा अमृत दलीला
छु चिरंजीव अन्दर नामी भुशुंडी गरुड़ बोज़ान रामायण अखण्डी
मनीश वाल्मीकि थुइ नमस्कार वनान छुय भारद्वाजस रामावतार
—वि० प्र० रा०, पृ० 21.

99. वनाम शिवनाथ श्री पार्वतीए, वशिष्ठ छुय वनान अरनदतीए।
... ...
उत्तम मुख ब्रह्मास निशि रेशि छि वोज़ान। शरन रामचन्द्रम कुनछि राज़ान।।
(वि० प्र० रा०, पृ० 116)

100. कथा योस वनी याज्ञवल्की मुनि। तमिस भारद्वाजस महामय गुनी।
चरित युस वोभाये वोनुय शंकरन। कथा बु तथ छुस आरम्भ करन।।
—शर्मा रामायण, पृ० 7.

101. आ० रा०, पृ० 10.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानसरोवर के चार घाटों का समावेश किया है, जहां ये चारों वक्ता-श्रोता विराज-मान हैं :—

सुठि सुन्दर संबाद वर बिरचे बुद्धि बिचारु।
तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारु ।। (1.36)

संवादों के प्रयोग-अभिप्राय के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कुछ विद्वान घाटों और सम्वादों की व्याख्या इस प्रकार करते हैं —'पहिला पूर्वघाट ग्रन्थ-कार का है जिसके वे वक्ता और सुजन श्रोता हैं। यह दीनघाट या गोघाट है।··· दूसरा घाट भरद्वाज और याज्ञवल्क्य संवाद का दक्षिण ओर बन्धा है। यह कर्मघाट है। तीसरा पश्चिम घाट भवानी शंकर संवाद का है। इसे ज्ञान घाट कहते हैं··· चौथा उत्तर घाट— या उपासना घाट है।'[102]—कुछ आलोचक इन संवादों को 'मानस' में प्रतिपादित कर्म, ज्ञान, भक्ति एवं दैत्य की अभिव्यंजना एवं कुछ आलो-चक विभिन्न दार्शनिक सिद्धांतों —अद्वैत, शुद्धाद्वैत, विशिष्टाद्वैत एवं द्वैताद्वैत के प्रतिपादन में सहायक मानते हैं जिसमें प्रत्येक संवाद अलग-अलग भावना या विचार का समर्थन करता है। श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के विचारानुसार 'गरुड़, पार्वती, भरद्वाज तीनों श्रोताओं को दाशरथि राम के ईश्वरावतार होने में सन्देह है। वक्ताओं ने इसी संदेह का निराकरण किया है। श्रोताओं का सन्देह तो एक ही है, पर वक्ताओं के प्रतिपादन में सूक्ष्य भेद भी लक्षित होता है। काक भुशुंडि का प्रतिपादन उपासनापरक, शिव का ज्ञानपरक और याज्ञवल्क्य का कर्मकाण्डपरक है स्वयं तुलसीदास की उक्ति शीलपरक मानना चाहिए।'[103] आध्यात्मिक और दार्श-निक वाद-विवाद से दूर रहकर तुलसी ने पोराणिक शैली से प्रभावित होकर[104] रामकथा के परम्परागत रूप में नवीनता, सहजता और स्वाभाविकता का समावेश किया है। इस तरह की संवाद-नियोजना से कथा अत्यधिक जीवन्त हुई है और भावगहनता सहजतः बोधग्राह्य।

उपदेशात्मक संवादों की योजना पर भी पौराणिक शैली का ही प्रभाव है। दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्य-ग्रन्थों में नीति धर्म, भक्ति और दर्शन से सम्बंधित

---

102. मानस विजया टीका, पृ० 95.
103. 'कल्याण', वर्ष 13, अंक 2, लेख—'मानस के संवाद'.
104. 'पुराणों में वक्ता और श्रोताओं की शृंखलाए जुड़ती चली जाती हैं। ठीक इस पद्धति पर प्रस्तावना में चार वक्ता-श्रोता दिखलाई पड़ते हैं। मानस धर्मग्रन्थ भी है और काव्य ग्रन्थ भी। इसीलिए उसमें धर्मग्रन्थ पुराणों की तरह शृंखलाबद्ध संवाद रखे गये हैं।'
—श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र—'कल्याण' 13.2.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विविध विषयों का प्रतिपादन-निरूपण करने के लिए ही विविध स्थलों पर प्रश्नोत्तर रूप में दो पात्रों के पारस्परिक संवादों, सभा-संवादों, वन्दनाओं और कभी-कभी किसी वयोवृद्ध या आदर्श पात्र तथा कवि द्वारा स्वतंत्रोक्त वचनों या सम्भाषणों के उदाहरण मिलते हैं। दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में विशुद्ध उपदेश-प्रधान सम्वादों की संख्या बहुत अधिक है, जिन में से चित्रकूट-सभा, संवाद, अंगद-रावण सवाद, राम-लक्ष्मण संवाद, लक्ष्मण-निषाद संवाद, राम-नारद संवाद, सीता-अनुसूया संवाद आदि महत्वपूर्ण हैं। कवियों का मुख्य पात्रों द्वारा ज्ञानोपदेशों का उल्लेख पहले ही हो चुका है। विस्तृत उपदेशात्मक सवादों से कथा-प्रवाह कभी-कभी अवरुद्ध एवं स्खलित होता है, किन्तु कवियों द्वारा इस प्राचीन परम्परागत परिपाटी एवं शैली का निर्वाह रामकथा काव्य जैसे 'धर्म-काव्य' में करना स्वाभाविक था।

7.4.2 पात्रों के पारस्परिक संवाद

सीमा और विस्तार को दृष्टि में रखकर विद्वानों ने संवादों के दो प्रकार स्वीकार किए हैं—सभा-संवाद और गोष्ठी-संवाद। पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के विचारानुसार 'सभा-सवाद वे हैं जो भरी सभा के बीच हुए हैं और जो स्वभावतः लम्बे तथा अधिक महत्वपूर्ण हैं। लक्ष्मण-परशुराम संवाद, भरत-सभा संवाद जनक-सभा सवाद, हनुमान-रावण संवाद आदि ऐसे ही संवाद हैं। दूसरी ओर गोष्ठी संवाद वे हैं जो दो या दो से अधिक व्यक्तियों, मित्रों या सम्बंधियों के बीच व्यक्तिगत रूप में हुए हैं। उदाहरण के लिए जनकपुर की सखियों के संवाद, मंथरा-कैकेयी संवाद, रामसीता-संवाद केवट संवाद आदि इसी शैली में परिगणित किए जायेंगे।'[105] यहां हम दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में प्राप्त उक्त दोनों प्रकार के सवादों की अलग-अलग विवेचना प्रस्तुत करते हुए दोनों में प्रयुक्त विशिष्ट शैलीतात्विक रूपों पर विचार करेंगे।

कश्मीरी रामकथा-काव्यों में 'प्रकाश रामायण' में संवाद-शैली के प्रायः सभी गुणों का समावेश मिलता है। संवादों की भाषा सर्वथा लोक-रंजक, पात्रानुकूल एवं बोधगम्य है। संवादों की वाक्य-रचना में शब्द-सक्षेप, अर्थ-गाम्भीर्य और स्वाभाविकता का सुन्दर सामजस्य मिलता है। उक्त रामायण में संवाद पात्रों के 'अन्तस्' का चारित्रिक मनोविश्लेषण प्रस्तुत करके चरित्र-विकास में अत्यधिक सहायक होते हैं। राम-सीता संवाद, सीता-लक्ष्मण संवाद, सीता-रावण संवाद, सीता-मन्दोदरी सँवाद तथा अंगद-रावण संवाद अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। 'प्रकाश रामायण' में कुछ नवीन शैलीतात्विक संवादों का सूत्रपात भी हुआ, जिनका अनुकरण परवर्ती काव्यों में भी देखा जा सकता है। उनमें से प्रमुख

105. मानसांक—कल्याण 13.2, पृ० 1012.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संक्षिप्त नाटकीय प्रश्नोत्तर शैली ही है 'राम-सीता संवाद' में इस शैली का मुख्य रूप से प्रयोग हुआ है—

वनगमन पूर्व 'राम-सीता संवाद' का एक उदाहरण देखिए। राम सीता को अयोध्या में ही रुकने का अनुरोध करते हैं और सीता उनके एक-एक कथन का तत्क्षण ऊत्तर देती हुई संग चलने के लिए तर्कपूर्ण हठ करती हैं :

'दपुस तम्य रामचन्द्रन बोज़ येथ्य ब्येह्, दपुम तमि वनने वअलिजि छम रेह।
दपुस तम्य भूम नटि अमि पकन चाने, दपुस तमि पिय म्य ओसुम कर्मलाने।
(पृ० 22)

—'श्रीराम कहते हैं—तुम मेरा कहना मानकर यहीं (अयोध्या में ही) रहो। वे (सीता) बोली—ऐसे शब्द सुनने से मेरा दिल जल रहा है। उन्होंने (राम ने) कहा—तेरे (नंगे-पांव संग) चलने से भूमि कांपेगी। वे (सीता) बोली—मेरे कर्मों में जो कुछ भी लिखा है, भोग लूंगी।' यहां पर ऐसे ही विस्तृत नाटकीय संवादों में 'दपुस तम्य' (राम ने कहा) और 'दपुस तमि' (सीता ने कहा) का प्रयोग अनवरत रूप से हुआ है।

उक्त रामायण में लव-कुश काण्ड के अन्तर्गत 'गीति-शैली' में वर्णित 'राम-सीता संवाद' में भी इसी संवाद-शैली का प्रयोग हुआ है। राम 'वाल्मीकि आश्रम' में सीता की कुटिया के बन्द द्वार पर बाहर खड़े हैं और सीता भीतर। राम द्वार खोलने के लिए अनुरोध करते हुए उनके समक्ष अयोध्या चलने का सानुरोध प्रस्ताव रखते हैं किन्तु सीता उनके एक-एक वचन का उत्तर देकर अनवरत हठ साध लेती हैं :

—तम्य दोपनस तोर यिम कम खतिम पाक। तमि दोपनस तोर रूदुय न इन्साफ।।
तम्य दोपनस तोर कर खांदअरी, तमि दोपनस तोर त्राविम म्य सअरी।
(पृ० 205)

—'उस (राम) ने कहा—कौन से ऐसे पाप मैंने किए हैं ? वे (सीता) बोली—इंसाफ तनिक भी न कर सके। ···उसने कहा—अब—घर-गृहस्थी का कार्यभार सम्भालो, तो वे बोली—मैंने अब सब कुछ छोड़ दिया है।' आदि। 'प्रकाश रामायण' में राम-सीता संवाद के अतिरिक्त सीता-रावण,[106] रावण-मारीच[107] और इन्द्रजीत-सुलोचना[108] आदि संवादों में भी इसी संवाद-शैली का प्रयोग हुआ है। परवर्ती रामायणों में 'विष्णु प्रताप रामायण' में वर्णित 'राम-सीता संवाद'

106. प्र० रा०, पृ० 51 तथा 81.
107. वही, पृ० 47.
108. वही, पृ० 112.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तथा 'सीता-रावण संवाद में भी इसी संवाद-शैली का अनुकरण हुआ है। वन-गमन पूर्व राम-सीता संवाद देखिए :

दपुस तम्य छख च् नाजुख बरग गुल जन, दपुस तमि बु गयस बरः बाव हनहन।
दपुस तम्य छख च् इन्द्रानी बराबर, दपुस तमि खाक छ्यनें योस आसि बेसर।।
दपुस तम्य छख महालक्ष्मी च़्य क्या गाय, दपुस तनि च़्य सिवा आस्यम सियाह-
रोय।। (पृ० 101)

--'उस (राम) ने कहा—तुम कोमल गुलाब की पखुड़ी समान हो। वे बोली—मैं विरह-वायु से मुर्झा जाऊंगी।···उस (राम) ने कहा —तुम 'इन्द्रानी' के सदृश हो। सीता बोली वह स्त्री धूल सरीखी है जो पतिविहीना (या पति से दूर) हो। उस (राम) ने कहा—तुम महालक्ष्मी हो तो सीता उत्तर देती हैं--तेरे बिना मेरे मुंह पर काजल पुत जायेगा। आदि' 'सीता-रावण' संवाद का उदाहरण भी प्रस्तुत है :

दपुस सीतायि लंकायि लगी नार, गलख पापन अन्दर ह्यथ राजदरबार।
दपुस तम्य राम जी संन्यास्थ त्रावुन, दयुस तमि छुय महाप्रलय च़्य हावुन।
रही मन्दोदरी च़्य म्यानि खोछ, सत च माता म्य छम त्रस्व चानि खोतें।
(पृ० 167)

— सीता बोली लंका जल जायेगी और राजदरबार समेत पापाग्नि में नष्ट हो जाओगे। ···उस (रावण) ने कहा···संन्यासी राम को छोड़ दो। वे बोली—तुम्हें महाप्रलय का दृश्य दिखाना अभी शेष रह गया है। (रावण कहता है)—मन्दोदरी तुम्हारी देख-रेख मुझसे भी अधिक अच्छी तरह करेगी। (सीता उत्तर देती हैं) —वही तो मेरी सगी और सच्ची माता है।'

'प्रकाश रामायण' में एक दूसरी नवीन संवाद-शैली का प्रयोग हुआ है, वह है—पात्रबद्ध आत्मसंवाद शैली। इस शैली के अन्तर्गत पात्र के प्रश्नों, सन्देह-समस्याओं के साथ अभीष्ट व्यक्ति या पात्र के परिकल्पित या स्मृति जनक प्रश्नोत्तर सुगुंफित रहते हैं। इसमें दो पात्रों के बीच प्रत्यक्ष रूप में वार्तालाप नहीं होता है। उदाहरण के लिए दशरथ की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए राम के आत्मालापों में इस संवाद-शैली के दर्शन होते हैं। राम यही अभिलाषा व्यक्त करते हैं काश! सपने में वे अपने दिवंगत पिता को देख लेते तो वार्तालाप ऐसे होती—

बु वनहास गोसं क्या क्या छिम बन्येमित, सु वनिह्यम जामें असि सअथ्य छिम
वुन्येमित।
बु वनहास गरि नेरून गोभ अवमान, सु वनिह्यम गरे तति यति स्वख तें आराम।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बु वनहास यस न बब तस क्या छु पाये, सु वनिह्‌्येम तस छु ईश्वर जायि जाये।
बु वनहास रछ परन तल छ्‌ख शुरेन मोल, सु वनिह्‌्येम सारिनय छुय दय रछन
बोल। (पृ० 34-35)

—'मैं कहता—मुझ पर क्या क्या बीती। वे कहते—विरह में आंचल अश्रु सने हैं। मैं कहता—घर से निकलना मेरे लिए अपमान जनक था। वे कहते—घर वह है, जहां सुख-आनंद प्राप्त हो। मैं पूछता—जो पिता विहीन हो, क्या करेगा ? वे कहते—उसका ईश्वर ही सहायक होता है।···मैं कहता—पिता होकर पुत्रों की सहायता कीजिए। वे कहते—सबकी रक्षा अकेले परमात्मा होकर लेते हैं। यहां भी 'बु वनहास' (मैं कहता) तथा 'सु वनिह्‌्येम' (वे कहते) का प्रयोग बार-बार हुआ है। उक्त रामायण में ही लव-कुश काण्ड में भी सीता के आत्मसंवाद भी इसी कोटि के अन्तर्गत आते हैं। पूर्व स्मृतियों का सहारा लेकर सीता की करुण व्यथा इन संवादात्मक शब्दों में व्यक्त हुई है :

च़्य दोपथम ना च़् छख नाज़ूख गुलि-अंदाम, वुछन छुखना म्य वुनिक्यन क्या-
बनिथ आव।
च़्य दोपथम ना च़् छख बाग च़् यम्बरज़ल, वुछन छुखना म्य क्या सांपुन-
कंड्‌्घन तल।
च़्य दोपथम ना च़् छस चन्द्रम प्रज़लवुभ, वुछन छुख ना पकन क्या छस कुनी ज़न्य।
च़्य दोपथम ना च़् छख नाज़ुक हिये तन, वुछन छुख ना म्य ड्यींशिथ कंड्य-
छि खोचन।
च़्य दोपथम ना च़् छख सारिनय अछन गाश, वुछन छुख ना म्य मा वोन्य
कांसि हंज आश। (पृ० 175)

—'तुम ने कहा था कि तुम 'गुलाब' जैसी हो। देखते नहीं हो, मुझपर क्या क्या बीती है ? तुमने कहा था—उपवन की नरगिस हो। देखते नहीं हो, कांटों से मेरा क्या हाल हो चुका है ? तुम ने कहा था—प्रज्ज्वलित चन्द्रमा सदृश हो। देखते नहीं हो, कैसे अकेली बन-बन भटक रही हूं ? तुम ने कहा था—शरीर तुम्हारा कोमल जुही सरीखा है ! देखते नहीं हो, मुझे देखकर कांटे तक घबड़ा जाते हैं ? ···तुमने कहा था—सारे कुल-परिवार के नेत्रों का प्रकाश हो। देखते नहीं हो, कोई भी आशा मेरी शेष नहीं बची है।' राम द्वारा शिव की वन्दना[109] आदि प्रसंगों में भी इसी संवाद-शैली को अपनाया गया है। 'विष्णु-प्रताप रामायण' में

---

109. प्र० रा०, पृ० 36.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी इस संवाद-शैली का अनुकरण किया गया है। दशरथ-मरण पर राम के आत्म-संवादों का उदाहरण द्रष्टव्य है :

बु वनहास कुनिरस मंज़ उदासी, सु वनिह्येम त्याग कर सांपुन संन्यासी।
बु वनहास क्या बु कर बब छुख च़ म्योनुय, सु वनिह्येम पानं नारायण छु
चोनुय।
बु वनहास गोस कोहि—जंगल खाने, सु वपिह्यम सच छु गयि कीकी बहाने ॥
(3. 19)

—मैं कहता—एकाकीपन में उदास हूं। वे कहते—त्याग करने से ही संन्यासी हो सकते हैं। मैं कहता—अब क्या करूंगा, तुम ही मेरे पिता हो ? वे कहते—नारायण ही सहायक होंगे। मैं कहता—बन-पर्वतों की ओर चल पड़ा हूं। वे कहते—कैकेयी का हठ बहाना मात्र था। 'आदि। कहना न होगा उक्त पक्तियों में भी 'प्रकाश रामायण' की संवाद-शैला का अनुकरण 'बु वनहास' और 'सु वनिह्येम' को ही शब्दशः अपना कर किया गया है।

प्रकाश रामायण' सीता-लक्ष्मण और सीता-हनुमान संवादों में भी शब्दों का सौष्ठव पात्रानुकूल, सहज और स्वाभाविक है। सीता-हरण पूर्व के लक्ष्मण-सीता संवाद' से ये शब्द उदाहरणस्वरूप देखे जा सकते हैं :

दपुस लक्ष्मन जुवन व्येह छख च़ मासूम, च़्य कर छिय राक्षसन हंदि बिहमालूम।
तमिस कुस पोशि नारायण छू पानै, गोय क्या मअज्य ह्यस रुदुय न दानै।
मूर्ख सुय युस पनुन व्येंदि और बापन, वुछन छिस लोले जन छिस गोलि लामयन।
गोडन्य पिय और बायन हुद छु इतवार, दोयिम आसी म्य उयींशिथ दिल-
गिरफ्तार। (पृ० 48-49)

—'लक्ष्मण जी सीता को समझाते हुए कहते हैं—'आप अभी भोली हैं, राक्षसों के छल-कपट आप को क्या मालूम हैं।···फिर राम स्वयं नारायण हैं। कौन उनका मुकाबला कर सकता है ? मां! आप क्यों इतना धैर्य खो गई ? (सीता उत्तर में विवेक शून्य होकर भावाकुल वाणी में ये अनुचित शब्द कहती हैं)···वह व्यक्ति मूर्ख है जो सौतेले भाई को सगा समझ ले। उससे प्यार जताना ही वैरव्रत लेना है।···सौतेले भाई का तो स्वभाव ही ऐसा है फिर मुझे देखकर भी तुम्हारा दिल गिरफ्तार होगा'···।

'प्रकाश-रामायण' में 'हनुमान-सीता संवाद'[110] सीता के चरित्रोत्कर्ष की दृष्टि

110. प्र० रा०, पृ० 83-84.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से महत्वपूर्ण है। इसी तरह 'अंगद-रावण संवाद'[111] में व्यंगवाग्विदग्धता का सुन्दर निरूपण हुआ।

'शंकर रामायण' में मुख्य गीति शैली की प्रधानता के कारण संवादों का स्वाभाविक रूप से निरूपण एवं विकास न हो सका। इसमें भी 'राम-विश्वामित्र,' मंथरा-कैकेयी, कैकेयी-दशरथ, राम-लक्ष्मण एवं राम-सीता आदि संवादों की रचना सहज होने पर भी प्रभावग्राह्य नहीं है।

'विष्णु प्रताप, रामायण' में दशरथ-कैकेयी संवाद, राम-सीता संवाद, सीता-रावण संवाद हनुमान्-रावण सवाद एवं सीता-लवकुश संवादों की योजना अधिक सुन्दर है। 'दशरथ-कैकेयी सवाद' में दशरथ की रागात्मिका वृत्ति का मनोविश्लेषण नई संवाद-शैली के अन्तर्गत अधिक भावाग्राह्य शब्दों में हुआ है। कैकेयी द्वारा वर-याचना पर वे कहते हैं :

यि कम्य दोपनय च़्य यिछ़ तलवार मारन्य, यि कम्य दोपने च़्य पानस हान-
खारन्य।
यि कम्य दोपनय दयस सअत्थन करुन न्याय, यि कम्य दोपन उथकस पननिस-
लदन्य हाय।
यि कम्य दोपनै महीपतिसइ कडुन जुव, मि कम्य दोपनै कमल-मेथरह अमिस-
सुव। (पृ० 93-94)

—किसने तुम से कहा—ऐसी तीव्र कटार चलाकर अपने को कलंकित करना, किसने तुम से कहा—अपने परमात्मा से ऐसा न्याय करके पति का मुंह स्याह कर लो। किसने तुम्हें सलाह दी कि भूपति के प्राण निकाल कर उनके नेत्र सदा के लिए सीलो।'···आदि।

'आनन्द रामावतारचरित' के अन्तर्गत 'राम-परशुराम संवाद', 'सीता हनुमान संवाद', और 'अंगद-रावण संवाद' पात्रानुकूल एवं संवादोपयोगी भाषातत्वों की दृष्टि से सुन्दर हैं। राम-परशुराम संवाद में राम की अत्यधिक विनम्रता तथा परशुराम के असीम क्रोध की अभिव्यंजना सुन्दर ढंग से हुई है।[112] हनुमान् सीता संवाद में सीता के प्रति हनुमान् की अनन्य दास्य-भक्ति का निरूपण हुआ है :

मत यशरावतम निंद्रि वुज़रावतम, हावतम पनुन मोख गालतम दोख।
संगद कर्‌य कर्‌य तोतं बोलनावतम, गुल फोलनावतम बागस मंज़्।
(पृ० 123)

---

111. प्र० रा०, पृ० 93-94.

112. आ० रा०, पृ० 45.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—(हनुमान सीता से)–मुझे भूलना नहीं। अपने शुभदर्शन से ही मेरे समस्त दु:ख क्लेशों का नाश कर लेना। मुझे सोते से जगाना। अपनी (सुहृद) बातों से मेरे कण्ठ को भी द्रवित होने दो, जिससे मेरे उपवन में भी फूल खिलते—अतः आकांक्षाएं पूरी होतीं। 'अंगद रावण' संवाद' में अंगद कठोर, निर्भीक एवं अपमानजनक शब्दों में राम का सन्देश सुनाकर रावण के कुत्सित पापाचार के परिणामस्वरूप उसके मृत्युदण्ड के प्राप्त होने का उल्लेख करते हैं।[113]

'शर्मा रामायण' में उपलब्ध-परशुराम, कैकेयी-मन्थरा, कैकेयी-दशरथ तथा अंगद-रावण संवाद ही संवाद-सौष्ठव एवं कला की दृष्टि से सुन्दर है। लक्ष्मण परशुराम-संवाद[114] तथा अंगद रावण संवाद,[115] व्यंय-वाग्विदग्धता की दृष्टि से सर्वोत्तम है। कैकेयी मन्थरा संवाद[116] में नारी के सरल एवं कपटी स्वभाव का परिचय मिलता है और कैकेयी-दशरथ संवाद[117] में कैकेयी के हठ और दशरथ की अन्तर्वेदना की अभिव्यंजना संयत एवं सुन्दर शब्दों में हुई है। इसी प्रकार 'ताराचंद रामायण' में भी मंथरा-कैकेयी संवाद,[118] दशरथ-कैकेयी संवाद[119] और राम-सीता संवाद[120] ही अधिक सुन्दर शब्दों में चित्रित किए गये हैं। अन्त में इतना कहना यथेष्ट होगा कि सभी कश्मीरी रामायणों में संवादों की योजना विविध शैलियों में हुई है किन्तु संवाद-योजना में जितनी सफलता 'प्रकाश रामायण' और 'विष्णु प्रताप रामायण' के कवियों को मिली है, अन्य रचनाकारों को नहीं। दोनों में संवादों की शैलीगत विविध नवीनताओं का समावेश हुआ जिनका पहला रूप 'प्रकाश-रामायण' में ही अभिव्यंजित हुआ है।

'मानस' के अभिव्यक्ति-कौशल के अनिवार्य एवं प्रधान अंग संवाद ही हैं। 'मानस' के संवादों के बारे में आलोचकों का यहां तक कहना है, "रामचरितमानस संवादों का समूह है। संवादों को निकाल लेने पर उसमें कुछ भी नहीं रह जाता, इसमें कुछ भी अतिशोक्ति नहीं है।"[121] पौराणिक शैली के संवादों को छोड़कर 'मानस' में पात्रबद्ध संवादों में भी शैलीतात्विक दृष्टि से वैविध्य मिलता है, जिनमें

---

113. आ० रा०, पृ० 150.
114. शर्मा रामायण, पृ० 87.
115. वही, पृ० 313-317.
116. वही, पृ० 112.
117. वही, पृ० 115.
118. ता० रा०, पृ० 108-109.
119. वही, पृ० 113.
120. वही, पृ० 117-118.
121. डा० रामरतन भटनागर—तुलसी साहित्य की भूमिका, पृ० 139.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh, Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पात्र एवं प्रसंगानुकूल उक्ति—चमत्कार, व्यंगवाग्विदग्ध्ता, प्रश्नोत्तर-प्रवाह एवं नाटकीयता के गुण मिलते हैं 'मानस' के इसी वार्तालाप-सौष्ठव को सराहते हुए आलोचक डा० बलदेवप्रसाद मिश्र लिखते हैं "रामचरितमानस में सुन्दर शब्द-भण्डार, प्रभावशाली मुहावरेबन्दी प्रासादिक वाक्य पुंजों और चुभती हुई चटकदार उपमाओं तथा दृष्टांतों की भरमार तो है ही, और ये सब वस्तुएं उक्ति-कौशल की सहायक हैं, परन्तु उसमें जो वार्तालाप दिए गए हैं वे उक्ति-सौष्ठव के असली शिक्षक हैं। सम्भाषण शिष्टता यदि किसी को सीखनी है—वक्तृत्व के मनोविज्ञान का यदि किसी को पंडित होना है—तो उसे चाहिए कि 'मानस' के वार्तालाप का मनन करे।[122]

'मानस' के संवादों की शैलीतात्विक सर्वोत्तम विशेषता है — नाटकीय संवादात्मकता इसीलिए 'मानस' को नाटकीय शैली का महाकाव्य भी कहा गया है।[123] नाटकीय संवाद शैली की दृष्टि से 'लक्ष्मण-परशुराम संवाद' और 'अंगद-रावण संवाद' विशेषतया उल्लेखनीय हैं। जनकपुर में राम-सीता विवाहोपरांत उग्र परशुराम का अकस्मात् आगमन और राम-लक्ष्मण के साथ उग्रतापूर्ण संवादों के वर्णन में नाटकीयता का समावेश स्वाभाविक रूप से हुआ है किन्तु विद्वानों के विचारानुसार दो उग्र स्वभाव वाले व्यक्तियों परशुराम और लक्ष्मण के बीच में बहुत देर तक हुआ संघर्ष रहित वाग्युद्ध अस्वाभाविक और असंगत प्रतीत होता है।[124] अंगद-रावण संवाद[125] में नाटकीय संवाद-शैली का स्तर निःसन्देह ऊंचा है। संवादों में व्यंग-वाग्वैदग्ध्य, उक्ति-सौष्ठव और उत्तर-प्रयुत्तर की ऐसी समन्वित नाटकीय शैली के दर्शन 'मानस' में अन्यत्र नहीं होते हैं। उक्त संवाद का महत्व व्यंग्यात्मक वैशिष्ट्य के कारण ही अधिक है—जो नाटकीय शैली का एक प्रभावशाली अंग है, किन्तु वस्तु-योजना की दृष्टि से दूत-कर्म के विपरीत अँगद का अशिष्टता-प्रदर्शन एवं सभा-मर्यादाशीलता का उल्लंघन या अतिक्रमण पाठक को सहजतया खटकता है।

'मानस' के संवादों की एक अन्य असंदिग्ध विशेषता है पात्र एवं प्रसंगानुकूल गोष्ठी और सभा-संवादों के अन्तर्गत भाषातत्वों का निरूपण। वस्तुस्थिति और वातावरणानुकूल 'संवाद-योजना' तुलसीदास के अद्भुत कला-सौष्ठव का प्रतिनिधित्व करती है। चित्रकूट-सभा संवाद में मर्यादित दरबारी-संस्कृति एवं आचरण-नीति के अनुरूप तुलसीदास का सकुशल प्रयत्नसाध्य कथानिर्वाह सराहनीय है। उक्त संवाद के अन्तर्गत वातावरणानुकूल शिष्टता एवं सभ्यता का पुट हमें सभी वार्तालापों में मिलता है, जिसमें शांत रस का सुन्दर निरूपण हुआ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

---

122. मानस माधुरी, पृ० 41.
123. श्री राजबहादुर लमगौड़ा—विश्व साहित्य में रामचरितमानस, पृ० 1.
124. डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, पृ० 320-321.
125. मानस 6. 20-35.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ने इसीलिए चित्रकूट सभा को 'मानस' की एक आध्यात्मिक घटना बताया है।[126] 'मानस' के सभी गोष्ठी संवादों के विषय एवं पात्र का अधिक ध्यान रखा गया है। चारित्रिक मनोविश्लेषण में सहायक संवाद पात्रानुकूल सहज एवं स्वाभाविक है — जहां प्रकांड विद्वानों एवं पंडितों की भाषा में भाव-गाम्भीर्य और गूढ़ आध्यात्मिक रहस्यों का निरूपण मिलता है, साधारण पात्रों के संवाद उतने ही सरल और सीधे विषयों से सम्बंधित हैं। तुलसी को 'नारी-संवादों' के चित्रण में आसाधारण सफलता मिली है, जिनमें नारी सुलभ सरलता, चंचलता, सहृदयता एवं भीरुता आदि चारित्रिक वृत्तियों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब मिलता है।

हिन्दी रामकथा-काव्य-ग्रन्थों में ही क्या अन्य महाकाव्यों में भी संवाद-योजना की दृष्टि से 'रामचंद्रिका' एक सर्वोत्कृष्ट रचना है। डा० हीरालाल दीक्षित के शब्दों में 'जायसी तुलसी आदि सभी कवियों ने संवाद लिखे हैं किन्तु केशव के समान सफलता किसी को नहीं मिल सकी।...संवाद लेखन के लिए भाषा-प्रवीणता और व्यवहार कुशलता अनिवार्य है। केशव में ये गुण पर्याप्त मात्रा में थे। केशव के संवाद उनकी प्रत्युत्पन्नमति और सूक्ष्म मनोविज्ञान के परिचायक हैं। व्यंग जो संवाद का आवश्यक गुण है, केशव के संवादों की प्रमुख विशेषता हैं।"[127] संवाद — संघटना 'रामचंद्रिका' में कथानक को रोचक बनाने और पात्रानुकूल चरित्र की विशेषताओं को उभारने और काव्य में सरल नाटकीयता प्रस्तुत करने में सहायक एवं पूर्ण समर्थ सिद्ध हुई है। वास्तव में 'केशव के संवाद ही केशव के सर्वस्व हैं और उनका व्यंग ही केशव का सब कुछ।'[128] 'रामचंद्रिका' में संवादों की योजना जहां कहीं भी की गई है, वहां उनके काव्य का स्तर निःसन्देह ऊपर उठा हुआ है।

'रामचंद्रिका' के संवादों की प्रमुख विशेषता है — नाटकीय शैली का प्रयोग। यहां पात्रों के नाम प्रायः छन्द से अलग रखे हुए मिलते हैं। जैसे—हनुमान-सीता संवाद में :

सीता — दुरुख देखिकै देखिहौं तब मुख आनंद कंद।
तपन ताप तपि घौस निसि जैसे सीतल चंद।।
अपनी दसा कहा कहौं दीपदसा सी देह।
जरत जाति बासर निसा केसव सहित सनेह।। (13.92-93)

हनुमान — सुगति सुकेसि सुनैनि सुनि सुमिखि सुदंति सुश्रोनि।
दरसावैगो बेगिहीं तुमकों सरसिज जोनि।। (13-94)

---

126. गोस्वामी तुलसीदास, पृ० 82.
127. आचार्य केशवदास, पृ० 174.
128. डा० चन्द्रवली पाण्डे —केशवदास, पृ० 183.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'रामचंद्रिका' के संवादों में सुमति-विमति संवाद, रावण-बाणासुर संवाद, राम-परशुराम संवाद, भरत-कैकेयी संवाद, राम-शूर्पणखा संवाद, सीता-रावण संवाद, सीता हनुमान् संवाद, रावण-अंगद-संवाद तथा लव-कुश भरत संवाद महत्वपूर्ण हैं। इन सभी संवादों में निजी विशेषता रहते हुए भी 'राम परशुराम संवाद' तथा रावण-अंगद संवाद सर्वश्रेष्ठ है 'मानस' में जहां उद्विग्न एवं क्रोधी लक्ष्मण परशुराम के विपक्षी रूप में सामने आते हैं, 'रामचन्द्रिका' में लक्ष्मण का स्थान भरत ने ले लिया हैं।[129] राम-परशुराम संवाद में भी मर्यादा और शील की रक्षा की गई है। कथोपकथन का विकास अधिक सुचारू, यथार्थ तथा मनोवैज्ञानिक ढंग से हुआ है। 'रावण-अंगद संवाद' में भी दोनों विपक्षियों की कुल मर्यादा का विशेष ध्यान रखा गया है। दोनों बड़े चातुर्य और अद्भुत व्यंग-कौशल से प्रतिपक्षी की हीनता और अपनी बड़ाई को सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। जैसे रावण अनजान बनकर पूछते हैं :

"कौन है वह बांधिकै हम देह पूंछि सवै दही।" और बड़े ही इतमीनान से अंगद उसी लहजे में उत्तर देते हैं:

'लंक जारि संघारि अक्ष गयो सो बात वृथा कही' ? (16.4)

'रामचन्द्रिका' में 'सीता-हनुमान संवाद' और 'रावण-हनुमान संवाद' में भी केशव के वाग्वैदग्ध्य का सुन्दर रूप मिलता है। 'मानस' के हनुमान की भांति यहां हनुमान रावण के प्रति शठ, महाअभिमानी, अधम और मूढ़ सरीखे अपशब्द भी प्रयोग में नहीं लाते हैं। दोनों के व्यग-काव्य मर्यादित एवं संयत हैं, जिनकी सरलता, गम्भीरता एवं मर्मस्पर्शिता सराहनीय है। संक्षेप में 'रामचन्द्रिका' के काव्य-कौशल का यद्यपि कोई आकर्षण है तो उसकी संवाद-नियोजना ही है। जिसका पात्र एवं प्रसंगानुकूल निर्वाह मनोवैज्ञानिक स्तर पर हुआ है।

'संवाद-योजना' की दृष्टि से हिन्दी के आधुनिक रामकथा काव्यों में 'साकेत' का महत्वपूर्ण और सर्वोपरि स्थान है। 'साकेत' के विभिन्न संवादों में उर्मिला-लक्ष्मण संवाद, दशरथ-कैकेयी संवाद, भरत-कैकेयी सवाद, सीता-लक्ष्मण संवाद और भरत-राम संवाद ही पात्रानुकूल चरित्र-निरूपण, मपोवैज्ञानिकता और उत्तरोत्तर कलात्मक विकास की दृष्टि से अधिक उपयोगी और सुन्दर हैं।

संवादों का सर्वोत्तम गुण है नाटकीयता-शैली का प्रयोग। ऊर्मिला-लक्ष्मण के इस वार्तालाप में यह गुण विद्यमान है।

'धन्य है प्यारी, तुम्हारी योग्यता, मोहनी सी मूर्ति, मंजु मनोज्ञता।
धन्य जो इस योग्यता के पास हूं, किन्तु मैं भी तो तुम्हारा दास हूं।

---

129. रामचंद्रिका, पृ० 7.15.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दास बनने का बहाना किसलिए ? क्या मुझे दासी कहाना इसलिए ?
देव होकर तुम सदा मेरे रहो, और देवी ही मुझे रक्खो अहो। (पृ० 30)

भाव-गाम्भीर्य और चरित्र-निरूपण की दृष्टि से चित्रकूट मिलन प्रसंग में लक्ष्मण-ऊर्मिला का एक दूसरा संवाद देखिए :

'मेरे उपवन के हरिण आज बन चारी, मैं बांध न लूंगी तुम्हें, तजो भय भारी।'

'वन में तनिक तपस्या करके बनने दो मुझको निज योग।'
भाभी की भगिनी, तुम मेरे अर्थ नहीं केवल उपभोग। (पृ० 265)

'वैदेही वनवास' में कथोपकथन के विकास एवं चरित्र-निरूपण की दृष्टि से राम-सीता संवाद, लक्ष्मण-सीता-संवाद, बालमीकि-सीता संवाद तथा सीता लव-कुश संवाद उल्लेखनीय हैं। पात्रों के बीच के लम्बे सँवाद अस्वाभाविक से प्रतीत होने पर भी पात्रों के चरित्र सम्बन्धी मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने में सहायक हैं। कहीं-कहीं पर छोटे-छोटे संवाद भी मिलते हैं, जैसे सीता-कुश का यह संवाद—

कुश बोले क्या हम न पा सकेंगे मुकुट। सीता बोलीं तुम तो लव से हो बड़े ।।
अतः मुकुट तुमको ही पहले मिलेगा। दोनों में होंगे अनुपम हीरे जड़े ।। (15-14)

आलोच्य कृति में अपेक्षित नाटकीय संवादात्मकता का अभाव है। संवादों के कला-पक्ष में कवि को सफलता नहीं मिली है।

7.5 प्रकृति-चित्रण

प्रकृति और काव्य का पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध है। काव्य में प्रकृति का सन्निवेश विभिन्न रूपों में अनिवार्यतः होता रहा है, जिससे काव्य को एकदम विच्छिन्न नहीं किया जा सकता। काव्य की मूलचेतना प्रकृतिमयी है और काव्य के वर्ण्य-विस्तार के साथ-साथ प्रकृति-चित्रण का विस्तार सहज और स्वाभाविक है : इसीलिए साहित्यशास्त्रियों ने प्रकृति-चित्रण को महाकाव्य का एक अनिवार्य लक्षण स्वीकार किया है। भारतीय संस्कृत काव्य-ग्रन्थों तथा आदि काव्य 'वाल्मीकि रामायण' में प्रकृति का जैसा स्वच्छन्द, विशद और गरिमामय चित्रण हुआ है वह परवर्ती भक्त कवियों की रचनाओं में उपलब्ध नहीं होता। रामभक्त कवियों ने प्रकृति को राम के अधीन मानकर उसका स्वच्छन्द रूप से चित्रण नहीं किया और अवसर सुलभ होने पर प्रकृति में अपने आराध्य इष्ट का प्रतिबिम्ब देखने का प्रयत्न किया। यहां दोनों भाषाओं के रामकथा-काव्यों में निरूपित प्रकृति-चित्रण पर हम मुख्यतया आलम्बन, अलंकरण और संवेदना-दर्शन की दृष्टि से विचार करेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7.5.1 आलम्बन रूप में प्रकृति का चित्रण

भाषा-रामायणकारों ने आलम्बन रूप में प्रकृति का चित्रण अपेक्षाकृत संयमित और संक्षिप्त रूप में किया है, जिसमें उनकी उत्कट भक्ति-भावना का ही प्राबल्य झलकता है। राम-वनवास और सीता-प्रवास रामकथा की ऐसी मुख्य घटनाएं हैं, जिन्होंने स्वाभाविक रूप में अनिवार्यतः कवियों को प्रकृति चित्रण करने के लिए बाध्य किया। दोनों भाषाओं की रामायणों में महाकाव्योचित जनपद-नगरों, सागर सरिताओं, वन-पर्वतों, उपवनों, दिन-रात और ऋतुओं आदि का वर्णन करने का प्रयत्न किया गया है। प्रकृति-वर्णन में पूर्ववर्ती संस्कृत-काव्य जैसी स्वच्छन्दता बरती नहीं गई है। यहां पर दोनों काव्यों से आलम्बन स्वरूप प्रकृति-चित्रण के कुछ ऐसे उदाहरण ही प्रस्तुत किए जाते हैं, जिनसे दोनों भाषाओं के कवियों के प्रकृति-पर्यवेक्षण एवं चित्रण-कला का परिचय मिल जायेगा।

'मानस' में आलम्बन स्वरूप प्रकृति-चित्रण के स्थल न्यूनाधिक मात्रा में प्राप्य हैं, प्रकृति को सदैव मानसकार ने राम के ही आश्रित मानकर चित्रित किया है। 'जनकवाटिका' का चित्रण कवि इन शब्दों में करते हैं :

नव पल्लव फल सुमन सुहाए। निज संपत्ति सुररूख लजाए॥
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजत बिहग नटत कल मोरा॥
मध्य बागसरु सोह सुहावा। मनि सोपान विचित्र बनावा॥
बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा। जल खग कूजत गुंजत भृंगा॥ (1.227)

'अरण्य काण्ड' का एक और उदाहरण प्रस्तुत है :

देखि राम अति रुधिर तलावा। मज्जनु कीन्ह परम सुख पावा॥
देखी सुन्दर तरु बरु छाया। बैठे अनुज सहित रघुराया॥ (3.41)

'रामचन्द्रिका' में आलम्बन स्वरूप प्रकृति-चित्रण में अपेक्षाकृत अधिक विस्तार मिलता है। प्रकृति-चित्रण में कवि ने नाम-परिगणनात्मक शैली का प्रयोग विश्वामित्र आश्रम के निकटस्थ वन[130], राम की वाटिका, अयोध्या-सरोवर और सरयू आदि के वर्णन किया है। कहीं-कहीं पर प्रकृति-चित्रण सुन्दर शब्दों में हुआ है। सूर्य की प्रातःकालीन अरुणिमा का चित्रण देखिए :

अरुण गात अति प्रात पद्मिनी प्रान-नाथ भय। मानहु केसोदास कोकनद कोक-प्रेममय।
परिपूर्ण सिंदूर पूर कैधों मंगलघट। किधौं सक्र को छत्र मढयो मानिक मयूख-पट। (5.10)

---

130. रामचंद्रिका पृ० 3.1.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'गोदावरी' का चित्रण देखिए :

अति निकट गोदावरी पाप संहारिनी । चल तरंगतुंगावली चारु संचारिनी।
अलि कमल सौगंध लीला मनोहारिनी । बहुनयन देनेस-सोभा मनोधारिनी ।।
(11.23)

ऋतु-वर्णन–तुलसी ने बसंत ऋतु का उल्लेख और चित्रण राम जन्म,[132] राम-सीता के पूर्वराग, राम के विरह-वर्णन आदि प्रसंगों के चित्रण में किया है । रामराज्य के वर्णन में भी बसन्त ऋतु का सौन्दर्य मिलता है । बसन्त ऋतु वर्णन के अतिरिक्त 'मानस' के किष्किधा काण्ड के अन्तर्गत राम-लक्ष्मण संवाद में वर्षा-ऋतु और शरद्-ऋतु के चित्रण में कवि ने दार्शनिक और नैतिक विचारधाराओं का सुन्दर समावेश किया है । तुलसीदास ने एक स्थान पर नारी के गुण रूप-चित्रण में छः ऋतुओं का प्रतीकात्मक रूप में उल्लेख किया है ।

'रामचंद्रिका' में भी कवि ने राम के विरह-वर्णन में वर्षा-ऋतु और शरद् ऋतु का चित्रण किया है । दोनों ऋतु-वर्णन सुन्दर हैं । वर्षा-ऋतु वर्णन में इन्द्र दलबल सहित मानों सूर्य पर चढ़ाई कर बैठते हैं, जिसने निरपराध पृथ्वी को ताप पहुंचाया है :

घन घोर घने दसहू दिसि छाए । मधवा जनु सूरज पै चढ़ि आए ।
अपराध बिना क्षिति के तन ताए । तिन पीड़न पीड़ित ह्वै उठि धाए ।।
(13 15)

'शरद' का कवि ने मानवीयकरण करके वृद्धा दासी के रूप में चित्रित किया है । राम लक्ष्मण से :

लक्ष्मण दासी वृद्ध सी आई सरद सुजाति ।
मनहु जगावन कों हमहि बीते वरषा राति ।। (13.27)

आधुनिक रामकथा-काव्यों में 'साकेत' में प्रकृति का आलम्बन रूप में चित्रण नहीं के बराबर है । यामिनी का मानवीयकरण देखिए :

अरुण संध्या को आगे ठेल, देखने को कुछ नूतन खेल
सजे बिन्दु की बेदी से भाल यामिनी आ पहुंची तत्काल । (पृ० 60)

'वैदेही-वनवास' में आलम्बन रूप में प्रकृति-चित्रण अधिक हुआ है, प्रत्येक सर्ग का प्रारम्भ ही प्रकृति-चित्रण से होता है । इसका मुख्य कारण यही हो सकता है कि प्रकृति ही निर्वासित सीता के एकाकीपन की सहचरी और सखी है तथा प्रकृति

132. मानस 1.191.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के खुले आंचल में ही उनकी भावनाएं एवं आशाएं पल्लवित होती हैं। प्रकृति-चित्रण की कुछ पंक्तियां उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत हैं :

किरणों का आगमन देख उषा मसकाई। मिले साटिका-लैस-टंकी लसिता-बन पाई ।।
अरुण अंक से छटा छलक क्षिति-तल पर छाई। भृंग गान कर उठे विटप पर बजी बधाई ।। (1.2)
था प्रभात का काल गगन तल ताल था। अवनी थी अति ललित-लालिमा-से लसी ।।
कानन के हरिताभ दलों की कालिमा। जाती थी अरुणाभ-कसौटी पर कसी ।। (8.1)

प्रकृति-चित्रण के मानवीयकरण के कई उदाहरण 'वैदेही वनवास में मिलते हैं :

प्रकृति सुन्दरी विहंस रही थी, चन्द्रानन था दमक रहा।
परम दिव्य वन कांत अंक में तारक चय था चमक रहा ।।
पहन श्वेत साटिका सिता की, वह लसिता दिखलाती थी।
लोक-सुधा सुधाकर कर से, वसुधा पर बरसाती थी ।। (5.1)

कश्मीरी रामायणों से आलम्बन रूप में स्वच्छंद रूप से प्रकृति-चित्रण अपेक्षाकृत बहुत कम स्थलों पर हुआ है। 'प्रकाश-रामायण' में प्रकृति के मानवीयकरण के कुछ चित्रण सुन्दर हैं। कवि ने दिन और रात को क्रमशः पुरुष और नारी के रूप में चित्रित किया है। कवि के शब्दों में :

दोहन यामथ प्रभातुक जामें छुन नअल्य
वननि लोग गंच़् कुन, बुथ खट सोंदर मअल्य।
बुथिस तमि बुकअ़ द्युत, येम्य लोग दरबार
करुन ख्यन—च्यप, ह्‌योन-वोन गर्म बाज़ार।—

—"ज्योंही दिन ने प्रभातकालीन वस्त्र पहन लिए, रात्रि से सम्बोधित होकर कहा—'ऐ सुन्दरी ! तुम अपने चेहरे को अब ढांप लो।' रात्रि ने अपने चेहरे पर बुर्का डाला और दिन ने अपना दरबार लगा दिया···खान-पान, लेन-देन आदि समस्त दैनिक व्यवहार आरम्भ हुए।' इसी प्रकार कवि ने रात्रि का चित्रण कश्मीरी हिन्दू स्त्री के वस्त्राभूषणों से युक्त रूप में किया है :

रोपअ़ तनि नअल्य छुस ज़ंगार अलवान
छि तारक मोख्त हारव कनि अवे ज़ान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चोदश चन्द्रम मा छुय तरंगअ तमिसुन्द
रंग पूचि युथपज़ि त्युथ लोगमुत गोंद। (पृ० 57)

—"उसकी (रात्रि की) चांदी की देह पर पीला 'अलवान' (अलवान का 'फेरन'—एक विशिष्ट पहनावा) सुशोभित है। तारे मोतियों के हार की भांति उसके गले के इर्द-गिर्द लटक रहे हैं। चौदवीं का चांद ही उसका 'तरंगा' (सिर का विशिष्ट पहनावा) है।" रंगीन 'पूच' (पूच तरंगे के ऊपर पहनी जाती है) पर सुन्दर मुकुट पहन रखा है।

प्रकाशराम ने सीता-अग्नि-परीक्षा के पश्चात् राम-सीता के पुर्नमिलन के सुख-आनंद का चित्रण बसंत ऋतु के आगमन के प्रतीकात्मक रूप में किया है :

चलिथ गो शीन च़छ्यक दिथ रूद बर कोह
ज़मिस्तान सूर सोंतनि आयि रअत्य दोह। (पृ० 158)

—'हिम दूर होकर पहाड़ों की ओट में छिप गया। शीतकाल के कष्टसाध्य एवं बुरे दिन व्यतीत हुए और नव-प्रफुल्लित बसन्त के दिन आ गए।' यहां पर बसन्त-ऋतु-चित्रण के अन्तर्गत प्राय: सभी कश्मीरी पुष्प-लताओं का नाम-परिगणनात्मक रूप मिलता है। 'वीरकुम', 'जुही', 'टेकबटन्य', 'गुलि-अनार', 'अछि-पोश', 'बबर', 'केसर' आदि समस्त पुष्प-लताएं हर्षोल्लास में प्रफुल्लित होकर बहुविध पारस्परिक प्रेम-क्रीड़ाओं में निमग्न होते हैं।[133] प्रस्तुत रामायण में राम-सीता के पुर्नमिलन के सुखानन्द वर्णन को अधिक मार्मिक बनाने के लिए ही कवि ने बसन्त-ऋतु का ऐसा नयनाभिराम सजीव चित्र उपस्थित किया है।

भारतीय साहित्य में ऋतु-वर्णन की भांति 'बारहमासा' का चित्रण एक प्राचीन परिपाटी है। 'प्रकाश रामामण' में लंकाकाण्ड के अन्तर्गत महीरावण द्वारा राम-लक्ष्मण को पाताललोक उठा ले जाने पर दर्शनाभिलाषी हनुमान् द्वारा राम के प्रति की गई आराधना में 'बारहमासा' का चित्रण हुआ है, जिसमें अलग-अलग से बारह मासों का क्षेत्रीय प्राकृतिक वैशिष्ट्य एवं धार्मिक माहात्म्य का भी निर्देश मिलता है।[134]

'शंकर रामायण' में आलम्बन रूप में प्रकृति-चित्रण अत्यल्प है। एक भजन में वर्णित पूजा सम्बन्धी सामग्री-संचयन के अन्तर्गत विविध क्षेत्रीय पुष्प-लताओं का

---

133. प्र० रा०, पृ० 158-159.

134. प्र० रा० पृ० 129.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नामोल्लेख मिलता है।[135] 'आनन्द रामावतारचरित' में 'जनक-वाटिका' और 'अशोक-वाटिका' के वर्णन में प्रकृति का आलम्बन-स्वरूप चित्रण सुन्दर ढंग से हुआ है। कवि के शब्दों में :

सोंदर वानी बोलान क्या छि तोतं मधुर वानी ग्यवान आस्य खांड़ खोतं।
यम्बर ज़ल बेयि छि मसवल बेयि छि सोम्बुल, वुछनि लग्य रूप गयि वेहोश
बिल्कुल। (पृ० 42)

—तोते कर्णप्रिय सुन्दर वाणी में बोल रहे थे। उनकी वाणी मिश्री से भी मधुर थी। ···नर्गिस 'मसवल' और 'सम्बुल' आदि की अद्‌भुत आभा देखकर वे रस-विभोर होकर अचेत से हुए।

बुछुन बागस अन्दर क्या गुल त गुलज़ार
लंजे बुल्बुल बिहित यच छिस वनान ज़ार···(पृ० 122)

—हनुमान् ने अशोक वाटिका में देखा सारा उपवन पुष्प-लताओं से भरपूर है, 'गुलजार' महक रहा था। बुलबुल वृक्षों की डालों पर बैठे चहुल कर रहे थे।

'विष्णु-प्रताप रामायण' में आलम्बन स्वरूप प्रकृति का सुन्दर चित्रण जनकपुर के प्राकृतिक सौन्दर्य-वर्णन के अन्तर्गत मिलता है। बसन्त कालीन प्रफुल्लित प्रकृति का चित्रण देखिए :

बहारस नव बहारस ताज़ तर बेल। गुलाबस सब्ज़ज़ारस सअथ्य रुत मेल॥
यम्बरज़ल प्याल ह्‌यथ गुल-अनारस। हवादारी छि मटि बरगे चिनारस॥
खुशी सर्वन त शमशादन छि बासान। चन्दन कुल्य देवदारन सअथ्य हमशान॥
तरातर अमृतुक ज़ल ज़ायकदार। बहर सो आबि ज़मज़म खास फव्वार॥
स्यठी नदियन त नहरन हज़ नज़ाकत। हिए पोशन त अछि पोशन तराफ़त॥
—(पृ० 68)

—नव बसन्त की मधुर आभा! जिसमें गुलाब और स्वच्छ हरियाली की समन्वित शोभा विलसित है। नर्गिस मानों 'गुलि-अनार' के सामने (मदिरा का) प्याला लेकर खड़ी हैं। चिनार के पत्ते पंखा झुला रहे हैं। 'सर्व वृक्ष' और 'शमशाद' की निगाहों में हर्षोल्लास दीप्त है। चन्दन और देवदारु साथ-साथ खड़े

---

135. पूज़ा भाव किन्य करै गुन मन्दरो, लागै पम्पोश सोंदरो च्येय
गौड़ आयि मादल, व्यन पोश सोन्दरो, फोलिमित पोश तुलसी लागै च्येय।
नाना प्रकार पोश फोल्य वनन अन्दरो। लागै०·······················
खण्ड 1. अ० 3.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं। चारों ओर ताज़ा अमृत सरीखा मीठा जल फव्वारों से प्रवाहित है। नदी-नहरों के सौन्दर्य का कहना ही क्या ? 'हिय' (जुही) और 'अछिपोश' पूर्णतया प्रफुल्लित हैं।...

'शर्मा रामयण' में भी जनकपुर की वाटिका का आलम्बनगत प्राकृतिक दृश्य-वर्णन सुन्दर है :

रंग उग पोशि फुलै आस जान...

गुलन येलि आस वाव ग्राव लगान, अतर बागसय आस हर जा हरान।

खताइ वतन ओस अम्बर छकान, सज़पोश ओसुय सफेदी थ्यकान।...

(पृ० 73)

—बहुरंगी फूल खिले हुए थे...। वायु का हल्का सा झोंका उपवन में लहराता तो पुष्पों की मधुर महक सारे उपवन में फैल जाती। एक ओर 'खताई' (पुष्प-विशेष) मीठी सुगंधि लुटा रहा था और दूसरी ओर (सज़पोश) अपने सफेद रंग का प्रदर्शन करा रहा था।

7.5.2 अलंकरण रूप में प्रकृति-चित्रण

दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने प्रकृति के अनेकानेक रूढ़-परम्परागत और नवीन उपमानों का यथोचित प्रयोग अपनी कृतियों में किया है। दोनों में रूढ़ या साम्प्रदायिक उपमानों—कमल, ,चन्द्रमा, सूर्य, सागर, विद्युत और पशु-पक्षियों के नाम-रूपों आदि के प्रयोग में प्रायः समानता ही मिलती है। प्राकृतिक पदार्थों उपमानों या प्रतीकों का प्रयोग रूप-सौन्दर्य-वर्णन, मानव-स्वभाव चित्रण, दृश्य-विधान तथा दार्शनिक एवं नैतिक विचारधाराओं के स्पष्टीकरण आदि प्रसंगों में अधिकाधिक मधुरता, सहजता, लालित्य और भाव-गाम्भीर्य का सामंजस्य करता है। हिन्दी में रूढ़िबद्ध तथा परम्परागत प्राकृतिक उपमानों का ही प्राचुर्य मिलता हैं, नवीन उपमानों का प्रयोग संयमित रूप में हुआ है और दूसरी ओर कश्मीरी में विविध प्रादेशिक स्फूर्तिदायक पुष्प-लताओं के नवीन उपमानों के प्रयोग का आधिक्य प्राप्य है। यहां दोनों भाषाओं की रामायणों से कवियों द्वारा प्रयुक्त कुछ विशिष्ट परम्परागत-नवीन उपमानों को देखने पर दोनों के निजी-प्रकृति पर्यवेक्षण के साथ-साथ अलंकरण रूप में प्रकृति-चित्रण का परिचय मिल जायेगा।

'मानस में अलंकरण रूप में प्रकृति-चित्रण रूप-सौन्दर्य वर्णन एवं मानव स्वभाव-चित्रण में अधिकतर परम्परागत और रूढ़ है। तुलसीदास ने राम का नख-शिख वर्णन इस प्रकार किया है :

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहि तनु सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम॥[136]

136. मानस 1. 146.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरद मयंक वदन छबि सीवां । चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा ।।
अधर अरुन रद सुन्दर नासा । बिधु कर निकर बिनिंदक हासा ।।
भृकुटि मनोज चाप छवि हारी । तिलक ललाट पटल दुतिकारी ।।
कुण्डल मकर मुकुट सिर भ्राजा । कुटिल केस जनु मधुप समाजा ।।
(1. 147)

\+ \+ \+

काम कोटि छबि स्याम सरीरा । नील कंज बारिद गम्भीरा ।।
अरुन चरन पंकज नखजोती । कमलदलन्हि बैठे जनु मोती ।।

'मानस' में वर्णित सीता के नखशिख में इन्हीं रूढ़ परम्परागत उपमानों का एकसाथ प्रयोग मिलता है :

खंजन सुक कपोत मृग मीना । मधुप निकर कोकिला प्रवीना ।।
कुंद कली दाड़िम दामिनी । कमल सरद ससि अहि भामिनी ।।
वरुन पास मनोज धनु हंसा । गज केहरि निज सुनत प्रसंसा ।।
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं । ....।। (5. 30)

तुलसीदास ने कुछ नवीन प्राकृतिक उपमानों को सुन्दर चित्रात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है । जैसे—

लता भवन ते प्रकट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाय ।। (1.232)
घायल वीर बिराजत कैसे । कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ।। (6. 54)

अन्य किसी भी परवर्ती रामकथा-काव्य ग्रन्थ में प्रकृति-चित्रण के अलंकरण रूप का इतना सुन्दर और विशद् वर्णन नहीं मिलता है । केशवदास ने भले ही सभी रूढ़ प्राकृतिक उपमानों का प्रयोग किया है किन्तु उनमें चमत्कारिकता अधिक और सहजता कम है । कमल और चन्द्रमा से सरल रूढ़ उपमानों के प्रयोग में भी केशव की कलाबाजी विचित्र है :

एकै कहैं अमल कमल मुख सीताजी को, एकै कहैं चन्दसम आनन्द को कंद री ।
होइ जो कमल तौ रयनि में न सकुचै री, चन्द जो तो वासर न होइ दुति मंद री ।
वासर ही कमल रजनि ही में चंद, मुख बासर हू रजनि बिराजै जगबंद री ।
देखे मुख भावै अनदेखई अमल चंद, तातैं मुख मुखै सखी कमलै न चंद री ।
(9. 42)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'रामचन्द्रिका' में 'रामराज्य' के सुख-आनंद एवं राज-भोग के चित्रण में प्रकृति का आलंकारिक चित्रण व्यापक होने पर भी कवि के पांडित्य-प्रदर्शन में दब सा गया है। कहीं-कहीं पर प्राकृतिक उपमानों की नियोजना अवश्य सुन्दर है, अशोकवाटिका में सीता का रूप-वर्णन देखिए :

धरे एक बेनी मिली मैल सारी। मृनाली मनो पंक तें काढ़ि डारी।
+ + +
किधौं घेरिकै राहु नारीन लीनी। कल चन्द्र की चारु पीयूष-भीनी ॥
(13. 53-54)

आधुनिक रामकथा-काव्य में रूढ़िबद्ध एवं साम्प्रदायिक प्राकृतिक अलंकारों का प्रयोग कुछ नये ढंग से हुआ है और उनके साथ ही नये प्राकृतिक उपमानों का भी यथोचित चित्रांकन किया गया है। आलंकारिक प्रकृति-चित्रण के ऐसे ही कुछ उदाहरण प्रस्तुत है :

साकेत :

एक तरु के विविध सुमनों से खिले, पौरजन रहते परस्पर मिले। (पृ० 22)

पड़ी थी बिजली सी बिकराल, लपटे थे घन कैसे बाल। (पृ० 61)

उषा सी आई थी जग में, संध्या सी क्या जाऊं।
श्रांत पवन से वे आवें, मैं सुरभि समान समाऊं। (पृ० 324)

वैदेही-वनवास :

कमलिनी सी जो है सुकुमार। कुसुम कोमल है जिसका गात। (2. 31)

चादनी छिटिक छिटिक छबि से, छबीली बनती रहती थी।
सुधाकर कर से वसुधा पर, सुधा सी धारा बहती थी ॥ (10. 3)

कभी आह आंधियां उठेगी। कभी बिकलता घटा घिरेगी ॥
दिखा चमक चौंक-व्याज उसमें। कभी कुंचिता चपला फिरेगी ॥ (7. 66)

कश्मीरी रामकया-काव्य में 'प्रकाश रामायण' में अलंकरण रूप में प्रकृति-चित्रण का सर्वोत्कृष्ट रूप मिलता है। राम और सीता के सौन्दर्य-वर्णन में कवि ने प्रादेशिक पुष्प-लताओं से ही उपमान ढूंढे हैं, जिनके साथ बहुत कम रूढ़ उपमानों का प्रयोग हुआ है। कवि ने राम के लिए अधिकतर सूर्य, चन्द्रमा, कमल, गुलाब, सीता के लिए सूर्य, चन्द्रमा, गुलाब, नर्गिस 'मसवल', 'इश्क-पेचान' और रावण के लिए 'केतु', 'ग्रहण' आदि प्रतीक प्रयुक्त किए हैं। इस प्राकृतिक प्रतीकात्मक चित्रण के कई उदाहरण 'अलंकारों के अन्तर्गत प्रस्तुत किए गये हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कवि को प्राकृतिक उपमानों के चयन एवं प्रयोग में अद्भुत सफलता मिली है। एक ही प्रसंग में विशिष्ट उपमेय के लिए एक साथ कई उपमानों का सकुशल प्रयोग उक्त रामायण की काव्य-शैली की एक प्रमुख विशेषता है। 'राम-सीता-संवाद' में राम सीता के लिए 'सूर्य', 'चन्द्रमा', 'बबर', 'गुलज़ार', 'गुलि-अंदाम', 'नर्गिस' और उनके चरणों के लिए 'कमल' हाथों के लिए 'कुसुम' आदि कई उपमान प्रयोग करते हैं।[137] 'रावण-मारीच' संवाद में इसी तरह सीता के लिए 'नर्गिस', 'हिय' (जुही), चतुर्दशी-चन्द्रमा, उनके कद के लिए 'सर्व कद' और हाथ-पांव के लिए कुसुम आदि उपमानों का प्रयोग किया गया है।[138] लंका-काण्ड के अन्तर्गत सीता के रुदन-प्रलाप पर मन्दोदरी के सान्त्वना-वचनों में भी सीता के लिए कई उपमानों का प्रयोग स्थिति-विशेष को दृष्टि में रखकर किया गया है।

···कवै बापथ च़्य लोगुथ अश्क पेचान। तिथुय वोदथम कथइ ख्रोरुत रज़े पान ॥
कवै बापथ वदन छख मोहते हारन। कवै सोसन करथ च़्य दोन गुलि-अनारन ॥
कवै बापथ यम्बरज़ल बर करथम। हरुथ रथ बारिया व्येब नारें बनथम ॥
(पृ० 152)

···क्यों, किसलिए तुमने 'इश्क पेचान' का रूप धारण किया है? क्यों रुदन की रस्सी पर अपने को चढ़ाया (तात्पर्य है 'अश्क-पेचान' की बेल नीचे दबकर नहीं रहती है, रस्सी के सहारे ऊपर की ओर बढ़ती है। इस तरह सीता भी चुप्पी साध कर नहीं बैठती, रुदन-अवलम्ब से चिपट गई है)। क्यों अश्रु-मोती-प्रवाहित करके तुमने 'गुलि-अनार' सी आंखों को 'सोसन' (फीका पुष्प-विशेष) में परिवर्तित किया। क्यों अपने नर्गिसी रूप को मुर्झा दिया है और अब आंखों से लहू बहाकर मेरी गोद को अग्नि से भर रही हो।

'शंकर रामायण' में भी प्रादेशिक पुष्प-लताओं के ही अधिकांश उपमान प्रयुक्त हुए हैं। मुख्यतया राम के लिए 'सोम्बुल' और सीता के लिए 'नर्गिस' के उपमानों का प्रयोग हुआ है।[139] एक स्थल पर राम के सौन्दर्य वर्णन को उन्होंने समस्त प्राकृतिक उपमानों से भी बढ़कर बताया है।[140] अन्य परवर्ती काव्यों में भी सामान्यतः प्राकृतिक उपकरणों में कश्मीरी पुष्प-लताओं का ही प्रयोग हुआ है। 'आनन्द रामावतारचरित' में सीता के लिए 'गुलाब' और 'सूर्य' उपमानों का प्रयोग

---

137. प्र० रा०, पृ० 22-23.
138. वही, पृ० 45-46.
139. शंकर रामायण, खण्ड 1. अ 8 (7).
140. वही, खण्ड 1. अ 8 (7).

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधिकतर हुआ है और कहीं-कहीं पर दोनों का प्रयोग एक साथ भी हुआ।[141]

तुलना की दृष्टि से एक मुख्य बात की ओर ध्यान आर्कषित होता है, तुलसीदास ने 'मानस' में उपमानस्वरूप प्रकृति के उपकरणों का उपयोग दार्षनिक और नैतिक विचारधाराओं को स्पष्ट करने के लिए भी किया है, कश्मीरी रामायणों में ऐसा प्रयत्न नहीं किया गया है, यद्यपि 'शर्मा-रामायण' और 'ताराचन्द रामायण' में भी किष्किधा काण्ड के अन्तर्गत वर्षा-ऋतु वर्णन के प्रसंग में कुछ ऐसे संकेत मिलते हैं। कश्मीरी रामायणों में रूप-सौन्दर्य वर्णन तथा मानव-प्रकृति या स्वभाव-चित्रण में ही प्राकृतिक उपमानों का प्रयोग मिलता है। दूसरी बात यह है कि हिन्दी (विशेषतया 'मानस' और 'रामचन्द्रिका') में अधिकतर रूढ़बद्ध एवं परम्परित प्राकृतिक उपमानों का ही प्रयोग हुआ है, कश्मीरी में नवीन उपमानों का प्रयोग भी प्रादेशिक सीमा के अन्तर्गत ही हुआ है। परम्परा के रूप में कुछ फ़ारसी उपमानों 'गुलि-अन्दान', 'इश्क-पेचान' आदि को भी कवियों ने अपनाया है, क्योंकि ये कश्मीरी काव्य में पूर्णतः घुलमिल गए हैं।

7.5.3. संवेदना-दर्शन के रूप में प्रकृति-चित्रण

प्रकृति पर मानवीय भावनओं का आरोप तथा पात्रों के सुख-दुख के साथ प्रकृति के समरस होने का वर्णन भारतीय साहित्य फी आदिम प्रवृत्ति है। संस्कृत कवियों ने प्रकृति के संवेदना-दर्शन का चित्रण विस्तृत रूप से किया है। दोनों भाषा-रामायणकारों ने उत्कट भक्ति-भावना के कारण प्रकृति को राम के अधीन स्वीकार कर राम-सीता के सुख-दुख के साथ प्रकृति की संवेदना को अधिकाधिक भक्तिपरक रूप में चित्रित किया है।

'मानसकार' ने सारे जग को 'सियाराम-मय' जानकर प्रकृति की संवेदनशीलता का विस्तृत वर्णन किया है। कवि के अनुसार राम के वनागमन के कारण ही सारा बन 'मंगलदायक' बन जाता है :

जब तें आइ रहे रघुनायकु। तब तें भएउ बनु मंगलदायकु ।।
फूलहिं फलहिं बिटप विधि नाना। मंजु बलित बर बेलि बिताना ।।
\+ \+ \+
गुंज मंजुतर मधुकर स्रेनी। विविध बयारि बहइ सुखदेनी ।। (2. 137)

राम की सुख-सुविधा के लिए प्रकृति सदैव तत्पर है :

जहं जहं जाहि देव रघुराया। करहिं मेघ तहं तहं नभ छाया ।। (3. 7)

---

141. आ० रा०, पृ० 122.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अयोध्यापुरी भी राम के आगमन पर 'सोभा की खानी' बन जाती है :

अवधपुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल सोभा कै खानी।
बहइ सुहावन त्रिविध समीरा। भइ सरऊ अति निर्मल नीरा ।। (7. 3)

भरत को राम के अनुज एवं प्रिय जानकर प्रकृति उनके सुख के लिए मृदुता और कोमलता धारण कर लेती है :

कोमल चरन चलत बिनु पनहीं। भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं ।।
कुस कंटक कांकरी कुराईं। कटु कठोर कुबस्तु दुराईं ।।
महि मंजुल मृदु धन करि आहीं। बिटपी फूलि फलि तृन मृदुताहीं ।।
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी। सेवहिं सकल राम प्रिय जानी ।। (2.311)

पशु-पक्षी राम तथा राम-परिवार के प्रति सहानुभूति दर्शा कर अपना 'आहार' तक त्याग देते हैं :

पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू। प्रिय परिजन कर कौनु बिचारू ।। (2. 277)

इसी तरह सीता-हरण प्रसंग में सीता के विलाप सुनकर 'चराचर जीव' दुःखी होते हैं :

सीता कै बिलाप सुनि भारी। भए चराचर जीव दुखारी ।: (3. 29)

सीता द्वारा गंगा-माता की वन्दना-मनौती करने पर गंगा सीता को आशीर्वाद देती है।[142] इस प्रकार प्रकृति को तुलसी ने राम के अधीन मानकर उनके सहानुभूति-दर्शन को भक्तिपरक बनाया है, राम की सुख-सुविधा जुटा लेना प्रकृति अपना परम कर्त्तव्य समझती है।

'रामचन्द्रिका' में भी प्रकृति का सम्वेदना-चित्रण किया गया है। राम के वनागमन पर प्रकृति सदा उन्हें सुख पहुंचाने का प्रयत्न करती हैं :

तड़ाग नीरहीन ते सनीर होत 'केसोदास' पुण्डरीक झुंड और मंडलीन-मंडहीं।
तमाल बल्लरी समेत सूखि सूखि कै रहे ते बाग फूलि फूलिकै समूल सूल खंडहीं।
चितै चकोरनी चकोर मोर मोरनी समेत हंस हंसिनी सुकादि सारिका सबै पढ़ै।
जहीं-जहीं बिराम लेत रामजू तहीं तहीं अनेक भांति के अनेक भोग भाग-
सों बढ़ैं ।। (9. 36)

इसी तरह राम के उपवन की प्राकृतिक शोभा का वर्णन भी राम-सीता के संयोगसुख

142. मानस, 2. 103.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को बढ़ावा देता है। उद्दीपन के रूप में प्राकृतिक प्रफुल्लता एवं क्रीड़ा-विलास के चित्रण द्वारा राम-सीता के संयोग-सुख की अभिव्यंजना ही कवि का प्रयोजन है :

बेल के फूल लसीं अति फूले। भौंर भवैं तिनके रस भूले।
यों करबीर करी बन राजैं। मन्मथ वानन की गति साजैं॥
केहुक पुंज प्रफुल्लित सोहैं। भौंर उड़ैं तिनमें अति मोहैं।
श्री रघुनाथ के आवत भागे। जे अपलोक हुते अनुरागे॥(32.6-7)

\+ \+ \+

अलि उड़ि धरत मंजरी जाल। देखि लाज लाजति सब बाल।
अलि अलिनी के देखत भाइ। चुंबत चतुर मालती जाइ॥
अद्भुत गति सुन्दरि विलोकि। विहंसति हैं घूंघट-पट रोकि।
गिरत सदाफल श्रीफल ओज। जनु धर धरत देखि वक्षोज॥ (32.10-11)

आधुनिक काव्यों में भी प्रकृति का संवेदना-चित्रण किया गया है, यद्यपि प्रकृति पर देवत्व का आरोप नहीं किया गया है। 'साकेत' में प्रकृति-सहानुभूति-दर्शन के कई चित्रण मिलते हैं, उनमें स्वाभाविकता अधिक और कृत्रिमता कम है। उदाहरण के लिए उर्मिला निजी विरह-व्यथा में प्रकृति का कैसा रूप देखती है :

वह कोइल, जो कूक रही थी, आज हूक भरती है,
पूर्व और पश्चिम की लाली रोष वृष्टि करती है।
लेता है निःश्वास समीरण, सुरभि धूलि चरती है,
उबल सूखती है जल-धारा, यह धरती भरती है। (पृ० 277)

'वैदेही वनवास' में पति द्वारा निर्वासित सीता प्रकृति में संवेदना एवं सहानुभूति का व्यापक रूप देखती है :

शीतकाल था वाष्पमय बना व्योम था। अवनी तल में था प्रभूत कुहरा भरा॥
प्रकृति वधूटी रही मलिन वसना बनी। प्राची सकती थी न खोल मुंह मुस्करा॥

कश्मीरी रामकथा-काव्य में भी प्रकृति को राम के आधीन मानकर उसका संवेना-चित्रण अधिकतर भक्तिपरक ही है। प्रकृति के कण-कण में व्याप्त राम के स्वरूप का स्पष्ट उल्लेख 'प्रकाश रामायण में मिलता है :

छु पानै, बुल्बुल, गुलज़ार पानै। छु पानै सोम्बुल सब्ज़ज़ार पानै॥
(पृ० 125)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—वे (राम) स्वयं ही बुल्बुल हैं, गुलज़ार हैं। सोम्बुल (पुष्प-विशेष) और समस्त हरियाली में उनका ही दिव्य रूप समाविष्ट है।

प्रकृति राम की ऐसी अनुचरी है जो सदैव स्वामी के सुख-दुख में समरस होती है। राम के वनगमन पर प्रकृति उन्हें सुख पहुंचाने के बहुविधि प्रयत्न करती है। वन में जहां कहीं से राम-लक्ष्मण और सीता गुज़रते हैं, वहां फूलों के उपवन महक उठते हैं और जहां-कहीं भी वे कन्द-मूलादि कुछ खाते हैं, वहां स्वतः मीठे जल-स्रोत फूटते हैं :

पकान येमि वति गछ़ान तति पोशि बागइ।
ख्यवान येति केंह् बुज़ान तति नागरादइ॥ (पृ० 82)

राम की विरह-व्यथा में समस्त प्रकृति दुःखित है। सीता को वन-वन खोजते-फिरते राम-लक्ष्मण देखते हैं कि वन के सभी 'गुल' रो-रो कर सीता को पुकारते थे :

पकान गयि गुल रिवान ड्यींठिक दिवान नाद। (पृ० 58)

'सीता-हरण' के समय सीता के दुःख में आकाश के तारे और पशु-पक्षी तक विकल होते हैं। सीता की तीव्र विरह-व्यथा एवं असहनीय कष्टों में सम्मिलित प्रकृति का सुन्दर संवेदनात्मक चित्रण अशोकवाटिका के प्रकृति-वर्णन प्रसंग में मिलता है। हनुमान देखते हैं :

वुछुन ह्योतमुत दिलस प्यठ दाग लालनु, दपन दूरेर बु नो छुस यार च़ालन।
अरिन्य खच़म च़ मोखस प्यठ दअन पोशन, दयन जाफ़ुर गुलाबस छुसन पोशन।
यम्बरज़ल बर गमच़ बेरंग कोसम, दपन कोता जरिथ ह्यक चश्म लोसम॥
(पृ० 79-80)

…'गुलि-लाल' ने अपने हृदय पर दाग लिया हुआ था। जैसे कह रहा हो, प्रियतम का विरह असह्य है! अरिन्य (फीके रंग का पुष्प विशेष) लगता था अनार-पुष्प के मुंह चढ़ी हो (उस पर जयी थी) मानो 'जाफर' (गेंदा) गुलाब का मुकाबला करने में असमर्थ है। नर्गिस मुर्झा गई है। कुसुम का रंग ही उड़ गया है, जैसे कह रही हो—कितना सहन करूंगी। आंखें (राह देखते) सूज गई हैं।

सीता की अग्नि-परीक्षा प्रसंग में भी प्रकृति की संवेदना का अद्भुत चित्रण मिलता है, अग्नि की भीषण लपटें भी सीता के साथ संवेदना प्रकट करती हैं।

कवि के शब्दों में—
पकन गयि पान ज़न माहि महिया, तिथिस नारस अन्दर ज़न गयि बदरिया।
करन मुरछले आस तस नार प्यठ रेह वन्दै रथ कथ करौ साथा यती बेह।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रगन हंदि लोल रत सअन्यन छलै खोर,..................................
ग्विान सीता प्यवान तस प्यठ तेंगल कअत्य, रटान गुल जन चटान कोसम
अथौ सअथ्य ।। (पृ० 157)

—प्रज्ज्वलित चांद जैसी सीता धधकते अग्नि-कुण्ड में ऐसे उतरती है जैसे पानी हो। अग्नि की लपटें जैसे उनपर न्योछावर हो-होकर प्यार से पंखा झलती हुई कह रही हों—'रगों के रक्त से तुम्हारे चरण धोलूंगी...सीता रो रही हैं और उनपर अनेक अंगारे गिर रहे हैं, जिन्हें वे पकड़ कर फूलों की भांति अपने कुसुम-करों से तोड़ती हैं।'

परवर्ती राम-काव्यों में भी प्रकृति-संवेदना का सुन्दर चित्रण हुआ है। 'विष्णु प्रताप रामायण' में सीता-हरण के समय सीता के करुण रुदन-प्रलाप सुनकर समस्त प्रकृति दुख-विह्वल हो उठती है :

वदान सीता वदान आकाश पाताल, नतै त्रिलूकी आमुत छु भूंचाल।
हरान ओश दारि जानावार बराबर, परान सारी हरे श्री राम-रघुवर ।।
(पृ० 167)

—'सीता रो रही है, उसके साथ-साथ आकाश-पृथ्वी दोनों रो रहे हैं, जैसे तीनों लोकों में भूकंप आया हुआ है। समस्त पशु-पक्षी 'श्रीराम रघुवीर' का नाम ले-लेकर आंखों से अश्रुओं की वर्षा कर रहे हैं।' राम और लक्ष्मण सीता को वन-वन में खोजते हुए प्रकृति को दुख-विह्वल देखते हैं :

कुकिल चममंच् पंजरें त्राविथ गमेंच हअर वरज वावस अन्दर तोतन छिह्ज्य
कअर।
न कुनि कस्तूर न कुनि पोशिनूलइ, हरिथ प्येमित बहरसो फल त फूलइ।
दज़िथ गज़मित कुल्यन हंदि मूल सअरी, तिमौ विरागचइ करमेंच तैयारी।
(3.28)

—कोयल और मैना पिंजड़ा खाली छोड़कर भाग गई हैं। विरह-वेदना में तोते गर्दन झुकाए हैं। नित्य गाने वाले 'कस्तूर' और 'पोशिनूल' (पेंडुकी) कहीं भी दिखाई नहीं दे रहे हैं और फल-फूल सब मुर्झा कर झर पड़े हैं। वृक्षों के जड़ तक जल गए हैं, जैसे प्रकृति ने वैराग्य धारण करने की साध ली हो।

'आनंद-रामावतारचरित' में भी वर्णित उक्त प्रसंग में प्रकृति-संवेदना का चित्रण उल्लेखनीय है। सीता की विरह वेदना में विक्षुब्ध प्रकृति का चित्रण इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है :

रिवान आस्य जानावार ह्योतमुत तिमौ दोख, वदान आस्य लंजि प्यठओसुख
न कांह सोख।
कल्यन ओसुय फटान ओश कमि हालै, गमित आस्य भरे तिम सअरी गुलालै।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गमित आकाश प्यठ तारक परेशान, छि ग्रावान नेत्री ओश वुठ आस्य फेशान। यम्बरज़ल यअ वदन कोत गयि यम्बरज़ल। अमा कम्य सना वम्बूरन करस-गांगल ॥ (पृ० 93)

—पक्षी दुखी होकर वृक्षों की डालों पर बैठे रो रहे हैं, उनके समस्त दुख विच्छिन्न हुए हैं। पत्थर तक आंसू बहा रहे है और सभी गुलाब मुर्झा गए हैं। आकाश के तारे बेचैन से अश्रु बहाकर ओंठ चभा रहे हैं। गुलाबों की गर्दन झुक गई है और मुर्झाए हुए वन-पथ पर यत्र-तत्र बिखर पड़े हैं। नर्गिस यह सोचकर रो रही है—'नर्गिस (सीता) कहां चली गई ? जाने किस भौरे ने आकर उसका सुख-चैन लूट लिया है।'

7.6. निष्कर्ष :

दोनों कश्मीरी और हिन्दी-राम-भक्त कवियों की रामकथा विषयक रचनाओं में अधिकतर जन-भाषा और साहित्यिक भाषा का अभूतपूर्व समन्वित रूप मिलता है। कश्मीरी रामायणों में प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ या हिन्दुवी भाषा के विराट् शब्द-समूह में फारसी-अरबी एवं अन्य भाषाओं के लोक-प्रचलित शब्दों की अधिकाधिक संख्या उपलब्ध है। 'आनंद-रामावतारचरित', 'विष्णुप्रताप रामायण' और 'शर्मा-रामायण' में उर्दू-हिन्दी की मिश्रित भाषा (या खड़ी बोली) का स्वतंत्र रूप से विभिन्न कथा प्रसंगों के वर्णन एवं वन्दना-स्तुतियों में प्रयोग हुआ है। 'मानस' में भी लोक-भाषा अवधी का महाकाव्योचित उत्कृष्ट एवं परिष्कृत रूप मिलता है, जिसके विराट् शब्द-समूह में अन्य प्रांतीय भाषाओं के अतिरिक्त अरबी-फारसी के भी शब्द प्राप्य हैं। 'रामचंद्रिका' में ब्रजभाषा का सर्वोत्तम साहित्यिक रूप उपलब्ध है। इसी तरह खड़ीबोली का प्रारम्भिक प्रयत्नसाध्य काव्यात्मक रूप 'साकेत' में दिखाई देता है, जिसका संस्कृतनिष्ठ परिष्कृत रूप 'वैदेही-वनवास' में देखा जा सकता है। खड़ी बोली के काव्यों में भी अन्य प्रांतीय भाषाओं के अतिरिक्त उर्दू-फारसी और अरबी के बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग हुआ है। समग्र रूप से देखने पर दोनों प्रांतीय भाषाओं की साहित्यिक परम्परा का प्रतिनिधि रूप दोनों भाषाओं में विरचित रामकथा-काव्यों में प्राप्त है।

हिन्दी रामकथा-काव्यों में परम्परागत संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के छन्दों के साथ-साथ कई नये छन्दों का विकास भी हुआ है। 'मानस' की रचना अपभ्रंश की कड़वकबद्ध शैली में हुई है, जिसमें प्रधानतः दोहा-चौपाई छन्दों का ही प्रयोग हुआ है। 'रामचंद्रिका' वैविध्य छन्द-प्रयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण रचना है, जिसमें पिंगलशास्त्र के सभी नियमों का यथोचित पालन किया गया है। आधुनिक काव्यों में 'साकेत' और 'वैदेही-वनवास' ही छन्दों के विविध प्रयोगों के कारण उल्लेखनीय हैं। खड़ी बोली के छन्दों का पर्याप्त विकास दोनों में दृष्टिगोचर होता है। कश्मीरी रामायणों में अभिव्यक्ति प्रणाली के दो मुख्य परम्परागत रूप मिलते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

--इतिवृत्तात्मक वर्णन-शैली और गीति-शैली । इतिवृत्तात्मक वर्णन-शैली के अन्तर्गत फारसी मसनवियों में प्रयुक्त विभिन्न 'बहरों' का प्रयोग किया गया है। इतिवृत्तात्मक वर्णन में कई नवीन शैलीगत विशेषताओं का भी निरूपण हुआ है। गीति-शैली का सफल प्रयोग अधिकतर वन्दना-स्तुतियों में ही हुआ है। इसमें प्राय: सभी रामायणों में लोक-प्रचलित कश्मीरी गीति-शैलियों को अपनाया जा चुका है।

दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने विविध शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का प्रयोग अपनी रचनाओं में प्रचुर मात्रा में किया है। शब्दालंकारों में मुख्य शब्दानुप्रास और यमक तथा अर्थालंकारों में उपमा-उत्प्रेक्षा और रूपक के प्रति कवियों ने विशेष रुचि प्रदर्शित की है। कश्मीरी में शब्दालंकारों की अपेक्षा अर्थालंकारों का ही अधिक प्रयोग हुआ है और कवियों ने पांडित्य या चमत्कार-प्रदर्शन के लिए कहीं भी अलंकारों का प्रयोग नहीं किया है, जैसा कि 'रामचंद्रिका' में दिखलाई पड़ता है। कश्मीरी रामायणों में अतिशयोक्ति एवं अन्योक्ति के अलंकारों को भी यथेष्ट प्रश्रय मिला है।

दोनों भाषाओं के रामकथा काव्यों में संवादों के दो मुख्य रूपों-पौराणिक शैली के संवाद और पात्रों के पारम्परिक संवादों की नियोजना समुचित ढंग से हुई है। पौराणिक शैली के संवादों के अन्तर्गत पौराणिक श्रृंखलाबद्ध कथा-संवाद और उपदेशात्मक संवाद आते हैं। श्रृंखलाबद्ध कथा-संवादों का जैसा सुचारु निर्वाह 'मानस' में हुआ है, किसी भी कश्मीरी रामायण में दिखलाई नहीं पड़ता है। वक्ता-श्रोताओं का पर्याप्त परिचय मिलने पर भी कहीं-कहीं पर संवादों में वर्णनात्मक शिथिलता खटकती है। उपदेशात्मक संवादों में दोनों में अधिकतर विषय एवं शैलीगत साम्य मिलता है। पात्रबद्ध संवादों के दोनों रूपों गोष्ठी-संवाद और सभा-संवादों के अन्तर्गत विशिष्ट शैली-तात्विक तत्वों एवं नवीनताओं का निरुपण भी दोनों भाषाओं की रचनाओं में अलग-अलग से हुआ है। 'प्रकाश-रामायण' में नाटकीय प्रश्नोत्तर-शैली और पात्रबद्ध आत्म संवादों की सुन्दरतम नियोजना हुई है जिसका अनुसरण परवर्ती काव्यों में भी किया गया है। इसी तरह 'मानस' में नाटकीय संवादात्मकता का सुन्दर और सरस रूप दिखाई देता है तथा दोनों प्रकार के संवादों में पात्र एवं प्रसंगानुकूल भाषा-तत्वों का समुचित निरूपण हुआ है। नाटकीय संवादात्मकता की दृष्टि से 'रामचंद्रिका' का अधिक महत्वपूर्ण स्थान है और संवादों के अकृत्रिम सारल्य की दृष्टि से खड़ी बोली के काव्यों में 'साकेत' एक सफल रचना है।

दोनों कश्मीरी और हिन्दी रामकथा विषयक काव्यों में प्रकृति-चित्रण के तीन प्रधान रूप मिलते हैं--'आलंबन, अलंकरण और संवेदना दर्शन। दोनों भाषाओं के भक्त-कवियों ने प्रकृति को राम के अधीन मानकर स्वतंत्र रूप से इसका वर्णन अधिकाधिक संयमित रूप में किया है। 'रामचंद्रिका' एवं 'वैदेही-वनवास' में ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आलम्बन-स्वरूप प्रकृति-चित्रण अधिक विस्तार से हुआ है। दोनों भाषाओं के रामायणकारों ने रूढ़ एवं नवीन प्राकृतिक उपमानों को अपनाकर अलंकरण रूप में प्रकृति का चित्रण व्यापक ढंग से किया है। कश्मीरी में रूढ़ परम्परित उपमानों की अपेक्षा नवीन प्राकृतिक उपमानों का ही अधिक प्रयोग हुआ है, जिसमें क्षेत्रीय वैशिष्ट्य का यथोचित सामंजस्य मिलता है। प्रकृति-चित्रण का और अधिक व्यापक रूप दोनों भाषाओं की रामायणों में वर्णित 'संवेदना-दर्शन' के रूप में उपलब्ध है। इसका प्रमुख कारण यह है कि प्रकृति को राम के अधीन माना गया है, इसी कारण राम-सीता तथा रामकथा के अन्य मुख्य पात्रों के सुख-दुख में प्रकृति का समरस एवं संवेदनात्मक रूप अधिक सहज और स्वाभाविक प्रतीत होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8 उपसंहार

रामकथा भारतीय जन-मानस के साथ इस प्रकार पूर्णतः घुलमिल गई है कि इसमें भारतीय संस्कृति, सभ्यता, कला, विचार-धारा और उच्चतम मानवीय आदर्शों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब झलकता है। शताब्दियों से अनवरत रूप में रामकथा-धारा भारतीय जन-जीवन की समग्र सांस्कृतिक चेतना को अनुप्राणित करती आई है, जिसका प्रमुख प्रेरणा-स्रोत मर्यादा-पुरुषोत्तम राम का आदर्श पावन चरित्र ही है। डा० माताप्रसाद गुप्त के शब्दों में "रामकथा भारतीय संस्कृति का उज्जवलतम प्रतीक है। हमारी संस्कृति में आदिकाल से सत्य, अहिंसा, धैर्य, क्षमा, निर्वेदता, अनासक्ति, इंद्रिय-निग्रह, शुचिता, निष्कपटता, त्याग, उदारता और लोकसंग्रह आदि के जिन सात्विक तत्वों का समादर रहा है, उन सब का जैसा समाहार राम-कथा में दिखाई पड़ता है वैसा अन्यत्र नहीं दिखाई पड़ता है। आर्यावर्त्त के बाहर भी प्राचीन काल से जो रामकथा का प्रचार रहा है, वह हमारी इसी सात्विक संस्कृति के प्रसार का प्रतीक है।"[1] यही कारण है कि भारत की प्रांतीय भाषाओं और निकटवर्ती देशों की जन-भाषाओं में रामचरित को लेकर रामकथा विषयक जितने अधिक ग्रन्थों की रचना हुई है, अन्य किसी भी चरित-नायक सम्बन्धी काव्यों की नहीं। साहित्यिक रचनाओं के अतिरिक्त सभी प्रांतों के लोक-साहित्य में रामकथा का व्यापक रूप मिलता है, जिसमें लोक-जीवन में व्याप्त रामकथा के अविच्छिन्न सांस्कृतिक-ऐक्य को देखा जा सकता है।

कश्मीरी का भाषा-क्षेत्र हिन्दी की अपेक्षा छोटा है। इसीलिए हिन्दी की अपेक्षा कश्मीरी में राम-चरित विषयक लोक-गीतों और काव्य-ग्रन्थों की संख्या भी अधिक नहीं है। दोनों भाषा-क्षेत्रों के लोक-गीतों में वर्णित राम-चरित में क्षेत्रीय वैशिष्ट्य, लोक-संस्कृति एवं रीति-रिवाजों का सामंजस्य मिलता है। लोकगीतों में राम-कथा के प्रधानतः दो रूप सुरक्षित हैं--नाम-मात्र के लिए रामकथा के पात्रों का उल्लेख और परम्परागत रामकथा सम्बन्धी वृत्तों का चित्रण, हिन्दी में दोनों प्रकार के लोकगीतों की संख्या अधिक होने पर भी कश्मीरी के साथ तुलना करने पर ज्ञात होता है कि दोनों में कुछ ऐसे विशिष्ट लोक-तत्वों का समान रूप से समाहार

1. तुलसीदास, पृष्ठ 284.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुआ है, जिनसे दोनों भाषा-क्षेत्रों में रामकथा का समान लोकरूप देखा जा सकता है, जिसमें रामकथा के आदर्श पात्र राम और सीता भी लोक एवं परिवार के ही सदस्य प्रतीत होते हैं। लोकसाहित्य में राम-कथा के विस्तृत रूप के विद्यमान होते हुए भी कश्मीरी में कई कारणों से रामकथा-काव्य की रचना का प्रारम्भ हिन्दी की अपेक्षा देर से हुआ।

दोनों प्रकार के रामकथा-काव्यों में विशिष्ट लौकिक और साहित्यिक परम्पराओं का अनुसरण किया गया, जिसमें युगीन भावनाओं और विचारधाराओं का समावेश हुआ। काव्य-ग्रन्थों में निजी साहित्यिक परम्पराओं का अनुसरण होने पर भी विषयगत व्यापकता में उत्तरोत्तर विकास देखा जा सकता है।

तुलनात्मक 'कथा-विवेचन' से स्पष्ट होता है कि दोनों भाषाओं के काव्यों की कथा का मुख्याधार 'वाल्मीकि रामायण' तथा 'अध्यात्म रामायण' ही है, जिसमें राम-भक्ति भावना के उत्तरोत्तर विकास के फलस्वरूप दोनों प्रकार के कवियों ने यथोचित परिवर्तन किए हैं। इनके अतिरिक्त विभिन्न राम-काव्यों, उपनिषदों और पुराणों का प्रभाव दोनों पर पड़ा है। किन्तु दोनों में मौलिक प्रसंगों एवं नवीन उद्भावनाओं का भी समावेश हुआ है।

पात्रों के 'चरित्र-चित्रण' में दोनों भाषाओं के रामायणों में परम्परागत 'चरित्रों' में अपने-अपने ढंग से यथोचित किकास भी हुआ है। परम्परागत गुण-तत्वों या चारित्रिक दोषों के निर्वाह में आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी किया गया है। राम-भक्त कवियों द्वारा प्रधानतः राक्षस-वर्ग के पात्रों को राम-भक्त बनाने का प्रयत्न किया गया है और इस तरह अपने इष्ट राम के महान् चरित्र को विकसित किया गया है जो भक्तों को मुक्ति प्रदान करने में विशिष्ट उदारता का परिचय देते हैं। रामकथा के प्रधान-पात्र राम और सीता के अलौकिक रूप के चित्रण में दोनों भाषाओं की रामायणों में अधिकता से साम्य मिलता है और उनके लौकिक चित्रण में आदर्श मानवीय गुणों का ही प्राधान्य दोनों में देखा जा सकता है। अन्य पात्रों में आदर्श और यथार्थ गुण-अवगुणों का सामंजस्य हुआ है। परम्परागत उपेक्षित और अर्द्धविकसित पात्रों के चरित्र-विकास का प्रयत्न दोनों में किया गया है किन्तु जहां हिन्दी के आधुनिक काल में रामकथा के उपेक्षित एवं अर्द्ध विकसित पात्रों के चरित्र-विकास के लिए ही कई काव्य-ग्रन्थों—'साकेत', 'साकेत-सन्त' 'उर्मिला' और 'कैकेयी' आदि की रचना हुई, ऐसा कोई ग्रन्थ कश्मीरी में उपलब्ध नहीं है। इसीलिए कश्मीरी रामायणों में 'उर्मिला' और 'माण्डवी' का कहीं उल्लेख भी नहीं मिलता है।

दोनों भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं में कवियों की उदात्त धार्मिक और नैतिक भावनाओं तथा विचारधाराओं का विषय एवं प्रसंगानुकूल समुचित निरूपण हुआ है। धर्म की व्यापक परिभाषा दोनों में चरितार्थ होती है, जिसके अन्तर्गत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतीय सनातन आर्य धर्म, भक्ति-भावना और आदर्श मानव-धर्म की स्पष्ट रूप-रेखा निर्दिष्ट होती है। भक्ति ही दोनों प्रकार की रचनाओं की महती प्रेरणा है, इसलिए इसको प्रश्रय मिलना स्वाभाविक ही है। नैतिक विचारों का प्रदिपादन कवियों ने विशिष्ट नीति-ग्रन्थों को दृष्टि में रखकर नहीं किया, प्रत्युत्त स्वाभाविक रूप में ही विभिन्न प्रसंगों में नीति-कथन भी सुगुम्फित हुए हैं। नैतिकता की मूल प्रवृत्तियों की ओर ही कवियों ने अधिक ध्यान दिया है। उदात्त और प्रबुद्ध मानसिक प्रवृत्तियों के विश्लेषण-विवेचन में कवियों के नैतिक विचार स्वतः स्पष्ट होते हैं। हिन्दी की अपेक्षा कश्मीरी काव्यों में राजनैतिक विचारों का निरूपण अधिक संयमित रूप में हुआ है।

आलोच्य दोनों भाषाओं के काव्यों में शास्त्रोक्त सभी रसों का निरूपण हुआ है, जिसके साथ भक्ति रस भी जोड़ा जा सकता है। उत्कट भक्ति-भावना से विरचित काव्यों में सभी रसों का पर्यवसान भी प्रधानतः इस रस में होता है। 'रस-परिपाक' के अन्तर्गत कवियों की विशिष्ट भाव-प्रवणता का भी यथेष्ट परिचय मिलता है।

'काव्य-शैली' की दृष्टि से दोनों प्रकार के काव्यों में निजी परम्परागत शैली-तात्विक प्रवृत्तियों का ही अनुसरण किया गया है। कश्मीरी रामायणों में संस्कृत-निष्ट या हिन्दुवी कश्मीरी का प्रतिनिधि रूप मिलता है, जिस पर फारसी भाषा का भी प्रभाव पड़ा है। अभिव्यक्ति-विधान में फारसी शैली का ही अधिक प्रभाव दृष्टिगत होता है। अभिव्यक्ति के दो प्रमुख रूप मिलते हैं—इतिवृत्तात्मक और गीति-शैली। हिन्दी में संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के छन्दोविधान का ही अधिकतः अनुसरण किया गया है। दोनों में भाषायी परम्पराओं को दृष्टि में रखकर संवाद-नियोजना का महत्वपूर्ण स्थान है। संवादों के दो प्रमुख रूप मिलते हैं—पौराणिक कथा-संवाद और पात्रों के पारस्परिक संवाद। पौराणिक कथा-संवादों के अन्तर्गत उपनिषदों के आधार पर उपदेशात्मक संवादों का भी यथोचित निरूपण किया गया है। पात्रों के पारस्परिक संवादों में सभा और गोष्ठी-संवादों का आयोजन भी प्रसंगानुकूल है। संवाद-योजना की दृष्टि से दोनों प्रकार के काव्य-ग्रन्थों का निजी भाषायी साहित्यिक परम्परा में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। दोनों भाषाओं की रामायणों में अलंकार के दोनों रूपों—शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का प्रयोग समुचित ढंग में हुआ है। दोनों कश्मीरी और हिन्दी रामकथा-काव्यों में प्रकृति-चित्रण भी विविध रूपों में हुआ है उनमें से यहां तीन ही मुख्य रूपों—आलम्बन रूप में प्रकृति-चित्रण, अलंकरण रूप में प्रकृति-चित्रण तथा संवेदना-दर्शन रूप में प्रकृति-चित्रण की तुलना करने पर कवियों के दृष्टिकोण में अधिकतः साम्य ही मिलता है। प्रकृति-चित्रण में अधिकाधिक क्षेत्रीय वैशिष्ट्य के ही उदाहरण प्राप्त होते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहायक ग्रन्थ सूची

लेखक	पुस्तक
अग्रवाल, जगदीशनारायण	रामचरितमानस और रामचन्द्रिका का तुलनात्मक अध्ययन
अग्रवाल, रामप्रकाश	बाल्मीकि और तुलसी सहायक मूल्यांकन मेरठ, 1966
अग्रवाल, हंसराज	हिन्दी साहित्य की परम्परा
अमर, अमरनाथ	अमर रामायण (अप्रकाशित)
आज़ाद, अब्दुल जहाद	कश्मीरी ज़बान और शायरी। श्रीनगर 1966
आनंदराम	आनंद रामावतार चरित (अप्रकाशित)
ओमप्रकाश	हिन्दी अलंकार साहित्य। दिल्ली, 1956
अवस्थी, सद्गुरुशरण	तुलसी के चार दल। इलाहाबाद।
ऋषि जैमिनी, कौशिक बरूआ	मैथिलीशरण गुप्त : अभिनंदन ग्रन्थ
उदयभानु सिंह	तुलसीदर्शन मीमांसा। लखनऊ संवत 2028
उदयभानु सिंह	तुलसीकाव्य मीमांसा। दिल्ली 1963
उदयभानु सिंह	हिन्दी के स्वीकृत शोध प्रबन्ध
उपाध्याय कृष्णदेव	भोजपुरी लोकगीत
उपाध्याय कृष्णदेव	भोजपुरी ग्रामगीत (दो भाग)
उपाध्याय, रामचरित	रामचरित चिंतामणी
उमाकान्त	गुप्त जी की काव्य साधना
उमाकान्त	मैथिलीशरण गुप्त-कवि और भारतीय संस्कृति के आरत्यता
कुन्तलमेघ, रमेश	तुलसी : आधुनिक वातायन से वाराणसी 1967.
कुमार बचनदेव	तुलसी के भक्तायात्मक संगीत विशेषता विनयपत्रिका। दिल्ली 1964.
कपूर सीताराम	रामचरितमानस के साहित्य स्रोतों का अध्ययन (अप्रकाशित)
कृष्णलाल	मानसदर्शन
गौड़, रामदास	रामचरितमानस की भूमिका। वाराणसी 1950
गौड़ रामदास	हिन्दुत्व
गुप्त, गार्गी	रामकाव्य परम्परा में रामचन्द्रिका का विशिष्ट स्थान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखक	पुस्तक
गुप्त प्रेमलाल	रामचरितमानस
गुप्त माताप्रसाद	कवितावली । प्रयाग
गुप्त माताप्रसाद	तुलसीदास । प्रयाग 1965.
गुप्त माताप्रसाद	रामचरितमानस
गुप्त माताप्रसाद	तुलसी संदर्भ । प्रयाग 1935
गुप्त माताप्रसाद	हिन्दी पुस्तक साहित्य ।
गुप्त, मैथिलीशरण	साकेत
गुरु गोविन्दसिंह	गोविन्द रामायण
गिरीश, गिरिजादत्त	गुप्त जी की काव्यधारा
ग्रियर्सन जी० ए० (सम्पादक)	प्रकाश रामायण
ग्रियर्सन जी० ए० (सम्पादक)	लिंग्वस्टिक ससर्वे आफ इंडिया
ग्राउज़ एफ० एच०	द रामायण आफ तुलसीदास
चन्द्रभान	रामचरितमानस की लोक वार्ताएं
चतुर्वेदी, परशुराम	भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं
चतुर्वेदी, परशुराम	मानस की रामकथा । इलाहाबाद, 1953
चतुर्वेदी, राजेश्वर प्रसाद	गोस्वामी तुलसीदास और उनका काव्य
चतुर्वेदी, सत्यदेव	गोस्वामी तुलसीदास और रामकथा
चतुर्वेदी, सीताराम	गोस्वामी तुलसीदास। वनारस, संवत 2023
चतुर्वेदी, हीरादेवी	बुन्देलखण्ड के लोकगीत
जैन विमल कुमार	तुलसीदास और उनका साहित्य, दिल्ली 1955
ज्योतिषी, रामनाथ	श्रीराम चन्द्रोदय
टंडन, प्रेमनारायण	तुलसी के राम
तिवारी चन्द्रभूषण	तुलसी का काव्य सौन्दर्य । कानपुर 1960
ताराचन्द	ताराचन्द रामायण (अप्रकाशित)
द्विवेदी, रामअवध	हिन्दी साहित्य के विकास की रूपरेखा
द्विवेदी, रामचन्द्र	तुलसी साहित्य रत्नाकर । पटना, संवत् 1986
द्विवेदी, रामचन्द्र	महाकवि तुलसीदास
द्विवेदी हज़ारीप्रसाद	हिन्दी साहित्य । दिल्ली, संवत् 2009
द्विवेदी, हज़ारी प्रसाद	हिन्दी साहित्य की भूमिका । बम्बई 1950
द्विवेदी हज़ारी प्रसाद	हिन्दी साहित्य का इतिहास । दिल्ली 1952
दीक्षित, छोटेलाल	तुलसी का सौन्दर्य बोध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखक	पुस्तक
दीक्षित, भागीरथ प्रसाद	तुलसी और उनके ग्रन्थ
दीक्षित, राजपति	तुलसी और उनका युग। बनारस, संवत् 2009
,, ,,	तुलसी और उनका काव्य
दीक्षित, हीरालाल	आचार्य केशवदास
दुर्गाप्रसाद सिंह	भोजपुरी लोकगीतों में करुणारस
दुबे, रमेशचन्द्र	केशवदास
,, ,,	तुलसीदास। आगरा 1955
दर मोहनकृष्ण	कश्मीरी लोक साहित्य
नगेन्द्र	भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका। दिल्ली 1955
,,	हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास (षष्ट भाग) काशी, 2025 विक्रम
,,	रीतिकाव्य की भूमिका। दिल्ली, 1949
,,	रस सिद्धान्त
,,	साकेत एक अध्ययन
नगेन्द्र एवं वात्स्यायन	आधुनिक हिन्दी साहित्य
नारायण सिंह	क्रांतिकारी तुलसी
नरोत्तम, पारीक आदि	राजस्थान के लोकगीत (दो भाग)
पाठक, कमलकान्त	मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य
पाठक, शिवलाल	मानस मयंक। पटना, 1920
पंडित, बज्जीनाथ	प्रकाश रामायण। श्रीनगर 1965
पाण्डे, इन्दुप्रसाद	अवधी लोकगीत और परम्परा
पाण्डे, चन्द्रावली	तुलसी। काशी, संवत् 2024
,, ,,	केशवदास
पाण्डे, राजकुमार	रामचरितमानस का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन। कानपुर 1963
पाण्डे, राजवली	हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास (प्रथम भाग)
पाण्डे, रामनिरंजन	रामभक्ति शारना
पाण्डे, त्रिलोचन	साकेत दर्शन
पारख, सूर्यकिरण	राजस्थानी लोकगीत
पुष्प, पृथ्वीनाथ	कश्मीरी भाषा और साहित्य
परमार, श्याम	भारतीय लोकसाहित्य
प्रतिपाल सिंह	बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखक	पुस्तक
वचनदेव कुमार	मानस के भक्त्यात्मक गीत
बाबू, गुलाबराय	काव्य के रूप
बामज़े, पी० ए० के०	द हिस्ट्री आफ कश्मीर
बुल्के, वर्गानल	रामकथा उत्पत्ति और विकास
बहुगुणा, शम्भूप्रसाद	साकेत परीक्षण
त्योहार, राजेन्द्रसिंह	गो० तुलसीदास की समन्वय साधना
भटनागर, रामरतन	तुलसीसाहित्य की भूमिका । प्रयाग
भटनागर, रामरतन	तुलसीदास एक अध्ययन
भटनागर, रामरतन	मैथिलीशरण गुप्त : एक अध्ययन
भाग्यवती सिंह	तुलसी की काव्यकला । आगरा 1962
भाग्यवती सिंह	तुलसीमानस रत्नाक र । आगरा 1962
भारद्वाल, रामदत्त	गोस्वामी तुलसीदास दिल्ली, 1962
भारद्वाज, रामदत्त	तुलसीदर्शन
मिश्र, कुलदेव प्रसाद	तुलसीदर्शन । प्रयाग 2023 विक्रमी
मिश्र, गंगाधर	साहित्य सम्राट तुलसीदास । वाराणसी संवत 2026
मिश्र द्वारिकाप्रसाद	वाल्मीकि रामायण
मिश्र बलदेव प्रसाद	कौशल किशोर
मिश्र बलदेव प्रसाद	मानस माधुरी । आगरा 1958
मिश्र बलदेव प्रसाद	मानस में रामकथा । कलकत्ता, 1959
मिश्र वलदेव प्रसाद	रामराज्य
मिश्र भगीरथ	काव्य-शास्त्र । 2023
मिश्र भगीरथ	तुलसीरसायन । इलाहाबाद, 1956
मिश्र भगीरथ	हिन्दी काव्य-शास्त्र का इतिहास लखनऊ, संवत् 2005
मदान, इन्द्रनाथ	तुलसीदासचिंतन और कला
मदान, इन्द्रनाथ	तुलसी प्रतिभा । इलाहाबाद, 1962.
यादव, शंकरलाल	हरियाना प्रदेश का सेवा शाहित्य
रांगेय, रावत	तुलसीदास का कथा शिल्प
राघवन, श्री० वी०	व नम्बर आफ रशाज
रामलाल सिंह	तुलसी काव्य-दर्शन । इलाहाबाद, 1962.
रावत, चन्द्रभान	तुलसी साहित्य बदलते प्रतिमान । मथुरा, 1962
रत्नकुमारी	सोलहवीं सदी के हिन्दी और बंगाली वेद्यशास्त्र कवि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखक	पुस्तक
रस्तोगी, देवशरण	हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास
रस्तोगी, राजाराम	तुलसीदास जीवनी और विचारधारा। कानपुर, 2020 बि०
लमगोड़ा, राजबहादुर	विश्व-साहित्य में रामचरितमानस। सतना, 1945.
वर्मा, कृष्णचन्द्र	आचार्य केशवदास। दिल्ली 1956.
वर्मा, धीरेन्द्र	हिंदी साहित्य कोष। 2025 वि०
वर्मा, राजारानी	हमारे संस्कार गीत।
वर्मा, रामकुमार	हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास। इलाहबाद, 1948
विजयपाल सिंह	केशव और उनका साहित्य।
विनोद, वैजनाथ सिंह	भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन।
विष्णु कौल	विष्णु प्रताप रामायण। (अप्रकाशित : दो भाग)
वाजपेयी नन्ददुलारे	आधुनिक हिंदी साहित्य
वार्ष्णेय लक्ष्मीसागर (अनुवादक)	हिंदी साहित्य का इतिहास। (लेखक गीसांदतासी)
वोदतिल	रामचरितमानस के मूल स्रोत और रचनाक्रम।
श्यामसुन्दरदास	तुलसीदास
शंकर	शंकर रामायण (अप्रकाशित)
शुक्ल, उमाशंकर	बुन्देलखड के लोक गीत
शुक्ल, कृपाशंकर	केशव की काव्यकला
शुक्ल, केसरी नारायण	मानस की रसी भूमिका, लखनऊ 1955.
शुक्ल, चन्द्रमोलि	मानस दर्पण। प्रयाग, 1920
शुक्ल, पुत्तूलाल	आधुनिक हिन्दी काव्य : छन्द योजना। लखनऊ, संवत् 2014
शुक्ल, रामचन्द्र	गोस्वामी तुलसीदास। काशी, संवत् 2008
शुक्ल, रामचन्द्र	हिन्दी साहित्य का इतिहास। काशी संवत् 2008
शुक्ल, रामबहोरी	तुलसीदास। जालंधर, 1952.
शुक्ल, शिवकुमार	रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन.
शुक्ल, सुधारानी	गोस्वामी तुलसीदास का सामाजिक आदर्श।
शम्भुनाथ सिंह	हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप और विकास।
शर्मा, किरणचन्द्र	केशवदास : जीवनी. कला और कृतित्व दिल्ली, 1962.
शर्मा, कृष्णचन्द्र	मेरठ जनपद के लोकगीत। (अप्रकाशित)
शर्मा, गोविन्दराम	हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखक	पुस्तक
शर्मा, जगदीश	बाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस सौन्दर्य विधान का तुलनात्मक अध्ययन। गुलाबपुरा, 1969.
शर्मा, जगदीशप्रसाद	रामचरितमानस का मनोवैज्ञानिक अध्ययन.
शर्मा, नीलकंठ	शर्मा रामायण (अप्रकाशित)
शर्मा, रघुराजशरण	तुलसी और भारतीय संस्कृति। (अप्रकाशित)
शर्मा, रामानन्द	मानस की महिलाएं।
शर्मा, स्वामीनाथ	मानस मंथन। बारारणी, 1966.
शर्मा, श्रीनिवास	तुलसीदास जीवनी और काव्य।
श्यामसुन्दर दास	हिन्दी साहित्य, प्रयाग, 2003 वि०.
शास्त्री, भीष्मदेव	मैथिलीशरण गुप्त.
शास्त्री, रजनीकान्त	मानस मीमांसा, इलाहबाद, 1949.
सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद	साकेत में काव्य संस्कृति और दर्शन
सांकृत्यायन, कमलनाया	महाकवि भानुभक्त के नेपाली रामायण तथा गोस्वामी तुलसीदास के मानस का तुलनात्मक अध्ययन। (अप्रकाशित).
सांकृत्यायन, राहुल	हिन्दी काव्य परम्परा.
सत्यार्थी, देवेन्द्र	धरती गाती है
सत्यनारायण सिंह	तुलसी और उनका काव्य.
सत्यव्रत सिंह	भोजपुरी लोकगीत.
सत्येन्द्र	ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन
सत्येन्द्र	गुप्त जी की काव्यकला.
सीता, दमयन्ती आदि	धूल धूसरित मणियां
सहाय, शिवनंदन	गोस्वामी तुलसीदास, पटना, 1962.
हक्कू, हरिहरनाथ	क्राफ्ट्समैनशिप आफ तुलसीदास इन रामचरित मानस, (अप्रकाशित)
हरिऔध, अयोध्यासिंह उपाध्याय	वैदेही वनवास
हरिऔध, अयोध्यासिंह उपाध्याय	हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास
त्रिपाठी, जगदीशनारायण	आधुनिक हिन्दी कविता में अलंकार विधान। कानपुर, 1962
त्रिपाठी, देवदत्त	तुलसी साहित्य
त्रिपाठी, विजयनंद	मानस प्रसंग
त्रिपाठी, राममूर्ति	भारतीय साहित्य दर्शन। वारणसी, 1959.
त्रिपाठी, रामनाथ	कृत्तिवासी बंगलारामायण और रामचरित-मानस का तुलनात्मक अध्ययन
त्रिपाठी, रामनरेश	तुलसी और उनका काव्य। दिल्ली, 1953.
त्रिपाठी, रामनरेश	अवधी लोकगीत।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
3	20	ह्यव	ह्यथ
3	27	थोयवो	थोवयो
10	20	ओंछाम	वुछाम
11	6	रथायि	रछायि
21	20	कश्मीरी	कश्मीर
28	27	मं	मंज़
28	27	लिखित	लीखित
32	17	भी	—
32	24	समय	समयक
34	15	बन्दिी	बिन्दी
37	14	किता	किया
38	16	बाह्याय	बाह्यार्थ
40	24	कवी	कवि
54	1	'मानव'	'मानस'
55	9	की	को
55	27	ही	—
57	4	तुलसी	तुलसी की
63	10	को	के
66	19	खतजा	रक्तजा
70	15	उल्लख	उल्लेख
70	15	'रावणात्वजा'	'रावणात्मजा'
74	5	ब्रह्या	ब्रह्मा
77	10	जघुवयस	लघुवयस
81	10	आत्यन्तिम	आत्यन्तिक
88	17	निर्नेश	निर्देश
90	7	लक्ष्गण	लक्ष्मण
92	11	अनुमान	हनुमान
93	1	मेल	मैल
93	3	कामासवत	कामासक्त
108	4	शीर्श	शीर्ष
110	16	वैबाण	बाण
111	19	युद्य	युद्ध
122	1,2	ब्रह्या	ब्रह्मा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
126	7	भी	ही
131	1	सत्रुच्न	शत्रुघ्न
140	1	शिवाजी	शिवजी
143	11	भाषाओं	भाषाओं के
156	2	असह्‌य	असह्य
158	31	बन्योमत	सन्योमुत
159	18	पराकास्ठा	पराकाष्ठा
159	19	4142	142
162	21	रावण	राम
168	2	आरीपित	आरोपित
168	18	संवेदनाओं	संवेदनाओं का
169	22	रखकर	रहकर
172	26	सीता से	सीता
173	23	चिमित	चित्रित
183	6	राम प्रशंशा	राम की प्रशंसा
191	5	कल-सिद्धि	
192	12	भवत्यु-पासना	
205	3	विद्यातक	विघातक
224	27	जोविथ	त्रोविथ
224	27	हास	हारान
234	7	बताया	बनाया
236	26	प्रोवुन	त्रोवुन
237	30	फोर	कोर
237	30	च्यवान	ख्यवान
238	27	ढंक	ढंग
245	23	ह्‌यमोर	ह्‌योर
249	14	नाभ	नाक
250	15	राक्षान	राक्षस
260	26	नाभति	नालमति
266	2	मक्तिरस	भक्तिरस
272	27	गऐ थे	गाये गए
273	16	कश्मीर	कश्मीरी
287	5	monotory	monotony

—: ० :—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant